स्तोत्रसङ्ग्रहः

Colophon

This document was typeset using XƎLaTeX, and uses the Sanskrit 2003 font extensively. It also uses several LaTeX macros designed by *H. L. Prasād*. Practically all the encoding was done with the help of Itranslator 2003 and Ajit Krishnan's mudgala IME (http://www.aupasana.com/).

Acknowledgements

The initial encodings of some of these texts were obtained from http://sanskritdocuments.org/ and/or http://prapatti.com/.
See also http://stotrasamhita.github.io/about/

स्तोत्रसङ्ग्रहः is also available online (in PDF format) at:
http://stotrasamhita.github.io/

FOR PERSONAL USE ONLY
NOT FOR COMMERCIAL PRINTING/DISTRIBUTION

अनुक्रमणिका

Preface **xiii**

१ लघु स्तोत्राणि 1

ध्यानम् 3

विघ्नेश्वर प्रार्थना 4
गुरुपरम्परा-स्तुतिः 5
स्वस्ति-वचनम्/गुरुवन्दनम् 6
सरस्वती प्रार्थना 7
चिरञ्जीविस्तोत्रम् 8
पञ्चकन्यास्मरणम् 8
साम्बशिव-स्मरणम् 8
हरि-स्मरणम् 8
चक्षुरारोग्य-श्लोकः 8
भागवतस्मरणम् 9
गो-वन्दनम् 9
तुलसी-वन्दनम् 9
अर्जुन-नामानि (विराटपर्वान्तर्गतम्) 10
यमधर्मराजस्य १४ नामानि 11
परब्रह्म प्रातः स्मरण स्तोत्रम् 11
ध्यान-स्तोत्राणि 13

गणेशस्तोत्राणि 16

महागणेशपञ्चरत्नम् 17
गणाष्टकम् 18

गणपतिस्तवः 19
गणेशभुजङ्गम् 22
महागणपति नवार्णवेदपाद स्तवः 23

वेङ्कटेशस्तोत्राणि 25

वेङ्कटेश सुप्रभातम् 25
वेङ्कटेश स्तोत्रम् 30
वेङ्कटेश प्रपत्तिः 32
वेङ्कटेश मङ्गलाशासनम् 35
वेङ्कटेश करावलम्बस्तोत्रम् 36
वेङ्कटेश अष्टकम् 39
वेङ्कटेशद्वादशनामस्तोत्रम् 41
श्रीनिवास गद्यम् 41

रामस्तोत्राणि 46

नामरामायणम् 46
रामरक्षास्तोत्रम् 49
अहल्याकृत-रामस्तोत्रम् 55
रामभुजङ्गप्रयातस्तोत्रम् 58
रामस्तवराजस्तोत्रम् 64
शम्भुकृत-रामस्तवः 77
देवैः कृतं राम-स्तोत्रम् 80
ब्रह्मकृतरामस्तवः 83
आपदुद्धारण स्तोत्रम् 86
हनुमत्कृतं श्री-सीता-राम-स्तोत्रम् 87
रामद्वादशनामस्तोत्रम् 89
रामाष्टकम् 89
रामस्तोत्रम् 91

एकश्लोकि रामायणम् 93
गायत्री-रामायणम् 93

हनुमत्-स्तोत्राणि **101**

हनुमान् चालीसा 101
आपदुद्धारक-द्वादशमुख-हनुमान् स्तोत्रम् 103
सुन्दरहनुमान् महामन्त्रनामस्तोत्रम् 106
हनुमत् पञ्चरत्नम् 107

कृष्णस्तोत्राणि **109**

कृष्णाष्टकम् १ 109
कृष्णाष्टकम् २ 110
कृष्णाष्टकम् ३ 112
श्री-कृष्ण-जननम् 113
गोविन्दाष्टकम् 114
गीतगोविन्दम् 116
भज गोविन्दम् 118
अक्रूरकृत-दशावतारस्तुतिः 121
भीष्मस्तुतिः 122
ध्रुवस्तुतिः 123
मधुराष्टकम् 126
अच्युताष्टकम् 127
बालमुकुन्दाष्टकम् 129
कृष्णद्वादशनामस्तोत्रम् 130
रङ्गनाथ गद्यम् 131
रङ्गनाथस्तोत्रम् 133
दामोदराष्टकम् 135
गुरुवातपुरीशपञ्चरत्नम् 136

नारायण केशादिपादवर्णनम् . . . 138
विष्णुभुजङ्गप्रयातस्तोत्रम् . . . 140
विष्णु-विजयस्तोत्रम् . . . 143
ब्रह्मपारस्तोत्रम् . . . 145
लक्ष्मी-नृसिंह-करुणारस-स्तोत्रं . . . 146
धन्वन्तरि स्तोत्रम् (मत्स्य पुराणान्तर्गतम्) . . . 150

शिवस्तोत्राणि **153**
शिवमानसपूजा . . . 153
वैद्यनाथाष्टकम् . . . 154
लिङ्गाष्टकम् . . . 156
श्रीकृष्णार्जुनकृत-रुद्रस्तोत्रम् . . . 157
बिल्वाष्टकम् . . . 158
शिवरक्षास्तोत्रम् . . . 159
शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम् . . . 161
शिवापराधक्षमापन स्तोत्रम् . . . 162
शिवप्रातःस्मरणस्तोत्रम् . . . 165
मार्गबन्धुस्तोत्रम् . . . 166
सदाशिवाष्टकम् . . . 167
चरणश्रृङ्गरहित-नटराज-स्तोत्रम् . . . 169
शम्भुस्तुतिः . . . 171
उमामहेश्वरस्तोत्रम् . . . 173
अर्धनारीश्वर अष्टकम् . . . 176
शिवशिवास्तुतिः . . . 178

गुरुस्तोत्राणि **181**
दक्षिणामूर्त्यष्टकम् . . . 181
दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम् . . . 183

दक्षिणामूर्तिस्तोत्रं वृषभदेवकृतम् 187
दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम् समरपुङ्गवदीक्षितकृतम् 188
गुर्वष्टकम् 190
तोटकाष्टकम् 191

शक्तिस्तोत्राणि **193**
कामाक्षी सुप्रभातम् 193
कामाक्षी-माहात्म्यम् 200
कामाक्षी-स्तोत्रम् 202
मीनाक्षीपञ्चरत्नम् 204
ललितापञ्चरत्नम् 205
मूकसारः 207
गौरीदशकम् 214
कल्याणवृष्टिस्तोत्रम् 216
श्यामलादण्डकम् 219
महिषासुरमर्दिनि स्तोत्रम् 223
शीतलाष्टकम् 227
अन्नपूर्णास्तोत्रम् 229
षष्ठीदेवी स्तोत्रम् 231
रुक्मिणीकृत गौरीस्तोत्रम् 233
कामाक्षी-माहात्म्यम् 233
दुर्गापञ्चरत्नम् 235
दुर्गास्तोत्रम् 236
दुर्गाचन्द्रकलास्तुतिः 239
दुर्गास्तोत्रम् (युधिष्ठिरकृतम्) 243
परशुरामकृत-दुर्गास्तोत्रम् 247
गायत्रीस्तोत्रम् 254

लक्ष्मीस्तोत्राणि 258
कनकधारास्तवम् . . . 258
महालक्ष्म्यष्टकम् . . . 262
लक्ष्मीस्तोत्रम् विष्णुपुराणान्तर्गतम् . . . 263
महालक्ष्मीस्तुतिः (अगस्त्यकृतम्) . . . 266

सरस्वतीस्तोत्राणि 269
सरस्वतीस्तोत्रम् अगस्त्यमुनि प्रोक्तम् . . . 269
सिद्धसरस्वतीस्तोत्रं श्रीमद्-ब्रह्मविरचितम् . . . 271
शारदाभुजङ्गप्रयाताष्टकम् . . . 274
शारदा प्रार्थना . . . 276
वाणीस्तवनम् . . . 277
सरस्वतीस्तोत्रं बृहस्पतिविरचितम् . . . 280

सुब्रह्मण्यस्तोत्राणि 283
सुब्रह्मण्यभुजङ्गम् . . . 283
गुहपञ्चरत्नम् . . . 289
सुब्रह्मण्यपञ्चरत्नम् . . . 290
प्रज्ञाविवर्धन-कार्त्तिकेय-स्तोत्रम् . . . 291
सुब्रह्मण्यषोडशनामस्तोत्रम् . . . 292

शास्तास्तोत्राणि 294
हरिहरात्मजाष्टकम् . . . 294
शास्तादशकम् . . . 295

नवग्रहस्तोत्राणि 297
नवग्रहस्तोत्रम् . . . 297
नवग्रहमङ्गलाष्टकम् . . . 298

नवग्रहपीडाहरस्तोत्रम् 300
सूर्यप्रातःस्मरणस्तोत्रम् 302
आदित्यहृदयम् 302
सूर्यकवचम् 306
सूर्यमण्डल स्तोत्रम् 307
द्वादशार्यासूर्यस्तुतिः 308
सूर्यार्यास्तोत्रम् 310
सूर्यस्तुतिः 311
सूर्यस्तवराजः 312
चन्द्राष्टविंशतिनामस्तोत्रम् 314
अङ्गारकस्तोत्रम् 314
बुधपञ्चविंशतिनामस्तोत्रम् 315
बृहस्पतिस्तोत्रम् 316
शुक्रचतुर्विंशतिनामस्तोत्रम् 317
दशरथकृत शनैश्चराष्टकम् 318
राहुपञ्चविंशतिनामस्तोत्रम् 319
केतुपञ्चविंशतिनामस्तोत्रम् 320

नदीस्तोत्राणि **321**

गङ्गाष्टकम् 321
गङ्गादशहरास्तोत्रम् 323
यमुनाष्टकम् 326
नर्मदाष्टकम् 327
त्रिवेणीस्तोत्रम् 329
कावेरी प्रार्थना 330

कार्तवीर्यार्जुन-द्वादशनामस्तोत्रम् **332**

यमभयनिवारणस्तोत्रम् 333
यमाष्टकम् 333
कलिदोषनिवारणस्तोत्रम् 335
अवैधव्यप्रार्थनास्तोत्रम् 335
वन्दे मातरम् 335
क्षमा प्रार्थना 337
२ शतनामस्तोत्राणि 339
गणेशाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 341
गणपत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 342
गणपति गकार अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 344
रामाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 348
आञ्जनेयाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 350
कृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 352
लक्ष्मीनारायणाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 356
नृसिंहाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 358
हयग्रीवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 359

धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 361
विष्णोरष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रम् 365
वेङ्कटेशाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 368
हरिहराष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 371
शिवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 375
शङ्कराचार्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 377
शिवाष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रम् 380
अर्धनारीश्वराष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 383
दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 387
अन्नपूर्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 390
गौर्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 392
शक्त्यष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रम् 393
सीताष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 399
लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 401
गोदाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 404
तुलस्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 407

सरस्वत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 410

सुब्रह्मण्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 412

कार्त्तिकेयाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 414

हरिहरपुत्राष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 416

आदित्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 418

सूर्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 420

गङ्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् 422

३ दीर्घ एवं सहस्रनामस्तोत्राणि 427

विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् 429

सङ्क्षेपरामायणम् 449

सन्तानगोपाल स्तोत्रम् 465

गकारादि श्री-गणपति सहस्रनाम स्तोत्रम् 476

वक्रतुण्डमहागणपतिसहस्रनामस्तोत्रम् 496

शिवसहस्रनामस्तोत्रम् 520

शिवमहिम्नः स्तोत्रम् 541

सूर्यसहस्रनामस्तोत्रम् 550

सरस्वती-सहस्रनाम-स्तोत्रम् 565

ललितात्रिशतीस्तोत्रम् 582

सौन्दर्यलहरी 589

॥ ॐ श्री-गणेशाय नमः ॥
॥ ॐ श्री-गुरुभ्यो नमः ॥
॥ हरिः ॐ ॥

Preface

सदाशिवसमारम्भां शङ्कराचार्यमध्यमाम्।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्॥

This book has been primarily inspired by two pieces of work — one, my *thāthā's* beautiful hand-written composition of *ślokās*, for his grandchildren, and *mantra-pushpam*, the excellent compilation of *vedamantrās* and *stotrās*, from Ramakrishna Mutt.

In this book, several wonderful stotras have been compiled. One of the aims of this book is to provide ready access to a number of *stotrās* in a compact form. I've often had to refer to a bundle of books for each *stotram*. This book, I hope, would prove to be really useful for people who would like to carry around these *stotrās* when they travel around, or would like a handy small book containing all these *stotrās*. The other important feature of this book is that all the *stotrās* are in *devanāgarī lipi*. I've often had access to a large number of *stotrās*, but in Tamil script. I find the *devanāgarī lipi* more conducive to correct pronunciation. There are several simple *shlokās* in this book, which I am sure children would be able to pick up easily. *Stotrās* such as *Nāma Rāmāyanam* should certainly be taught to children. Many of these stotras have been rendered wonderfully by *Śrīmatī M. S. Subbulakshmi*; one just needs to listen to her for both *bhakti* and inspiration. While the foremost importance is to be given to *bhakti*, one must certainly give importance to accurate pronunciation as well, and *MSS* is exemplary in that regard.

One should make it a point to chant at least few of these every day, and most of these in a month. One should certainly recite the *Vishnu Sahasranāmam* everyday. Of course, it must be emphasised that one's *nityakarmā* takes precedence over all these (सन्ध्याहीनः अशुचिः नित्यमनर्हहः सर्वकर्मसु) and one must make time for *sandhyāvandanādi nityakarmās* and such prayers everyday:

विप्रो वृक्षस्तस्य मूलं च सन्ध्या वेदाः शाखा धर्मकर्माणि पत्रम्।
तस्मान्मूलं यत्नतो रक्षणीयं छिन्ने मूले नैव शाखा न पत्रम्॥

In *Kaliyuga*, foremost importance is given to *nāmasankīrtanam*, and hence, stotras such as these should be recited with *bhakti*, regularly:

ध्यायन् कृते यजन् यज्ञैः त्रेतायां द्वापरेऽर्चयन्।
यदाप्नोति तदाप्नोति कलौ सङ्कीर्त्य केशवम्॥

There are several people whom I must thank for their contributions to this book. I cannot undermine the importance of the Sanskrit Documents Website[1], which happens to be the source for almost all of the texts contained in here. Many thanks to volunteers to build and present such a wonderful collection online. I must acknowledge the efforts of my friend *Prasād*, who has been instrumental (and almost wholly responsible) for the improved formatting in this book. I consulted him several times for help with XƎLaTeX. But for his TeX macros, some of the alignments would have never happened! I must also thank the writers of the software ITranslator[2], which has been the hammer-and-nail for compiling this book. The other tool critical for this book was XƎLaTeX, and it was indeed the release of MiKTeX 2.7 that led me to experiment with XƎLaTeX, which I think has been a success.

I take this opportunity to seek the blessings of my *Appā*, *Ammā*, my *Guru Shri S. Ananthakrishnan*, and my *Māmā*, who have inspired me and taught me all that I know. I must definitely thank *Sāketh* too, who has been inspirational in several ways.

I must specially thank my *ammā*, who has encouraged and inspired me a lot through the course of compiling this book. I also must thank her for proof-reading the text, and particularly helping with *Śyāmalā dandakam*. Thanks are also due to my wife, for her support and encouragement throughout.

Although we have put in efforts to remove any typographical errors in this book, I must emphasise that the errors in this book are solely due to my ignorance and I would be glad to rectify them. Please drop me a *gmail* at *karthik.raman* to notify me of even the smallest of errors.

---

[1] http://sanskritdocuments.org/

[2] http://www.omkarananda-ashram.org/Sanskrit/Itranslt.html

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं तु यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव नारायण नमोऽस्तु ते॥

This book is dedicated to Śrī Krishna.

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥

— श्रीमद्भगवद्गीता ९-२७

सर्वम् श्री-कृष्णार्पणमस्तु॥

May 16, 2008 KARTHIK RAMAN

॥ ॐ श्री-गणेशाय नमः ॥
॥ ॐ श्री-गुरुभ्यो नमः ॥
॥ हरिः ॐ ॥

Preface (Second edition)

सदाशिवसमारम्भां शङ्कराचार्यमध्यमाम्।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्॥

It is with great pleasure that I present the *second* edition of this book. The major changes have been the inclusion of some large *stotrās* such as the *Saundarya laharī*, *Sankshepa Rāmāyanam* and *Shiva sahasranāmam*, as well as numerous smaller *stotrās*. The *stotrās* have also now been segregated into two parts, with the longer *stotrās* occupying the second part of the book.

I thank all those who have made use of the previous edition of the book and have given me their feedback, which I hope has helped improve the content in the present edition. I thank my father-in-law, *Shri. N. Venugopālan*, for sending me the text of some rare *stotrās*. I also thank my wife *Mādhuryā*, for meticulously proof-reading *Saundarya laharī*. I also thank my *Ammā*, for suggesting the wonderful *Durgā pancharatnam*, composed by Mahaperival.

I welcome suggestions for improvements — please drop me a *gmail* at *karthik.rama*
to notify me of any comments/suggestions and even the smallest of errors.

सर्वम् श्री-कृष्णार्पणमस्तु॥

February 13, 2011 — Karthik Raman

॥ ॐ श्री-गणेशाय नमः ॥
॥ ॐ श्री-गुरुभ्यो नमः ॥
॥ हरिः ॐ ॥

Preface (Revised Third Edition)

सदाशिवसमारम्भां शङ्कराचार्यमध्यमाम्।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्॥

It is with great pleasure that I present the revised *second* edition of this book. Most of the changes in this version are minor, save for the inclusion of a few more *stotrās*, such as *Kāmākshī suprabhātam*, *Dakshināmūrti ashtakam*, *Santānagopāla stotram*, *Dāmodarāshtakam*, *Āpaduddhārana dvādaśa mukha hanumān stotram* and *Ranganātha gadyam*, to name a few. Many *śatanāma stotras* have been added too; since the number of *śatanāma stotras* has exceeded 25, I have now moved them to another part by itself. Several corrections have also been made to many of the stotras, from previous editions. Special thanks to *Sāketh* for proofreading *Gakārādi Ganapati Sahasranāma stotram* and for encoding many of the *ashtottara śatanāma stotras*.

सर्वम् श्री-कृष्णार्पणमस्तु॥

October 13, 2024 KARTHIK RAMAN

विभागः १

लघु स्तोत्राणि

॥ ॐ श्री-गणेशाय नमः ॥

॥ ॐ श्री-गुरुभ्यो नमः ॥

॥ हरिः ॐ ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

अगजाननपद्मार्कं गजाननमहर्निशम्।
अनेकदन्तं भक्तानाम् एकदन्तमुपास्महे॥

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥

व्यासं वसिष्ठनप्तारं शक्तेः पौत्रमकल्मषम्।
पराशरात्मजं वन्दे शुकतातं तपोनिधिम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

सदाशिवसमारम्भां शङ्कराचार्यमध्यमाम्।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्॥

श्रुतिस्मृतिपुराणानाम् आलयं करुणालयम्।
नमामि भगवत्पादशङ्करं लोकशङ्करम्॥

❀❀❀

॥ विघ्नेश्वर प्रार्थना ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

अगजाननपद्मार्कं गजाननमहर्निशम्।
अनेकदं तं भक्तानाम् एकदन्तमुपास्महे॥

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

यं ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति परे प्रधानं पुरुषं तथाऽन्ये।
विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्नविनायकाय॥

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थ-जम्बूफल-सार-भक्षितम्।
उमासुतं शोकविनाशकारणं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्॥

मूषकवाहन मोदकहस्त चामरकर्ण विलम्बितसूत्र।
वामनरूप महेश्वरपुत्र विघ्नविनायक पाद नमस्ते॥

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो गणाधिपः॥

धूमकेतुर्गणाध्यक्षो फालचन्द्रो गजाननः।
वक्रतुण्डः शूर्पकर्णो हेरम्भः स्कन्दपूर्वजः॥

षोडशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥

॥ गुरुपरम्परा-स्तुतिः ॥

॥ ॐ श्री-गणेशाय नमः ॥

॥ ॐ श्री-गुरुभ्यो नमः ॥

॥ हरिः ॐ ॥

नारायणं पद्मभुवं वसिष्ठं शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम्।
श्री-शङ्कराचार्यमथास्य पद्मपादं च हस्तामलकं च शिष्यम्
तं तोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद्गुरून् सन्ततमानतोऽस्मि॥

श्रुतिस्मृतिपुराणानाम् आलयं करुणालयम्।
नमामि भगवत्पादशङ्करं लोकशङ्करम्॥

लक्ष्मीनारायण इति पूर्वाश्रमनामभूषितं शान्तम्।
ऋग्वेदे सम्यगधीतिनं महादेवमाश्रयामि गुरुम्॥

अपारकरुणासिन्धुं ज्ञानदं शान्तरूपिणम्।
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं प्रणमामि मुदाऽन्वहम्॥

देवे देहे च देशे च भक्त्यारोग्य-सुख-प्रदम्।
बुध-पामर-सेव्यं तं श्री-जयेन्द्रं नमाम्यहम्॥

नमामः शङ्करान्वाख्य-विजयेन्द्रसरस्वतीम्।
श्रीगुरुं शिष्टमार्गानुनेतारं सन्मतिप्रदम्॥

सदाशिवसमारम्भां शङ्कराचार्यमध्यमाम्।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्॥

ऐङ्कार-ह्रीङ्कार-रहस्ययुक्त-
श्रीङ्कार-गूढार्थ-महाविभूत्या ।
ओङ्कार-मर्म-प्रतिपादिनीभ्याम्
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्॥

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने।
समस्तजगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः॥

॥ स्वस्ति-वचनम्/गुरुवन्दनम्॥

॥ ॐ श्री-गुरुभ्यो नमः॥
॥ श्री-महात्रिपुरसुन्दरी-समेत-श्री-चन्द्रमौलीश्वराय नमः॥
॥ श्री-काञ्ची-कामकोटि-पीठाधिपति-जगद्गुरु-
श्री-शङ्कराचार्य श्री-चरणयोः प्रणामाः॥

स्वस्ति श्रीमद्-अखिल-भूमण्डलालङ्कार-त्रयस्त्रिंशत्-कोटि-देवता-सेवित-श्री-कामाक्षी-देवी-सनाथ-श्रीमद्-एकाम्रनाथ-श्री-महादेवी-सनाथ-श्री-हस्तिगिरिनाथ-साक्षात्कार-परमाधिष्ठान-सत्यव्रत-नामाङ्कित-काञ्ची-दिव्य-क्षेत्रे, शारदामठ-सुस्थितानाम्, अतुलित-सुधारस-माधुर्य-कमलासन-कामिनी-धम्मिल्ल-सम्फुल्ल-मल्लिका-मालिका-निःष्यन्द-मकरन्द-झरी-सौवस्तिक-वाङ्निगुम्फ-विजृम्भणानन्द-तुन्दिलित-मनीषि-मण्डलानाम्, अनवरताद्वैत-विद्या-विनोद-रसिकानां निरन्तरालङ्कृतीकृत-शान्ति-दान्ति-भूम्नाम्, सकल-भुवन-चक्र-प्रतिष्ठापक-श्रीचक्र-प्रतिष्ठा-विख्यात-यशोऽलङ्कृतानाम्, निखिल-पाषण्ड-षण्ड-कण्टकोत्पाटनेन

विशदीकृत-वेद-वेदान्त-मार्ग-षण्मत-प्रतिष्ठापकाचार्याणाम्,
परमहंस-परिव्राजकाचार्यवर्य-जगद्गुरु-श्रीमत्-शङ्करभगवत्पादाचार्याणाम्,
अधिष्ठाने सिंहासनाभिषिक्त-श्रीमत्-चन्द्रशेखरेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादानाम्
अन्तेवासिवर्य-श्रीमद्-जयेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादानाम्
अन्तेवासिवर्य-श्रीमत्-शङ्करविजयेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादानां चरण-नलिनयोः
सप्रश्रयं साञ्जलिबन्धं च नमस्कुर्मः ॥

॥ सरस्वती प्रार्थना ॥

सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि।
विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥

पद्मपत्रविशालाक्षी पद्मकेसरवर्णिनी।
नित्यं पद्मालया देवी सा मां पातु सरस्वती ॥

या कुन्देन्दु-तुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणा-वरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा पूजिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥

दोर्भिर्युक्ता चतुर्भिः स्फटिकमणिनिभैरक्षमालां दधाना
हस्तेनैकेन पद्मं सितमपि च शुकं पुस्तकं चापरेण।
भासा कुन्देन्दुशङ्खस्फटिकमणिनिभा भासमानाऽसमाना
सा मे वाग्देवतेयं निवसतु वदने सर्वदा सुप्रसन्ना ॥

❀❀❀

॥ चिरञ्जीविस्तोत्रम् ॥

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरञ्जीविनः।
सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्
जीवेद्वर्षशतं प्राज्ञ अपमृत्युविवर्जितः॥

॥ पञ्चकन्यास्मरणम् ॥

अहल्या द्रौपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा।
पञ्चकन्याः स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम्॥

॥ साम्बशिव-स्मरणम् ॥

शिवनामनि भावितेऽन्तरङ्गे
महति ज्योतिषि मानिनीमयार्धे।
दुरितान्यपयान्ति दूरदूरे
मुहुरायान्ति महान्ति मङ्गलानि॥

॥ हरि-स्मरणम् ॥

स्मृते सकलकल्याणभाजनं यत्र जायते।
पुरुषस्तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्॥

॥ चक्षुरारोग्य-श्लोकः ॥

शर्यातिं च सुकन्यां च च्यवनं शक्रमश्विनौ।
भुक्तमात्रे स्मरेद् यस्तु चक्षुस्तस्य न हीयते॥

॥ भागवतस्मरणम् ॥

पाण्डवा ऊचुः

प्रह्लाद-नारद-पराशर-पुण्डरीक
व्यासाम्बरीष-शुक-शौनक-भीष्म-दाल्भ्यान्।
रुक्माङ्गदार्जुन-वसिष्ठ-विभीषणादीन्
पुण्यानिमान् परमभागवतान् स्मरामि॥

॥ गो-वन्दनम् ॥

गां च दृष्ट्वा नमस्कृत्य कृत्वा चैव प्रदक्षिणम्।
प्रदक्षिणी कृता तेन सप्तद्वीपा वसुन्धरा॥

सर्वकामदुघे देवि सर्वतीर्थाभिषेचिनी।
पावने सुरभिश्रेष्ठे देवि तुभ्यं नमोऽस्तु ते॥

❀❀❀

॥ तुलसी-वन्दनम् ॥

पापानि यानि रविसूनुपटस्थितानि
गो-ब्रह्म-बाल-पितृ-मातृ-वधादिकानि।
नश्यन्ति तानि तुलसीवनदर्शनेन
गोकोटिदानसदृशे फलमाशु च स्यात्॥ १ ॥

(तुलसीवनगमने प्रोक्तव्यम्)

या दृष्टा निखिलाघसङ्घशमनी स्पृष्टा वपुः पावनी
रोगाणामभिवन्दिता निरसनी सिक्तान्तकत्रासिनी।
प्रत्यासत्ति विधायिनी भगवतः कृष्णस्य संरोपिता
न्यस्ता तच्चरणे विमुक्तिफलदा तस्यै तुलस्यै नमः ॥ २ ॥

(तुलसी-जल-प्रोक्षणम्)

ललाटे यस्य दृश्येत तुलसीमूलमृत्तिका।
यमस्तं नेक्षितुं शक्तः किमु दूता भयङ्कराः ॥ ३ ॥

(मृत्तिका-धारणम्)

तुलसीकाननं यत्र यत्र पद्मवनानि च।
वसन्ति वैष्णवा यत्र तत्र सन्निहितो हरिः ॥ ४ ॥

पुष्कराद्यानि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्तथा।
वासुदेवादयो देवा वसन्ति तुलसीवने॥ ५॥

(प्रदक्षिणम्)

तुलसी श्रीसखि शुभे पापहारिणि पुण्यदे।
नमस्ते नारदनुते नारायणमनःप्रिये॥ ६ ॥

(नमस्कारः)

❀❀❀

॥ अर्जुन-नामानि (विराटपर्वान्तर्गतम्) ॥

अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः।
बीभत्सुर्विजयः कृष्णः सव्यसाची धनञ्जयः ॥

❀❀❀

॥ यमधर्मराजस्य १४ नामानि ॥

यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च।
वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयाय च॥

औदुम्बराय दध्नाय नीलाय परमेष्ठिने।
वृकोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय वै नमः॥

❀❀❀

॥ परब्रह्म प्रातः स्मरण स्तोत्रम् ॥

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरदात्मतत्वम्
सच्चित् सुखं परमहंसगतिं तुरीयम्।
यत् स्वप्नजागरसुषुप्तिमवैति नित्यम्
तद् ब्रह्म निष्कलमहं न च भूतसन्धः॥ १ ॥

प्रातर्भजामि मनसा वचसामगम्यम्
वाचो विभान्ति निखिला यदनुग्रहेण।
यं नेति नेति वचनैर्निगमा अवोचं
स्तं देवदेवमजमच्युतमाहुरग्र्यम्॥ २ ॥

प्रातर्नमामि तमसः परमर्कवर्णम्
पूर्णं सनातनपदं पुरूषोत्तमाख्यम्।
यस्मिन्निदं जगदशेषमशेषमूर्तौ
रज्ज्वां भुजङ्गम इव प्रतिमासितं वै॥ ३ ॥

श्लोकत्रयमिदं पुण्यं लोकत्रयविभूषणम्।
प्रातः काले पठेद्यस्तु स गच्छेत्परमं पदम्॥४॥

❀❀❀

॥ ध्यान-स्तोत्राणि ॥

॥ गणेश-ध्यानम् ॥

ओङ्कार-सन्निभमिभाननमिन्दुभालम्
मुक्ताग्रबिन्दुममलद्युतिमेकदन्तम् ।
लम्बोदरं कलचतुर्भुजमादिदेवम्
ध्यायेन्महागणपतिं मतिसिद्धिकान्तम् ॥

॥ विष्णु-ध्यानम् ॥

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिहृद्ध्यानगम्यम्
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

॥ लक्ष्मी-ध्यानम् ॥

लक्ष्मीं क्षीरसमुद्रराजतनयां श्रीरङ्गधामेश्वरीम्
दासीभूतसमस्तदेववनितां लोकैकदीपाङ्कुराम् ।
श्रीमन्मन्दकटाक्षलब्धविभवब्रह्मेन्द्रगङ्गाधराम्
त्वां त्रैलोक्यकुटुम्बिनीं सरसिजां वन्दे मुकुन्दप्रियाम् ॥

॥ राम-ध्यानम् ॥

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे
मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम् ।
अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परम्
व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम् ॥

वामे भूमिसुता पुरश्च हनुमान् पश्चात् सुमित्रासुतः
शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्वदलयोर्वाय्वादिकोणेषु च।
सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारासुतो जाम्बवान्
मध्ये नीलसरोजकोमलरुचिं रामं भजे श्यामलम्॥

॥ सीता-ध्यानम्॥

वामाङ्गे रघुनायकस्य रुचिरे या संस्थिता शोभना
या विप्राधिपयानरम्यनयना या विप्रपालानना।
विद्युत्पुञ्जविराजमानवसना भक्तार्तिसङ्खण्डना
श्रीमद्राघवपादपद्मयुगलन्यस्तेक्षणा साऽवतु॥

॥ हनुमत्-ध्यानम्॥

उष्ट्रारूढ-सुवर्चलासहचरन् सुग्रीवमित्राञ्जना-
सूनो वायुकुमार केसरितनूजाऽक्षादिदैत्यान्तक।
सीतशोकहराग्निनन्दन सुमित्रासम्भवप्राणद
श्रीभीमाग्रज शम्भुपुत्र हनुमान् सूर्यास्य तुभ्यं नमः॥

खड्गं खेटक-भिण्डिपाल-परशुं पाश-त्रिशूल-द्रुमान्
चक्रं शङ्ख-गदा-फलाङ्कुश-सुधाकुम्भान् हलं पर्वतम्।
टङ्कं पर्वतकार्मुकाहिडमरूनेतानि दिव्यायुधान्
एवं विंशतिबाहुभिश्च दधतं ध्यायेद्धनूमत्प्रभुम्॥

॥ सदाशिव-ध्यानम् ॥

वन्दे शम्भुमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणम्
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियम्
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्॥

॥ सुब्रह्मण्य-ध्यानम् ॥

सिन्दूरारुणमिन्दुकान्तिवदनं केयूरहारादिभिर्-
दिव्यैराभरणैर्विभूषिततनुं स्वर्गादिसौख्यप्रदम्।
अम्भोजाभय-शक्ति-कुक्कुटधरं रक्ताङ्गरागोज्ज्वलम्
सुब्रह्मण्यमुपास्महे प्रणमतां भीतिप्रणाशोद्यतम्॥

षड्वक्त्रं शिखिवाहनं त्रिनयनं चित्राम्बरालङ्कृतम्
वज्रं शक्तिमसिं त्रिशूलमभयं खेटं धनुश्चक्रकम्।
पाशं कुक्कुटमङ्कुशं च वरदं दोर्भिर्दधानं सदा
ध्यायेदीप्सित-सिद्धिदं शिवसुतं स्कन्दं सुराराधितम्॥

॥ वल्ली-ध्यानम् ॥

श्यामां पङ्कजधारिणीं मणिलसत् ताटङ्ककर्णोज्ज्वलाम्
दक्षे लम्बकरां किरीटमकुटां तुङ्गस्तनोत्कञ्चुकाम्।
अन्योन्येक्षणसंयुगां शरवणोद्भूतस्य सव्ये स्थिताम्
गुञ्जामाल्यधराम् प्रवालवसनां वल्लीश्वरीं भावये॥

॥ देवसेना-ध्यानम् ॥

पीतामुत्फलधारिणीं शशिसुतां पीताम्बरालङ्कृताम्
वामे लम्बकरां महेन्द्रतनयां मन्दारमालाधराम्।
दैवार्चितपादपद्मयुगलां स्कन्दस्य वामे स्थिताम्
सेनां दिव्यविभूषितां त्रिनयनां देवीं त्रिभङ्गीं भजे॥

॥ दण्डायुधपाणि-ध्यानम् ॥

कल्पद्रुमं प्रणमतां कमलारुणाभम्
स्कन्दं भुजद्वयमनामयमेकवक्त्रम्।
कात्यायनीप्रियसुतं कटिबद्धवामम्
कौपीनदण्डधरदक्षिणहस्तमीडे ॥

❀❀❀

॥ महागणेशपञ्चरत्नम् ॥

मुदाकरात्तमोदकं सदाविमुक्तिसाधकम्
कलाधरावतंसकं विलासिलोकरक्षकम्।
अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकम्
नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम्॥ १ ॥

नतेतरातिभीकरं नवोदितार्कभास्वरम्
नमत्सुरारिनिर्जरं नताधिकापदुद्धरम्।
सुरेश्वरं निधीश्वरं गजेश्वरं गणेश्वरम्
महेश्वरं तमाश्रये परात्परं निरन्तरम्॥ २ ॥

समस्तलोकशङ्करं निरस्तदैत्यकुञ्जरम्
दरेतरोदरं वरं वरेभवक्त्रमक्षरम्।
कृपाकरं क्षमाकरं मुदाकरं यशस्करम्
मनस्करं नमस्कृतां नमस्करोमि भास्वरम्॥ ३ ॥

अकिञ्चनार्तिमार्जनं चिरन्तनोक्तिभाजनम्
पुरारिपूर्वनन्दनं सुरारिगर्वचर्वणम्।
प्रपञ्चनाशभीषणं धनञ्जयादिभूषणम्
कपोलदानवारणं भजे पुराणवारणम्॥ ४ ॥

नितान्तकान्तदन्तकान्तिमन्तकान्तकात्मजम्
अचिन्त्यरूपमन्तहीनमन्तरायकृन्तनम्।
हृदन्तरे निरन्तरं वसन्तमेव योगिनाम्
तमेकदन्तमेव तं विचिन्तयामि सन्ततम्॥ ५ ॥

महागणेशपञ्चरत्नमादरेण योऽन्वहम्
प्रजल्पति प्रभातके हृदि स्मरन् गणेश्वरम्।
अरोगतामदोषतां सुसाहितीं सुपुत्रताम्
समाहितायुरष्टभूतिमभ्युपैति सोऽचिरात्॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-महागणेशपञ्चरत्नं सम्पूर्णम्॥

॥ गणाष्टकम्॥

एकदन्तं महाकायं तप्तकाञ्चनसन्निभम्।
लम्बोदरं विशालाक्षं वन्देऽहं गणनायकम्॥ १॥

मौञ्जीकृष्णाजिनधरं नागयज्ञोपवीतिनम्।
बालेन्दुशकलं मौलौ वन्देऽहं गणनायकम्॥ २॥

चित्ररत्न-विचित्राङ्ग-चित्रमालाविभूषितम्।
कामरूपधरं देवं वन्देऽहं गणनायकम्॥ ३॥

मूषकोत्तमम् आरुह्य देवासुरमहाहवे।
योद्धुकामं महावीर्यं वन्देऽहं गणनायकम्॥ ४॥

गजवक्त्रं सुरश्रेष्ठं कर्णचामरभूषितम्।
पाशाङ्कुशधरं देवं वन्देऽहं गणनायकम्॥ ५॥

यक्षकिन्नर-गन्धर्व-सिद्ध-विद्याधरैः सदा।
स्तूयमानं महाबाहुं वन्देऽहं गणनायकम्॥ ६॥

अम्बिकाहृदयानन्दं मातृभिः परिवेष्टितम्।
भक्तप्रियं मदोन्मत्तं वन्देऽहं गणनायकम्॥ ७॥

सर्वविघ्नकरं देवं सर्वविघ्नविवर्जितम्।
सर्वसिद्धिप्रदातारं वन्देऽहं गणनायकम्॥ ८॥

गणाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत् सततं नरः।
सिद्ध्यन्ति सर्वकार्याणि विद्यावान् धनवान् भवेत्॥

॥ गणपतिस्तवः ॥

गर्ग ऋषिरुवाच

अजं निर्विकल्पं निराकारमेकम्
निरानन्दमानन्दमद्वैतपूर्णम्।
परं निर्गुणं निर्विशेषं निरीहम्
परब्रह्मरूपं गणेशं भजेम॥ १॥

गुणातीतमानं चिदानन्दरूपम्
चिदाभासकं सर्वगं ज्ञानगम्यम्।
मुनिध्येयमाकाशरूपं परेशम्
परब्रह्मरूपं गणेशं भजेम॥ २॥

जगत्कारणं कारणज्ञानरूपम्
सुरादिं सुखादिं गुणेशं गणेशम्।
जगद्व्यापिनं विश्ववन्द्यं सुरेशम्
परब्रह्मरूपं गणेशं भजेम॥ ३॥

रजोयोगतो ब्रह्मरूपं श्रुतिज्ञम्
सदा कार्यसक्तं हृदाऽचिन्त्यरूपम्।
जगत्कारणं सर्वविद्यानिदानम्
परब्रह्मरूपं गणेशं नताः स्मः॥४॥

सदा सत्ययोग्यं मुदा क्रीडमानः
सुरारीन् हरन्तं जगत्पालयन्तम्।
अनेकावतारं निजज्ञानहारम्
सदा विश्वरूपं गणेशं नमामः॥५॥

तमोयोगिनं रुद्ररूपं त्रिनेत्रम्
जगद्धारकं तारकं ज्ञानहेतुम्।
अनेकागमैः स्वं जनं बोधयन्तम्
सदा सर्वरूपं गणेशं नमामः॥६॥

तमः स्तोमहारं जनाज्ञानहारम्
त्रयीवेदसारं परब्रह्मसारम्।
मुनिज्ञानकारं विदूरे विकारम्
सदा ब्रह्मरूपं गणेशं नमामः॥७॥

निजैरोषधीस्तर्पयन्तं कराद्यैः
सुरौघान्कलाभिः सुधास्राविणीभिः।
दिनेशांशुसन्तापहारं द्विजेशम्
शशाङ्कस्वरूपं गणेशं नमामः॥८॥

प्रकाशस्वरूपं नभो वायुरूपम्
विकारादिहेतुं कलाधाररूपम्।
अनेकक्रियानेकशक्तिस्वरूपम्
सदा शक्तिरूपं गणेशं नमामः॥९॥

प्रधानस्वरूपं महत्तत्त्वरूपम्
धराचारिरूपं दिगीशादिरूपम्।
असत्सत्स्वरूपं जगद्धेतुरूपम्
सदा विश्वरूपं गणेशं नताः स्मः॥१०॥

त्वदीये मनः स्थापयेदङ्घ्रियुग्मे
जनो विघ्नसङ्घातपीडां लभेत।
लसत्सूर्यबिम्बे विशाले स्थितोऽयम्
जनो ध्वान्तपीडां कथं वा लभेत॥११॥

वयं भ्रामिताः सर्वथाऽज्ञानयोगा-
दलब्धास्तवाङ्घ्रिं बहून् वर्षपूगान्।
इदानीमवाप्तास्तवैव प्रसादात्
प्रपन्नान् सदा पाहि विश्वम्भराद्य॥१२॥

एवं स्तुतो गणेशस्तु सन्तुष्टोऽभून्महामुने।
कृपया परयोपेतोऽभिधातुमुपचक्रमे॥

॥इति श्रीमद्-गर्गऋषिकृतो श्री-गणपतिस्तवः सम्पूर्णः॥

॥ गणेशभुजङ्गम् ॥

रणत् क्षुद्रघण्टानिनादाभिरामम्
चलत् ताण्डवोद्दण्डवत्पद्मतालम्।
लसत् तुन्दिलाङ्गोपरिव्यालहारम्
गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥ १॥

ध्वनिध्वंसवीणालयोल्लासिवक्त्रम्
स्फुरच्छुण्डदण्डोल्लसद्बीजपूरम्।
गलद्दर्पसौगन्ध्यलोलालिमालम्
गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥ २॥

प्रकाशज्जपारक्तरन्तप्रसून-
प्रवालप्रभातारुणज्योतिरेकम्।
प्रलम्बोदरं वक्रतुण्डैकदन्तम्
गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥ ३॥

विचित्रस्फुरद्रत्नमालाकिरीटम्
किरीटोल्लसच्चन्द्ररेखाविभूषम्।
विभूषैकभूषं भवध्वंसहेतुम्
गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥ ४॥

उदञ्चद्भुजावल्लरीदृश्यमूलोच्च-
चलद्-भ्रूलता-विभ्रमभ्राजदक्षम्।
मरुत् सुन्दरीचामरैः सेव्यमानम्
गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥ ५॥

स्फुरन्निष्ठुरालोलपिङ्गाक्षितारम्
कृपाकोमलोदारलीलावतारम्।
कलाबिन्दुगं गीयते योगिवर्यैर्-
गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥ ६॥

यमेकाक्षरं निर्मलं निर्विकल्पम्
गुणातीतमानन्दमाकारशून्यम्।
परं पारमोङ्कारमाम्नायगर्भम्
वदन्ति प्रगल्भं पुराणं तमीडे॥ ७॥

चिदानन्दसान्द्राय शान्ताय तुभ्यम्
नमो विश्वकर्त्रे च हर्त्रे च तुभ्यम्।
नमोऽनन्तलीलाय कैवल्यभासे
नमो विश्वबीज प्रसीदेशसूनो॥ ८॥

इमं सुस्तवं प्रातरुत्थाय भक्त्या
पठेद्यस्तु मर्त्यो लभेत्सर्वकामान्।
गणेशप्रसादेन सिध्यन्ति वाचो
गणेशे विभौ दुर्लभं किं प्रसन्ने॥ ९॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-गणेशभुजङ्गं सम्पूर्णम्॥

॥ महागणपति नवार्णवेदपाद स्तवः ॥

श्रीकण्ठतनय श्रीश श्रीकर श्रीदलार्चित।
श्रीविनायक सर्वेश श्रियं वासय मे कुले॥ १॥

गजानन गणाधीश द्विजराज-विभूषित।
भजे त्वां सच्चिदानन्द ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पते॥ २॥

णषष्ठवाच्यनाशाय रोगाटविकुठारिणे।
घृणापालितलोकाय वनानां पतये नमः॥ ३॥

धियं प्रयच्छते तुभ्यम् ईप्सितार्थप्रदायिने।
दीप्तभूषणभूषाय दिशां च पतये नमः॥ ४॥

पञ्चब्रह्मस्वरूपाय पञ्चपातकहारिणे।
पञ्चतत्त्वात्मने तुभ्यं पशूनां पतये नमः॥ ५॥

तटित्कोटि-प्रतीकाश-तनवे विश्वसाक्षिणे।
तपस्वि-ध्यायिने तुभ्यं सेनानिभ्यश्च वो नमः॥ ६॥

ये भजन्त्यक्षरं त्वां ते प्राप्नुवन्त्यक्षरात्मताम्।
नैकरूपाय महते मुष्णतां पतये नमः॥ ७॥

नगजावरपुत्राय सुरराजार्चिताय च।
सगुणाय नमस्तुभ्यं सुमृडीकाय मीढुषे॥ ८॥

महापातकसङ्घात महारणभयापह।
त्वदीय कृपया देव सर्वानव यजामहे॥ ९॥

नवार्णरत्ननिगमपादसम्पुटितां स्तुतिम्।
भक्त्या पठन्ति ये तेषां तुष्टो भव गणाधिप॥

॥ इति श्री-महागणपति नवार्णवेदपादस्तवः सम्पूर्णः॥

❀❀❀

॥ वेङ्कटेश सुप्रभातम् ॥

कौसल्या सुप्रजा राम पूर्वा सन्ध्या प्रवर्तते।
उत्तिष्ठ नरशार्दूल कर्तव्यं दैवमाह्निकम्॥ १ ॥

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द उत्तिष्ठ गरुडध्वज।
उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्यं मङ्गलं कुरु॥ २ ॥

मातः समस्तजगतां मधुकैटभारेः
वक्षोविहारिणि मनोहरदिव्यमूर्ते।
श्रीस्वामिनि श्रितजनप्रियदानशीले
श्रीवेङ्कटेशदयिते तव सुप्रभातम्॥ ३ ॥

तव सुप्रभातमरविन्दलोचने
भवतु प्रसन्नमुखचन्द्रमण्डले।
विधिशङ्करेन्द्रवनिताभिरर्चिते
वृषशैलनाथदयिते दयानिधे॥ ४ ॥

अत्र्यादिसप्तऋषयः समुपास्य सन्ध्याम्
आकाशसिन्धुकमलानि मनोहराणि।
आदाय पादयुगमर्चयितुं प्रपन्नाः
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम्॥ ५ ॥

पञ्चाननाब्जभवषण्मुखवासवाद्याः
त्रैविक्रमादिचरितं विबुधाः स्तुवन्ति।
भाषापतिः पठति वासरशुद्धिमारात्
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम्॥ ६ ॥

ईषत्प्रफुल्ल-सरसीरुह-नारिकेल-
पूगद्रुमादि-सुमनोहरपालिकानाम्।
आवाति मन्दमनिलः सह दिव्यगन्धैः
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम्॥ ७॥

उन्मील्य नेत्रयुगमुत्तमपञ्जरस्थाः
पात्रावशिष्टकदलीफलपायसानि ।
भुक्त्वा सलीलमथ केलिशुकाः पठन्ति
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम्॥ ८॥

तन्त्रीप्रकर्षमधुरस्वनया विपञ्च्या
गायत्यनन्तचरितं तव नारदोऽपि।
भाषासमग्रमसकृत्करचाररम्यम्
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम्॥ ९॥

भृङ्गावली च मकरन्दरसानुविद्ध-
झङ्कारगीत निनदैः सह सेवनाय।
निर्यात्युपान्तसरसीकमलोदरेभ्यः
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम्॥ १०॥

योषागणेन वरदध्निविमथ्यमाने
घोषालयेषु दधिमन्थनतीव्रघोषाः।
रोषात्कलिं विदधते ककुभश्च कुम्भाः
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम्॥ ११॥

पद्मेशमित्रशतपत्रगतालिवर्गाः
हर्तुं श्रियं कुवलयस्य निजाङ्गलक्ष्म्या।
भेरीनिनादमिव बिभ्रति तीव्रनादम्
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम्॥ १२॥

श्रीमन्नभीष्टवरदाखिललोकबन्धो
श्रीश्रीनिवास जगदेकदयैकसिन्धो।
श्रीदेवतागृहभुजान्तरदिव्यमूर्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ १३॥

श्रीस्वामिपुष्करिणिकाऽऽप्लवनिर्मलाङ्गाः
श्रेयोऽर्थिनो हरविरिञ्चिसनन्दनाद्याः।
द्वारे वसन्ति वरवेत्रहतोत्तमाङ्गाः
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ १४॥

श्रीशेषशैल-गरुडाचल-वेङ्कटाद्रि-
नारायणाद्रि-वृषभाद्रि-वृषाद्रि-मुख्याम्।
आख्यां त्वदीय वसतेरनिशं वदन्ति
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ १५॥

सेवापराः शिव-सुरेश-कृशानु-धर्म-
रक्षोऽम्बुनाथ-पवमान-धनाधिनाथाः।
बद्धाञ्जलि-प्रविलसन्निजशीर्ष-देशाः
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ १६॥

धाटीषु ते विहगराज-मृगाधिराज-
नागाधिराज-गजराज-हयाधिराजाः।
स्वस्वाधिकार-महिमाऽधिकमर्थयन्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ १७॥

सूर्येन्दु-भौम-बुध-वाक्पति-काव्य-सौरि-
स्वर्भानु-केतु-दिविषत्परिषत्प्रधानाः।
त्वद्दास-दास-चरमावधि-दासदासाः
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ १८॥

त्वत् पादधूलिभरितस्फुरितोत्तमाङ्गाः
स्वर्गापवर्गनिरपेक्ष-निजान्तरङ्गाः।
कल्पागमाऽऽकलनयाऽऽकुलतां लभन्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ १९॥

त्वद्गोपुराग्रशिखराणि निरीक्षमाणाः
स्वर्गापवर्गपदवीं परमां श्रयन्तः।
मर्त्या मनुष्यभुवने मतिमाश्रयन्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ २०॥

श्रीभूमिनायक दयादिगुणामृताब्धे
देवाधिदेव जगदेकशरण्यमूर्ते।
श्रीमन्ननन्त-गरुडादिभिरर्चिताङ्घ्रे
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ २१॥

श्रीपद्मनाभ पुरुषोत्तम वासुदेव
वैकुण्ठ माधव जनार्दन चक्रपाणे।
श्रीवत्सचिह्न शरणागत-पारिजात
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ २२॥

कन्दर्पदर्पहरसुन्दरदिव्यमूर्ते
कान्ताकुचाम्बुरुह-कुङ्मल-लोलदृष्टे।
कल्याणनिर्मलगुणाकर दिव्यकीर्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ २३॥

मीनाकृते कमठ कोल नृसिंह वर्णिन्
स्वामिन् परश्वथ तपोधन रामचन्द्र।
शेषांशराम यदुनन्दन कल्किरूप
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ २४॥

एला-लवङ्ग-घनसार-सुगन्धि-तीर्थम्
दिव्यं वियत्सरिति हेमघटेषु पूर्णम्।
धृत्वाऽद्य वैदिकशिखामणयः प्रहृष्टाः
तिष्ठन्ति वेङ्कटपते तव सुप्रभातम्॥ २५॥

भास्वानुदेति विकचानि सरोरुहाणि
सम्पूरयन्ति निनदैः ककुभो विहङ्गाः।
श्रीवैष्णवाः सततमर्थित-मङ्गलास्ते
धामाऽऽश्रयन्ति तव वेङ्कट सुप्रभातम्॥ २६॥

ब्रह्मादयः सुरवराः समहर्षयस्ते
सन्तः सनन्दन मुखास्तव योगिवर्याः।
धामान्तिके तव हि मङ्गलवस्तुहस्ताः
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ २७॥

लक्ष्मीनिवास निरवद्यगुणैकसिन्धो
संसार-सागर-समुत्तरणैकसेतो ।
वेदान्तवेद्य निजवैभव भक्तभोग्य
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ २८॥

इत्थं वृषाचलपतेरिह सुप्रभातम्
ये मानवाः प्रतिदिनं पठितुं प्रवृत्ताः।
तेषां प्रभातसमये स्मृतिरङ्गभाजाम्
प्रज्ञां परार्थसुलभां परमां प्रसूते॥ २९॥

॥ इति श्री-वेङ्कटेश सुप्रभातम् सम्पूर्णम्॥

॥ वेङ्कटेश स्तोत्रम्॥

कमलाकुच-चूचुक-कुङ्कुमतो नियतारुणितातुल-नीलतनो।
कमलायतलोचन लोकपते विजयी भव वेङ्कटशैलपते॥ १॥

सचतुर्मुख-षण्मुख-पञ्चमुख-प्रमुखाखिलदैवतमौलिमणे।
शरणागतवत्सल सारनिधे परिपालय मां वृषशैलपते॥ २॥

अतिवेलतया तव दुर्विषहैरनुवेलकृतैरपराधशतैः।
भरितं त्वरितं वृषशैलपते परया कृपया परिपाहि हरे॥ ३॥

अधिवेङ्कटशैलमुदारमते जनताभिमताधिकदानरतात्।
परदेवतया गदितान्निगमैः कमलादयितान्न परं कलये॥४॥

कलवेणुरवावशगोपवधू शतकोटिवृतात्स्मरकोटिसमात्।
प्रतिवल्लविकाभिमतात्सुखदाद् वसुदेवसुतान्न परं कलये॥५॥

अभिरामगुणाकर दाशरथे जगदेकधनुर्धर धीरमते।
रघुनायक राम रमेश विभो वरदो भव देव दयाजलधे॥६॥

अवनीतनया-कमनीयकरं रजनीकरचारुमुखाम्बुरुहम्।
रजनीचरराजतमोमिहिरं महनीयमहं रघुराम मये॥७॥

सुमुखं सुहृदं सुलभं सुखदं स्वनुजं च सुखायममोघशरम्।
अपहाय रघूद्वहमन्यमहं न कथञ्चन कञ्चन जातु भजे॥८॥

विना वेङ्कटेशं न नाथो न नाथः
सदा वेङ्कटेशं स्मरामि स्मरामि।
हरे वेङ्कटेश प्रसीद प्रसीद
प्रियं वेङ्कटेश प्रयच्छ प्रयच्छ॥९॥

अहं दूरतस्ते पदाम्भोजयुग्म
प्रणामेच्छयाऽऽगत्य सेवां करोमि।
सकृत्सेवया नित्यसेवाफलं त्वम्
प्रयच्छ प्रयच्छ प्रभो वेङ्कटेश॥१०॥

अज्ञानिना मया दोषानशेषान् विहितान् हरे।
क्षमस्व त्वं क्षमस्व त्वं शेषशैल-शिखामणे॥११॥

॥इति श्री-वेङ्कटेश-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ वेङ्कटेश प्रपत्तिः ॥

ईशानां जगतोऽस्य वेङ्कटपतेर्विष्णोः परां प्रेयसीम्
तद्वक्षःस्थल-नित्य-वासरसिकां तत्क्षान्ति-संवर्धिनीम्।
पद्मालङ्कृतपाणिपल्लवयुगां पद्मासनस्थां श्रियम्
वात्सल्यादिगुणोज्ज्वलां भगवतीं वन्दे जगन्मातरम्॥ १॥

श्रीमन् कृपाजलनिधे कृतसर्वलोक
सर्वज्ञ शक्त नतवत्सल सर्वशेषिन्।
स्वामिन् सुशील सुलभाश्रितपारिजात
श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये॥ २॥

आनूपुरार्पितसुजातसुगन्धिपुष्प-
सौरभ्यसौरभकरौ समसन्निवेशौ।
सौम्यौ सदाऽनुभवनेऽपि नवानुभाव्यौ
श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये॥ ३॥

सद्योविकासिसमुदित्वरसान्द्रराग-
सौरभ्यनिर्भरसरोरुहसाम्यवार्ताम्।
सम्यक्षु साहसपदेषु विलेखयन्तौ
श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये॥ ४॥

रेखामयध्वजसुधाकलशातपत्र-
वज्राङ्कुशाम्बुरुहकल्पकशङ्खचक्रैः।
भव्यैरलङ्कृततलौ परतत्त्वचिह्नैः
श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये॥ ५॥

ताम्रोदरद्युतिपराजितपद्मरागौ
बाह्यैर्महोभिरभिभूतमहेन्द्रनीलौ।
उद्यन्नखांशुभिरुदस्तशशाङ्कभासौ
श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये॥६॥

सप्रेमभीति कमलाकरपल्लवाभ्याम्
संवाहनेऽपि सपदि क्लममादधानौ।
कान्ताववाङ्मन-सगोचर-सौकुमार्यौ
श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये॥७॥

लक्ष्मीमहीतदनुरूपनिजानुभाव-
नीलादिदिव्यमहिषीकरपल्लवानाम्।
आरुण्यसङ्क्रमणतः किल सान्द्ररागौ
श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये॥८॥

नित्यानमद्विधिशिवादिकिरीटकोटि-
प्रत्युप्त-दीप्त-नवरत्न-महःप्ररोहैः।
नीराजनाविधिमुदारमुपाददानौ
श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये॥९॥

विष्णोः पदे परम इत्युतिदप्रशंसौ
यौ मध्व उत्स इति भोग्यतयाऽप्युपात्तौ।
भूयस्तथेति तव पाणितलप्रदिष्टौ
श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये॥१०॥

पार्थाय तत्सदृश-सारथिना त्वयैव
यौ दर्शितौ स्वचरणौ शरणं व्रजेति।
भूयोऽपि मह्यमिह तौ करदर्शितौ ते
श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये॥ ११ ॥

मन्मूर्ध्नि कालियफणे विकटाटवीषु
श्रीवेङ्कटाद्रिशिखरे शिरसि श्रुतीनाम्।
चित्तेऽप्यनन्यमनसां सममाहितौ ते
श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये॥ १२ ॥

अम्लानहृष्यदवनीतलकीर्णपुष्पौ
श्रीवेङ्कटाद्रि-शिखराभरणायमानौ।
आनन्दिताखिल-मनो-नयनौ तवैतौ
श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये॥ १३ ॥

प्रायः प्रपन्न-जनता-प्रथमावगाह्यौ
मातुः स्तनाविव शिशोरमृतायमानौ।
प्राप्तौ परस्परतुलामतुलान्तरौ ते
श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये॥ १४ ॥

सत्त्वोत्तरैः सतत-सेव्यपदाम्बुजेन
संसार-तारक-दयार्द्र-दृगञ्चलेन।
सौम्यौ पयन्तृमुनिना मम दर्शितौ ते
श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये॥ १५ ॥

श्रीश श्रिया घटिकया त्वदुपायभावे
प्राप्ये त्वयि स्वयमुपेयतया स्फुरन्त्या।
नित्याश्रिताय निरवद्यगुणाय तुभ्यम्
स्यां किङ्करो वृषगिरीश न जातु मह्यम्॥ १६ ॥

॥ इति श्रीवेङ्कटेश प्रपत्तिः सम्पूर्णः ॥

॥ वेङ्कटेश मङ्गलाशासनम् ॥

श्रियः कान्ताय कल्याणनिधये निधयेऽर्थिनाम्।
श्रीवेङ्कटनिवासाय श्रीनिवासाय मङ्गलम्॥ १ ॥

लक्ष्मी-सविभ्रमालोक-सुभ्रू-विभ्रमचक्षुषे।
चक्षुषे सर्वलोकानां वेङ्कटेशाय मङ्गलम्॥ २ ॥

श्रीवेङ्कटाद्रि-शृङ्गाग्र-मङ्गलाभरणाङ्घ्रये।
मङ्गलानां निवासाय श्रीनिवासाय मङ्गलम्॥ ३ ॥

सर्वावयवसौन्दर्य-सम्पदा सर्वचेतसाम्।
सदा सम्मोहनायास्तु वेङ्कटेशाय मङ्गलम्॥ ४ ॥

नित्याय निरवद्याय सत्यानन्दचिदात्मने।
सर्वान्तरात्मने श्रीमद्-वेङ्कटेशाय मङ्गलम्॥ ५ ॥

स्वतस्सर्वविदे सर्वशक्तये सर्वशेषिणे।
सुलभाय सुशीलाय वेङ्कटेशाय मङ्गलम्॥ ६ ॥

परस्मै ब्रह्मणे पूर्णकामाय परमात्मने।
प्रयुञ्जे परतत्त्वाय वेङ्कटेशाय मङ्गलम्॥ ७ ॥

आकालतत्त्वमश्रान्तमात्मनामनुपश्यताम्।
अतृप्त्यमृतरूपाय वेङ्कटेशाय मङ्गलम्॥८॥

प्रायः स्वचरणौ पुंसां शरण्यत्वेन पाणिना।
कृपयाऽऽदिशते श्रीमद्-वेङ्कटेशाय मङ्गलम्॥९॥

दयामृत-तरङ्गिण्यास्तरङ्गैरिव शीतलैः।
अपाङ्गैः सिञ्चते विश्वं वेङ्कटेशाय मङ्गलम्॥१०॥

स्रग्भूषाम्बरहेतीनां सुषमावहमूर्तये।
सर्वार्तिशमनायास्तु वेङ्कटेशाय मङ्गलम्॥११॥

श्रीवैकुण्ठविरक्ताय स्वामिपुष्करिणीतटे।
रमया रममाणाय वेङ्कटेशाय मङ्गलम्॥१२॥

श्रीमत् सुन्दरजामातृमुनिमानसवासिने।
सर्वलोकनिवासाय श्रीनिवासाय मङ्गलम्॥१३॥

मङ्गलाशासनपरैर्मदाचार्य-पुरोगमैः ।
सर्वैश्च पूर्वैराचार्यैः सत्कृतायास्तु मङ्गलम्॥१४॥

॥इति श्री-वेङ्कटेश-मङ्गलाशासनं सम्पूर्णम्॥

॥वेङ्कटेश करावलम्बस्तोत्रम्॥

श्रीशेषशैल-सुनिकेतन दिव्यमूर्ते
नारायणाच्युत हरे नलिनायताक्ष।
लीलाकटाक्ष-परिरक्षित-सर्वलोक
श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥१॥

ब्रह्मादिवन्दितपदाम्बुज शङ्खपाणे
श्रीमत्सुदर्शन-सुशोभित-दिव्यहस्त।
कारुण्यसागर शरण्य सुपुण्यमूर्ते
श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥२॥

वेदान्त-वेद्य भवसागर-कर्णधार
श्रीपद्मनाभ कमलार्चितपादपद्म।
लोकैक-पावन परात्पर पापहारिन्
श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥३॥

लक्ष्मीपते निगमलक्ष्य निजस्वरूप
कामादिदोष-परिहारक बोधदायिन्।
दैत्यादिमर्दन जनार्दन वासुदेव
श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥४॥

तापत्रयं हर विभो रभसा मुरारे
संरक्ष मां करुणया सरसीरुहाक्ष।
मच्छिष्य इत्यनुदिनं परिरक्ष विष्णो
श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥५॥

श्री-जातरूपनवरत्न-लसत्किरीट
कस्तूरिकातिलकशोभिललाटदेश।
राकेन्दुबिम्ब-वदनाम्बुज वारिजाक्ष
श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥६॥

वन्दारुलोक-वरदान-वचोविलास
रत्नाढ्यहार-परिशोभित-कम्बुकण्ठ।
केयूररत्न-सुविभासि-दिगन्तराल
श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥७॥

दिव्याङ्गदाञ्चित-भुजद्वय मङ्गलात्मन्
केयूरभूषण-सुशोभित-दीर्घबाहो ।
नागेन्द्र-कङ्कण-करद्वय कामदायिन्
श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥८॥

स्वामिन् जगद्धरणवारिधिमध्यमग्नम्
मामुद्धराद्य कृपया करुणापयोधे।
लक्ष्मीं च देहि मम धर्म-समृद्धिहेतुम्
श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥९॥

दिव्याङ्गरागपरिचर्चित-कोमलाङ्ग
पीताम्बरावृततनो तरुणार्क-दीप्ते।
सत्काञ्चनाभ-परिधान-सुपट्टबन्ध
श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥१०॥

रत्नाढ्यदाम-सुनिबद्ध-कटि-प्रदेश
माणिक्यदर्पण-सुसन्निभ-जानुदेश।
जङ्घाद्वयेन परिमोहित सर्वलोक
श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥११॥

लोकैकपावन-सरित्परिशोभिताङ्घ्रे
त्वत्पाददर्शन दिने च ममाघमीश।
हार्दं तमश्च सकलं लयमाप भूमन्
श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥ १२॥

कामादि-वैरि-निवहोऽच्युत मे प्रयातः
दारिद्र्यमप्यपगतं सकलं दयालो।
दीनं च मां समवलोक्य दयार्द्र-दृष्ट्या
श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥ १३॥

श्रीवेङ्कटेश-पदपङ्कज-षट्पदेन
श्रीमन्नृसिंहयतिना रचितं जगत्याम्।
ये तत्पठन्ति मनुजाः पुरुषोत्तमस्य
ते प्राप्नुवन्ति परमां पदवीं मुरारेः॥ १४॥

॥ इति श्री-शृङ्गेरि-जगद्गुरुणा श्री-नृसिंहभारती-स्वामिना रचितं
श्री-वेङ्कटेश-करावलम्बस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ वेङ्कटेश अष्टकम्॥

वेङ्कटेशो वासुदेवः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः।
सङ्कर्षणोऽनिरुद्धश्च शेषाद्रिपतिरेव च॥ १॥

जनार्दनः पद्मनाभो वेङ्कटाचलवासनः।
सृष्टिकर्ता जगन्नाथो माधवो भक्तवत्सलः॥ २॥

गोविन्दो गोपतिः कृष्णः केशवो गरुडध्वजः।
वराहो वामनश्चैव नारायण अधोक्षजः॥ ३॥

श्रीधरः पुण्डरीकाक्षः सर्वदेवस्तुतो हरिः।
श्रीनृसिंहो महासिंहः सूत्राकारः पुरातनः॥४॥

रमानाथो महीभर्ता भूधरः पुरुषोत्तमः।
चोळपुत्रप्रियः शान्तो ब्रह्मादीनां वरप्रदः॥५॥

श्रीनिधिः सर्वभूतानां भयकृद्भयनाशनः।
श्रीरामो रामभद्रश्च भवबन्धैकमोचकः॥६॥

भूतावासो गिरिवासः श्रीनिवासः श्रियः पतिः।
अच्युतानन्त गोविन्दो विष्णुर्वेङ्कटनायकः॥७॥

सर्वदेवैकशरणं सर्वदेवैकदैवतम्।
समस्तदेवकवचं सर्वदेवशिखामणिः॥८॥

इतीदं कीर्तितं यस्य विष्णोरमिततेजसः।
त्रिकाले यः पठेन्नित्यं पापं तस्य न विद्यते॥९॥

राजद्वारे पठेद्-घोरे सङ्ग्रामे रिपुसङ्कटे।
भूतसर्पपिशाचादिभयं नास्ति कदाचन॥१०॥

अपुत्रो लभते पुत्रान् निर्धनो धनवान् भवेत्।
रोगार्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात्॥११॥

यद्यदिष्टतमं लोके तत्तत्प्राप्नोत्यसंशयः।
ऐश्वर्यं राजसम्मानं भुक्तिमुक्तिफलप्रदम्॥१२॥

विष्णोर्लोकैकसोपानं सर्वदुःखैकनाशनम्।
सर्वैश्वर्यप्रदं नृणां सर्वमङ्गलकारकम्॥१३॥

मायावि परमानन्दं त्यक्त्वा वैकुण्ठमुत्तमम्।
स्वामिपुष्करिणीतीरे रमया सह मोदते॥१४॥

कल्याणाद्भुतगात्राय कामितार्थप्रदायिने।
श्रीमद्वेङ्कटनाथाय श्रीनिवासाय मङ्गलम्॥१५॥

॥इति श्री-ब्रह्माण्डपुराणे ब्रह्मनारदसंवादे वेङ्कटगिरिमाहात्म्ये
श्री-वेङ्कटेश-अष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥वेङ्कटेशद्वादशनामस्तोत्रम्॥

वेङ्कटेशो वासुदेवो वारिजासनवन्दितः।
स्वामिपुष्करिणीवासः शङ्खचक्रगदाधरः॥१॥

पीताम्बरधरो देवो गरुडारूढशोभितः।
विश्वात्मा विश्वलोकेशो विजयो वेङ्कटेश्वरः॥२॥

एतद्द्वादशनामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णोः सायुज्यमाप्नुयात्॥३॥

॥इति श्री-वेङ्कटेशद्वादशनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥श्रीनिवास गद्यम्॥

श्रीमदखिल-महीमण्डल-मण्डन-धरणिधर-मण्डलाखण्डलस्य’ निखिल-सुरासुर-वन्दित-वराहक्षेत्र-विभूषणस्य’ शेषाचल-गरुडाचल-वृषभाचल-नारायणाचलाञ्जनाचलादि शिखरिमालाकुलस्य’ नादमुख-बोधनिधि-वीधिगुण-साभरण-सत्त्वनिधि-तत्त्वनिधि-भक्तिगुणपूर्ण-

श्रीशैलपूर्ण-गुणवशंवद-परमपुरुष-कृपापूर-विभ्रमदतुङ्गशृङ्ग-
गलद्गगनगङ्गासमालिङ्गितस्य' सीमातिग गुण रामानुजमुनि नामाङ्कित बहु
भूमाश्रय सुरधामालय वनरामायत वनसीमापरिवृत विशङ्कटतट निरन्तर
विजृम्भित भक्तिरस निर्झरानन्तार्याहार्य प्रस्रवणधारापूर
विभ्रमद-सलिलभरभरित महातटाक मण्डितस्य' कलिकर्दम मलमर्दन
कलितोद्यम विलसद्यम नियमादिम मुनिगणनिषेव्यमाण
प्रत्यक्षीभवन्निजसलिल मज्जन नमज्जन निखिलपापनाशन पापनाशन
तीर्थाध्यासितस्य' मुरारिसेवक जरादिपीडित निरार्तिजीवन निराश भूसुर
वरातिसुन्दर सुराङ्गनारति कराङ्गसौष्ठव कुमारताकृति कुमारतारक समापनोदय
तनूनपातक महापदामय विहापनोदित सकलभुवन विदित
कुमारधाराभिधान-तीर्थाधिष्ठितस्य' धरणितल गत सकल हतकलिल
शुभसलिल गतबहुल विविधमल हति चतुर रुचिरतर विलोकनमात्र विदलित
विविधमहापातक स्वामिपुष्करिणी समेतस्य' बहुसङ्कट नरकावट पतदुत्कट
कलिकङ्कट कलुषोद्भट जनपातक विनिपातक रुचिनाटक करहाटक कलशाहृत
कमलारत शुभमज्जन जल सज्जन भरित निजदुरित हतिनिरत जनसतत
निरर्गलपेपीयमान सलिल सम्भृत विशङ्कट कटाहतीर्थ विभूषितस्य' एवमादिम
भूरिमञ्जिम सर्वपातक गर्वहातक सिन्धुडम्बर हारिशम्बर विविधविपुल
पुण्यतीर्थनिवहनिवासस्य' श्रीमतो वेङ्कटाचलस्य
शिखरशेखर-महाकल्पशाखी' खर्वीभवदति गर्वीकृत गुरुमेर्वीशगिरि
मुखोर्वीधर कुलदर्वीकर दयितोर्वीधर शिखरोर्वी' सतत सदूर्वीकृति चरणघन
गर्वचर्वण निपुण तनुकिरणमसृणित गिरिशिखरशेखरतरुनिकर तिमिरः'
वाणीपतिशर्वाणी दयितेन्द्राणीश्वर मुख नाणीयोरसवेणी निभशुभवाणी

नुतमहिमाणी' यस्तर कोणी भवदखिलभुवनभवनोदरः' वैमानिकगुरु भूमाधिक
गुण रामानुज कृतधामाकर करधामारि दरललामाच्छकनक दामायित
निजरामालय' नवकिसलयमय तोरणमालायित वनमालाधरः' कालाम्बुद
मालानिभ नीलालक जालावृत बालाब्ज सलीलामल फालाङ्कसमूलामृत
धाराद्वयावधीरण' धीरललिततर विशदतर घन
घनसारमयोर्ध्वपुण्ड्ररेखाद्वयरुचिरः' सुविकस्वर दलभास्वर कमलोदर गतमेदुर
नवकेसर ततिभासुर परिपिञ्जर कनकाम्बर कलितादर ललितोदर तदालम्ब
जम्भरिपु मणिस्तम्भ गम्भीरिमदम्भस्तम्भ समुज्जृम्भमान पीवरोरुयुगल
तदालम्ब पृथुल कदली मुकुल मदहरणजङ्घाल जङ्घायुगलः' नव्यदल भव्यगल
पीतमल शोणिमल सन्मृदुल सत्किसलयाश्रुजल-कारि बल शोणतल पदकमल
निजाश्रय बलबन्दीकृत शरदिन्दुमण्डली विभ्रमदादभ्र शुभ्र
पुनर्भवाधिष्ठिताङ्गुलीगाढ निपीडित पद्मापनः' जानुतलावधि लम्बि विडम्बित
वारण शुण्डादण्ड विजृम्भित नीलमणिमय कल्पकशाखा विभ्रमदायि
मृणाललतायत समुज्ज्वलतर कनकवलय वेल्लितैकतर बाहुदण्डयुगलः'
युगपदुदित कोटि खरकर हिमकर मण्डल जाज्वल्यमान सुदर्शन पाञ्चजन्य
समुत्तुङ्गित शृङ्गापर बाहु युगलः' अभिनवशाण समुत्तेजित महामहा नीलखण्ड
मतखण्डन निपुण नवीन परितप्त कार्तस्वर कवचित महनीय पृथुल सालग्राम
परम्परा गुम्भित नाभिमण्डल पर्यन्त लम्बमान प्रालम्बदीप्ति समालम्बित
विशाल वक्षःस्थलः' गङ्गाझर तुङ्गाकृति भङ्गावलि भङ्गावह सौधावलि बाधावह
धारानिभ हारावलि दूराहत गेहान्तर मोहावह महिम मसृणित महातिमिरः'
पिङ्गाकृति भृङ्गारु निभाङ्गार दलाङ्गामल निष्कासित दुष्कार्यघ निष्कावलि
दीपप्रभ नीपच्छवि तापप्रद कनकमालिका पिशङ्गित सर्वाङ्गः' नवदलित

दलवलित मृदुललित कमलतति मदविहति चतुरतर पृथुलतर सरसतर कनकसरमय रुचिकण्ठिका कमनीयकण्ठः’ वाताशनाधिपति शयन कमन परिचरण रतिसमेताखिल फणधरतति मतिकरकनकमय नागाभरण परिवीताखिलाङ्गावगमित शयन भूताहिराज जातातिशयः’ रविकोटी परिपाटी धरकोटी रपताटी कितवाटी रसधाटी धर मणिगणकिरण विसरण सततविधुत तिमिरमोह गर्भगेहः’ अपरिमित विविधभुवन भरिताखण्ड ब्रह्माण्डमण्डल पिचण्डिलः’ आर्यधुर्यानन्तार्य पवित्र खनित्रपात पात्रीकृत निजचुबुक गतव्रणकिण विभूषणवहनसूचित श्रितजनवत्सलतातिशयः’ मड्डुडिण्डिम ढमरु झर्झर काहली पटहावली मृदुमर्दलाशि मृदङ्ग दुन्दुभि ढक्किकामुक हृद्य वाद्यक मधुरमङ्गल नादमेदुर विसृमर सरस गानरस रुचिर सन्तत सन्तन्यमान नित्योत्सव पक्षोत्सव मासोत्सव संवत्सरोत्सवादि विविधोत्सव कृतानन्दः’ श्रीमदानन्दनिलय विमानवासः’ सतत पद्मालया पदपद्मरेणु सञ्चितवक्षःस्थल पटवासः’ श्रीश्रीनिवासः’ सुप्रसन्नो विजयताम्॥ १ ॥

नाटारभि भूपाल बिलहरि मायामालव गौला असावेरी’ सावेरी शुद्धसावेरी देवगान्धारी’ धन्यासी बेगड हिन्दुस्थानी कापी तोडी नाटकुरञ्जी’ श्रीराग सहन अठाण सारङ्गी दर्बारु पन्तुवराली वराली’ कल्याणी पूर्वीकल्याणी यमुनाकल्याणी हुसेनी जञ्झोटी कौमारी’ कन्नड खरहरप्रिया कलहंस नादनामक्रिया मुखारी’ तोडी पुन्नागवराली काम्भोजी भैरवी’ यदुकुलकाम्भोजी आनन्दभैरवी शङ्कराभरण मोहन रेगुप्ती सौराष्ट्री’ नीलाम्बरी गुणक्रिया मेघगर्जनी’ हंसध्वनि शोकवराली मध्यमावती जेञ्जुरुटी सुरटी’ द्विजावन्ती मलयाम्बरी कापि परशुधनासरी देशिकतोडी’ आहिरी वसन्तगौली सन्तु केदारगौला कनकाङ्गी रत्नाङ्गी गानमूर्ति’ वनस्पति वाचस्पति दानवती मानरूपी

सेनापति’ हनुमत्तोडी धेनुका नाटकप्रिया कोकिलप्रिया रूपवती गायकप्रिया’ वकुलाभरण चक्रवाक सूर्यकान्त हाटकाम्बरी झङ्कारध्वनि’ नटभैरवी गीर्वाणी हरिकाम्भोजी धीरशङ्कराभरण नागानन्दिनी यागप्रिया’ विसृमर सरस गानरसेत्यादि सन्तत सन्तन्यमान नित्योत्सव पक्षोत्सव मासोत्सव संवत्सरोत्सवादि विविधोत्सव कृतानन्दः’ श्रीमदानन्दनिलयवासः’ सतत पद्मालया पदपद्मरेणु सञ्चितवक्षःस्थल पटवासः’ श्रीश्रीनिवासः’ सुप्रसन्नो विजयताम्॥२॥

श्री-अलमेल्मङ्गासमेत श्रीश्रीनिवास स्वामी’ सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा’ पनस पाटली पालाश बिल्व पुन्नाग चूत कदली चन्दन चम्पक मञ्जुल मन्दार हिन्तुलादि तिलक मातुलुङ्ग नारिकेल क्रौञ्चाशोक माधूकामलक हिन्दुक नागकेतक पूर्णकुन्द पूर्ण गन्ध रस कन्द वन वञ्जुल खर्जूर साल कोविदार हिन्ताल पनस विकट वैकसवरुण तरुधमरण विचुलङ्काश्वत्थ यक्ष वसुध वर्मांध मन्त्रिणी’ तिन्त्रिणी बोध न्यग्रोध घटपटल जम्बूमतल्ली वसति वासती जीवनी पोषणी प्रमुख निखिल सन्दोह तमाल माला महित विराजमान चषक मयूर हंस भारद्वाज कोकिल चक्रवाक कपोत गरुड नारायण नानाविध पक्षिजाति समूह ब्रह्म-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र-नानाजात्युद्भव देवता निर्माण’ माणिक्य-वज्र-वैडूर्य-गोमेधिक-पुष्यराग-पद्मरागेन्द्र प्रवालमौक्तिक-स्फटिक-हेम-रत्नखचित धगद्धगायमान रथगज तुरग पदादि सेवा समूह’ भेरी-मद्दल-मुरवक-झल्लरी-शङ्ख-काहल नृत्यगीत-तालवाद्य-कुम्भवाद्य-पञ्चमुखवाद्य अहमीमार्गन्नटीवाद्य किटिकुन्तलवाद्य सुरटीचौण्डोवाद्य तिमिलकवितालवाद्य तक्कराग्रवाद्य घण्टाताडन ब्रह्मताल समताल कोट्टरीताल ढक्करीताल ऐक्काल’ धारावाद्य पटह

कांस्यवाद्य भरतनाट्यालङ्कार किन्नर किम्पुरुष रुद्रवीणा मुखवीणा वायुवीणा' तुम्बुरुवीणा गान्धर्ववीणा नारदवीणा' स्वरमण्डल रावणहस्तवीणास्तक्रियालङ्क्रियालङ्कृतानेक-विधवाद्य वापीकूपतटाकादि गङ्गा यमुना रेवा वरुणा शोणनदी शोभनदी' सुवर्णमुखी वेगवती वेत्रवती क्षीरनदी बाहुनदी गरुडनदी कावेरी ताम्रपर्णी प्रमुखा महापुण्यनद्यः' सजलतीर्थैः सहोभयकूलङ्गत सदाप्रवाह ऋग्यजुःसामाथर्वण वेदशास्त्रेतिहासपुराण-सकलविद्याघोष भानुकोटिप्रकाश चन्द्रकोटिसमान नित्यकल्याण परम्परोत्तरोत्तराभिवृद्धिर्भूयादिति' भवन्तो महान्तोऽनुगृह्णन्तु। ब्रह्मण्यो राजा धार्मिकोऽस्तु। देशोऽयं निरुपद्रवोऽस्तु। सर्वे साधुजनाः सुखिनो विलसन्तु। समस्तसन्मङ्गलानि सन्तु। उत्तरोत्तराभिवृद्धिरस्तु। सकलकल्याणसमृद्धिरस्तु॥ ३ ॥

॥ हरिः ॐ ॥

॥ इति श्री-श्रीशैलरङ्गाचार्यविरचितं श्री-श्रीनिवासगद्यं सम्पूर्णम्॥

॥ नामरामायणम्॥

॥ बालकाण्डः ॥

शुद्धब्रह्मपरात्पर राम
कालात्मकपरमेश्वर राम
शेषतल्पसुखनिद्रित राम
ब्रह्माद्यमरप्रार्थित राम
चण्डकिरणकुलमण्डन राम
श्रीमद्दशरथनन्दन राम
कौसल्यासुखवर्धन राम
विश्वामित्रप्रियधन राम
घोरताटकाघातक राम
मारीचादिनिपातक राम
कौशिकमखसंरक्षक राम
श्रीमदहल्योद्धारक राम
गौतममुनिसम्पूजित राम
सुरमुनिवरगणसंस्तुत राम

नाविकधावितमृदुपद राम
मिथिलापुरजनमोहक राम
विदेहमानसरञ्जक राम
त्र्यम्बककार्मुखभञ्जक राम
सीतार्पितवरमालिक राम
कृतवैवाहिककौतुक राम
भार्गवदर्पविनाशक राम
श्रीमदयोध्यापालक राम

राम राम जय राजा राम।
राम राम जय सीता राम॥

॥ अयोध्याकाण्डः ॥

अगणितगुणगणभूषित राम
अवनीतनयाकामित राम
राकाचन्द्रसमानन राम
पितृवाक्याश्रितकानन राम
प्रियगुहविनिवेदितपद राम
तत्क्षालितनिजमृदुपद राम
भरद्वाजमुखानन्दक राम
चित्रकूटाद्रिनिकेतन राम
दशरथसन्ततचिन्तित राम
कैकेयीतनयार्थित राम
विरचितनिजपितृकर्मक राम
भरतार्पितनिजपादुक राम

राम राम जय राजा राम।
राम राम जय सीता राम॥

॥ अरण्यकाण्डः ॥

दण्डकावनजनपावन राम
दुष्टविराधविनाशन राम
शरभङ्गसुतीक्ष्णार्चित राम
अगस्त्यानुग्रहवर्धित राम
गृध्राधिपसंसेवित राम
पञ्चवटीतटसुस्थित राम
शूर्पणखार्त्तिविधायक राम
खरदूषणमुखसूदक राम
सीताप्रियहरिणानुग राम
मारीचार्तिकृताशुग राम
विनष्टसीतान्वेषक राम
गृध्राधिपगतिदायक राम
कबन्धबाहुच्छेदन राम
शबरीदत्तफलाशन राम

राम राम जय राजा राम।
राम राम जय सीता राम॥

॥ किष्किन्धाकाण्डः ॥

हनुमत्सेवितनिजपद राम
नतसुग्रीवाभीष्टद राम
गर्वितवालिसंहारक राम
वानरदूतप्रेषक राम
हितकरलक्ष्मणसंयुत राम

राम राम जय राजा राम।
राम राम जय सीता राम॥

॥ सुन्दरकाण्डः ॥

कपिवरसन्ततसंस्मृत राम
तद्गतिविघ्नध्वंसक राम
सीताप्राणाधारक राम
दुष्टदशाननदूषित राम
शिष्टहनूमद्भूषित राम
सीतावेदितकाकावन राम
कृतचूडामणिदर्शन राम
कपिवरवचनाश्वासित राम

राम राम जय राजा राम।
राम राम जय सीता राम॥

॥ युद्धकाण्डः ॥

रावणनिधनप्रस्थित राम
वानरसैन्यसमावृत राम
शोषितसरिदीशार्थित राम
विभीषणाभयदायक राम
पर्वतसेतुनिबन्धक राम
कुम्भकर्णशिरश्छेदक राम
राक्षससङ्घविमर्दक राम
अहिमहिरावणचारण राम
संहृतदशमुखरावण राम
विधिभवमुखसुरसंस्तुत राम
खःस्थितदशरथवीक्षित राम
सीतादर्शनमोदित राम
अभिषिक्तविभीषणनत राम
पुष्पकयानारोहण राम
भरद्वाजाभिनिषेवण राम
भरतप्राणप्रियकर राम
साकेतपुरीभूषण राम
सकलस्वीयसमानत राम
रत्नलसत्पीठास्थित राम
पट्टाभिषेकालङ्कृत राम
पार्थिवकुलसम्मानित राम
विभीषणार्पितरङ्गक राम
कीशकुलानुग्रहकर राम
सकलजीवसंरक्षक राम
समस्तलोकाधारक राम

राम राम जय राजा राम।
राम राम जय सीता राम॥

॥ उत्तरकाण्डः ॥

आगतमुनिगणसंस्तुत राम
विश्रुतदशकण्ठोद्भव राम
सितालिङ्गननिर्वृत राम
नीतिसुरक्षितजनपद राम
विपिनत्याजितजनकज राम
कारितलवणासुरवध राम
स्वर्गतशम्बुकसंस्तुत राम
स्वतनयकुशलवनन्दित राम
अश्वमेधक्रतुदीक्षित राम
कालावेदितसुरपद राम
आयोध्यकजनमुक्तिद राम
विधिमुखविबुधानन्दक राम

तेजोमयनिजरूपक राम
संसृतिबन्धविमोचक राम
धर्मस्थापनतत्पर राम
भक्तिपरायणमुक्तिद राम
सर्वचराचरपालक राम
सर्वभवामयवारक राम
वैकुण्ठालयसंस्थित राम
नित्यानन्दपदस्थित राम

राम राम जय राजा राम।
राम राम जय सीता राम॥

॥ इति श्रीमन्नारदविरचितं नामरामायणं सम्पूर्णम्॥

❀❀❀

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे
मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम्।
अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परम्
व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम्॥

वामे भूमिसुता पुरश्च हनुमान् पश्चात् सुमित्रासुतः
शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्वदलयोर्वाय्वादिकोणेषु च।
सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारासुतो जाम्बवान्
मध्ये नीलसरोजकोमलरुचिं रामं भजे श्यामलम्॥

॥ रामरक्षास्तोत्रम्॥

अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य।
बुधकौशिक ऋषिः। श्रीसीतारामचन्द्रो देवता।
अनुष्टुप् छन्दः। सीता शक्तिः। श्रीमद्-हनुमान कीलकम्।
श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थे रामरक्षास्तोत्रजपे विनियोगः॥

॥ ध्यानम् ॥

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थम्
पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम्।
वामाङ्कारूढ-सीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभम्
नानालङ्कारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डनं रामचन्द्रम्॥

चरितं रघुनाथस्य शतकोटि-प्रविस्तरम्।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम्॥

ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम्
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम्।
सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तञ्चरान्तकम्
स्वलीलया जगत्त्रातुम् आविर्भूतम् अजं विभुम्॥

रामरक्षां पठेत्प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम्॥

॥ कवचम् ॥

शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः।
कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती॥ १ ॥

घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः।
जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवन्दितः॥ २ ॥

स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः।
करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित्॥ ३ ॥

मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः।
गुह्यं जितेन्द्रियः पातु पृष्ठः पातु रघूत्तमः॥ ४ ॥

वक्षः पातु कबन्धारिः स्तनौ गीर्वाणवन्दितः।
पार्श्वौ कुलपतिः पातु कुक्षिमिक्ष्वाकुनन्दनः॥५॥

सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः।
ऊरू रघूत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत्॥६॥

जानुनी सेतुकृत् पातु जङ्घे दशमुखान्तकः।
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः॥७॥

एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत्।
स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत्॥८॥

पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः॥९॥

रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन्।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति॥१०॥

जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाऽभिरक्षितम्।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः॥११॥

वज्रपञ्जरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत्।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमङ्गलम्॥१२॥

आदिष्टवान् यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः।
तथा लिखितवान् प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः॥१३॥

आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम्।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान् स नः प्रभुः॥१४॥

तरुणौ रूपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ॥ १५॥

फलमूलाशनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ॥ १६॥

शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम्।
रक्षः कुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ॥ १७॥

आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशौ अक्षयाशुगनिषङ्गसङ्गिनौ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणौ अग्रतः पथि सदैव गच्छताम्॥ १८॥

सन्नद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा।
यच्छन्मनोरथोऽस्माकं रामः पातु सलक्ष्मणः॥ १९॥

रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तमः॥ २०॥

वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः।
जानकीवल्लभः श्रीमान् अप्रमेयपराक्रमः॥ २१॥

इत्येतानि जपन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः॥ २२॥

॥ इति श्री-पद्मपुराणे वेदव्यासकृतौ भगवद्वसिष्ठ-श्री-बुधकौशिकप्रणीतं
वज्रपञ्जरं नाम श्री-रामकवचं सम्पूर्णम्॥

रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम्।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नरः॥ १॥

रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरम्
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम्।
राजेन्द्रं सत्यसन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्तिम्
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम्॥ २॥

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥ ३॥

श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम
श्रीराम राम शरणं भव राम राम॥ ४॥

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृह्णामि।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये॥ ५॥

माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः
स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुः
नान्यं जाने नैव जाने न जाने॥ ६॥

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे तु जनकात्मजा।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम्॥ ७॥

लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये॥ ८॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥ ९॥

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्॥ १०॥

आपदाम् अपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥ ११॥

भर्जनं भवबीजानाम् अर्जनं सुखसम्पदाम्।
तर्जनं यमदूतानां राम रामेति गर्जनम्॥ १२॥

रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहम्
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर॥ १३॥

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने॥ १४॥

॥ श्री-सीतारामचन्द्रार्पणमस्तु॥

❀❀❀

मङ्गलं कोसलेन्द्राय महनीयगुणाब्धये।
चक्रवर्तितनूजाय सार्वभौमाय मङ्गलम्॥

॥ अहल्याकृत-रामस्तोत्रम् ॥

अहल्योवाच

अहो कृतार्थाऽस्मि जगन्निवास ते
पादाब्जसंलग्नरजः कणादहम्।
स्पृशामि यत्पद्मजशङ्करादिभिः
विमृग्यते रन्धितमानसैः सदा॥ १ ॥

अहो विचित्रं तव राम चेष्टितम्
मनुष्यभावेन विमोहितं जगत्।
चलस्यजस्रं चरणादिवर्जितः
सम्पूर्ण आनन्दमयोऽतिमायिकः॥ २ ॥

यत्पादपङ्कजपरागपवित्रगात्रा
भागीरथी भवविरिञ्चिमुखान् पुनाति।
साक्षात्स एव मम दृग्विषयो यदाऽऽस्ते
किं वर्ण्यते मम पुराकृतभागधेयम्॥ ३ ॥

मर्त्यावतारे मनुजाकृतिं हरिम्
रामाभिधेयं रमणीयदेहिनम्।
धनुर्धरं पद्मविशाललोचनम्
भजामि नित्यं न परान् भजिष्ये॥ ४ ॥

यत्पादपङ्कजरजः श्रुतिभिर्विमृग्यम्
यन्नाभिपङ्कजभवः कमलासनश्च।
यन्नामसाररसिको भगवान्पुरारिः
तं रामचन्द्रमनिशं हृदि भावयामि॥ ५ ॥

यस्यावतारचरितानि विरिञ्चिलोके
गायन्ति नारदमुखा भवपद्मजाद्याः।
आनन्दजाश्रुपरिषिक्तकुचाग्रसीमा
वागीश्वरी च तमहं शरणं प्रपद्ये॥६॥

सोऽयं परात्मा पुरुषः पुराणः
एकः स्वयं ज्योतिरनन्त आद्यः।
मायातनुं लोकविमोहनीयाम्
धत्ते परानुग्रह एष रामः॥७॥

अयं हि विश्वोद्भवसंयमानाम्
एकः स्वमायागुणबिम्बितो यः।
विरिञ्चिविष्ण्वीश्वरनामभेदान्
धत्ते स्वतन्त्रः परिपूर्ण आत्मा॥८॥

नमोऽस्तु ते राम तवाङ्घ्रिपङ्कजम्
श्रिया धृतं वक्षसि लालितं प्रियात्।
आक्रान्तमेकेन जगत्त्रयं पुरा
ध्येयं मुनीन्द्रैरभिमानवर्जितैः॥९॥

जगतामादिभूतस्त्वं जगत्त्वं जगदाश्रयः।
सर्वभूतेष्वसंयुक्त एको भाति भवान् परः॥१०॥

ओङ्कारवाच्यस्त्वं राम वाचामविषयः पुमान्।
वाच्यवाचकभेदेन भवानेव जगन्मयः॥११॥

कार्यकारणकर्तृत्वफलसाधनभेदतः।
एको विभासि राम त्वं मायया बहुरूपया॥१२॥

त्वन्मायामोहितधियस्त्वां न जानन्ति तत्त्वतः।
मानुषं त्वाऽभिमन्यन्ते मायिनं परमेश्वरम्॥ १३॥

आकाशवत्त्वं सर्वत्र बहिरन्तर्गतोऽमलः।
असङ्गो ह्यचलो नित्यः शुद्धो बुद्धः सदव्ययः॥ १४॥

योषिन्मूढाऽहमज्ञा ते तत्त्वं जाने कथं विभो।
तस्मात्ते शतशो राम नमस्कुर्यामनन्यधीः॥ १५॥

देव मे यत्रकुत्रापि स्थिताया अपि सर्वदा।
त्वत्पादकमले सक्ता भक्तिरेव सदाऽस्तु मे॥ १६॥

नमस्ते पुरुषाध्यक्ष नमस्ते भक्तवत्सल।
नमस्तेऽस्तु हृषीकेश नारायण नमोऽस्तु ते॥ १७॥

भवभयहरमेकं भानुकोटिप्रकाशम्
करधृतशरचापं कालमेघावभासम्।
कनकरुचिरवस्त्रं रत्नवत्कुण्डलाढ्यम्
कमलविशदनेत्रं सानुजं राममीडे॥ १८॥

स्तुत्वैवं पुरुषं साक्षाद्राघवं पुरतः स्थितम्।
परिक्रम्य प्रणम्याऽऽशु सानुज्ञाता ययौ पतिम्॥ १९॥

अहल्यया कृतं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिसंयुतः।
स मुच्यतेऽखिलैः पापैः परं ब्रह्माधिगच्छति॥ २०॥

पुत्राद्यर्थे पठेद्भक्त्या रामं हृदि निधाय च।
संवत्सरेण लभते वन्ध्या अपि सुपुत्रकम्॥ २१॥

सर्वान् कामानवाप्नोति रामचन्द्रप्रसादतः॥ २२॥

ब्रह्मघ्नो गुरुतल्पगोऽपि पुरुषः स्तेयी सुरापोऽपि वा
मातृभ्रातृविहिंसकोऽपि सततं भोगैकबद्धातुरः।
नित्यं स्तोत्रमिदं जपन् रघुपतिं भक्त्या हृदिस्थं स्मरन्
ध्यायन् मुक्तिमुपैति किं पुनरसौ स्वाचारयुक्तो नरः॥२३॥

॥इति श्रीमदध्यात्मरामायणे श्री-अहल्याविरचितं श्री-रामचन्द्रस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥रामभुजङ्गप्रयातस्तोत्रम्॥

विशुद्धं परं सच्चिदानन्द-रूपम्
गुणाधारमाधार-हीनं वरेण्यम्।
महान्तं विभान्तं गुहान्तं गुणान्तम्
सुखान्तं स्वयं धाम रामं प्रपद्ये॥१॥

शिवं नित्यमेकं विभुं तारकाख्यम्
सुखाकारमाकार-शून्यं सुमान्यम्।
महेशं कलेशं सुरेशं परेशं
नरेशं निरीशं महीशं प्रपद्ये॥२॥

यदाऽवर्णयत् कर्ण-मूलेऽन्त-काले
शिवो राम रामेति रामेति काश्याम्।
तदेकं परं तारक-ब्रह्म-रूपम्
भजेऽहं भजेऽहं भजेऽहं भजेऽहम्॥३॥

महारत्न-पीठे शुभे कल्प-मूले
सुखासीनमादित्य-कोटि-प्रकाशम्।
सदा जानकी-लक्ष्मणोपेतमेकम्
सदा रामचन्द्रं भजेऽहं भजेऽहम्॥४॥

क्वणद्रत्न-मञ्जीर-पादारविन्दम्
लसन्मेखला-चारु-पीताम्बराढ्यम्।
महारत्न-हारोल्लसत्-कौस्तुभाङ्गम्
नदच्चञ्चरी-मञ्जरी-लोल-मालम् ॥५॥

लसच्चन्द्रिका-स्मेर-शोणाधराभम्
समुद्यत्-पतङ्गेन्दु-कोटि-प्रकाशम् ।
नमद्-ब्रह्म-रुद्रादि-कोटीर-रत्न-
स्फुरत्-कान्ति-नीराजना-ऽऽराधिताङ्घ्रिम्॥६॥

पुरः प्राञ्जलीनाञ्जनेयादि-भक्तान्
स्व-चिन्मुद्रया भद्रया बोधयन्तम्।
भजेऽहं भजेऽहं सदा रामचन्द्रम्
त्वदन्यं न मन्ये न मन्ये न मन्ये॥७॥

यदा मत्समीपं कृतान्तः समेत्य
प्रचण्ड-प्रतापैर्-भटैर्-भीषयेन्माम्।
तदाऽऽविष्करोषि त्वदीयं स्वरूपम्
तदापत्-प्रणाशं स-कोदण्ड-बाणम्॥८॥

निजे मानसे मन्दिरे सन्निधेहि
प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र।
स-सौमित्रिणा कैकयी-नन्दनेन
स्व-शक्त्याऽनुभक्त्या च संसेव्यमान॥ ९॥

स्वभक्ताग्रगण्यैः कपीशैर्-महीशैर्-
अनीकैरनेकैश्च राम प्रसीद।
नमस्ते नमोऽस्त्वीश राम प्रसीद
प्रशाधि प्रशाधि प्रकाशं प्रभो माम्॥ १०॥

त्वमेवासि दैवं परं मे यदेकम्
सुचैतन्यमेतत् त्वदन्यं न मन्ये।
यतोऽभूदमेयं वियद्-वायु-तेजो-
जलोर्व्यादि-कार्यं चरं चाचरं च॥ ११॥

नमः सच्चिदानन्द-रूपाय तस्मै
नमो देव-देवाय रामाय तुभ्यम्।
नमो जानकी-जीवितेशाय तुभ्यम्
नमः पुण्डरीकायताक्षाय तुभ्यम्॥ १२॥

नमो भक्ति-युक्तानुरक्ताय तुभ्यम्
नमः पुण्य-पुञ्जैक-लभ्याय तुभ्यम्।
नमो वेद-वेद्याय चाऽऽद्याय पुंसे
नमः सुन्दरायेन्दिरा-वल्लभाय॥ १३॥

नमो विश्व-कर्त्रे नमो विश्व-हर्त्रे
नमो विश्व-भोक्त्रे नमो विश्व-मात्रे।
नमो विश्व-नेत्रे नमो विश्व-जेत्रे
नमो विश्व-पित्रे नमो विश्व-मात्रे॥ १४॥

नमस्ते नमस्ते समस्त-प्रपञ्च-
प्रभाग-प्रवीण प्रमाण-प्रवीण।
मदीयं मनस्-त्वत्-पद-द्वन्द्व-सेवाम्
विधातुं प्रवृत्तं सुचैतन्य-सिद्ध्यै॥ १५॥

शिलाऽपि त्वदङ्घ्रि-क्षमा-सङ्गि-रेणु-
प्रसादाद्धि चैतन्यमाऽधत्त राम।
नरस्-त्वत्पद-द्वन्द्व-सेवा-विधानात्
सुचैतन्यमेतीति किं चित्रमद्य॥ १६॥

पवित्रं चरित्रं विचित्रं त्वदीयम्
नरा ये स्मरन्त्यन्वहं रामचन्द्र।
भवन्तं भवान्तं भरन्तं भजन्तो
लभन्ते कृतान्तं न पश्यन्त्यतोऽन्ते॥ १७॥

स पुण्यः स गण्यः शरण्यो ममायम्
नरो वेद यो देव-चूडामणिं त्वाम्।
सदाकारमेकं चिदानन्द-रूपम्
मनो-वागगम्यं परं धाम राम॥ १८॥

प्रचण्ड-प्रताप-प्रभावाभिभूत-
प्रभूतारि-वीर प्रभो रामचन्द्र।
बलं ते कथं वर्ण्यतेऽतीव बाल्ये
यतोऽखण्डि चण्डीश-कोदण्ड-दण्डः॥ १९॥

दशग्रीवमुग्रं सपुत्रं समित्रम्
सरिद्-दुर्ग-मध्यस्थ-रक्षो-गणेशम् ।
भवन्तं विना राम वीरो नरो वा-
ऽसुरो वाऽमरो वा जयेत् कस्-त्रिलोक्याम्॥ २०॥

सदा राम रामेति रामामृतं ते
सदाराममानन्द-निष्यन्द-कन्दम्।
पिबन्तं नमन्तं सुदन्तं हसन्तम्
हनूमन्तमन्तर्भजे तं नितान्तम्॥ २१॥

सदा राम रामेति रामामृतं ते
सदाराममानन्द-निष्यन्द-कन्दम्।
पिबन्नन्वहं नन्वहं नैव मृत्योर्-
बिभेमि प्रसादादसादात् तवैव॥ २२॥

असीता-समेतैरकोदण्ड-भूषैर्-
असौमित्रि-वन्द्यैरचण्ड-प्रतापैः।
अलङ्केश-कालैरसुग्रीव-मित्रैर्-
अरामाभिधेयैरलं दैवतैर्नः॥ २३॥

अवीरासन-स्थैरचिन्मुद्रिकाढ्यैर्-
अभक्ताञ्जनेयादि-तत्त्व-प्रकाशैः।
अमन्दार-मूलैरमन्दार-मालैर्-
अरामाभिधेयैरलं दैवतैर्नः॥२४॥

असिन्धु-प्रकोपैरवन्द्य-प्रतापैर्-
अबन्धु-प्रयाणैरमन्द-स्मिताढ्यैः।
अदण्ड-प्रवासैरखण्ड-प्रबोधैर्-
अरामाभिधेयैरलं दैवतैर्नः॥२५॥

हरे राम सीतापते रावणारे
खरारे मुरारेऽसुरारे परेति।
लपन्तं नयन्तं सदा-कालमेवम्
समालोकयाऽऽलोकयाऽशेष-बन्धो॥२६॥

नमस्ते सुमित्रा-सुपुत्राभिवन्द्य
नमस्ते सदा कैकयी-नन्दनेड्य।
नमस्ते सदा वानराधीश-वन्द्य
नमस्ते नमस्ते सदा रामचन्द्र॥२७॥

प्रसीद प्रसीद प्रचण्ड-प्रताप
प्रसीद प्रसीद प्रचण्डारि-काल।
प्रसीद प्रसीद प्रपन्नानुकम्पिन्
प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र॥२८॥

भुजङ्ग-प्रयातं परं वेद-सारम्
मुदा रामचन्द्रस्य भक्त्या च नित्यम्।
पठन् सन्ततं चिन्तयन् स्वान्तरङ्गे
स एव स्वयं रामचन्द्रः स धन्यः॥२९॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-रामभुजङ्गप्रयातस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

❀❀❀

॥रामस्तवराजस्तोत्रम्॥

अस्य श्रीरामचन्द्रस्तवराजस्तोत्रमन्त्रस्य सनत्कुमारऋषिः।
श्रीरामो देवता। अनुष्टुप् छन्दः। सीता बीजम्। हनुमान् शक्तिः। श्रीरामप्रीत्यर्थे
जपे विनियोगः॥

सूत उवाच

सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञं व्यासं सत्यवतीसुतम्।
धर्मपुत्रः प्रहृष्टात्मा प्रत्युवाच मुनीश्वरम्॥१॥

युधिष्ठिर उवाच

भगवन् योगिनां श्रेष्ठ सर्वशास्त्रविशारद।
किं तत्त्वं किं परं जाप्यं किं ध्यानं मुक्तिसाधनम्॥२॥

श्रोतुमिच्छामि तत्सर्वं ब्रूहि मे मुनिसत्तम।

वेदव्यास उवाच

धर्मराज महाभाग श्रृणु वक्ष्यामि तत्त्वतः ॥ ३ ॥

यत्परं यद्गुणातीतं यज्ज्योतिरमलं शिवम्।
तदेव परमं तत्त्वं कैवल्यपदकारणम् ॥ ४ ॥

श्रीरामेति परं जाप्यं तारकं ब्रह्मसंज्ञकम्।
ब्रह्महत्यादिपापघ्नमिति वेदविदो विदुः ॥ ५ ॥

श्रीराम रामेति जना ये जपन्ति च सर्वदा।
तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च भविष्यति न संशयः ॥ ६ ॥

स्तवराजं पुरा प्रोक्तं नारदेन च धीमता।
तत्सर्वं सम्प्रवक्ष्यामि हरिध्यानपुरःसरम् ॥ ७ ॥

तापत्रयाग्निशमनं सर्वाघौघनिकृन्तनम्।
दारिद्र्यदुःखशमनं सर्वसम्पत्करं शिवम् ॥ ८ ॥

विज्ञानफलदं दिव्यं मोक्षैकफलसाधनम्।
नमस्कृत्य प्रवक्ष्यामि रामं कृष्णं जगन्मयम् ॥ ९ ॥

अयोध्यानगरे रम्ये रत्नमण्डपमध्यगे।
स्मरेत्कल्पतरोर्मूले रत्नसिंहासनं शुभम् ॥ १० ॥

तन्मध्येऽष्टदलं पद्मं नानारत्नैश्च वेष्टितम्।
स्मरेन्मध्ये दाशरथिं सहस्रादित्यतेजसम् ॥ ११ ॥

पितुरङ्कगतं राममिन्द्रनीलमणिप्रभम्।
कोमलाङ्गं विशालाक्षं विद्युद्वर्णाम्बरावृतम् ॥ १२ ॥

भानुकोटिप्रतीकाशकिरीटेन विराजितम्।
रत्नग्रैवेयकेयूररत्नकुण्डलमण्डितम् ॥ १३ ॥

रत्नकङ्कणमञ्जीरकटिसूत्रैरलङ्कृतम् ।
श्रीवत्सकौस्तुभोरस्कं मुक्ताहारोपशोभितम्॥ १४ ॥

दिव्यरत्नसमायुक्तमुद्रिकाभिरलङ्कृतम् ।
राघवं द्विभुजं बालं राममीषत्स्मिताननम्॥ १५ ॥

तुलसीकुन्दमन्दारपुष्पमाल्यैरलङ्कृतम्।
कर्पूरागरुकस्तूरीदिव्यगन्धानुलेपनम् ॥ १६ ॥

योगशास्त्रेष्वभिरतं योगेशं योगदायकम्।
सदा भरतसौमित्रशत्रुघ्नैरुपशोभितम्॥ १७ ॥

विद्याधरसुराधीशसिद्धगन्धर्वकिन्नरैः ।
योगीन्द्रैर्नारदाद्यैश्च स्तूयमानमहर्निशम्॥ १८ ॥

विश्वामित्रवसिष्ठादिमुनिभिः परिसेवितम्।
सनकादिमुनिश्रेष्ठैर्योगिवृन्दैश्च सेवितम्॥ १९ ॥

रामं रघुवरं वीरं धनुर्वेदविशारदम्।
मङ्गलायतनं देवं रामं राजीवलोचनम्॥ २० ॥

सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञमानन्दकरसुन्दरम् ।
कौसल्यानन्दनं रामं धनुर्बाणधरं हरिम्॥ २१ ॥

एवं सञ्चिन्तयन् विष्णुं यज्ज्योतिरमलं विभुम्।
प्रहृष्टमानसो भूत्वा मुनिवर्यः स नारदः॥ २२ ॥

सर्वलोकहितार्थाय तुष्टाव रघुनन्दनम्।
कृताञ्जलिपुटो भूत्वा चिन्तयन्नद्भुतं हरिम्॥ २३॥

यदेकं यत्परं नित्यं यदनन्तं चिदात्मकम्।
यदेकं व्यापकं लोके तद्रूपं चिन्तयाम्यहम्॥ २४॥

विज्ञानहेतुं विमलायताक्षम्
प्रज्ञानरूपं स्वसुखैकहेतुम्।
श्रीरामचन्द्रं हरिमादिदेवम्
परात्परं राममहं भजामि॥ २५॥

कविं पुराणं पुरुषं पुरस्तात्
सनातनं योगिनमीशितारम्।
अणोरणीयांसमनन्तवीर्यम्
प्राणेश्वरं राममसौ ददर्श॥ २६॥

नारद उवाच

नारायणं जगन्नाथमभिरामं जगत्पतिम्।
कविं पुराणं वागीशं रामं दशरथात्मजम्॥ २७॥

राजराजं रघुवरं कौसल्यानन्दवर्धनम्।
भर्गं वरेण्यं विश्वेशं रघुनाथं जगद्गुरुम्॥ २८॥

सत्यं सत्यप्रियं श्रेष्ठं जानकीवल्लभं विभुम्।
सौमित्रिपूर्वजं शान्तं कामदं कमलेक्षणम्॥ २९॥

आदित्यं रविमीशानं घृणिं सूर्यमनामयम्।
आनन्दरूपिणं सौम्यं राघवं करुणामयम्॥ ३०॥

जामदग्न्यं तपोमूर्तिं रामं परशुधारिणम्।
वाक्पतिं वरदं वाच्यं श्रीपतिं पक्षिवाहनम्॥ ३१ ॥

श्रीशार्ङ्गधारिणं रामं चिन्मयानन्दविग्रहम्।
हलधृग्विष्णुमीशानं बलरामं कृपानिधिम्॥ ३२ ॥

श्रीवल्लभं कृपानाथं जगन्मोहनमच्युतम्।
मत्स्यकूर्मवराहादिरूपधारिणमव्ययम् ॥ ३३ ॥

वासुदेवं जगद्योनिमनादिनिधनं हरिम्।
गोविन्दं गोपतिं विष्णुं गोपीजनमनोहरम्॥ ३४ ॥

गोगोपालपरीवारं गोपकन्यासमावृतम्।
विद्युत्पुञ्जप्रतीकाशं रामं कृष्णं जगन्मयम्॥ ३५ ॥

गोगोपिकासमाकीर्णं वेणुवादनतत्परम्।
कामरूपं कलावन्तं कामिनीकामदं विभुम्॥ ३६ ॥

मन्मथं मथुरानाथं माधवं मकरध्वजम्।
श्रीधरं श्रीकरं श्रीशं श्रीनिवासं परात्परम्॥ ३७ ॥

भूतेशं भूपतिं भद्रं विभूतिं भूमिभूषणम्।
सर्वदुःखहरं वीरं दुष्टदानववैरिणम्॥ ३८ ॥

श्रीनृसिंहं महाबाहुं महान्तं दीप्ततेजसम्।
चिदानन्दमयं नित्यं प्रणवं ज्योतिरूपिणम्॥ ३९ ॥

आदित्यमण्डलगतं निश्चितार्थस्वरूपिणम्।
भक्तिप्रियं पद्मनेत्रं भक्तानामीप्सितप्रदम्॥ ४० ॥

कौसल्येयं कलामूर्तिं काकुत्स्थं कमलाप्रियम्।
सिंहासने समासीनं नित्यव्रतमकल्मषम्॥ ४१॥

विश्वामित्रप्रियं दान्तं स्वदारनियतव्रतम्।
यज्ञेशं यज्ञपुरुषं यज्ञपालनतत्परम्॥ ४२॥

सत्यसन्धं जितक्रोधं शरणागतवत्सलम्।
सर्वक्लेशापहरणं विभीषणवरप्रदम्॥ ४३॥

दशग्रीवहरं रौद्रं केशवं केशिमर्दनम्।
वालिप्रमथनं वीरं सुग्रीवेप्सितराज्यदम्॥ ४४॥

नरवानरदेवैश्च सेवितं हनुमत्प्रियम्।
शुद्धं सूक्ष्मं परं शान्तं तारकं ब्रह्मरूपिणम्॥ ४५॥

सर्वभूतात्मभूतस्थं सर्वाधारं सनातनम्।
सर्वकारणकर्तारं निदानं प्रकृतेः परम्॥ ४६॥

निरामयं निराभासं निरवध्यं निरञ्जनम्।
नित्यानन्दं निराकारमद्वैतं तमसः परम्॥ ४७॥

परात्परतरं तत्त्वं सत्यानन्दं चिदात्मकम्।
मनसा शिरसा नित्यं प्रणमामि रघूत्तमम्॥ ४८॥

सूर्यमण्डलमध्यस्थं रामं सीतासमन्वितम्।
नमामि पुण्डरीकाक्षममेयं गुरुतत्परम्॥ ४९॥

नमोऽस्तु वासुदेवाय ज्योतिषां पतये नमः।
नमोऽस्तु रामदेवाय जगदानन्दरूपिणे॥ ५०॥

नमो वेदान्तनिष्ठाय योगिने ब्रह्मवादिने।
मायामयनिरासाय प्रपन्नजनसेविने॥ ५१ ॥

वन्दामहे महेशानचण्डकोदण्डखण्डनम्।
जानकीहृदयानन्दवर्धनं रघुनन्दनम्॥ ५२ ॥

उत्फुल्लामलकोमलोत्पलदलश्यामाय रामाय ते
कामाय प्रमदामनोहरगुणग्रामाय रामात्मने।
योगारूढमुनीन्द्रमानससरोहंसाय संसारवि-
ध्वंसाय स्फुरदोजसे रघुकुलोत्तंसाय पुंसे नमः॥ ५३ ॥

भवोद्भवं वेदविदां वरिष्ठम्
आदित्यचन्द्रानलसुप्रभावम् ।
सर्वात्मकं सर्वगतस्वरूपम्
नमामि रामं तमसः परस्तात्॥ ५४ ॥

निरञ्जनं निष्प्रतिमं निरीहम्
निराश्रयं निष्कलमप्रपञ्चम्।
नित्यं ध्रुवं निर्विषयस्वरूपम्
निरन्तरं राममहं भजामि॥ ५५ ॥

भवाब्धिपोतं भरताग्रजं तम्
भक्तिप्रियं भानुकुलप्रदीपम्।
भूतत्रिनाथं भुवनाधिपं तम्
भजामि रामं भवरोगवैद्यम्॥ ५६ ॥

सर्वाधिपत्यं समराङ्गधीरम्
सत्यं चिदानन्दमयस्वरूपम्।
सत्यं शिवं शान्तिमयं शरण्यम्
सनातनं राममहं भजामि॥५७॥

कार्यक्रियाकारणमप्रमेयम्
कविं पुराणं कमलायताक्षम्।
कुमारवेद्यं करुणामयं तम्
कल्पद्रुमं राममहं भजामि॥५८॥

त्रैलोक्यनाथं सरसीरुहाक्षम्
दयानिधिं द्वन्द्वविनाशहेतुम्।
महाबलं वेदनिधिं सुरेशम्
सनातनं राममहं भजामि॥५९॥

वेदान्तवेद्यं कविमीशितारम्
अनादिमध्यान्तमचिन्त्यमाद्यम्।
अगोचरं निर्मलमेकरूपम्
नमामि रामं तमसः परस्तात्॥६०॥

अशेषवेदात्मकमादिसंज्ञम्
अजं हरिं विष्णुमनन्तमाद्यम्।
अपारसंवित्सुखमेकरूपम्
परात्परं राममहं भजामि॥६१॥

तत्त्वस्वरूपं पुरुषं पुराणम्
स्वतेजसा पूरितविश्वमेकम्।
राजाधिराजं रविमण्डलस्थम्
विश्वेश्वरं राममहं भजामि॥ ६२॥

लोकाभिरामं रघुवंशनाथम्
हरिं चिदानन्दमयं मुकुन्दम्।
अशेषविद्याधिपतिं कवीन्द्रम्
नमामि रामं तमसः परस्तात्॥ ६३॥

योगीन्द्रसङ्घैश्च सुसेव्यमानम्
नारायणं निर्मलमादिदेवम्।
नतोऽस्मि नित्यं जगदेकनाथम्
आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्॥ ६४॥

विभूतिदं विश्वसृजं विरामम्
राजेन्द्रमीशं रघुवंशनाथम्।
अचिन्त्यमव्यक्तमनन्तमूर्तिम्
ज्योतिर्मयं राममहं भजामि॥ ६५॥

अशेषसंसारविहारहीनम्
आदित्यगं पूर्णसुखाभिरामम्।
समस्तसाक्षिं तमसः परस्तात्
नारायणं विष्णुमहं भजामि॥ ६६॥

मुनीन्द्रगुह्यं परिपूर्णकामम्
कलानिधिं कल्मषनाशहेतुम्।
परात्परं यत्परमं पवित्रम्
नमामि रामं महतो महान्तम्॥ ६७॥

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च देवेन्द्रो देवतास्तथा।
आदित्यादिग्रहाश्चैव त्वमेव रघुनन्दन॥ ६८॥

तापसा ऋषयः सिद्धाः साध्याश्च मरुतस्तथा।
विप्रा वेदास्तथा यज्ञाः पुराणं धर्मसंहिताः॥ ६९॥

वर्णाश्रमास्तथा धर्मा वर्णधर्मास्तथैव च।
यक्षराक्षसगन्धर्वा दिक्पाला दिग्गजादयः॥ ७०॥

सनकादिमुनिश्रेष्ठास्त्वमेव रघुपुङ्गव।
वसवोऽष्टौ त्रयः काला रुद्रा एकादश स्मृताः॥ ७१॥

तारका दश दिक् चैव त्वमेव रघुनन्दन।
सप्तद्वीपाः समुद्राश्च नगा नद्यस्तथा द्रुमाः॥ ७२॥

स्थावरा जङ्गमाश्चैव त्वमेव रघुनायक।
देवतिर्यङ्मनुष्याणां दानवानां तथैव च॥ ७३॥

माता पिता तथा भ्राता त्वमेव रघुवल्लभ।
सर्वेषां त्वं परं ब्रह्म त्वन्मयं सर्वमेव हि॥ ७४॥

त्वमक्षरं परं ज्योतिस्त्वमेव पुरुषोत्तम।
त्वमेव तारकं ब्रह्म त्वत्तोऽन्यं नैव किञ्चन॥ ७५॥

शान्तं सर्वगतं सूक्ष्मं परं ब्रह्म सनातनम्।
राजीवलोचनं रामं प्रणमामि जगत्पतिम्॥ ७६॥

व्यास उवाच

ततः प्रसन्नः श्रीरामः प्रोवाच मुनिपुङ्गवम्।
तुष्टोऽस्मि मुनिशार्दूल वृणीष्व वरमुत्तमम्॥ ७७॥

नारद उवाच

यदि तुष्टोऽसि सर्वज्ञ श्रीराम करुणानिधे।
त्वन्मूर्तिदर्शनेनैव कृतार्थोऽहं च सर्वदा॥७८॥

धन्योऽहं कृतकृत्योऽहं पुण्योऽहं पुरुषोत्तम।
अद्य मे सफलं जन्म जीवितं सफलं च मे।
अद्य मे सफलं ज्ञानमद्य मे सफलं तपः॥७९॥

अद्य मे सफलं कर्म त्वत्पादाम्भोजदर्शनात्।
अद्य मे सफलं सर्वं त्वन्नामस्मरणं तथा॥८०॥

त्वत्पादाम्भोरुहद्वन्द्वसद्भक्तिं देहि राघव।
ततः परमसम्प्रीतः स रामः प्राह नारदम्॥८१॥

श्रीराम उवाच

मुनिवर्य महाभाग मुने त्विष्टं ददामि ते।
यत्त्वया चेप्सितं सर्वं मनसा तद्भविष्यति॥८२॥

नारद उवाच

परं न याचे रघुनाथ युष्मत्
पादाब्जभक्तिः सततं ममास्तु।
इदं प्रियं नाथ वरं प्रयाचे
पुनः पुनस्त्वामिदमेव याचे॥८३॥

व्यास उवाच

इत्येवमीडितो रामः प्रादात् तस्मै वरान्तरम्।
वीरो रामो महातेजाः सच्चिदानन्दविग्रहः॥८४॥

अद्वैतममलं ज्ञानं स्वनामस्मरणं तथा।
अन्तर्दधौ जगन्नाथः पुरतस्तस्य राघवः ॥ ८५ ॥

इति श्रीरघुनाथस्य स्तवराजमनुत्तमम्।
सर्वसौभाग्यसम्पत्तिदायकं मुक्तिदं शुभम् ॥ ८६ ॥

कथितं ब्रह्मपुत्रेण वेदानां सारमुत्तमम्।
गुह्याद्गुह्यतमं दिव्यं तव स्नेहात्प्रकीर्तितम् ॥ ८७ ॥

यः पठेच्छृणुयाद्वाऽपि त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः।
ब्रह्महत्यादिपापानि तत्समानि बहूनि च ॥ ८८ ॥

स्वर्णस्तेयं सुरापानं गुरुतल्पगतिस्तथा।
गोवधाद्युपपापानि अनृतात्सम्भवानि च ॥ ८९ ॥

सर्वैः प्रमुच्यते पापैः कल्पायुतशतोद्भवैः।
मानसं वाचिकं पापं कर्मणा समुपार्जितम् ॥ ९० ॥

श्रीरामस्मरणेनैव तत्क्षणान्नश्यति ध्रुवम्।
इदं सत्यमिदं सत्यं सत्यमेतदिहोच्यते ॥ ९१ ॥

रामं सत्यं परं ब्रह्म रामात् किञ्चिन्न विद्यते।
तस्माद्रामस्वरूपं हि सत्यं सत्यमिदं जगत् ॥ ९२ ॥

श्रीरामचन्द्र रघुपुङ्गव राजवर्य
राजेन्द्र राम रघुनायक राघवेश।
राजाधिराज रघुनन्दन रामचन्द्र
दासोऽहमद्य भवतः शरणागतोऽस्मि ॥ ९३ ॥

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे
मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम्।
अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परम्
व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम्॥९४॥

रामं रत्नकिरीटकुण्डलयुतं केयूरहारान्वितम्
सीतालङ्कृतवामभागममलं सिंहासनस्थं विभुम्।
सुग्रीवादिहरीश्वरैः सुरगणैः संसेव्यमानं सदा
विश्वामित्रपराशरादिमुनिभिः संस्तूयमानं प्रभुम्॥९५॥

सकलगुणनिधानं योगिभिः स्तूयमानम्
भुजविजितसमानं राक्षसेन्द्रादिमानम्।
महितनृपभयानं सीतया शोभमानम्
स्मर हृदयविमानं ब्रह्म रामाभिधानम्॥९६॥

रघुवर तव मूर्तिर्मामके मानसाब्जे
नरकगतिहरं ते नामधेयं मुखे मे।
अनिशमतुलभक्त्या मस्तकं त्वत्पदाब्जे
भवजलनिधिमग्नं रक्ष मामार्तबन्धो॥९७॥

रामरत्नमहं वन्दे चित्रकूटपतिं हरिम्।
कौसल्याभक्तिसम्भूतं जानकीकण्ठभूषणम्॥९८॥

॥इति श्रीसनत्कुमारसंहितायां नारदोक्तं श्रीरामस्तवराजस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ शम्भुकृत-रामस्तवः ॥

महादेव उवाच

नमो मूलप्रकृतये नित्याय परमात्मने।
सच्चिदानन्दरूपाय विश्वरूपाय वेधसे॥ २४॥

नमो निरन्तरानन्द कन्दमूलाय विष्णवे।
जगत्त्रयकृतानन्द मूर्तये दिव्यमूर्तये॥ २५॥

नमो ब्रह्मेन्द्रपूज्याय शङ्कराभयदाय च।
नमो विष्णुस्वरूपाय सर्वरूप नमो नमः॥ २६॥

उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिणे त्रिगुणात्मने।
नमोऽस्तु निर्गतोपाधिस्वरूपाय महात्मने॥ २७॥

अनया विद्यया देव्या सीतयोपाधिकारिणे।
नमः पुम्प्रकृतिभ्यां च युवाभ्यां जगतां कृते॥ २८॥

जगन्मातापितृभ्यां च जनन्यै राघवाय च।
नमः प्रपञ्चरूपिण्यै निष्प्रपञ्चस्वरूपिणे॥ २९॥

नमो ध्यानस्वरूपिण्यै योगिध्येयात्ममूर्तये।
परिणामापरीणामरिक्ताभ्यां च नमो नमः॥ ३०॥

कूटस्थबीजरूपिण्यै सीतायै राघवाय च।
सीता लक्ष्मीर्भवान् विष्णुः सीता गौरी भवान् शिवः॥ ३१॥

सीता स्वयं हि सावित्री भवान् ब्रह्मा चतुर्मुखः।
सीता शची भवान् शक्रः सीता स्वाहाऽनलो भवान्॥ ३२॥

सीता संहारिणी देवी यमरूपधरो भवान्।
सीता हि सर्वसम्पत्तिः कुबेरस्त्वं रघूत्तम॥ ३३॥

सीता देवी च रुद्राणी भवान्रुद्रो महाबलः।
सीता तु रोहिणी देवी चन्द्रस्त्वं लोकसौख्यदः॥ ३४॥

सीता संज्ञा भवान्सूर्यः सीता रात्रिर्दिवा भवान्।
सीता देवी महाकाली महाकालो भवान्सदा॥ ३५॥

स्त्रीलिङ्गेषु त्रिलोकेषु यत्तत्सर्वं हि जानकी।
पुन्नाम लाञ्छितं यत्तु तत्सर्वं हि भवान्प्रभो॥ ३६॥

सर्वत्र सर्वदेवेश सीता सर्वत्र धारिणी।
तदा त्वमपि च त्रातुं तच्छक्तिर्विश्वधारिणी॥ ३७॥

तस्मात्कोटिगुणं पुण्यं युवाभ्यां परिचिह्नितम्।
चिह्नितं शिवशक्तिभ्यां चरितं तव शान्तिदम्॥ ३८॥

आवां राम जगत्पूज्यौ मम पूज्यौ सदा युवाम्।
त्वन्नामजापिनी गौरी त्वन्मन्त्रजपवानहम्॥ ३९॥

मुमूर्षोर्मणिकर्ण्यां तु अर्धोदकनिवासिनः।
अहं दिशामि ते मन्त्रं तारकं ब्रह्मदायकम्॥ ४०॥

अतस्त्वं जानकीनाथ परब्रह्मासि निश्चितम्।
त्वन्मायामोहिताः सर्वे न त्वां जानन्ति तत्वतः॥ ४१॥

ईश्वर उवाच

इत्युक्तः शम्भुना रामः प्रसादप्रवणोऽभवत्।
दिव्यरूपधरः श्रीमानद्भुताद्भुतदर्शनः॥ ४२॥

तथा तं रूपमालोक्य नरवानरदेवताः।
न द्रष्टुमपिशक्तास्ते तेजसं महदद्भुतम्॥४३॥

भयाद्वै त्रिदशश्रेष्ठाः प्रणेमुश्चातिभक्तितः।
भीता विज्ञाय रामोऽपि नरवानरदेवताः।
मायामानुषतां प्राप्य स देवानब्रवीत्पुनः॥४४॥

रामचन्द्र उवाच

शृणुध्वं देवता यो मां प्रत्यहं संस्तुविष्यति।
स्तवेन शम्भुनोक्तेन देवतुल्यो भवेन्नरः॥४५॥

विमुक्तः सर्वपापेभ्यो मत्स्वरूपं समश्नुते।
रणे जयमवाप्नोति न क्वचित्प्रतिहन्यते॥४६॥

भूतवेतालकृत्याभिर्ग्रहैश्चापि न बाध्यते।
अपुत्रो लभते पुत्रं पतिं विन्दति कन्यका॥४७॥

दरिद्रः श्रियमाप्नोति सत्ववाञ्शीलवान्भवेत्।
आत्मतुल्यबलः श्रीमाञ्जायते नात्र संशयः॥४८॥

निर्विघ्नं सर्वकार्येषु सर्वारम्भेषु वै नृणाम्।
यं यं कामयते मर्त्यः सुदुर्लभमनोरथम्॥४९॥

षण्मासात्सिद्धिमाप्नोति स्तवस्यास्य प्रसादतः।
यत्पुण्यं सर्वतीर्थेषु सर्वयज्ञेषु यत्फलम्।
तत्फलं कोटिगुणितं स्तवेनानेन लभ्यते॥५०॥

ईश्वर उवाच

इत्युक्त्वा रामचन्द्रोऽसौ विससर्ज महेश्वरम्।
ब्रह्मादि त्रिदशान्सर्वान् विससर्ज समागतान्॥५१॥

अर्चिता मानवाः सर्वे नरवानरदेवताः।
विसृष्टा रामचन्द्रेण प्रीत्या परमया युताः॥५२॥

इत्थं विसृष्टाः खलु ते च सर्वे
सुखं तदा जग्मुरतीवहृष्टाः।
परं पठन्तः स्तवमीश्वरोक्तं
रामं स्मरन्तो वरविश्वरूपम्॥५३॥

॥इति श्रीपाद्मे महापुराणे पञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यां संहितायामुत्तरखण्डे उमामहेश्वरसंवादे विश्वदर्शनं नाम त्रिचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्याये श्री-शम्भुकृत-रामस्तवः सम्पूर्णः॥

॥देवैः कृतं राम-स्तोत्रम्॥

शेष उवाच

अथाभिषिक्तं रामं तु तुष्टुवुः प्रणताः सुराः।
रावणाभिधदैत्येन्द्र वधहर्षितमानसाः॥१॥

देवा ऊचुः

जय दाशरथे सुरार्तिहञ्जय जय दानववंशदाहक।
जय देववराङ्गनागणग्रहणव्यग्रकरारिदारक॥२॥

तवयद्दनुजेन्द्रनाशनं कवयो वर्णयितुं समुत्सुकाः।
प्रलये जगतान्ततीः पुनर्ग्रससे त्वं भुवनेशलीलया॥ ३॥

जय जन्मजरादिदुःखकैः परिमुक्तप्रबलोद्धरोद्धर।
जय धर्मकरान्वयाम्बुधौ कृतजन्मन्नजरामराच्युत॥ ४॥

तव देववरस्य नामभिर्बहुपापा अपि ते पवित्रिताः।
किमु साधुद्विजवर्यपूर्वकाः सुतनुं मानुषतामुपागताः॥ ५॥

हरविरिञ्चिनुतं तव पादयोर्युगलमीप्सितकामसमृद्धिदम्।
हृदि पवित्रयवादिकचिह्नितैः सुरचितं मनसा स्पृहयामहे॥ ६॥

यदि भवान्न दधात्यभयं भुवो मदनमूर्तिं तिरस्करकान्तिभृत्।
सुरगणा हि कथं सुखिनः पुनर्ननु भवन्ति घृणामय पावन॥ ७॥

यदा यदास्मान्दनुजाहि दुःखदास्तदा तदा त्वं भुवि जन्मभाग्भवेः।
अजोऽव्ययोऽपीशवरोऽपि सन्विभो स्वभावमास्थाय निजं निजार्चितः॥ ८॥

मृतसुधासदृशैरघनाशनैः सुचरितैरवकीर्य महीतलम्।
अमनुजैर्गुणशंसिभिरीडितः प्रविश चाशु पुनर्हि स्वकं पदम्॥ ९॥

अनादिराद्योजररूपधारी हारी किरीटी मकरध्वजाभः।
जयं करोतु प्रसभं हतारिः स्मरारि संसेवितपादपद्मः॥ १०॥

इत्युक्त्वा ते सुराः सर्वे ब्रह्मेन्द्रप्रमुखा मुहुः।
प्रणेमुररिनाशेन प्रीणिता रघुनायकम्॥ ११॥

इति स्तुत्यातिसंहृष्टो रघुनाथो महायशाः।
प्रोवाच तान्सुरान्वीक्ष्य प्रणतान्नतकन्धरान्॥ १२॥

श्रीराम उवाच

सुरा वृणुत मे यूयं वरं किञ्चित्सुदुर्लभम्।
यं कोऽपि देवो दनुजो न यक्षः प्राप सादरः॥ १३॥

सुरा ऊचुः

स्वामिन्भगवतः सर्वं प्राप्तमस्माभिरुत्तमम्।
यदयं निहतः शत्रुरस्माकं तु दशाननः॥ १४॥

यदा यदाऽसुरोऽस्माकं बाधां परिदधाति भोः।
तदा तदेति कर्तव्यमेतावद्वैरिनाशनम्॥ १५॥

तथेत्युक्त्वा पुनर्वीरः प्रोवाच रघुनन्दनः।

श्रीराम उवाच

सुराः शृणुत मद्वाक्यमादरेण समन्विताः॥ १६॥

भवत्कृतं मदीयैर्वैर्गुणैर्ग्रथितमद्भुतम्।
स्तोत्रं पठिष्यति मुहुः प्रातर्निशि सकृन्नरः॥ १७॥

तस्य वैरि पराभूतिर्न भविष्यति दारुणा।
न च दारिद्र्यसंयोगो न च व्याधिपराभवौ॥ १८॥

मदीयचरणद्वन्द्वे भक्तिस्तेषां तु भूयसी।
भविष्यति मुदायुक्ते स्वान्ते पुंसां तु पाठतः॥ १९॥

इत्युक्त्वा सोऽभवत्तूष्णीं नरदेवशिरोमणिः।
सुराः सर्वे प्रहृष्टास्ते ययुर्लोकं स्वकं स्वकम्॥ २०॥

॥इति श्रीपद्मपुराणे पातालखण्डे शेषवात्स्यायनसंवादे रामाश्वमेधे अगस्त्यसमागमोनाम पञ्चमोऽध्यायान्तर्गतं देवैः कृतं श्री-राम-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ब्रह्मकृतरामस्तवः॥

ततो हि दुर्मना रामः श्रुत्वैवं वदतां गिरः।
दध्यौ मुहूर्तं धर्मात्मा बाष्पव्याकुललोचनः॥१॥

ततो वैश्रवणो राजा यमश्च पितृभिः सह।
सहस्राक्षश्च देवेशो वरुणश्च जलेश्वरः॥२॥

षडर्धनयनः श्रीमान्महादेवो वृषध्वजः।
कर्ता सर्वस्य लोकस्य ब्रह्मा ब्रह्मविदां वरः॥३॥

एते सर्वे समागम्य विमानैः सूर्यसन्निभैः।
आगम्य नगरीं लङ्काम् अभिजग्मुश्च राघवम्॥४॥

ततः सहस्ताभरणान् प्रगृह्य विपुलान् भुजान्।
अब्रुवंस्त्रिदशश्रेष्ठाः प्राञ्जलिं राघवं स्थितम्॥५॥

कर्ता सर्वस्य लोकस्य श्रेष्ठो ज्ञानविदां विभुः।
उपेक्षसे कथं सीतां पतन्तीं हव्यवाहने॥६॥

कथं देवगणश्रेष्ठम् आत्मानं नावबुध्यसे।
ऋतधामा वसुः पूर्वं वसूनां त्वं प्रजापतिः॥७॥

त्रयाणां त्वं हि लोकानाम् आदिकर्ता स्वयम्प्रभुः।
रुद्राणामष्टमो रुद्रः साध्यानामसि पञ्चमः॥८॥

अश्विनौ चापि ते कर्णौ चन्द्रसूर्यौ च चक्षुषी।
अन्ते चादौ च लोकानाम् दृश्यसे त्वं परन्तप॥९॥

उपेक्षसे च वैदेहीं मानुषः प्राकृतो यथा।
इत्युक्तो लोकपालैस्तैः स्वामी लोकस्य राघवः॥१०॥

अब्रवीत् त्रिदशश्रेष्ठान् रामो धर्मभृतां वरः।
आत्मानं मानुषं मन्ये रामं दशरथात्मजम्॥११॥

योऽहं यस्य यतश्चाहं भगवांस्तद् ब्रवीतु मे।
इति ब्रुवन्तं काकुत्स्थं ब्रह्मा ब्रह्मविदां वरः॥१२॥

अब्रवीच्छृणु मे राम सत्यं सत्यपराक्रम।
भवान् नारायणो देवः श्रीमांश्चक्रायुधः प्रभुः॥१३॥

एकशृङ्गो वराहस्त्वं भूतभव्यसपत्नजित्।
अक्षरं ब्रह्म सत्यं च मध्ये चान्ते च राघव॥१४॥

लोकानां त्वं परो धर्मो विष्वक्सेनश्चतुर्भुजः।
शार्ङ्गधन्वा हृषीकेशः पुरुषः पुरुषोत्तमः॥१५॥

अजितः खड्गधृद् विष्णुः कृष्णश्चैव सनातनः।
सेनानीर्ग्रामणीश्च त्वं बुद्धिः सत्त्वं क्षमा दमः॥१६॥

प्रभवश्चाप्ययश्च त्वम् उपेन्द्रो मधुसूदनः।
इन्द्रकर्मा महेन्द्रस्त्वं पद्मनाभो रणान्तकृत्॥१७॥

शरण्यं शरणं च त्वाम् आहुर्दिव्या महर्षयः।
सहस्रशृङ्गो वेदात्मा शतशीर्षो महर्षभः॥१८॥

त्वं त्रयाणां हि लोकानाम् आदिकर्ता स्वयम्प्रभुः।
सिद्धानामपि साध्यानाम् आश्रयश्चासि पूर्वजः॥१९॥

त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमोङ्कारः परात्परः।
प्रभवं निधनं वा ते नो विदुः को भवानिति॥२०॥

दृश्यसे सर्वभूतेषु ब्राह्मणेषु च गोषु च।
दिक्षु सर्वासु गगने पर्वतेषु वनेषु च॥२१॥

सहस्रचरणः श्रीमान् शतशीर्षः सहस्रदृक्।
त्वं धारयसि भूतानि पृथिवीं च सपर्वताम्॥२२॥

अन्ते पृथिव्याः सलिले दृश्यसे त्वं महोरगः।
त्रीन् लोकान् धारयन् राम देवगन्धर्वदानवान्॥२३॥

अहं ते हृदयं राम जिह्वा देवी सरस्वती।
देवा गात्रेषु रोमाणि ब्रह्मणा निर्मिताः प्रभो॥२४॥

निमेषस्ते भवेद् रात्रिरुन्मेषस्ते भवेद् दिवा।
संस्कारास्तेऽभवन् वेदा न तदस्ति त्वया विना॥२५॥

जगत् सर्वं शरीरं ते स्थैर्यं ते वसुधातलम्।
अग्निः कोपः प्रसादस्ते सोमः श्रीवत्सलक्षणः॥२६॥

त्वया लोकास्त्रयः क्रान्ताः पुरा स्वैर्विक्रमैस्त्रिभिः।
महेन्द्रश्च कृतो राजा बलिं बद्ध्वा महासुरम्॥२७॥

सीता लक्ष्मीर्भवान् विष्णुः देवः कृष्णः प्रजापतिः।
वधार्थं रावणस्येह प्रविष्टो मानुषीं तनुम्॥२८॥

तदिदं नः कृतं कार्यं त्वया धर्मभृतां वर।
निहतो रावणो राम प्रहृष्टो दिवमाक्रम॥ २९॥

अमोघं बलवीर्यं ते अमोघस्ते पराक्रमः।
अमोघं दर्शनं राम अमोघस्तव संस्तवः॥ ३०॥

अमोघास्ते भविष्यन्ति भक्तिमन्तो नरा भुवि।
ये त्वां देवं ध्रुवं भक्ताः पुराणं पुरुषोत्तमम्॥ ३१॥

प्राप्नुवन्ति सदा कामान् इह लोके परत्र च।
इममार्षं स्तवं नित्यम् इतिहासं पुरातनम्।
ये नराः कीर्तयिष्यन्ति तेषां नास्ति पराभवः॥ ३२॥

॥ इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये चतुर्विंशतिसहस्त्रिकायां संहितायां युद्धकाण्डे ब्रह्मकृतरामस्तवो नाम विंशत्यधिकशततमः सर्गः॥

॥ आपदुद्धारण स्तोत्रम्॥

ॐ आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥ १॥

आर्तानामार्तिहन्तारं भीतानां भीतिनाशनम्।
द्विषतां कालदण्डं तं रामचन्द्रं नमाम्यहम्॥ २॥

नमः कोदण्डहस्ताय सन्धीकृतशराय च।
खण्डिताखिलदैत्याय रामायाऽऽपन्निवारिणे॥ ३॥

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥ ४॥

अग्रतः पृष्ठतश्चैव पार्श्वतश्च महाबलौ।
आकर्णपूर्णधन्वानौ रक्षेतां रामलक्ष्मणौ॥५॥

सन्नद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा।
गच्छन् ममाग्रतो नित्यं रामः पातु सलक्ष्मणः॥६॥

अच्युतानन्तगोविन्द नामोच्चारणभेषजात्।
नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥७॥

सत्यं सत्यं पुनः सत्यमुद्धृत्य भुजमुच्यते।
वेदाच्छास्त्रं परं नास्ति न देवं केशवात्परम्॥८॥

शरीरे जर्जरीभूते व्याधिग्रस्ते कलेवरे।
औषधं जाह्नवीतोयं वैद्यो नारायणो हरिः॥९॥

आलोड्य सर्वशास्त्राणि विचार्य च पुनः पुनः।
इदमेकं सुनिष्पन्नं ध्येयो नारायणो हरिः॥१०॥

हनुमत्कृतं श्री-सीता-राम-स्तोत्रम्

अयोध्या-पुर-नेतारं मिथिला-पुर-नायिकाम्।
इक्ष्वाकूणाम् अलङ्कारं वैदेहानाम् अलङ्क्रियाम्॥१॥

रघूणां कुल-दीपं च निमीनां कुल-दीपिकाम्।
सूर्य-वंश-समुद्भूतं सोम-वंश-समुद्भवाम्॥२॥

पुत्रं दशरथस्यापि पुत्रीं जनक-भूपतेः।
वसिष्ठ-अनुमताचारं शतानन्द-मतानुगाम्॥३॥

कौसल्या-गर्भ-सम्भूतं वेदि-गर्भोदितां स्वयम्।
पुण्डरीक-विशालाक्षं स्फुरद्-इन्दीवरेक्षणाम्॥ ४॥

चन्द्र-कान्त-आननाम्भोजं चन्द्रबिम्ब-उपमाननाम्।
मत्त-मातङ्ग-गमनं मत्त-सारस-गामिनीम्॥ ५॥

चन्दनार्द्र-भुजा-मध्यं कुङ्कुमाक्त-कुच-स्थलीम्।
चापालङ्कृत-हस्ताब्जं पद्मालङ्कृत-पाणिकाम्॥ ६॥

शरणागतगोप्तारं प्रणिपातप्रसादिकाम्।
ताली-दल-श्यामलाङ्गं तप्त-चामीकर-प्रभाम्॥ ७॥

दिव्य-सिंहासनारूढं दिव्य-स्रग्-वस्त्र-भूषणाम्।
अनुक्षणं कटाक्षाभ्याम् अन्योन्य-ईक्षण-काङ्क्षिणौ॥ ८॥

अन्योन्य-सदृशाकारौ त्रैलोक्य-गृह-दम्पती।
इमौ युवां प्रणम्याहं भजाम्यद्य कृतार्थताम्॥ ९॥

अनया स्तोति यः स्तुत्या रामं सीतां च भक्तितः।
तस्य तौ तनुतां प्रीतौ सम्पदः सकला अपि॥ १०॥

इतीदं रामचन्द्रस्य जानक्याश्च विशेषतः।
कृतं हनुमता पुण्यं स्तोत्रं सद्यो विमुक्ति-दम्।
यः पठेत्प्रातरुत्थाय सर्वान् कामानवाप्नुयात्॥ ११॥

॥ इति श्री-हनूमत्कृतं श्री-सीतारामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ रामद्वादशनामस्तोत्रम् ॥

प्रथमं श्रीधरं विद्याद्द्वितीयं रघुनायकम्।
तृतीयं रामचन्द्रं च चतुर्थं रावणान्तकम्॥ १ ॥

पञ्चमं लोकपूज्यं च षष्ठमं जानकीपतिम्।
सप्तमं वासुदेवं च श्रीरामं चाष्टमं तथा॥ २ ॥

नवमं जलदश्यामं दशमं लक्ष्मणाग्रजम्।
एकादशं च गोविन्दं द्वादशं सेतुबन्धनम्॥ ३ ॥

द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छ्रद्धयान्वितः।
अर्धरात्रे तु द्वादश्यां कुष्ठदारिद्र्यनाशनम्॥ ४ ॥

अरण्ये चैव सङ्ग्रामे अग्नौ भयनिवारणम्।
ब्रह्महत्या सुरापानं गोहत्यादि निवारणम्॥ ५ ॥

सप्तवारं पठेन्नित्यं सर्वारिष्टनिवारणम्।
ग्रहणे च जले स्थित्वा नदीतीरे विशेषतः।
अश्वमेधशतं पुण्यं ब्रह्मलोकं गमिष्यति॥ ६ ॥

॥ इति श्री-स्कान्दपुराणे उत्तरखण्डे श्री-उमामहेश्वरसंवादे
श्री-रामद्वादशनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ रामाष्टकम् ॥

भजे विशेषसुन्दरं समस्तपापखण्डनम्।
स्वभक्तचित्तरञ्जनं सदैव राममद्वयम्॥ १ ॥

जटाकलापशोभितं समस्तपापनाशकम्।
स्वभक्तभीतिभञ्जनं भजे ह राममद्वयम्॥ २॥

निजस्वरूपबोधकं कृपाकरं भवापहम्।
समं शिवं निरञ्जनं भजे ह राममद्वयम्॥ ३॥

सहप्रपञ्चकल्पितं ह्यनामरूपवास्तवम्।
निराकृतिं निरामयं भजे ह राममद्वयम्॥ ४॥

निष्प्रपञ्चनिर्विकल्पनिर्मलं निरामयम्।
चिदेकरूपसन्ततं भजे ह राममद्वयम्॥ ५॥

भवाब्धिपोतरूपकं ह्यशेषदेहकल्पितम्।
गुणाकरं कृपाकरं भजे ह राममद्वयम्॥ ६॥

महासुवाक्यबोधकैर्विराजमानवाक्पदैः।
परं ब्रह्मसद्व्यापकं भजे ह राममद्वयम्॥ ७॥

शिवप्रदं सुखप्रदं भवच्छिदं भ्रमापहम्।
विराजमानदेशिकं भजे ह राममद्वयम्॥ ८॥

रामाष्टकं पठति यः सुखदं सुपुण्यम्
व्यासेन भाषितमिदं श्रृणुते मनुष्यः।
विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिम्
सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम्॥ ९॥

॥ इति श्री-व्यासविरचितं श्री-रामाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ रामस्तोत्रम् ॥

मुनय ऊचुः

नमस्ते रामचन्द्राय लोकानुग्रहकारिणे।
अरावणं जगत्कर्तुमवतीर्णाय भूतले॥ ६३ ॥

ताटिकादेहसंहर्त्रे गाधिजाध्वररक्षिणे।
नमस्ते जितमारीच सुबाहुप्राणहारिणे॥ ६४ ॥

अहल्यामुक्तिसन्दायिपादपङ्कजरेणवे ।
नमस्ते हरकोदण्डलीलाभञ्जनकारिणे॥ ६५ ॥

नमस्ते मैथिलीपाणिग्रहणोत्सवशालिने।
नमस्ते रेणुकापुत्रपराजयविधायिने॥ ६६ ॥

सहलक्ष्मणसीताभ्यां कैकेय्यास्तु वरद्वयात्।
सत्यं पितृवचः कर्तुं नमो वनमुपेयुषे॥ ६७॥

भरतप्रार्थनादत्तपादुकायुगुलाय ते।
नमस्ते शरभङ्गस्य स्वर्गप्राप्त्यैकहेतवे॥ ६८॥

नमो विराधसंहर्त्रे गृध्रराजसखाय ते।
मायामृगमहाक्रूरमारीचाङ्गविदारिणे॥ ६९ ॥

सीतापहारिलोकेशयुद्धत्यक्तकलेवरम् ।
जटायुषं तु सन्दह्य तत्कैवल्यप्रदायिने॥ ७० ॥

नमः कबन्धसंहर्त्रे शबरीपूजिताङ्घ्रये।
प्राप्तसुग्रीवसख्याय कृतवालिवधाय ते॥ ७१ ॥

नमः कृतवते सेतुं समुद्रे वरुणालये।
सर्वराक्षससंहर्त्रे रावणप्राणहारिणे॥ ७२॥

संसाराम्बुधिसन्तारपोतपादाम्बुजाय ते।
नमो भक्तार्तिसंहर्त्रे सच्चिदानन्दरूपिणे॥ ७३॥

नमस्ते रामभद्राय जगतामृद्धिहेतवे।
रामादिपुण्यनामानि जपतां पापहारिणे॥ ७४॥

नमस्ते सर्वलोकानां सृष्टिस्थित्यन्तकारिणे।
नमस्ते करुणामूर्ते भक्तरक्षणदीक्षित॥ ७५॥

ससीताय नमस्तुभ्यं विभीषणसुखप्रद।
लङ्केश्वरवधाद्राम पालितं हि जगत्त्वया॥ ७६॥

रक्ष रक्ष जगन्नाथ पाह्यस्माञ्जानकीपते।
स्तुत्वैवं मुनयः सर्वे तूष्णीं तस्थुर्द्विजोत्तमाः॥ ७७॥

श्रीसूत उवाच

य इदं रामचन्द्रस्य स्तोत्रं मुनिभिरीरितम्।
त्रिसन्ध्यं पठते भक्त्या भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति॥ ७८॥

प्रयाणकाले पठतो न भीतिरुपजायते।
एतत्स्तोत्रस्य पठनाद् भूतवेतालकादयः॥ ७९॥

नश्यन्ति रोगा नश्यन्ति नश्यते पापसञ्चयः।
पुत्रकामो लभेत्पुत्रं कन्या विन्दति सत्पतिम्॥ ८०॥

मोक्षकामो लभेन्मोक्षं धनकामो धनं लभेत्।
सर्वान्कामानवाप्नोति पठन्भक्त्या त्विमं स्तवम्॥ ८१॥

॥ इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां तृतीये ब्रह्मखण्डे सेतुमाहात्म्ये रामनाथलिङ्गप्रतिष्ठाविधिवर्णनं नाम चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायतः मुनिभिः कृतं रामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ एकश्लोकि रामायणम् ॥

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं काञ्चनम्
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम्।
वालीनिर्दलनं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनम्
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननमेतद्धि रामायणम् ॥

॥ गायत्री-रामायणम् ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमे।
यं नत्वा कृतकृत्याः स्युस्तं नमामि गजाननम् ॥

॥ श्री-गुरु-प्रार्थना ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः ॥

सदाशिवसमारम्भां शङ्कराचार्यमध्यमाम्।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ॥

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री-गुरवे नमः ॥

॥ श्री-सरस्वती-प्रार्थना ॥

दोर्भिर्युक्ता चतुर्भिः स्फटिकमणिनिभैरक्षमालां दधाना
हस्तेनैकेन पद्मं सितमपि च शुकं पुस्तकं चापरेण।
भासा कुन्देन्दुशङ्खस्फटिकमणिनिभा भासमानाऽसमाना
सा मे वाग्देवतेयं निवसतु वदने सर्वदा सुप्रसन्ना॥

॥ श्री-वाल्मीकि-नमस्क्रिया ॥

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्॥ १ ॥

वाल्मीकेर्मुनिसिंहस्य कवितावनचारिणः।
शृण्वन् रामकथानादं को न याति परां गतिम्॥ २ ॥

यः पिबन् सततं रामचरितामृतसागरम्।
अतृप्तस्तं मुनिं वन्दे प्राचेतसमकल्मषम्॥ ३ ॥

॥ श्री-हनुमन्नमस्क्रिया ॥

गोष्पदीकृत-वाराशिं मशकीकृत-राक्षसम्।
रामायण-महामाला-रत्नं वन्देऽनिलात्मजम्॥ १ ॥

अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम्।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम्॥ २ ॥

उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम्॥ ३ ॥

आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रि-कमनीय-विग्रहम्।
पारिजात-तरुमूल-वासिनं भावयामि पवमान-नन्दनम्॥ ४ ॥

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम्।
बाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम्॥ ५॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि॥ ६॥

॥ श्री-रामायण-प्रार्थना॥

यः कर्णाञ्जलिसम्पुटैरहरहः सम्यक् पिबत्यादरात्
वाल्मीकेर्वदनारविन्दगलितं रामायणाख्यं मधु।
जन्म-व्याधि-जरा-विपत्ति-मरणैरत्यन्त-सोपद्रवम्
संसारं स विहाय गच्छति पुमान् विष्णोः पदं शाश्वतम्॥ १॥

तदुपगत-समास-सन्धियोगं सममधुरोपनतार्थ-वाक्यबद्धम्।
रघुवरचरितं मुनिप्रणीतं दशशिरसश्च वधं निशामयध्वम्॥ २॥

वाल्मीकि-गिरिसम्भूता रामसागरगामिनी।
पुनातु भुवनं पुण्या रामायणमहानदी॥ ३॥

श्लोकसारजलाकीर्णं सर्गकल्लोलसङ्कुलम्।
काण्डग्राहमहामीनं वन्दे रामायणार्णवम्॥ ४॥

वेदवेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे।
वेदः प्राचेतसादासीत् साक्षाद्रामायणात्मना॥ ५॥

॥ श्री-राम-ध्यानम्॥

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे
मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम्।
अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परम्
व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम्॥ १॥

वामे भूमिसुता पुरश्च हनुमान् पश्चात् सुमित्रासुतः
शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्वदलयोर्वाय्वादिकोणेषु च।
सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारासुतो जाम्बवान्
मध्ये नीलसरोजकोमलरुचिं रामं भजे श्यामलम्॥ २॥

रामं रामानुजं सीतां भरतं भरतानुजम्।
सुग्रीवं वायुसूनुं च प्रणमामि पुनः पुनः॥ ३॥

नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै।
नमोऽस्तु रुद्रेन्द्रयमानिलेभ्यो नमोऽस्तु चन्द्रार्कमरुद्गणेभ्यः॥ ४॥

ॐ श्री-गुरुभ्यो नमः।

॥ गायत्री रामयाणम्॥

तपः स्वाध्यायनिरतं तपस्वी वाग्विदां वरम्।
नारदं परिपप्रच्छ वाल्मीकिर्मुनिपुङ्गवम्॥ १॥ १-१-१

स हत्वा राक्षसान् सर्वान् यज्ञघ्नान् रघुनन्दनः।
ऋषिभिः पूजितः सम्यक् यथेन्द्रो विजये पुरा॥ २॥ १-३०-२३

विश्वामित्रस्तु धर्मात्मा श्रुत्वा जनकभाषितम्।
वत्स राम धनुः पश्य इति राघवमब्रवीत्॥ ३॥ १-६७-१२

तुष्टावास्य तदा वंशं प्रविश्य च विशाम्पतेः।
शयनीयं नरेन्द्रस्य तदासाद्य व्यतिष्ठत॥ ४॥ २-१५-२०

वनवासं हि सङ्ख्याय वासांस्याभरणानि च।
भर्तारमनुगच्छन्त्यै सीतायै श्वशुरो ददौ॥ ५॥ २-४०-१५

राजा सत्यं च धर्मं च राजा कुलवतां कुलम्।
राजा माता पिता चैव राजा हितकरो नृणाम्॥ ६ ॥ २-६७-३४

निरीक्ष्य स मुहूर्तं तु ददर्श भरतो गुरुम्।
उटजे राममासीनं जटामण्डलधारिणम्॥ ७ ॥ २-९९-२५

यदि बुद्धिः कृता द्रष्टुम् अगस्त्यं तं महामुनिम्।
अद्यैव गमने बुद्धिं रोचयस्व महायशाः॥ ८ ॥ ३-११-४४

भरतस्यार्यपुत्रस्य श्वश्रूणां मम च प्रभो।
मृगरूपमिदं व्यक्तं विस्मयं जनयिष्यति॥ ९ ॥ ३-४३-१७

गच्छ शीघ्रमितो राम सुग्रीवं तं महाबलम्।
वयस्यं तं कुरु क्षिप्रमितो गत्वाऽद्य राघव॥ १० ॥ ३-७२-१७

देशकालौ प्रतीक्षस्व क्षममाणः प्रियाप्रिये।
सुखदुःखसहः काले सुग्रीववशगो भव॥ ११ ॥ ४-२२-२०

वन्द्यास्ते तु तपः सिद्धास्तपसा वीतकल्मषाः।
प्रष्टव्याश्चापि सीतायाः प्रवृत्तिं विनयान्वितैः॥ १२ ॥ ४-४३-३४

स निर्जित्य पुरीं श्रेष्ठां लङ्कां तां कामरूपिणीम्।
विक्रमेण महातेजा हनूमान्मारुतात्मजः॥ १३ ॥ ५-४-१

धन्या देवाः सगन्धर्वाः सिद्धाश्च परमर्षयः।
मम पश्यन्ति ये नाथं रामं राजीवलोचनम्॥ १४ ॥ ५-२६-४१

मङ्गलाभिमुखी तस्य सा तदासीन्महाकपेः।
उपतस्थे विशालाक्षी प्रयता हव्यवाहनम्॥ १५ ॥ ५-५३-२६

हितं महार्थं मृदु हेतुसंहितम्
व्यतीतकालायतिसम्प्रतिक्षमम्।
निशम्य तद्वाक्यमुपस्थितज्वरः
प्रसङ्गवानुत्तरमेतदब्रवीत् ॥ १६ ॥ ६-१०-२७

धर्मात्मा रक्षसां श्रेष्ठः सम्प्राप्तोऽयं विभीषणः।
लङ्कैश्वर्यं ध्रुवं श्रीमानयं प्राप्नोत्यकण्टकम्॥ १७ ॥ ६-४१-६८

यो वज्रपाताशनिसन्निपातान्
न चुक्षुभे नापि चचाल राजा।
स रामबाणाभिहतो भृशार्तः
चचाल चापं च मुमोच वीरः ॥ १८ ॥ ६-५९-१४०

यस्य विक्रममासाद्य राक्षसा निधनं गताः।
तं मन्ये राघवं वीरं नारायणमनामयम्॥ १९ ॥ ६-७२-११

न ते ददृशिरे रामं दहन्तमरिवाहिनीम्।
मोहिताः परमास्त्रेण गान्धर्वेण महात्मना ॥ २० ॥ ६-९४-२६

प्रणम्य देवताभ्यश्च ब्राह्मणेभ्यश्च मैथिली।
बद्धाञ्जलिपुटा चेदमुवाचाग्निसमीपतः ॥ २१ ॥ ६-११९-२३

चलनात्पर्वतेन्द्रस्य गणा देवाश्च कम्पिताः।
चचाल पार्वती चापि तदाऽऽश्लिष्टा महेश्वरम्॥ २२ ॥ ७-१६-२६

दाराः पुत्राः पुरं राष्ट्रं भोगाच्छादनभोजनम्।
सर्वमेवाविभक्तं नौ भविष्यति हरीश्वर ॥ २३ ॥ ७-३४-४१

यामेव रात्रिं शत्रुघ्नः पर्णशालां समाविशत्।
तामेव रात्रिं सीताऽपि प्रसूता दारकद्वयम्॥ २४ ॥ ७-६६-१

इदं रामायणं कृत्स्नं गायत्रीबीजसंयुतम्।
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं सर्वपापैः प्रमुच्यते॥

॥इति श्री-गायत्री रामायणं सम्पूर्णम्॥

॥ मङ्गलश्लोकाः ॥

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्ताम्
न्यायेन मार्गेण महीं महीशाः।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यम्
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु॥ १ ॥

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी।
देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः॥ २॥

अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
अधनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्॥ ३॥

चरितं रघुनाथस्य शतकोटि-प्रविस्तरम्।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम्॥ ४॥

श्रृण्वन् रामायणं भक्त्या यः पादं पदमेव वा।
स याति ब्रह्मणः स्थानं ब्रह्मणा पूज्यते सदा॥ ५॥

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥ ६ ॥

यन्मङ्गलं सहस्राक्षे सर्वदेवनमस्कृते।
वृत्रनाशे समभवत् तत्ते भवतु मङ्गलम्॥ ७॥

यन्मङ्गलं सुपर्णस्य विनताऽकल्पयत् पुरा।
अमृतं प्रार्थयानस्य तत्ते भवतु मङ्गलम्॥८॥

अमृतोत्पादने दैत्यान् घ्नतो वज्रधरस्य यत्।
अदितिर्मङ्गलं प्रादात् तत्ते भवतु मङ्गलम्॥९॥

त्रीन् विक्रमान् प्रक्रमतो विष्णोरमिततेजसः।
यदासीन्मङ्गलं राम तत्ते भवतु मङ्गलम्॥१०॥

ऋषयः सागरा द्वीपा वेदा लोका दिशश्च ते।
मङ्गलानि महाबाहो दिशन्तु तव सर्वदा॥११॥

मङ्गलं कोसलेन्द्राय महनीयगुणाब्धये।
चक्रवर्तितनूजाय सार्वभौमाय मङ्गलम्॥१२॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

❀❀❀

॥ हनुमान् चालीसा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज
निज मनु मुकुर सुधार।
बरनऊँ रघुवर विमल यश
जो दायकु फल चार॥

बुद्धिहीन तनु जानिके
सुमिरौं पवनकुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं
हरहु कलेस विकार॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर।
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर॥ १॥

राम दूत अतुलित बल धामा।
अञ्जनिपुत्र पवनसुत नामा॥ २॥

महावीर विक्रम बजरङ्गी।
कुमति निवार सुमति के सङ्गी॥ ३॥

कञ्चन बरन विराज सुवेसा।
कानन कुण्डल कुञ्चित केशा॥ ४॥

हाथ वज्र औ ध्वजा विराजै।
काँधे मूँज जनेऊ साजै॥ ५॥

सङ्कर सुवन केसरीनन्दन।
तेज प्रताप महा जग वन्दन॥ ६॥

विद्यावान गुणी अति चातुर।
राम काज करिबे को आतुर॥ ७॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया॥ ८॥

राम लक्ष्मण जानकी।
जय बोलो हनुमान् की॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
विकट रूप धरि लङ्क जरावा॥ ९॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे।
रामचन्द्र के काज सँवारे॥ १०॥

लाय सजीवन लखन जियाये।
श्रीरघुवीर हरषि उर लाये॥ ११॥

रघुपति कीन्ही बहुत बडाई।
तुम मम प्रिय भरत सम भाई॥ १२॥

सहस वदन तुम्हरो यश गावैं।
अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं॥ १३॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा।
नारद शारद सहित अहीशा॥ १४॥

यम कुबेर दिक्पाल जहाँ ते।
कवि कोविद कहि सके कहाँ ते॥ १५॥

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा॥ १६॥

राम लक्ष्मण जानकी।
जय बोलो हनुमान् की॥

तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना।
लङ्केश्वर भये सब जग जाना॥ १७॥

युग सहस्त्र योजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥ १८॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं॥ १९॥

दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥ २०॥

राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिन पैसारे॥ २१॥

सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रक्षक काहू को डर ना॥ २२॥

आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हाँक तें काँपै॥ २३॥

भूत पिशाच निकट नहिं आवै।
महावीर जब नाम सुनावै॥ २४॥

राम लक्ष्मण जानकी।
जय बोलो हनुमान् की॥

नाशै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरन्तर हनुमत वीरा॥ २५॥

सङ्कट से हनुमान छुडावै।
मन क्रम वचन ध्यान जो लावै॥ २६॥

सब पर राम तपस्वी राजा।
तिन के काज सकल तुम साजा॥ २७॥

और मनोरथ जो कोई लावै।
दासु अमित जीवन फल पावै॥ २८॥

चारों युग प्रताप तुम्हारा।
है प्रसिद्ध जगत उजियारा॥ २९॥

साधु सन्त के तुम रखवारे।
असुर निकन्दन राम दुलारे॥ ३०॥

अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता।
अस बर दीन जानकी माता॥ ३१॥

राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा॥ ३२॥

राम लक्ष्मण जानकी।
जय बोलो हनुमान् की॥

तुम्हरे भजन राम को पावै।
जन्म जन्म के दुख बिसरावै॥ ३३॥

अन्त काल रघुपति पुर जाई।
जहाँ जन्मि हरिभक्त कहाई॥ ३४॥

और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेई सर्व सुख करई॥ ३५॥

सङ्कट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलवीरा॥ ३६॥

जै जै जै हनुमान गोसाईं।
कृपा करहु गुरु देव की नाईं॥ ३७॥

यह शत पार पाठ कर कोई।
छूटहि बंदि महा सुख होई॥ ३८॥

यो यह पढ़ै हनुमान् चलीसा।
होय सिद्धि साखी गौरीसा॥ ३९॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय मँह डेरा॥ ४०॥

राम लक्ष्मण जानकी।
जय बोलो हनुमान् की॥

॥ आपदुद्धारक-द्वादशमुख-हनुमान् स्तोत्रम् ॥

ॐ अस्य श्री-आपदुद्धारक-द्वादशमुख-हनुमान् स्तोत्र-महामन्त्रस्य विभीषण ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः।
श्री-द्वादशमुख-प्रचण्ड-हनुमान् देवता।
मारुतात्मज इति बीजम्। अञ्जनासूनुरिति शक्तिः।
वायुपुत्रेति कीलकम्। श्रीहनुमत्प्रसादसिद्धिद्वारा सर्वापन्निवारणार्थे जपे विनियोगः।

॥ ध्यानम् ॥

उष्ट्रारूढ-सुवर्चलासहचरन् सुग्रीवमित्राञ्जना-
सूनो वायुकुमार केसरितनूजाक्षादिदैत्यान्तक।
सीतशोकहराग्निनन्दन सुमित्रासम्भवप्राणद
श्रीभीमाग्रज शम्भुपुत्र हनुमान् सूर्यास्य तुभ्यं नमः ॥

खड्गं खेटक-भिन्दिपाल-परशुं पाश-त्रिशूल-द्रुमान्
चक्रं शङ्ख-गदा-फलाङ्कुश-सुधाकुम्भान् हलं पर्वतम्।
टङ्कं पर्वतकार्मुकाहिडमरूनेतानि दिव्यायुधान्
एवं विंशतिबाहुभिश्च दधतं ध्यायेद्धनूमत्प्रभुम् ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

ॐ नमो भगवते तुभ्यं नमो मारुतसूनवे।
नमः श्रीरामभक्ताय श्यामास्याय च ते नमः ॥ १ ॥

नमो वानरवीराय सुग्रीवसख्यकारिणे।
लङ्काविदाहकायाथ हेलासागरतारिणे ॥ २ ॥

सीताशोकविनाशाय राममुद्राधराय च।
रावणस्य कुलच्छेदकारिणे ते नमो नमः॥ ३॥

मेघनादमखध्वंसकारिणे ते नमो नमः।
अशोकवनविध्वंसकारिणे भयहारिणे॥ ४॥

वायुपुत्राय वीराय आकाशोदरगामिने।
वनपालशिरश्छेत्रे लङ्काप्रासादभञ्जिने॥ ५॥

ज्वलत्कनकवर्णाय दीर्घलाङ्गूलधारिणे।
सौमित्रिजयदात्रे च रामदूताय ते नमः॥ ६॥

अक्षस्य वधकर्त्रे च ब्रह्मशक्तिनिवारिणे।
लक्ष्मणाङ्गमहाशक्ति-घात-क्षत-विनाशिने॥ ७॥

रक्षोघ्नाय रिपुघ्नाय भूतघ्नाय च ते नमः।
ऋक्षवानरवीरौघ-प्राणदायक ते नमः॥ ८॥

परसैन्यबलघ्नाय शस्त्रास्त्रविघनाय च।
विषघ्नाय द्विषघ्नाय ज्वरघ्नाय च ते नमः॥ ९॥

महाभयरिपुघ्नाय भक्तत्राणैककारिणे।
परप्रेरितमन्त्राणां यन्त्राणां स्तम्भकारिणे॥ १०॥

पयः-पाषाण-तरण-कारणाय नमो नमः।
बालार्कमण्डलग्रासकारिणे भवतारिणे॥ ११॥

नखायुधाय भीमाय दन्तायुधधराय च।
रिपुमायाविनाशाय रामाज्ञालोकरक्षिणे॥ १२॥

प्रतिग्रामस्थितायाथ रक्षोभूतवधार्थिने।
करालशैलशस्त्राय द्रुमशस्त्राय ते नमः॥ १३॥

बालैकब्रह्मचर्याय रुद्रमूर्तिधराय च।
विहङ्गमाय शर्वाय वज्रदेहाय ते नमः॥ १४॥

कौपीनवाससे तुभ्यं रामभक्तिरताय च।
दक्षिणाशाभास्कराय शतचन्द्रोदयात्मने॥ १५॥

कृत्या-क्षत-व्यथघ्नाय सर्वक्लेशहराय च।
स्वाम्याज्ञा-पार्थसङ्ग्राम-सङ्ख्ये सञ्जयधारिणे॥ १६॥

भक्तानां दिव्यवादेषु सङ्ग्रामे जयदायिने।
किलकिल्याबूबुरोच्चघोरशब्दकराय च॥ १७॥

सर्पाग्निव्याधिसंस्तम्भकारिणे वनचारिणे।
सदा वनफलाहार-सन्तृप्ताय विशेषतः।
महार्णव-शिला-बद्ध-सेतवे ते नमो नमः॥ १८॥

वादे विवादे सङ्ग्रामे भये घोरे महावने।
सिंहव्याघ्रादि चौरेभ्यः स्तोत्रपाठाद्भयं न हि॥ १९॥

दिव्ये भूतभये व्याधौ गृहे स्थावरजङ्गमे।
राजशस्त्रभये चोग्रबाधा ग्रहभयेषु च॥ २०॥

जले सर्वे महावृष्टौ दुर्भिक्षे प्राणसम्प्लवे।
पठेत् स्तोत्रं प्रमुच्येत भयेभ्यः सर्वतो नरः।
तस्य क्वापि भयं नास्ति हनुमत् स्तवपाठतः॥ २१॥

सर्वथा वै त्रिकालं च पठनीयमिमं स्तवम्।
सर्वान् कामानवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा॥ २२॥

विनतायाः स्वमातुश्च दासीत्वस्य निवृत्तये।
सुधार्णं यातुकामाय महापौरुषशालिने॥ २३॥

विभीषणकृतं स्तोत्रं तार्क्ष्येण समुदीरितम्।
ये पठन्ति सदा भक्त्या सिद्धयस्तत्करे स्थिताः॥ २४॥

॥ इति श्री-सुदर्शनसंहितायां श्री-विभीषणगरुडसंवादे श्री-विभीषणकृतम् आपदुद्धारक श्री-द्वादशमुख-हनुमान् स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ सुन्दरहनुमान् महामन्त्रनामस्तोत्रम्॥

हनुमान् अञ्जनासूनुर्वायुपुत्रो महाबलः।
कपीन्द्रः पिङ्गलाक्षश्च लङ्काद्वीपभयङ्करः॥ १॥

प्रभञ्जनसुतो वीरः सीताशोकविनाशकः।
अक्षहन्ता रामसखो रामकार्यधुरन्धरः॥ २॥

महौषधगिरेर्धारी वानरप्राणदायकः।
वारीशतारकश्चैव मैनाकगिरिभञ्जनः॥ ३॥

निरञ्जनो जितक्रोधः कदलीवनसंवृतः।
ऊर्ध्वरेता महासत्त्वः सर्वमन्त्रप्रवर्तकः॥ ४॥

महालिङ्गप्रतिष्ठाता बाष्पकृज्जपतान्तरः।
शिवध्यानपरो नित्यं शिवपूजापरायणः॥ ५॥

॥ इति श्री-पराशरसंहितान्तर्गतं श्री-सुन्दरहनुमान् महामन्त्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ हनुमत् पञ्चरत्नम् ॥

वीताखिल-विषयेच्छं जातानन्दाश्रु-पुलकमत्यच्छम्।
सीतापति-दूताद्यं वातात्मजमद्य भावये हृद्यम्॥ १ ॥

तरुणारुण-मुख-कमलं करुणा-रसपूर-पूरितापाङ्गम्।
सञ्जीवनमाशासे मञ्जुल-महिमानमञ्जना-भाग्यम्॥ २ ॥

शम्बरवैरि-शरातिगमम्बुजदल-विपुल-लोचनोदारम्।
कम्बुगलमनिलदिष्टं बिम्ब-ज्वलितोष्ठमेकमवलम्बे॥ ३ ॥

दूरीकृत-सीतार्तिः प्रकटीकृत-रामवैभव-स्फूर्तिः।
दारित-दशमुख-कीर्तिः पुरतो मम भातु हनुमतो मूर्तिः॥ ४ ॥

वानर-निकराध्यक्षं दानव-कुल-कुमुद-रविकर-सदृशम्।
दीन-जनावन-दीक्षं पवनतपः पाकपुञ्जमद्राक्षम्॥ ५ ॥

एतत् पवनसुतस्य स्तोत्रं यः पठति पञ्चरत्नाख्यम्।
चिरमिह निखिलान् भोगान् भुक्त्वा श्रीराम-भक्तिभाग् भवति॥ ६ ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-हनुमत्-पञ्चरत्नं सम्पूर्णम्॥

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृत-मस्तकाञ्जलिम्।
बाष्पवारिपरिपूर्ण-लोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम्॥

उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलम्
यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः।
आदाय तेनैव ददाह लङ्काम्
नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम्॥

बुद्धिर्बलं यशो धैर्यं निर्भयत्वम् अरोगता।
अजाड्यं वाक्पटुत्वं च हनुमत्स्मरणाद्भवेत्॥

असाध्यसाधक स्वामिन् असाध्यं तव किं वद।
रामदूत कृपसिन्धो मत्कार्यं साधय प्रभो॥

❀❀❀

॥ कृष्णाष्टकम् १ ॥

श्रियाश्लिष्टो विष्णुः स्थिरचरगुरुर्वेदविषयो
धियां साक्षी शुद्धो हरिरसुरहन्ताब्जनयनः।
गदी शङ्खी चक्री विमलवनमाली स्थिररुचिः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥ १ ॥

यतः सर्वं जातं वियदनिलमुख्यं जगदिदम्
स्थितौ निःशेषं योऽवति निजसुखांशेन मधुहा।
लये सर्वं स्वस्मिन् हरति कलया यस्तु स विभुः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥ २ ॥

असूनायम्यादौ यमनियममुख्यैः सुकरणैः
निरुद्ध्येदं चित्तं हृदि विलयमानीय सकलम्।
यमीड्यं पश्यन्ति प्रवरमतयो मायिनमसौ
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥ ३ ॥

पृथिव्यां तिष्ठन् यो यमयति महीं वेद न धरा
यमित्यादौ वेदो वदति जगतामीशममलम्।
नियन्तारं ध्येयं मुनिसुरनृणां मोक्षदमसौ
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥ ४ ॥

महेन्द्रादिर्देवो जयति दितिजान् यस्य बलतो
न कस्य स्वातन्त्र्यं क्वचिदपि कृतौ यत्कृतिमृते।
बलारातेर्गर्वं परिहरति योऽसौ विजयिनः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥ ५ ॥

विना यस्य ध्यानं व्रजति पशुतां सूकरमुखाम्
विना यस्य ज्ञानं जनिमृतिभयं याति जनता।
विना यस्य स्मृत्या कृमिशतजनिं याति स विभुः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः॥ ६॥

नरातङ्कोट्टङ्कः शरणशरणो भ्रान्तिहरणो
घनश्यामो वामो व्रजशिशुवयस्योऽर्जुनसखः।
स्वयम्भूर्भूतानां जनक उचिताचारसुखदः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः॥ ७॥

यदा धर्मग्लानिर्भवति जगतां क्षोभकरणी
तदा लोकस्वामी प्रकटितवपुः सेतुधृगजः।
सतां धाता स्वच्छो निगमगणगीतो व्रजपतिः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः॥ ८॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-कृष्णाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ कृष्णाष्टकम् २ ॥

नित्यानन्दैकरसं सच्चिन्मात्रं स्वयं ज्योतिः।
पुरुषोत्तममजमीशं वन्दे श्रीयादवाधीशम्॥

भजे व्रजैकमण्डनं समस्तपापखण्डनम्
स्वभक्तचित्तरञ्जनं सदैव नन्दनन्दनम्।
सुपिच्छगुच्छमस्तकं सुनादवेणुहस्तकम्
अनङ्गरङ्गसागरं नमामि कृष्णनागरम्॥ १॥

मनोजगर्वमोचनं विशाललोललोचनम्
विधूतगोपशोचनं नमामि पद्मलोचनम्।
करारविन्दभूधरं स्मितावलोकसुन्दरम्
महेन्द्रमानदारणं नमामि कृष्णवारणम्॥ २ ॥

कदम्बसूनकुण्डलं सुचारुगण्डमण्डलम्
व्रजाङ्गनैकवल्लभं नमामि कृष्णदुर्लभम्।
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया
युतं सुखैकदायकं नमामि गोपनायकम्॥ ३ ॥

सदैव पादपङ्कजं मदीय मानसे निजम्
दधानमुक्तमालकं नमामि नन्दबालकम्।
समस्तदोषशोषणं समस्तलोकपोषणम्
समस्तगोपमानसं नमामि नन्दलालसम्॥ ४ ॥

भुवो भरावतारकं भवाब्धिकर्णधारकम्
यशोमतीकिशोरकं नमामि चित्तचोरकम्।
दृगन्तकान्तभङ्गिनं सदा सदालिसङ्गिनम्
दिने दिने नवं नवं नमामि नन्दसम्भवम्॥ ५ ॥

गुणाकरं सुखाकरं कृपाकरं कृपापरम्
सुरद्विषन्निकन्दनं नमामि गोपनन्दनम्।
नवीनगोपनागरं नवीनकेलिलम्पटम्
नमामि मेघसुन्दरं तडित्प्रभालसत्पटम्॥ ६ ॥

समस्तगोपनन्दनं हृदम्बुजैकमोदनम्
नमामि कुञ्जमध्यगं प्रसन्नभानुशोभनम्।
निकामकामदायकं दृगन्तचारुसायकम्
रसालवेणुगायकं नमामि कुञ्जनायकम्॥ ७॥

विदग्धगोपिकामनोमनोज्ञतल्पशायिनम्
नमामि कुञ्जकानने प्रवृद्धवह्निपायिनम्।
किशोरकान्तिरञ्जितं दृगञ्जनं सुशोभितम्
गजेन्द्रमोक्षकारिणं नमामि श्रीविहारिणम्॥ ८॥

यदा तदा यथा तथा तथैव कृष्णसत्कथा
मया सदैव गीयतां तथा कृपा विधीयताम्।
प्रमाणिकाष्टकद्वयं जपत्यधीत्य यः पुमान्
भवेत् स नन्दनन्दने भवे भवे सुभक्तिमान्॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-कृष्णाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ कृष्णाष्टकम् ३ ॥

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥ १ ॥

अतसीपुष्पसङ्काशं हारनूपुरशोभितम्।
रत्नकङ्कणकेयूरं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥ २ ॥

कुटिलालकसंयुक्तं पूर्णचन्द्रनिभाननम्।
विलसत् कुण्डलधरं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥ ३॥

मन्दारगन्धसंयुक्तं चारुहासं चतुर्भुजम्।
बर्हिपिञ्छावचूडाङ्गं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥ ४॥

उत्फुल्लपद्मपत्राक्षं नीलजीमूतसन्निभम्।
यादवानां शिरोरत्नं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥ ५॥

रुक्मिणीकेलिसंयुक्तं पीताम्बरसुशोभितम्।
अवाप्ततुलसीगन्धं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥ ६॥

गोपिकानां कुचद्वन्द्वं कुङ्कुमाङ्कितवक्षसम्।
श्रीनिकेतं महेष्वासं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥ ७॥

श्रीवत्साङ्कं महोरस्कं वनमालाविराजितम्।
शङ्खचक्रधरं देवं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥ ८॥

कृष्णाष्टकमिदं पुण्यं प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
कोटिजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥

॥ इति श्री-कृष्णाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ श्री-कृष्ण-जननम्॥

निशीथे तम उद्भूते जायमाने जनार्दने।
देवक्यां देवरूपिण्यां विष्णुः सर्वगुहाशयः।
आविरासीद्यथा प्राच्यां दिशीन्दुरिव पुष्कलः॥ ८॥

तमद्भुतं बालकमम्बुजेक्षणम्
चतुर्भुजं शङ्खगदाद्युदायुधम्।
श्रीवत्सलक्ष्मं गलशोभिकौस्तुभम्
पीताम्बरं सान्द्रपयोदसौभगम्॥९॥

महार्ह-वैदूर्य-किरीट-कुण्डल-
त्विषा परिष्वक्तसहस्रकुन्तलम्।
उद्दाम-काञ्च्यङ्गद-कङ्कणादिभिर्-
विरोचमानं वसुदेव ऐक्षत॥१०॥

॥इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे तृतीयेऽध्याये श्री-कृष्ण-जन्मानुवर्णनम्॥

॥गोविन्दाष्टकम्॥

सत्यं ज्ञानमनन्तं नित्यमनाकाशं परमाकाशम्
गोष्ठप्राङ्गणरिङ्खणलोलमनायासं परमायासम्।
मायाकल्पितनानाकारमनाकारं भुवनाकारम्
क्ष्मामा नाथमनाथं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम्॥१॥

मृत्स्नामत्सीहेति यशोदाताडनशैशव-सन्त्रासम्
व्यादितवक्त्रालोकितलोकालोकचतुर्दशलोकालिम्।
लोकत्रयपुरमूलस्तम्भं लोकालोकमनालोकम्
लोकेशं परमेशं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम्॥२॥

त्रैविष्टपरिपुवीरघ्नं क्षितिभारघ्नं भवरोगघ्नम्
कैवल्यं नवनीताहारमनाहारं भुवनाहारम्।
वैमल्यस्फुटचेतोवृत्तिविशेषाभासमनाभासम्
शैवं केवलशान्तं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम्॥ ३॥

गोपालं प्रभुलीलाविग्रहगोपालं कुलगोपालम्
गोपीखेलनगोवर्धनधृतलीलालालितगोपालम्।
गोभिर्निगदित-गोविन्दस्फुटनामानं बहुनामानम्
गोधीगोचरदूरं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम्॥ ४॥

गोपीमण्डलगोष्ठीभेदं भेदावस्थमभेदाभम्
शश्वद्गोखुरनिर्धूतोद्गतधूलीधूसरसौभाग्यम् ।
श्रद्धाभक्तिगृहीतानन्दमचिन्त्यं चिन्तितसद्भावम्
चिन्तामणिमहिमानं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम्॥ ५॥

स्नानव्याकुलयोषिद्वस्त्रमुपादायागमुपारूढम्
व्यादित्सन्तीरथ दिग्वस्त्रा दातुमुपाकर्षन्तं ताः।
निर्धूतद्वयशोकविमोहं बुद्धं बुद्धेरन्तःस्थम्
सत्तामात्रशरीरं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम्॥ ६॥

कान्तं कारणकारणमादिमनादिं कालघनाभासम्
कालिन्दीगतकालियशिरसि सुनृत्यन्तं मुहुरत्यन्तम्।
कालं कालकलातीतं कलिताशेषं कलिदोषघ्नम्
कालत्रयगतिहेतुं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम्॥ ७॥

बृन्दावनभुवि बृन्दारकगण बृन्दाराधित वन्द्येऽहम्
कुन्दाभामलमन्दस्मेरसुधानन्दं सुहृदानन्दम्।
वन्द्याशेषमहामुनिमानसवन्द्यानन्दपदद्वन्द्वम्
वन्द्याशेषगुणाब्धिं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम्॥८॥

गोविन्दाष्टकमेतदधीते गोविन्दार्पितचेता यः
गोविन्द अच्युत माधव विष्णो गोकुलनायक कृष्णेति।
गोविन्दाङ्घ्रि-सरोजध्यान-सुधाजलधौत-समस्ताघः
गोविन्दं परमानन्दामृतम् अन्तःस्थं स तमभ्येति॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-गोविन्दाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥गीतगोविन्दम्॥

॥श्री-जयदेव ध्यानम्॥

श्रीगोपालविलासिनी वलयसद्रत्नादिमुग्धाकृति
श्रीराधापतिपादपद्मभजनानन्दाब्धिमग्नोऽनिशम्।
लोके सत्कविराजराज इति यः ख्यातो दयाम्भोनिधिः
तं वन्दे जयदेवसद्गुरुमहं पद्मावतीवल्लभम्॥

प्रलयपयोधिजले केशव धृतवानसि वेदम्।
विहितवहित्रचरित्रमखेदम्॥
केशव धृतमीनशरीर जय जगदीश हरे॥१॥

क्षितिरतिविपुलतरे केशव तव तिष्ठति पृष्ठे।
धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे॥
केशव धृतकच्छपरूप जय जगदीश हरे॥ २॥

वसति दशनशिखरे केशव धरणी तव लग्ना।
शशिनि कलङ्ककलेव निमग्ना॥
केशव धृतसूकररूप जय जगदीश हरे॥ ३॥

तव करकमलवरे केशव नखमद्भुतशृङ्गम्।
दलितहिरण्यकशिपुतनुभृङ्गम्॥
केशव धृतनरहरिरूप जय जगदीश हरे॥ ४॥

छलयसि विक्रमणे केशव बलिमद्भुतवामन।
पदनखनीरजनितजनपावन॥
केशव धृतवामनरूप जय जगदीश हरे॥ ५॥

क्षत्रियरुधिरमये केशव जगदपगतपापम्।
स्नपयसि पयसि शमितभवतापम्॥
केशव धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश हरे॥ ६॥

वितरसि दिक्षु रणे केशव दिक्पतिकमनीयम्।
दशमुखमौलिबलिं रमणीयम्॥
केशव धृतरामशरीर जय जगदीश हरे॥ ७॥

वहसि वपुषि विशदे केशव वसनं जलदाभम्।
हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम्॥
केशव धृतहलधररूप जय जगदीश हरे॥ ८॥

निन्दसि यज्ञविधेः केशव अहह श्रुतिजातम्।
सदयहृदयदर्शितपशुघातम्॥
केशव धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे॥ ९॥

म्लेच्छनिवहनिधने केशव कलयसि करवालम्।
धूमकेतुमिव किमपि करालम्॥
केशव धृतकल्किशरीर जय जगदीश हरे॥ १०॥

श्रीजयदेवकवेः केशव इदमुदितमुदारम्।
शृणु शुभदं सुखदं भवसारम्॥
केशव धृतदशविधरूप जय जगदीश हरे॥

वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्बिभ्रते
दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते।
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते
म्लेच्छान्मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः॥

॥इति श्री-जयदेवविरचितं दशावतार-गीतगोविन्दं सम्पूर्णम्॥

॥भज गोविन्दम्॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दम्
गोविन्दं भज मूढमते।
सम्प्राप्ते सन्निहिते काले
न हि न हि रक्षति डुकृञ् करणे॥ १॥

मूढ जहीहि धनागमतृष्णाम्
कुरु सद्बुद्धिं मनसि वितृष्णाम्।
यल्लभसे निजकर्मोपात्तम्
वित्तं तेन विनोदय चित्तम्॥ २॥

नारीस्तनभरनाभीदेशं
दृष्ट्वा मा गा मोहावेशम्।
एतन्मांसावसादि विकारम्
मनसि विचिन्तय वारं वारम्॥३॥

नलिनीदलगतजलमतितरलम्
तद्वज्जीवितमतिशयचपलम्।
विद्धि व्याध्यभिमानग्रस्तम्
लोकं शोकहतं च समस्तम्॥४॥

यावद्वित्तोपार्जन-सक्तः
तावन्निज-परिवारो रक्तः।
पश्चाज्जीवति जर्जरदेहे
वार्तां कोऽपि न पृच्छति गेहे॥५॥

यावत् पवनो निवसति देहे
तावत् पृच्छति कुशलं गेहे।
गतवति वायौ देहापाये
भार्या बिभ्यति तस्मिन् काये॥६॥

बालस्तावत्क्रीडासक्तः
तरुणस्तावत्तरुणीसक्तः ।
वृद्धस्तावच्चिन्तासक्तः
परे ब्रह्मणि कोऽपि न सक्तः॥७॥

का ते कान्ता कस्ते पुत्रः
संसारोऽयमतीव विचित्रः।
कस्य त्वं कः कुत आयातः
तत्त्वं चिन्तय तदिह भ्रातः॥८॥

सत्सङ्गत्वे निःसङ्गत्वम्
निःसङ्गत्वे निर्मोहत्वम्।
निर्मोहत्वे निश्चलितत्त्वम्
निश्चलितत्त्वे जीवन-मुक्तिः॥९॥

वयसि गते कः कामविकारः
शुष्के नीरे कः कासारः।
क्षीणे वित्ते कः परिवारः
ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः॥१०॥

मा कुरु धनजनयौवनगर्वम्
हरति निमेषात् कालः सर्वम्।
मायामयमिदमखिलं हित्वा
ब्रह्मपदं त्वं प्रविश विदित्वा॥११॥

दिनयामिन्यौ सायं प्रातः
शिशिरवसन्तौ पुनरायातः।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुः
तदपि न मुञ्चत्याशावायुः॥१२॥

द्वादशमञ्जरिकाभिरशेषः
कथितो वैयाकरणस्यैषः।
उपदेशो भूद्विद्यानिपुणैः
श्रीमच्छङ्करभगवच्छरणैः॥

का ते कान्ता धनगतचिन्ता
वातुल किं तव नास्ति नियन्ता।
त्रिजगति सज्जनसङ्गतिरेका
भवति भवार्णवतरणे नौका॥१३॥

जटिलो मुण्डी लुञ्छितकेशः
काषायाम्बरबहुकृतवेषः ।
पश्यन्नपि चन पश्यति मूढः
उदरनिमित्तं बहुकृतवेषः॥१४॥

अङ्गं गलितं पलितं मुण्डम्
दशनविहीनं जातं तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डम्
तदपि न मुञ्चत्याशापिण्डम्॥१५॥

अग्रे वह्निः पृष्ठे भानुः
रात्रौ चुबुकसमर्पितजानुः।
करतलभिक्षस्तरुतलवासः
तदपि न मुञ्चत्याशापाशः॥ १६॥

कुरुते गङ्गासागरगमनं
व्रतपरिपालनमथवा दानम्।
ज्ञानविहीनः सर्वमतेन
मुक्तिं न भजति जन्मशतेन॥ १७॥

सुरमन्दिर-तरुमूल-निवासः
शय्या भूतलमजिनं वासः।
सर्व-परिग्रह भोगत्यागः
कस्य सुखं न करोति विरागः॥ १८॥

योगरतो वा भोगरतो वा
सङ्गरतो वा सङ्गविहीनः।
यस्य ब्रह्मणि रमते चित्तं
नन्दति नन्दति नन्दत्येव॥ १९॥

भगवद्गीता किञ्चिदधीता
गङ्गाजललव-कणिका पीता।
सकृदपि येन मुरारि समर्चा
क्रियते तस्य यमेन न चर्चा॥ २०॥

पुनरपि जननं पुनरपि मरणम्
पुनरपि जननी-जठरे शयनम्।
इह संसारे बहुदुस्तारे
कृपयाऽपारे पाहि मुरारे॥ २१॥

रथ्या-चर्पट-विरचित-कन्थः
पुण्यापुण्य-विवर्जित-पन्थः।
योगी योगनियोजित चित्तो
रमते बालोन्मत्तवदेव॥ २२॥

कस्त्वं कोऽहं कुत आयातः
का मे जननी को मे तातः।
इति परिभावय सर्वमसारम्
विश्वं त्यक्त्वा स्वप्नविचारम्॥ २३॥

त्वयि मयि चान्यत्रैको विष्णुः
व्यर्थं कुप्यसि मय्यसहिष्णुः।
सर्वस्मिन्नपि पश्यात्मानं
सर्वत्रोत्सृज भेदाज्ञानम्॥ २४॥

शत्रौ मित्रे पुत्रे बन्धौ
मा कुरु यत्नं विग्रहसन्धौ।
भव समचित्तः सर्वत्र त्वम्
वाञ्छस्यचिराद्यदि विष्णुत्वम्॥ २५॥

कामं क्रोधं लोभं मोहं
त्यक्त्वाऽऽत्मानं भावय कोऽहम्।
आत्मज्ञानविहीना मूढाः
ते पच्यन्ते नरकनिगूढाः॥ २६॥

गेयं गीता नामसहस्रं
ध्येयं श्रीपति-रूपमजस्रम्।
नेयं सज्जन-सङ्गे चित्तं
देयं दीनजनाय च वित्तम्॥ २७॥

सुखतः क्रियते रामाभोगः
पश्चाद्धन्त शरीरे रोगः।
यद्यपि लोके मरणं शरणं
तदपि न मुञ्चति पापाचरणम्॥ २८॥

अर्थमनर्थं भावय नित्यं
नास्ति ततः सुखलेशः सत्यम्।
पुत्रादपि धनभाजां भीतिः
सर्वत्रैषा विहिता रीतिः॥ २९॥

प्राणायामं प्रत्याहारं
नित्यानित्य-विवेकविचारम्।
जाप्यसमेत-समाधिविधानं
कुर्ववधानं महदवधानम्॥ ३०॥

गुरुचरणाम्बुज-निर्भर-भक्तः
संसारादचिराद्भव मुक्तः।
सेन्द्रियमानस-नियमादेवं
द्रक्ष्यसि निजहृदयस्थं देवम्॥ ३१॥

मूढः कश्चन वैयाकरणो
डुकृञ्करणाध्ययन-धुरिणः ।
श्रीमच्छङ्कर-भगवच्छिष्यैः
बोधित आसिच्छोधितकरणः॥ ३२॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दम्
गोविन्दं भज मूढमते।
नामस्मरणादन्यमुपायं
न हि पश्यामो भवतरणे॥ ३३॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य
श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ भज गोविन्दं सम्पूर्णम्॥

॥ अक्रूरकृत-दशावतारस्तुतिः॥

नमः कारणमत्स्याय प्रलयाब्धिचराय च।
हयशीर्ष्णे नमस्तुभ्यं मधुकैटभमृत्यवे॥ १॥

अकूपाराय बृहते नमो मन्दरधारिणे।
क्षित्युद्धारविहाराय नमः शूकरमूर्तये॥ २॥

नमस्तेऽद्भुतसिंहाय साधुलोकभयापह।
वामनाय नमस्तुभ्यं क्रान्तत्रिभुवनाय च॥ ३॥

नमो भृगूणां पतये दृप्तक्षत्रवनच्छिदे।
नमस्ते रघुवर्याय रावणान्तकराय च॥ ४॥

नमस्ते वासुदेवाय नमः सङ्कर्षणाय च।
प्रद्युम्नायानिरुद्धाय सात्वतां पतये नमः॥५॥

नमो बुद्धाय शुद्धाय दैत्यदानवमोहिने।
म्लेच्छप्रायक्षत्रहन्त्रे नमस्ते कल्किरूपिणे॥ ६ ॥

॥इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे चत्वारिंशोऽध्याये श्री-अक्रूरकृत दशावतारस्तुतिः सम्पूर्णा॥

॥भीष्मस्तुतिः॥

श्री-भीष्म उवाच

इति मतिरुपकल्पिता वितृष्णा भगवति सात्वतपुङ्गवे विभूम्नि।
स्वसुखमुपगते क्वचिद्विहर्तुं प्रकृतिमुपेयुषि यद्भवप्रवाहः॥ १ ॥

त्रिभुवनकमनं तमालवर्णं रविकरगौरवराम्बरं दधाने।
वपुरलककुलावृताननाब्जं विजयसखे रतिरस्तु मेऽनवद्या॥ २ ॥

युधि तुरगरजोविधूम्रविष्वक्कचलुलितश्रमवार्यलङ्कृतास्ये।
मम निशितशरैर्विभिद्यमान त्वचि विलसत्कवचेऽस्तु कृष्ण आत्मा॥ ३ ॥

सपदि सखिवचो निशम्य मध्ये निजपरयोर्बलयो रथं निवेश्य।
स्थितवति परसैनिकायुरक्ष्णा हृतवति पार्थसखे रतिर्ममास्तु॥४॥

व्यवहितपृतनामुखं निरीक्ष्य स्वजनवधाद्विमुखस्य दोषबुद्ध्या।
कुमतिमहरदात्मविद्यया यश्चरणरतिः परमस्य तस्य मेऽस्तु॥५॥

स्वनिगममपहाय मत्प्रतिज्ञामृतमधिकर्तुमवप्लुतो रथस्थः।
धृतरथचरणोऽभ्ययाच्चलद्गुर्हरिरिव हन्तुमिभं गतोत्तरीयः॥ ६ ॥

शितविशिखहतो विशीर्णदंशः क्षतजपरिप्लुत आततायिनो मे।
प्रसभमभिससार मद्वधार्थं स भवतु मे भगवान्गतिर्मुकुन्दः॥७॥

विजयरथकुटुम्ब आत्ततोत्रे धृतहयरश्मिनि तच्छ्रियेक्षणीये।
भगवति रतिरस्तु मे मुमूर्षोर्यमिह निरीक्ष्य हता गताः स्वरूपम्॥८॥

ललितगतिविलासवल्गुहास प्रणयनिरीक्षणकल्पितोरुमानाः।
कृतमनुकृतवत्य उन्मदान्धाः प्रकृतिमगन्किल यस्य गोपवध्वः॥९॥

मुनिगणनृपवर्यसङ्कुलेऽन्तः सदसि युधिष्ठिरराजसूय एषाम्।
अर्हणमुपपेद ईक्षणीयो मम दृशिगोचर एष आविरात्मा॥१०॥

तमिममहमजं शरीरभाजां हृदि हृदि धिष्ठितमात्मकल्पितानाम्।
प्रतिदृशमिव नैकधार्कमेकं समधिगतोऽस्मि विधूतभेदमोहः॥११॥

सूत उवाच

कृष्ण एवं भगवति मनोवाग्दृष्टिवृत्तिभिः।
आत्मन्यात्मानमावेश्य सोऽन्तःश्वास उपारमत्॥

॥इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां प्रथमे स्कन्धे नवमेऽध्याये श्री-भीष्मस्तुतिः सम्पूर्णा॥

॥ध्रुवस्तुतिः॥

ध्रुव उवाच

योऽन्तः प्रविश्य मम वाचमिमां प्रसुप्ताम्
सञ्जीवयत्यखिलशक्तिधरः स्वधाम्ना।
अन्यांश्च हस्तचरणश्रवणत्वगादीन्
प्राणान्नमो भगवते पुरुषाय तुभ्यम्॥१॥

एकस्त्वमेव भगवन्निदमात्मशक्त्या
मायाख्ययोरुगुणया महदाद्यशेषम्।
सृष्ट्वाऽनुविश्य पुरुषस्तदसद्गुणेषु
नानेव दारुषु विभावसुवद्विभासि॥ २॥

त्वद्दत्तया वयुनयेदमचष्ट विश्वम्
सुप्तप्रबुद्ध इव नाथ भवत्प्रपन्नः।
तस्यापवर्ग्यशरणं तव पादमूलं
विस्मर्यते कृतविदा कथमार्तबन्धो॥ ३॥

नूनं विमुष्टमतयस्तव मायया ते
ये त्वां भवाप्ययविमोक्षणमन्यहेतोः।
अर्चन्ति कल्पकतरुं कुणपोपभोग्यम्
इच्छन्ति यत्स्पर्शजं निरयेऽपि नृणाम्॥ ४॥

या निर्वृतिस्तनुभृतां तव पादपद्म
ध्यानाद्भवज्जनकथाश्रवणेन वा स्यात्।
सा ब्रह्मणि स्वमहिमन्यपि नाथ मा भूत्
किं त्वन्तकासिलुलितात्पततां विमानात्॥ ५॥

भक्तिं मुहुः प्रवहतां त्वयि मे प्रसङ्गो
भूयादनन्त महताममलाशयानाम्।
येनाञ्जसोल्बणमुरुव्यसनं भवाब्धिम्
नेष्ये भवद्गुणकथामृतपानमत्तः॥ ६॥

ते न स्मरन्त्यतितरां प्रियमीश मर्त्यम्
ये चान्वदः सुतसुहृद्गृहवित्तदाराः।
ये त्वब्जनाभ भवदीयपदारविन्द
सौगन्ध्यलुब्धहृदयेषु कृतप्रसङ्गाः॥७॥

तिर्यङ्नगद्विजसरीसृपदेवदैत्य
मर्त्यादिभिः परिचितं सदसद्विशेषम्।
रूपं स्थविष्ठमज ते महदाद्यनेकम्
नातः परं परम वेद्मि न यत्र वादः॥८॥

कल्पान्त एतदखिलं जठरेण गृह्णन्
शेते पुमान्स्वदृगनन्तसखस्तदङ्के।
यन्नाभिसिन्धुरुहकाञ्चनलोकपद्म
गर्भे द्युमान्भगवते प्रणतोऽस्मि तस्मै॥९॥

त्वं नित्यमुक्तपरिशुद्धविबुद्ध आत्मा
कूटस्थ आदिपुरुषो भगवांस्त्र्यधीशः।
यद्बुद्ध्यवस्थितिमखण्डितया स्वदृष्ट्या
द्रष्टा स्थितावधिमखो व्यतिरिक्त आस्से॥१०॥

यस्मिन्विरुद्धगतयो ह्यनिशं पतन्ति
विद्यादयो विविधशक्तय आनुपूर्व्यात्।
तद्ब्रह्म विश्वभवमेकमनन्तमाद्यम्
आनन्दमात्रमविकारमहं प्रपद्ये॥११॥

सत्याशिषो हि भगवंस्तव पादपद्मम्
आशीस्तथानुभजतः पुरुषार्थमूर्तेः।
अप्येवमर्य भगवान्परिपाति दीनान्
वाश्रेव वत्सकमनुग्रहकातरोऽस्मान्॥ १२॥

॥इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां चतुर्थे स्कन्धे नवमेऽध्याये श्री-ध्रुवस्तुतिः सम्पूर्णा॥

॥ मधुराष्टकम्॥

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ १॥

वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ २॥

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ३॥

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ४॥

करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ५॥

गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ६॥

गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम्।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ७॥

गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥८॥

॥इति श्रीमद्वल्लभाचार्यविरचितं मधुराष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥अच्युताष्टकम्॥

अच्युतं केशवं राम-नारायणम्
कृष्ण-दामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभम्
जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे॥१॥

अच्युतं केशवं सत्यभामाधवम्
माधवं श्रीधरं राधिकाराधितम्।
इन्दिरा मन्दिरं चेतसा सुन्दरम्
देवकीनन्दनं नन्दनं सन्दधे॥२॥

विष्णवे जिष्णवे शङ्खिने चक्रिणे
रुक्मिणी-रागिने जानकी-जानये।
वल्लवी-वल्लभायाऽर्चितायात्मने
कंस-विध्वंसिने वंशिने ते नमः॥३॥

कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण
श्रीपते वासुदेवार्जित-श्रीनिधे।
अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज
द्वारका-नायक द्रौपदी-रक्षक॥४॥

राक्षसक्षोभितः सीतया शोभितो
दण्डकारण्य-भू-पुण्यता-कारणः ।
लक्ष्मणेनान्वितो वानरैः सेवितो-
ऽगस्त्सम्पूजितो राघवः पातु माम्॥५॥

धेनुकारिष्टकोऽनिष्टकृद्-द्वेषिणाम्
केशिहा कंसहृद्-वंशिकावादकः।
पूतनाकोपकः सूरजा-खेलनो
बाल-गोपालकः पातु मां सर्वदा॥६॥

विद्युदाद्योतवान् प्रस्फुरद्वाससम्
प्रावृडम्भोदवत् प्रोल्लसद्विग्रहम्।
वन्यया मालया शोभितोरस्थलम्
लोहिताङ्घ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे॥७॥

कुञ्चितैः कुन्तलैर्भ्राजिमानाननम्
रत्नमौलिं लसत् कुण्डलं गण्डयोः।
हारकेयूरकं कङ्कण-प्रोज्ज्वलम्
किङ्किणी-मञ्जुलं श्यामलं तं भजे॥८॥

अच्युतस्याष्टकं यः पठेदिष्टदम्
प्रेमतः प्रत्यहं पूरुषः सस्पृहम्।
वृत्ततः सुन्दरं वेद्यविश्वम्बरम्
तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्वरम्॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-अच्युताष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ बालमुकुन्दाष्टकम् ॥

करारविन्देन पदारविन्दं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम्।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि॥ १ ॥

संहृत्य लोकान् वटपत्रमध्ये शयानमाद्यन्तविहीनरूपम्।
सर्वेश्वरं सर्वहितावतारं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि॥ २ ॥

इन्दीवरश्यामलकोमलाङ्गं इन्द्रादिदेवार्चितपादपद्मम्।
सन्तानकल्पद्रुममाश्रितानां बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि॥ ३ ॥

लम्बालकं लम्बितहारयष्टिं शृङ्गारलीलाङ्कितदन्तपङ्क्तिम्।
बिम्बाधरं चारुविशालनेत्रं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि॥ ४ ॥

शिक्ये निधायाद्यपयोदधीनि बहिर्गतायां व्रजनायिकायाम्।
भुक्त्वा यथेष्टं कपटेन सुप्तं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि॥ ५ ॥

कलिन्दजान्तस्थितकालियस्य फणाग्ररङ्गे नटनप्रियन्तम्।
तत्पुच्छहस्तं शरदिन्दुवक्त्रं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि॥ ६ ॥

उलूखले बद्धमुदारशौर्यं उत्तुङ्गयुग्मार्जुन-भङ्गलीलम्।
उत्फुल्लपद्मायत-चारुनेत्रं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि॥ ७ ॥

आलोक्य मातुर्मुखमादरेण स्तन्यं पिबन्तं सरसीरुहाक्षम्।
सच्चिन्मयं देवमनन्तरूपं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि॥ ८ ॥

॥ इति श्री-बालमुकुन्दाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

आकुञ्चितं जानु करं च वामं न्यस्य क्षितौ दक्षिणहस्तपद्मे।
आलोकयन्तं नवनीतखण्डं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि॥

॥ कृष्णद्वादशनामस्तोत्रम् ॥

श्रृणुध्वं मुनयः सर्वे गोपालस्य महात्मनः।
अनन्तस्याप्रमेयस्य नामद्वाशकं स्तवम् ॥

अर्जुनाय पुरा गीतं गोपालेन महात्मना।
द्वारकायां प्रार्थयते यशोदायाश्च सन्निधौ ॥

॥ ध्यानम् ॥

जानुभ्यामपि धावन्तं बाहुभ्यामतिसुन्दरम्।
सकुण्डलालकं बालं गोपालं चिन्तयेदुषः ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

प्रथमं तु हरिं विद्याद्द्वितीयं केशवं तथा।
तृतीयं पद्मनाभं तु चतुर्थं वामनं तथा ॥ १ ॥

पञ्चमं वेदगर्भं च षष्ठं तु मधुसूदनं।
सप्तमं वासुदेवं च वराहं चाष्टमं तथा ॥ २ ॥

नवमं पुण्डरीकाक्षं दशमं तु जनार्दनम्।
कृष्णमेकादशं प्रोक्तं द्वादशं श्रीधरं तथा ॥ ३ ॥

एतद्द्वादशनामानि मया प्रोक्तानि फाल्गुन।
कालत्रये पठेद्यस्तु तस्य पुण्यफलं श्रृणु ॥ ४ ॥

चान्द्रायणसहस्रस्य कन्यादानशतस्य च।
अश्वमेधसहस्रस्य फलमाप्नोति मानवः ॥ ५ ॥

॥ इति श्री-कृष्णद्वादशनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ रङ्गनाथ गद्यम् ॥

स्वाधीन-त्रिविध-चेतनाचेतन-स्वरूप-स्थिति-प्रवृत्ति-भेदम्’
क्लेश-कर्माद्यशेष-दोषासंस्पृष्टं’ स्वाभाविकानवधिकातिशय-
ज्ञान’-बलैश्वर्य’-वीर्य’-शक्ति-तेजः सौशील्य’-वात्सल्य-
मार्दवार्जव’-सौहार्द’-साम्य’-कारुण्य-माधुर्य-गाम्भीर्यौदार्य’-
चातुर्य’-स्थैर्य’-धैर्य’-शौर्य-पराक्रम’-सत्यकाम’-सत्यसङ्कल्प’-
कृतित्व’-कृतज्ञताद्यसङ्ख्येय-कल्याण-गुणगणौघ-महार्णवम्’
परब्रह्मभूतं’ पुरुषोत्तमं’ श्रीरङ्गशायिनम्’ अस्मत्स्वामिनं’ प्रबुद्ध’
नित्य-नियाम्य’ नित्य-दास्यैकरसात्मस्वभावोऽहम्’ तदेकानुभवः’ तदेकप्रियः’
परिपूर्णं भगवन्तं’ विशदतमानुभवेन निरन्तरमनुभूय’
तदनुभव-जनितानवधिकातिशय-प्रीतिकारिता-ऽशेषावस्थोचित-
अशेषशेषतैकरतिरूप’ नित्य-किङ्करो भवानि॥ १ ॥

स्वात्म-नित्य-नियाम्य’-नित्यदास्यैकरसात्म-स्वभावानुसन्धान-पूर्वक’
भगवदनवधिकातिशय-स्वाम्याद्यखिल-गुणगणानुभवजनित-
अनवधिकातिशय-प्रीतिकारिता-ऽशेषावस्थोचिता-ऽशेषशेषतैकरतिरूप’-
नित्य-कैङ्कर्य-प्राप्त्युपाय-भूतभक्ति’
तदुपाय-सम्यग्ज्ञान’ तदुपाय-समीचीनक्रिया’ तदनुगुण-सात्त्विकतास्तिक्यादि
समस्तात्म-गुणविहीनः’ दुरुत्तरानन्त’ तद्विपर्यय-ज्ञानक्रियानुगुण-अनादिपाप-
वासना-महार्णवान्तर्निमग्नः’ तिलतैलवत्’ दारुवह्निवत्’
दुर्विवेच-त्रिगुणक्षणक्षरण-स्वभावाचेतन-प्रकृति-व्याप्तिरूप’-दुरत्यय’-
भगवन्माया-तिरोहित-स्वप्रकाशः’
अनाद्यविद्या-सञ्चिता-ऽनन्ता-ऽशक्य-विस्रंसन’-कर्मपाश-प्रग्रथितः’

अनागता-ऽनन्तकाल-समीक्षयाऽपि' अदृष्ट-सन्तारोपायः'
निखिल-जन्तु-जात-शरण्य! श्रीमन्! नारायण! तव चरणारविन्दयुगलं
शरणमहं प्रपद्ये॥ २॥

एवमवस्थितस्याऽपि' अर्थित्वमात्रेण' परमकारुणिको भगवान्'
स्वानुभव-प्रीत्या' उपनीतैकान्तिका-ऽत्यन्तिक-
नित्य-कैङ्कर्यैकरतिरूप-नित्य-दास्यं' दास्यतीति'
विश्वासपूर्वकं भगवन्तं नित्य-किङ्करतां प्रार्थये॥ ३॥

तवानुभूति-सम्भूत-प्रीतिकारित-दासताम्।
देहि मे कृपया नाथ! न जाने गतिमन्यथा॥ ४॥

सर्वावस्थोचिता-ऽशेषशेषतैकरतिस्तव।
भवेयं पुण्डरीकाक्ष! त्वमेवैवं कुरुष्व माम्॥ ५॥

एवम्भूत-तत्त्वयाथात्म्यावबोध-तदिच्छारहितस्याऽपि'
एतदुच्चारण-मात्रावलम्बनेन उच्यमानार्थ-परमार्थ-निष्ठम्'
मे मनः त्वमेव अद्यैव कारय॥ ६॥

अपार-करुणाम्बुधे! अनालोचित-विशेषाशेष-लोक-शरण्य! प्रणतार्तिहर!
आश्रित-वात्सल्यैक-महोदधे! अनवरत-विदित-निखिल-भूत-जात-याथात्म्य!
सत्यकाम! सत्यसङ्कल्प! आपत्सख! काकुत्स्थ! श्रीमन्! नारायण! पुरुषोत्तम!
श्रीरङ्गनाथ! मम नाथ! नमोऽस्तु ते॥

॥ इति श्रीमद्रामानुजविरचितं श्री-रङ्गनाथ-गद्यं सम्पूर्णम्॥

॥ रङ्गनाथस्तोत्रम् ॥

सप्तप्राकारमध्ये सरसिजमुकुलोद्भासमाने विमाने
कावेरीमध्यदेशे फणिपतिशयने शेषपर्यङ्कभागे।
निद्रामुद्राभिरामं कटिनिकटशिरः पार्श्वविन्यस्तहस्तम्
पद्माधात्रीकराभ्यां परिचितचरणं रङ्गराजं भजेऽहम्॥

आनन्दरूपे निजबोधरूपे
ब्रह्मस्वरूपे श्रुतिमूर्तिरूपे।
शशाङ्करूपे रमणीयरूपे
श्रीरङ्गरूपे रमतां मनो मे॥ १ ॥

कावेरितीरे करुणाविलोले
मन्दारमूले धृतचारुचेले।
दैत्यान्तकालेऽखिललोकलीले
श्रीरङ्गलीले रमतां मनो मे॥ २ ॥

लक्ष्मीनिवासे जगतां निवासे
हृत्पद्मवासे रविबिम्बवासे।
कृपानिवासे गुणबृन्दवासे
श्रीरङ्गवासे रमतां मनो मे॥ ३ ॥

ब्रह्मादिवन्द्ये जगदेकवन्द्ये
मुकुन्दवन्द्ये सुरनाथवन्द्ये।
व्यासादिवन्द्ये सनकादिवन्द्ये
श्रीरङ्गवन्द्ये रमतां मनो मे॥ ४ ॥

ब्रह्माधिराजे गरुडाधिराजे
वैकुण्ठराजे सुरराजराजे।
त्रैलोक्यराजेऽखिललोकराजे
श्रीरङ्गराजे रमतां मनो मे॥५॥

अमोघमुद्रे परिपूर्णनिद्रे
श्रीयोगनिद्रे ससमुद्रनिद्रे।
श्रितैकभद्रे जगदेकनिद्रे
श्रीरङ्गभद्रे रमतां मनो मे॥६॥

स चित्रशायी भुजगेन्द्रशायी
नन्दाङ्कशायी कमलाङ्कशायी।
क्षीराब्धिशायी वटपत्रशायी
श्रीरङ्गशायी रमतां मनो मे॥७॥

इदं हि रङ्गं त्यजतामिहाङ्गम्
पुनर्नचाङ्कं यदि चाङ्गमेति।
पाणौ रथाङ्गं चरणेम्बु गाङ्गम्
याने विहङ्गं शयने भुजङ्गम्॥८॥

रङ्गनाथाष्टकं पुण्यम्
प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
सर्वान् कामानवाप्नोति
रङ्गिसायुज्यमाप्नुयात् ॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-रङ्गनाथाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ दामोदराष्टकम् ॥

नमामीश्वरं सच्चिदानन्दरूपम्
लसत्कुण्डलं गोकुले भ्राजमानम्।
यशोदाभियोलूखलाद्-धावमानम्
परामृष्टमत्यन्ततो द्रुत्य गोप्या ॥ १ ॥

रुदन्तं मुहुर्नेत्रयुग्मं मृजन्तम्
कराम्भोजयुग्मेन सातङ्कनेत्रम्।
मुहुः श्वासकम्पत्रिरेखाङ्ककण्ठ-
स्थितग्रैव-दामोदरं भक्तिबद्धम् ॥ २ ॥

इतीदृक् स्वलीलाभिरानन्दकुण्डे
स्वघोषं निमज्जन्तमाख्यापयन्तम्।
तदीयेषिताज्ञेषु भक्तैर्जितत्वम्
पुनः प्रेमतस्तं शतावृत्ति वन्दे ॥ ३ ॥

वरं देव मोक्षं न मोक्षावधिं वा
न चान्यं वृणेऽहं वरेषादपीह।
इदं ते वपुर्नाथ गोपालबालम्
सदा मे मनस्याविरास्तां किमन्यैः ॥ ४ ॥

इदं ते मुखाम्भोजमत्यन्तनीलैर्-
वृतं कुन्तलैः स्निग्ध-रक्तैश्च गोप्या।
मुहुश्चुम्बितं बिम्बरक्ताधरं मे
मनस्याविरास्ताम् अलं लक्षलाभैः ॥ ५ ॥

नमो देव दामोदरानन्त विष्णो
प्रसीद प्रभो दुःखजालाब्धिमग्नम्।
कृपादृष्टिवृष्ट्यातिदीनं बतानु
गृहाणेश माम् अज्ञमेध्यक्षिदृश्यः॥ ६॥

कुवेरात्मजौ बद्धमूर्त्यैव यद्वत्
त्वया मोचितौ भक्तिभाजौ कृतौ च।
तथा प्रेमभक्तिं स्वकं मे प्रयच्छ
न मोक्षे ग्रहो मेऽस्ति दामोदरेह॥ ७॥

नमस्तेऽस्तु दाम्ने स्फुरद्दीप्तिधाम्ने
त्वदीयोदरायाथ विश्वस्य धाम्ने।
नमो राधिकायै त्वदीयप्रियायै
नमोऽनन्तलीलाय देवाय तुभ्यम्॥ ८॥

॥ इति श्रीमद्पद्मपुराणे श्री-दामोदराष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ गुरुवातपुरीशपञ्चरत्नम्॥

कल्याणरूपाय कलौ जनानां कल्याणदात्रे करुणासुधाब्धे।
कम्ब्वादिदिव्यायुधसत्कराय वातालयाधीश नमो नमस्ते॥ १॥

नारायणेत्यादि जपद्भिरुच्चैः भक्तैः सदापूर्णमहालयाय।
स्वतीर्थगाङ्गोपम-वारिमग्न निवर्तिताशेषरुजे नमस्ते॥ २॥

ब्राह्मे मुहूर्ते परिधः स्वभक्तैः सन्दृष्टसर्वोत्तमविश्वरूप।
स्वतैलसंसेवकरोगहर्त्रे वातालयाधीश नमो नमस्ते॥ ३॥

बालान् स्वकीयान् तवसन्निधाने दिव्यान्नदानात्परिपालयद्भिः।
सदा पठद्भिश्च पुराणरत्नं संसेवितायास्तु नमो हरे ते॥४॥

नित्यान्नदात्रे च महीसुरेभ्यः नित्यं दिविस्थैर्निशि पूजिताय।
मात्रा च पित्रा च तथोद्धवेन सम्पूजितायास्तु नमो नमस्ते॥५॥

अनन्तरामाख्य-मखिप्रणीतं स्तोत्रं पठेद्यस्तु नरस्त्रिकालम्।
वातालयेशस्य कृपाफलेन लभेत सर्वाणि च मङ्गलानि॥

गुरुवातपुरीशपञ्चकाख्यं स्तुतिरत्नं पठतां सुमङ्गलं स्यात्।
हृदि चापि विशेद्धरिः स्वयं तु रतिनाथायुततुल्यदेहकान्तिः॥

॥इति श्री-अनन्तराम-दीक्षितेन विरचितं
श्री-गुरुवातपुरीशपञ्चरत्नं सम्पूर्णम्॥

कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभम्
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम्।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः॥

अस्ति स्वस्तरुणीकराग्रविगलत् कल्पप्रसूनाप्लुतम्
वस्तुप्रस्तुतवेणुनादलहरी निर्वाणनिर्व्याकुलम्।
स्रस्तस्रस्तनिबद्धनीविविलसत् गोपीसहस्रावृतम्
हस्तन्यस्तनतापवर्गमखिलोदारं किशोराकृति॥

॥ नारायण केशादिपादवर्णनम् ॥

अग्रे पश्यामि तेजो निबिडतरकलायावलीलोभनीयम्
पीयूषाप्लावितोऽहं तदनु तदुदरे दिव्यकैशोरवेषम्।
तारुण्यारम्भरम्यं परमसुखरसास्वादरोमाञ्चिताङ्गै-
रावीतं नारदाद्यैर्विलसदुपनिषत्सुन्दरीमण्डलैश्च ॥ १ ॥

नीलाभं कुञ्चिताग्रं घनममलतरं संयतं चारुभङ्ग्या
रत्नोत्तंसाभिरामं वलयितमुदयच्चन्द्रकैः पिञ्छजालैः।
मन्दारस्रङ्निवीतं तव पृथुकबरीभारमालोकयेऽहम्
स्निग्धश्वेतोर्ध्वपुण्ड्रामपि च सुललितां फालबालेन्दुवीथीम् ॥ २ ॥

हृद्यं पूर्णानुकम्पार्णवमृदुलहरीचञ्चलभ्रूविलासै-
रानीलस्निग्धपक्ष्मावलिपरिलसितं नेत्रयुग्मं विभो ते।
सान्द्रच्छायं विशालारुणकमलदलाकारमामुग्धतारम्
कारुण्यालोकलीलाशिशिरितभुवनं क्षिप्यतां मय्यनाथे ॥ ३ ॥

उत्तुङ्गोल्लासिनासं हरिमणिमुकुरप्रोल्लसद्गण्डपाली-
व्यालोलत्कर्णपाशाञ्चितमकरमणीकुण्डलद्वन्द्वदीप्रम्।
उन्मीलद्दन्तपङ्क्तिस्फुरदरुणतरच्छायबिम्बाधरान्तः
प्रीतिप्रस्यन्दिमन्दस्मितमधुरतरं वक्त्रमुद्भासतां मे ॥ ४ ॥

बाहुद्वन्द्वेन रत्नोज्ज्वलवलयभृता शोणपाणिप्रवाले-
नोपात्तां वेणुनालीं प्रसृतनखमयूखाङ्गुलीसङ्गशाराम्।
कृत्वा वक्त्रारविन्दे सुमधुरविकसद्रागमुद्भाव्यमानैः
शब्दब्रह्मामृतैस्त्वं शिशिरितभुवनैस्सिञ्च मे कर्णवीथीम् ॥ ५ ॥

उत्सर्पत्कौस्तुभश्रीततिभिररुणितं कोमलं कण्ठदेशम्
वक्षः श्रीवत्सरम्यं तरलतरसमुद्दीप्रहारप्रतानम्।
नानावर्णप्रसूनावलिकिसलयिनीं वन्यमालां विलोल-
ल्लोलम्बां लम्बमानामुरसि तव तथा भावये रत्नमालाम्॥ ६ ॥

अङ्गे पञ्चाङ्गरागैरतिशयविकसत्सौरभाकृष्टलोकम्
लीनानेकत्रिलोकीविततिमपि कृशां बिभ्रतं मध्यवल्लीम्।
शक्राश्मन्यस्ततप्तोज्वलकनकनिभं पीतचेलं दधानम्
ध्यायामो दीप्तरश्मिस्फुटमणिरशनाकिङ्किणीमण्डितं त्वाम्॥ ७॥

ऊरू चारू तवोरू घनमसृणरुचौ चित्तचोरौ रमायाः
विश्वक्षोभं विशङ्क्य ध्रुवमनिशमुभौ पीतचेलावृताङ्गौ।
आनम्राणां पुरस्तान्न्यसनधृतसमस्तार्थपालीसमुद्ग-
च्छायां जानुद्वयं च क्रमपृथुलमनोज्ञे च जङ्घे निषेवे॥ ८॥

मञ्जीरं मञ्जुनादैरिव पदभजनं श्रेय इत्यालपन्तम्
पादाग्रं भ्रान्तिमज्जत्प्रणतजनमनोमन्दरोद्धारकूर्मम्।
उत्तुङ्गाताम्रराजन्नखरहिमकरज्योत्स्नया चाऽश्रितानाम्
सन्तापध्वान्तहन्त्रीं ततिमनुकलये मङ्गलामङ्गुलीनाम्॥ ९॥

योगीन्द्राणां त्वदङ्गेष्वधिकसुमधुरं मुक्तिभाजां निवासो
भक्तानां कामवर्षद्युतरुकिसलयं नाथ ते पादमूलम्।
नित्यं चित्तस्थितं मे पवनपुरपते कृष्ण कारुण्यसिन्धो
हृत्वा निःशेषतापान्प्रदिशतु परमानन्दसन्दोहलक्ष्मीम्॥ १०॥

अज्ञात्वा ते महत्त्वं यदिह निगदितं विश्वनाथ क्षमेथाः
स्तोत्रं चैतत्सहस्रोत्तरमधिकतरं त्वत्प्रसादाय भूयात्।
द्वेधा नारायणीयं श्रुतिषु च जनुषा स्तुत्यतावर्णनेन
स्फीतं लीलावतारैरिदमिह कुरुतामायुरारोग्यसौख्यम्॥ ११ ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये शततम-दशकं सम्पूर्णम्॥

॥ विष्णुभुजङ्गप्रयातस्तोत्रम्॥

चिदंशं विभुं निर्मलं निर्विकल्पम्
निरीहं निराकारमोङ्कारगम्यम्।
गुणातीतमव्यक्तमेकं तुरीयम्
परं ब्रह्म यं वेद तस्मै नमस्ते॥ १ ॥

विशुद्धं शिवं शान्तमाद्यन्तशून्यम्
जगज्जीवनं ज्योतिरानन्दरूपम्।
अदिग्देशकालव्यवच्छेदनीयम्
त्रयी वक्ति यं वेद तस्मै नमस्ते॥ २ ॥

महायोगपीठे परिभ्राजमाने
धरण्यादितत्त्वात्मके शक्तियुक्ते।
गुणाहस्करे वह्निबिम्बार्धमध्ये
समासीनमोङ्कर्णिकेऽष्टाक्षराब्जे ॥ ३ ॥

समानोदितानेकसूर्येन्दुकोटि-
प्रभापूरतुल्यद्युतिं दुर्निरीक्षम्।
न शीतं न चोष्णं सुवर्णावदात-
प्रसन्नं सदानन्दसंवित्स्वरूपम्॥ ४ ॥

सुनासापुटं सुन्दरभ्रूललाटम्
किरीटोचिताकुञ्चितस्निग्धकेशम्।
स्फुरत् पुण्डरीकाभिरामायताक्षम्
समुत्फुल्लरत्नप्रसूनावतंसम् ॥५॥

लसत् कुण्डलामृष्टगण्डस्थलान्तम्
जपारागचोराधरं चारुहासम्।
अलिव्याकुलामोलिमन्दारमालम्
महोरस्फुरत्कौस्तुभोदारहारम्॥६॥

सुरत्नाङ्गदैरन्वितं बाहुदण्डैः
चतुर्भिश्चलत्कङ्कणालङ्कृताग्रैः।
उदारोदरालङ्कृतं पीतवस्त्रम्
पदद्वन्द्वनिर्धूतपद्माभिरामम् ॥७॥

स्वभक्तेषु सन्दर्शिताकारमेवम्
सदा भावयन् सन्निरुद्धेन्द्रियाश्वः।
दुरापं नरो याति संसारपारम्
परस्मै परेभ्योऽपि तस्मै नमस्ते॥८॥

श्रिया शातकुम्भद्युतिस्निग्धकान्त्या
धरण्या च दूर्वादलश्यामलाङ्ग्या।
कलत्रद्वयेनामुना तोषिताय
त्रिलोकीगृहस्थाय विष्णो नमस्ते॥९॥

शरीरं कलत्रं सुतं बन्धुवर्गम्
वयस्यं धनं सद्म भृत्यं भुवं च।
समस्तं परित्यज्य हा कष्टमेको
गमिष्यामि दुःखेन दूरं किलाहम्॥ १०॥

जरेयं पिशाचीव हा जीवतो मे
वसामक्ति रक्तं च मांसं बलं च।
अहो देव सीदामि दीनानुकम्पिन्
किमद्यापि हन्त त्वयोदासितव्यम्॥ ११॥

कफव्याहतोष्णोल्बणश्वासवेग-
व्यथाविस्फुरत्सर्वमर्मास्थिबन्धाम्।
विचिन्त्याहमन्त्यामसङ्ख्यामवस्थाम्
बिभेमि प्रभो किं करोमि प्रसीद॥ १२॥

लपन्नच्युतानन्त गोविन्द विष्णो
मुरारे हरे नाथ नारायणेति।
यथाऽनुस्मरिष्यामि भक्त्या भवन्तम्
तथा मे दयाशील देव प्रसीद॥ १३॥

भुजङ्गप्रयातं पठेद्यस्तु भक्त्या
समाधाय चित्ते भवन्तं मुरारे।
स मोहं विहायाऽऽशु युष्मत्प्रसादात्
समाश्रित्य योगं व्रजत्यच्युतं त्वाम्॥ १४॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-विष्णुभुजङ्गप्रयातस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ विष्णु-विजयस्तोत्रम् ॥

देवा ऊचुः

नताः स्म विष्णुं जगदादिभूतं
सुरासुरेन्द्रं जगतां प्रपालकम्।
यन्नाभिपद्मात् किल पद्मयोनिर्-
बभूव तं वै शरणं गताः स्मः ॥ ८९ ॥

नमो नमो मत्स्यवपुर्द्धराय
नमोऽस्तु ते कच्छपरूपधारिणे।
नमः प्रकुर्मश्च नृसिंहरूपिणे
तथा पुनर्वामनरूपिणे नमः ॥ ९० ॥

नमोऽस्तु ते क्षत्रविनाशनाय
रामाय रामाय दशास्यनाशिने।
प्रलम्बहन्त्रे शितिवाससे नमो
नमोऽस्तु बुद्धाय च दैत्यमोहिने ॥ ९१ ॥

म्लेच्छान्तकायापि च कल्किनाम्ने
नमः पुनः क्रोडवपुर्धराय।
जगद्धितार्थं च युगे युगे भवान्
बिभर्ति रूपं त्वसुराभवाय ॥ ९२ ॥

निषूदितोऽयं ह्यधुना किल त्वया
दैत्यो हिरण्याक्ष इति प्रगल्भः।
यश्चेन्द्रमुख्यान् किललोकपालान्
संहेलया चैव तिरश्चकार ॥ ९३ ॥

स वै त्वया देवहितार्थमेव
निपातितो देववर प्रसीद।
त्वमस्य विश्वस्य विसर्गकर्ता
ब्राह्मेण रूपेण च देवदेव॥९४॥

पाता त्वमेवास्य युगेयुगे च
रूपाणि धत्से सुमनोहराणि।
त्वमेव कालाग्निहरश्च भूत्वा
विश्वं क्षयं नेष्यसि चान्तकाले॥९५॥

अतो भवानेव च विश्वकारणं
न ते परं जीवमजीवमीश।
यत् किं च भूतं च भविष्यरूपं
प्रवर्त्तमानं च तथैव रूपम्॥९६॥

सर्वं त्वमेवासि चराचराख्यं
न भाति विश्वं त्वदृते च किञ्चित्।
अस्तीति नास्तीति च भेदनिष्ठं
त्वय्येव भातं सदसत्स्वरूपम्॥९७॥

ततो भवन्तं कतमोऽपि देव
न ज्ञातुमर्हत्यविपक्वबुद्धिः।
ऋते भवत्पादपरायणं जनं
तेनागता स्मः शरणं शरण्यम्॥९८॥

व्यास उवाच

ततो विष्णुः प्रसन्नात्मा उवाच त्रिदिवौकसः।
तुष्टोऽस्मि देवा भद्रं वो युष्मत्स्तोत्रेण साम्प्रतम्॥९९॥

य इदं प्रपठेद् भक्त्या विजयस्तोत्रमादरात्।
न तस्य दुर्लभं देवास्त्रिषु लोकेषु किञ्चन॥१००॥

गवां शतसहस्रस्य सम्यग् दत्तस्य यत्फलम्।
तत्फलं समवाप्नोति कीर्तनाच्छ्रवणान्नरः॥१०१॥

सर्वकामप्रदं नित्यं देवदेवस्य कीर्तनम्।
अतः परं महाज्ञानं न भूतं न भविष्यति॥१०२॥

॥इति श्रीपाद्मपुराणे प्रथमे सृष्टिखण्डे देवासुरसङ्ग्रामसमाप्तौ विजयस्तोत्रं नाम पञ्चसप्ततितमोऽध्यायः॥

॥ब्रह्मपारस्तोत्रम्॥

प्रचेतस ऊचुः

ब्रह्मपारं मुने श्रोतुमिच्छामः परमं स्तवम्।
जपता कण्डुना देवो येनाऽऽराध्यत केशवः॥५४॥

सोम उवाच

पारं परं विष्णुरपारपारः
परः परेभ्यः परमार्थरूपी।
स ब्रह्मपारः परपारभूतः
परः पराणामपि पारपारः॥५५॥

स कारणं कारणतस्ततोऽपि
तस्यापि हेतुः परहेतुहेतुः।
कार्येषु चैवं सह कर्मकर्तृ-
रूपैरशेषैरवतीह सर्वम्॥५६॥

ब्रह्म प्रभुर्ब्रह्म स सर्वभूतो
ब्रह्म प्रजानां पतिरच्युतोऽसौ।
ब्रह्माव्ययं नित्यमजं स विष्णुः
अपक्षयाद्यैरखिलैरसङ्गिः ॥५७॥

ब्रह्माक्षरमजं नित्यं यथाऽसौ पुरुषोत्तमः।
तथा रागादयो दोषाः प्रयान्तु प्रशमं मम॥५८॥

सोम उवाच

एतद्ब्रह्म पराख्यं वै संस्तवं परमं जपन्।
अवाप परमां सिद्धिं समाराध्य स केशवम्॥५९॥

इमं स्तवं यः पठति शृणुयाद्वाऽपि नित्यशः।
स कामदोषैरखिलैर्मुक्तः प्राप्नोति वाञ्छितम्॥

॥इति श्रीविष्णुपुराणे प्रथमेंऽशे पञ्चदशोऽध्याये ब्रह्मपारस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥लक्ष्मी-नृसिंह-करुणारस-स्तोत्रं॥

श्रीमत्-पयोनिधि-निकेतन चक्रपाणे
भोगीन्द्र-भोग-मणि-राजित-पुण्य-मूर्ते।
योगीश शाश्वत शरण्य भवाब्धि-पोत
लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१॥

ब्रह्मेन्द्र-रुद्र-मरुदर्क-किरीट-कोटि-
सङ्घट्टिताङ्घ्रि-कमलामल-कान्ति-कान्त।
लक्ष्मी-लसत्-कुच-सरोरुह-राजहंस
लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥२॥

संसार-दाव-दहनाकर-भी-करोरु-
ज्वालावलीभिरतिदग्ध-तनूरुहस्य ।
त्वत्-पाद-पद्म-सरसी-शरणागतस्य
लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ ३॥

संसार-जाल-पतितस्य जगन्निवास
सर्वेन्द्रियार्थ-बडिशाग्र-झषोपमस्य ।
प्रोत्कम्पित-प्रचुर-तालुक-मस्तकस्य
लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ ४॥

संसार-कूपमतिघोरमगाध-मूलं
सम्प्राप्य दुःख-शत-सर्प-समाकुलस्य।
दीनस्य देव कृपया पदमागतस्य
लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ ५॥

संसार-भीकर-करीन्द्र-कराभिघात-
निष्पीड्यमान-वपुषः सकलार्ति-नाश।
प्राण-प्रयाण-भव-भीति-समाकुलस्य
लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ ६॥

संसार-सर्प-विष-दिग्ध-महोग्र-तीव्र-
दंष्ट्राग्र-कोटि-परिदष्ट-विनष्ट-मूर्तेः ।
नागारि-वाहन सुधाब्धि-निवास शौरे
लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ ७॥

संसार-वृक्षमघ-बीजमनन्त-कर्म-
शाखा-युतं करण-पत्रमनङ्ग-पुष्पम्।
आरुह्य दुःख-फलितं पततं दयालो
लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥८॥

संसार-सागर-विशाल-कराल-काल-
नक्र-ग्रह-ग्रसित-निग्रह-विग्रहस्य ।
व्यग्रस्य राग-निचयोर्मि-निपीडितस्य
लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥९॥

संसार-सागर-निमज्जनमुह्यमानम्
दीनं विलोकय विभो करुणा-निधे माम्।
प्रह्लाद-खेद-परिहार-परावतार
लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१०॥

संसार-घोर-गहने चरतो मुरारे
मारोग्र-भीकर-मृग-प्रचुरार्दितस्य ।
आर्तस्य मत्सर-निदाघ-सुदुःखितस्य
लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥११॥

बद्ध्वा गले यम-भटा बहु तर्जयन्तः
कर्षन्ति यत्र भव-पाश-शतैर्युतं माम्।
एकाकिनं परवशं चकितं दयालो
लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१२॥

लक्ष्मीपते कमलनाभ सुरेश विष्णो
यज्ञेश यज्ञ मधुसूदन विश्वरूप।
ब्रह्मण्य केशव जनार्दन वासुदेव
लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ १३॥

एकेन चक्रमपरेण करेण शङ्खम्
अन्येन सिन्धु-तनयाम् अवलम्ब्य तिष्ठन्।
वामेतरेण वरदाभय-पद्म-चिह्नं
लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ १४॥

अन्धस्य मे हृत-विवेक-महाधनस्य
चोरैर्-महाबलिभिरिन्द्रिय-नामधेयैः।
मोहान्धकार-कुहरे विनिपातितस्य
लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ १५॥

प्रह्लाद-नारद-पराशर-पुण्डरीक-
व्यासादि-भागवत-पुङ्गव-हृन्निवास ।
भक्तानुरक्त-परिपालन-पारिजात
लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ १६॥

लक्ष्मी-नृसिंह-चरणाब्ज-मधुव्रतेन
स्तोत्रं कृतं शुभकरं भुवि शङ्करेण।
ये तत् पठन्ति मनुजा हरि-भक्ति-युक्ताः
ते यान्ति तत्-पद-सरोजमखण्ड-रूपम्॥ १७॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-करुणारस-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ धन्वन्तरि स्तोत्रम् (मत्स्य पुराणान्तर्गतम्) ॥

क्षीरोदमोतं दिव्य-गन्धानुलेपनम्।
सुधा-कलश-हस्तं तं वन्दे धन्वन्तरिं हरिम्॥

देव-दानवा ऊचुः

नमो लोक-त्र्याध्यक्ष तेजसा जित-भास्कर।
नमो विष्णो नमो जिष्णो नमस्ते कैटभार्दन॥ १ ॥

नमः सर्ग-क्रिया-कर्त्रे जगत् पालयते नमः।
नमः स्मृतार्ति-नाशाय नमः पुष्कर मालिने॥ २ ॥

दिव्यौषधि-स्वरूपाय सुधा-कलश-पाणये।
शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म-धारिणे वनमालिने॥ ३ ॥

देवेन्द्रादि-सुरेड्याय नमः क्षीराब्धि-जन्मने।
निर्गुणाय विशेषाय हरये ब्रह्म-रूपिणे॥ ४ ॥

जगत् प्रतिष्ठितं यत्र जगतां यो न दृश्यते।
नमः सूक्ष्मातिसूक्ष्माय तस्मै देवाय शङ्खिने॥ ५ ॥

यं न पश्यन्ति पश्यन्तं जगदप्यखिलं नराः।
अपश्यद्भिर्जगद् यश्च दृश्यते हृदि संस्थितः॥ ६ ॥

यस्मिन् वनानि पर्वता नद्यश्चैवाखिलं जगत्।
तस्मै नमोऽस्तु जगताम् आधाराय नमो नमः॥ ७ ॥

आद्य-प्रजापतिर्यश्च यः पितृणां परः पतिः।
पतिः सुराणां यस्तस्मै नमः कृष्णाय वेधसे॥ ८ ॥

यः प्रवृत्तौ निवृत्तौ च इज्यते कर्मभिः स्वकैः।
स्वर्गापवर्ग-फल-दो नमस्तस्मै गदा-भृते॥ ९॥

यश्चिन्त्यमानो मनसा सद्यः पापं व्यपोहति।
नमस्तस्मै विशुद्धाय पराय हरि-मेधसे॥ १०॥

यं बुद्ध्वा सर्वभूतानि देव-देवेशमव्ययम्।
न पुनर्जन्म-मरणे प्राप्नुवन्ति नमामि तम्॥ ११॥

यो यज्ञे यज्ञ-परमैरिज्यते यज्ञ-संज्ञितः।
तं यज्ञ-पुरुषं विष्णुं नमामि प्रभुमीश्वरम्॥ १२॥

गीयते सर्व-वेदेषु वेद-विद्भिर्विदां गतिः।
यस्तस्मै वेद-वेद्याय विष्णवे जिष्णवे नमः॥ १३॥

यो विश्वं समुत्पन्नं यस्मिंश्च लयमेष्यति।
विश्वोद्भव-प्रतिष्ठाय नमस्तस्मै महात्मने॥ १४॥

ब्रह्मादि-स्तम्ब-पर्यन्तं येन विश्वमिदं ततम्।
माया जालं समुत्तर्त्तुं तमुपेन्द्रं नमाम्यहम्॥ १५॥

विषाद-तोष-रोषाद्यैर्योऽजस्रं सुख-दुःखजम्।
नृत्यत्यखिल-भूत-स्थस्तमुपेन्द्रं नमाम्यहम्॥ १६॥

यमाराध्य विशुद्धेन कर्मणा मनसा गिरा।
तरन्त्यविद्याम् अखिलाम् आदि-वैद्यं नमाम्यहम्॥ १७॥

यः स्थितो विश्व-रूपेण बिभर्ति ह्यखिलौषधीः।
तं रत्न-कलशोद्भासि-हस्तं धन्वन्तरिं नुमः॥ १८॥

विश्वं विश्व-पतिं विष्णुं तं नमामि प्रजापतिम्।
मूर्त्या चासुरमय्या तु तद्विधान् विनिहन्ति यः॥१९॥

रात्रि-रूपं सूर्य-रूपं भजेत्तं सान्ध्य-रूपिणम्।
हन्ति विद्या-प्रदानेन यो वा अज्ञान-जं तमः॥२०॥

यस्तु भेषज-रूपेण जगदाप्याययेत् सदा।
यस्याक्षिणी चन्द्र-सूर्यौ सर्व-लोक-शुभङ्करः।
पश्यतः कर्म सततं तं च धन्वन्तरिं नुमः॥२१॥

यस्मिन् सर्वेश्वरे वश्यं जगत् स्थावर-जङ्गमम्।
आभाति तमजं विष्णुं नमामि प्रभुमव्ययम्॥२२॥

॥इति मत्स्य-पुराणान्तर्गतं धन्वन्तरि-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

❁❁❁

॥ शिवमानसपूजा ॥

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरम्
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम्।
जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम्॥ १ ॥

सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसम्
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम्।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलम्
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु॥ २ ॥

छत्त्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलम्
वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा।
साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत् समस्तं मया
सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो॥ ३ ॥

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहम्
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो-
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाऽऽराधनम्॥ ४ ॥

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो॥ ५ ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-शिवमानसपूजा सम्पूर्णा ॥

॥ वैद्यनाथाष्टकम् ॥

श्रीराम-सौमित्रि-जटायु-वेद-षडाननादित्य-कुजार्चिताय।
श्रीनीलकण्ठाय दयामयाय श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय॥ १ ॥

गङ्गाप्रवाहेन्दुजटाधराय त्रिलोचनाय स्मरकालहन्त्रे।
समस्तदेवैरभिपूजिताय श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय॥ २ ॥

भक्तःप्रियाय त्रिपुरान्तकाय पिनाकिने दुष्टहराय नित्यम्।
प्रत्यक्षलीलाय मनुष्यलोके श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय॥ ३ ॥

प्रभूतवातादि-समस्तरोगप्रनाशकर्त्रे मुनिवन्दिताय।
प्रभाकरेन्द्वग्निविलोचनाय श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय॥ ४ ॥

वाक्श्रोत्रनेत्राङ्घ्रि-विहीनजन्तोर्वाक्श्रोत्रनेत्राङ्घ्रि-सुखप्रदाय।
कुष्ठादिसर्वोन्नतरोगहन्त्रे श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय॥ ५ ॥

वेदान्तवेद्याय जगन्मयाय योगीश्वरध्येयपदाम्बुजाय।
त्रिमूर्तिरूपाय सहस्रनाम्ने श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय॥ ६ ॥

स्वतीर्थमृद्भस्मभृताङ्गभाजां पिशाचदुःखार्तिभयापहाय।
आत्मस्वरूपाय शरीरभाजां श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय॥ ७ ॥

श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय स्रग्गन्धभस्माद्यभिशोभिताय।
सुपुत्रदारादिसुभाग्यदाय श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय॥ ८ ॥

बालाम्बिकेश वैद्येश भवरोगहरेति च।
जपेन्नामत्रयं नित्यं महारोगनिवारणम्॥

महादेव महादेव महादेव महादेव महादेव महादेव महादेव महादेव।
महादेव महादेव महादेव महादेव महादेव महादेव महादेव महादेव॥

॥ लिङ्गाष्टकम् ॥

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गं निर्मलभासितशोभितलिङ्गम्।
जन्मजदुःखविनाशकलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ १ ॥

देवमुनिप्रवरार्चितलिङ्गं कामदहं करुणाकरलिङ्गम्।
रावणदर्पविनाशनलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ २ ॥

सर्वसुगन्धिसुलेपितलिङ्गं बुद्धिविवर्धनकारणलिङ्गम्।
सिद्धसुरासुरवन्दितलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ ३ ॥

कनकमहामणिभूषितलिङ्गं फणिपतिवेष्टितशोभितलिङ्गम्।
दक्षसुयज्ञविनाशनलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ ४ ॥

कुङ्कुमचन्दनलेपितलिङ्गं पङ्कजहारसुशोभितलिङ्गम्।
सञ्चितपापविनाशनलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ ५ ॥

देवगणार्चितसेवितलिङ्गं भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम्।
दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ ६ ॥

अष्टदलोपरिवेष्टितलिङ्गं सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम्।
अष्टदरिद्रविनाशितलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ ७ ॥

सुरगुरुसुरवरपूजितलिङ्गं सुरवनपुष्पसदार्चितलिङ्गम्।
परात्परं परमात्मकलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ ८ ॥

लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत् शिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

॥ श्रीकृष्णार्जुनकृत-रुद्रस्तोत्रम् ॥

कृष्णार्जुनावूचतुः

नमो भवाय शर्वाय रुद्राय वरदाय च।
पशूनां पतये नित्यमुग्राय च कपर्दिने॥ ५५॥

महादेवाय भीमाय त्र्यम्बकाय च शान्तये।
ईशानाय मखघ्नाय नमोऽस्त्वन्धकघातिने॥ ५६॥

कुमारगुरवे तुभ्यं नीलग्रीवाय वेधसे।
पिनाकिने हविष्याय सत्याय विभवे सदा॥ ५७॥

विलोहिताय धूम्राय व्याधायानपराजिते।
नित्यं नीलशिखण्डाय शूलिने दिव्यचक्षुषे॥ ५८॥

होत्रे पोत्रे त्रिनेत्राय व्याधाय वसुरेतसे।
अचिन्त्यायाम्बिकाभर्त्रे सर्वदेवस्तुताय च॥ ५९॥

वृषध्वजाय मुण्डाय जटिने ब्रह्मचारिणे।
तप्यमानाय सलिले ब्रह्मण्यायाजिताय च॥ ६०॥

विश्वात्मने विश्वसृजे विश्वमावृत्य तिष्ठते।
नमो नमस्ते सेव्याय भूतानां प्रभवे सदा॥ ६१॥

ब्रह्मवक्त्राय सर्वाय शङ्कराय शिवाय च।
नमोऽस्तु वाचस्पतये प्रजानां पतये नमः॥ ६२॥

अभिगम्याय काम्याय स्तुत्यायार्याय सर्वदा।
नमोऽस्तु देवदेवाय महाभूतधराय च।
नमो विश्वस्य पतये पत्तीनां पतये नमः॥ ६३॥

नमो विश्वस्य पतये महतां पतये नमः।
नमः सहस्रशिरसे सहस्रभुजमृत्यवे।
सहस्रनेत्रपादाय नमोऽसङ्ख्येयकर्मणे॥ ६४॥

नमो हिरण्यवर्णाय हिरण्यकवचाय च।
भक्तानुकम्पिने नित्यं सिध्यतां नो वरः प्रभो॥ ६५॥

सञ्जय उवाच

एवं स्तुत्वा महादेवं वासुदेवः सहार्जुनः।
प्रसादयामास भवं तदा ह्यस्त्रोपलब्धये॥ ६६॥

॥ इति श्रीमन्महाभारते द्रोणपर्वणि प्रतिज्ञापर्वणि अशीतितमोऽध्याये
श्रीकृष्णार्जुनकृतं रुद्रस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ बिल्वाष्टकम्॥

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रियायुधम्।
त्रिजन्मपापसंहारं एकबिल्वं शिवार्पणम्॥ १॥

त्रिशाखैः बिल्वपत्रैश्च ह्यच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः।
शिवपूजां करिष्यामि ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्॥ २॥

अखण्डबिल्वपत्रेण पूजिते नन्दिकेश्वरे।
शुद्ध्यन्ति सर्वपापेभ्यो ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्॥ ३॥

शालिग्राम-शिलामेकां विप्राणां जातु चार्पयेत्।
सोमयज्ञ-महापुण्यं एकबिल्वं शिवार्पणम्॥ ४॥

दन्तिकोटि-सहस्राणि वाजपेय-शतानि च।
कोटिकन्या-महादानं एकबिल्वं शिवार्पणम्॥५॥

लक्ष्म्यास्तनुत उत्पन्नं महादेवस्य च प्रियम्।
बिल्ववृक्षं प्रयच्छामि ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्॥६॥

दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।
अघोरपापसंहारं एकबिल्वं शिवार्पणम्॥७॥

काशीक्षेत्रनिवासं च कालभैरवदर्शनम्।
प्रयागमाधवं दृष्ट्वा ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्॥८॥

मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे।
अग्रतः शिवरूपाय ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्॥९॥

बिल्वाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत् शिवसन्निधौ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकमवाप्नुयात्॥

॥इति बिल्वाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥शिवरक्षास्तोत्रम्॥

अस्य श्रीशिवरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य याज्ञवल्क्य ऋषिः।
श्रीसदाशिवो देवता। अनुष्टुप् छन्दः।
श्रीसदाशिवप्रीत्यर्थे शिवरक्षास्तोत्रजपे विनियोगः॥

चरितं देवदेवस्य महादेवस्य पावनम्।
अपारं परमोदारं चतुर्वर्गस्य साधनम्॥

गौरीविनायकोपेतं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रकम्।
शिवं ध्यात्वा दशभुजं शिवरक्षां पठेन्नरः॥

॥ कवचम् ॥

गङ्गाधरः शिरः पातु फालमर्धेन्दुशेखरः।
नयने मदनध्वंसी कर्णौ सर्पविभूषणः॥ १ ॥

घ्राणं पातु पुरारातिर्मुखं पातु जगत्पतिः।
जिह्वां वागीश्वरः पातु कन्धरं शितिकन्धरः॥ २ ॥

श्रीकण्ठः पातु मे कण्ठं स्कन्धौ विश्वधुरन्धरः।
भुजौ भूभारसंहर्ता करौ पातु पिनाकधृक्॥ ३ ॥

हृदयं शङ्करः पातु जठरं गिरिजापतिः।
नाभिं मृत्युञ्जयः पातु कटी व्याघ्राजिनाम्बरः॥ ४ ॥

सक्थिनी पातु दीनार्तशरणागतवत्सलः।
ऊरू महेश्वरः पातु जानुनी जगदीश्वरः॥ ५ ॥

जङ्घे पातु जगत्कर्ता गुल्फौ पातु गणाधिपः।
चरणौ करुणासिन्धुः सर्वाङ्गानि सदाशिवः॥ ६ ॥

॥ फलश्रुतिः ॥

एतां शिवबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत्।
स भुक्त्वा सकलान् कामान् शिवसायुज्यमाप्नुयात्॥

ग्रहभूतपिशाचाद्यास्त्रैलोक्ये विचरन्ति ये।
दूरादाशु पलायन्ते शिवनामाभिरक्षणाम्॥

अभयङ्करनामेदं कवचं पार्वतीपतेः।
भक्त्या बिभर्ति यः कण्ठे तस्य वश्यं जगत्त्रयम्॥

इमां नारायणः स्वप्ने शिवरक्षां यथाऽदिशत्।
प्रातरूत्थाय योगीन्द्रो याज्ञवल्क्यस्तथाऽलिखत्॥

॥इति श्रीमद्याज्ञवल्क्यमुनिप्रोक्तं शिवरक्षास्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्॥

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै नकाराय नमः शिवाय॥१॥

मन्दाकिनी-सलिलचन्दन-चर्चिताय
नन्दीश्वर-प्रमथनाथ-महेश्वराय।
मन्दारपुष्प-बहुपुष्प-सुपूजिताय
तस्मै मकाराय नमः शिवाय॥२॥

शिवाय गौरीवदनाब्ज-वृन्द-
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै शिकाराय नमः शिवाय॥३॥

वसिष्ठ-कुम्भोद्भव-गौतमार्य-
मुनीन्द्र-देवार्चितशेखराय ।
चन्द्रार्क-वैश्वानरलोचनाय
तस्मै वकाराय नमः शिवाय॥४॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै यकाराय नमः शिवाय॥५॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥शिवापराधक्षमापन स्तोत्रम्॥

आदौ कर्मप्रसङ्गात्कलयति कलुषं मातृकुक्षौ स्थितं माम्
विण्मूत्रामेध्यमध्ये कथयति नितरां जाठरो जातवेदाः।
यद्यद्वै तत्र दुःखं व्यथयति नितरां शक्यते केन वक्तुम्
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्री-महादेव शम्भो॥१॥

बाल्ये दुःखातिरेको मललुलितवपुः स्तन्यपाने पिपासा
नो शक्तश्चेन्द्रियेभ्यो भवगुणजनिता जन्तवो मां तुदन्ति।
नानारोगादिदुःखाद्रुदनपरवशः शङ्करं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्री-महादेव शम्भो॥२॥

प्रौढोऽहं यौवनस्थो विषयविषधरैः पञ्चभिर्मर्मसन्धौ
दष्टो नष्टोऽविवेकः सुतधनयुवतिस्वादुसौख्ये निषण्णः।
शैवीचिन्ताविहीनं मम हृदयमहो मानगर्वाधिरूढम्
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्री-महादेव शम्भो॥३॥

वार्धक्ये चेन्द्रियाणां विगतगतिमतिश्चाधिदैवादितापैः
पापै रोगैर्वियोगैस्त्वनवसितवपुः प्रौढहीनं च दीनम्।
मिथ्यामोहाभिलाषैर्भ्रमति मम मनो धूर्जटेर्ध्यानशून्यम्
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्री-महादेव शम्भो॥४॥

नो शक्यं स्मार्तकर्म प्रतिपदगहनप्रत्यवायाकुलाख्यम्
श्रौते वार्ता कथं मे द्विजकुलविहिते ब्रह्ममार्गेऽसुसारे।
ज्ञातो धर्मो विचारैः श्रवणमननयोः किं निदिध्यासितव्यम्
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्री-महादेव शम्भो॥५॥

स्नात्वा प्रत्यूषकाले स्नपनविधिविधौ नाहृतं गाङ्गतोयम्
पूजार्थं वा कदाचिद्बहुतरगहनात्खण्डबिल्वीदलानि।
नानीता पद्ममाला सरसि विकसिता गन्धधूपैस्त्वदर्थम्
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्री-महादेव शम्भो॥६॥

दुग्धैर्मध्वाज्युतैर्दधिसितसहितैः स्नापितं नैव लिङ्गम्
नो लिप्तं चन्दनाद्यैः कनकविरचितैः पूजितं न प्रसूनैः।
धूपैः कर्पूरदीपैर्विविधरसयुतैर्नैव भक्ष्योपहारैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्री-महादेव शम्भो॥७॥

ध्यात्वा चित्ते शिवाख्यं प्रचुरतरधनं नैव दत्तं द्विजेभ्यो
हव्यं ते लक्षसङ्ख्यैर्हुतवहवदने नार्पितं बीजमन्त्रैः।
नो तप्तं गङ्गातीरे व्रतजननियमै रुद्रजाप्यैर्न वेदैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्री-महादेव शम्भो॥८॥

स्थित्वा स्थाने सरोजे प्रणवमयमरुत्कुम्भके सूक्ष्ममार्गे
शान्ते स्वान्ते प्रलीने प्रकटितविभवे ज्योतिरूपेऽपराख्ये।
लिङ्गज्ञे ब्रह्मवाक्ये सकलतनुगतं शङ्करं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्री-महादेव शम्भो॥९॥

नग्नो निःसङ्गशुद्धस्त्रिगुणविरहितो ध्वस्तमोहान्धकारो
नासाग्रे न्यस्तदृष्टिर्विदितभवगुणो नैव दृष्टः कदाचित्।
उन्मन्याऽवस्थया त्वां विगतकलिमलं शङ्करं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्री-महादेव शम्भो॥१०॥

चन्द्रोद्भासितशेखरे स्मरहरे गङ्गाधरे शङ्करे
सर्पैर्भूषितकण्ठकर्णयुगले नेत्रोत्थवैश्वानरे।
दन्तित्वक्कृतसुन्दराम्बरधरे त्रैलोक्यसारे हरे
मोक्षार्थं कुरु चित्तवृत्तिमचलामन्यैस्तु किं कर्मभिः॥११॥

किं वाऽनेन धनेन वाजिकरिभिः प्राप्तेन राज्येन किम्
किं वा पुत्रकलत्रमित्रपशुभिर्देहेन गेहेन किम्।
ज्ञात्वैतत्क्षणभङ्गुरं सपदि रे त्याज्यं मनो दूरतः
स्वात्मार्थं गुरुवाक्यतो भज मन श्रीपार्वतीवल्लभम्॥१२॥

आयुर्नश्यति पश्यतां प्रतिदिनं याति क्षयं यौवनम्
प्रत्यायान्ति गताः पुनर्न दिवसाः कालो जगद्भक्षकः।
लक्ष्मीस्तोयतरङ्गभङ्गचपला विद्युच्चलं जीवितम्
तस्मात्त्वां शरणागतं शरणद त्वं रक्ष रक्षाधुना॥१३॥

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणम्
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियम्
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्॥ १४॥

गात्रं भस्मसितं च हसितं हस्ते कपालं सितम्
खट्वाङ्गं च सितं सितश्च वृषभः कर्णे सिते कुण्डले।
गङ्गाफेनसिता जटा पशुपतेश्चन्द्रः सितो मूर्धनि
सोऽयं सर्वसितो ददातु विभवं पापक्षयं सर्वदा॥ १५॥

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्री-महादेव शम्भो॥ १६॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-शिवापराधक्षमापणस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ शिवप्रातःस्मरणस्तोत्रम्॥

प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशम्
गङ्गाधरं वृषभवाहनमम्बिकेशम्।
खट्वाङ्गशूलवरदाभयहस्तमीशम्
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥ १॥

प्रातर्नमामि गिरिशं गिरिजार्धदेहम्
सर्गस्थितिप्रलयकारणमादिदेवम्।
विश्वेश्वरं विजितविश्वमनोभिरामम्
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥ २ ॥

प्रातर्भजामि शिवमेकमनन्तमाद्यम्
वेदान्तवेद्यमनघं पुरुषं महान्तम्।
नामादिभेदरहितं षड्भावशून्यम्
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥ ३ ॥

॥ इति श्री-शिवप्रातःस्मरणस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ मार्गबन्धुस्तोत्रम् ॥

शम्भो महादेव देव।
शिव शम्भो महादेव देवेश शम्भो।
शम्भो महादेव देव ॥

फालावनम्रत्किरीटं फालनेत्रार्चिषा-दग्ध-पञ्चेषुकीटम्।
शूलाहतारातिकूटं शुद्धमर्धेन्दुचूडं भजे मार्गबन्धुम् ॥ १ ॥

अङ्गे विराजद्भुजङ्गम् अभ्र-गङ्गा-तरङ्गाभि-रामोत्तमाङ्गम्।
ओङ्कारवाटी-कुरङ्गं सिद्धसंसेविताङ्घ्रिं भजे मार्गबन्धुम् ॥ २ ॥

नित्यं चिदानन्दरूपं निह्नुताशेष-लोकेश-वैरिप्रतापम्।
कार्तस्वरागेन्द्र-चापं कृत्तिवासं भजे दिव्यसन्मार्गबन्धुम् ॥ ३ ॥

कन्दर्प-दर्पघ्नमीशं कालकण्ठं महेशं महाव्योमकेशम्।
कुन्दाभदन्तं सुरेशं कोटिसूर्यप्रकाशं भजे मार्गबन्धुम् ॥ ४ ॥

मन्दारभूतेरुदारं मन्दरागेन्द्रसारं महागौर्यदूरम्।
सिन्धूर-दूर-प्रचारं सिन्धुराजातिधीरं भजे मार्गबन्धुम्॥५॥

अप्पय्ययज्वेन्द्रगीतं स्तोत्रराजं पठेद्यस्तु भक्त्या प्रयाणे।
तस्यार्थसिद्धिं विधत्ते मार्गमध्येऽभयं चाऽऽशुतोषो महेशः॥

॥ सदाशिवाष्टकम् ॥

पतञ्जलिरुवाच

सुवर्णपद्मिनी-तटान्त-दिव्यहर्म्य-वासिने
सुपर्णवाहन-प्रियाय सूर्यकोटि-तेजसे।
अपर्णया विहारिणे फणाधरेन्द्र-धारिणे
सदा नमः शिवाय ते सदाशिवाय शम्भवे॥ १ ॥

सतुङ्ग-भङ्ग-जह्नुजा-सुधांशु-खण्ड-मौलये
पतङ्ग-पङ्कजासुहृत्-कृपीटयोनि-चक्षुषे ।
भुजङ्गराज-मण्डलाय पुण्यशालि-बन्धवे
सदा नमः शिवाय ते सदाशिवाय शम्भवे॥ २ ॥

चतुर्मुखाननारविन्द-वेदगीत-भूतये
चतुर्भुजानुजा-शरीर-शोभमान-मूर्तये ।
चतुर्विधार्थ-दान-शौण्ड-ताण्डव-स्वरूपिणे
सदा नमः शिवाय ते सदाशिवाय शम्भवे॥ ३ ॥

शरन्निशाकर-प्रकाश-मन्दहास-मञ्जुला-
धरप्रवाल-भासमान-वक्त्रमण्डल-श्रिये ।
करस्फुरत्-कपालमुक्तरक्त-विष्णुपालिने
सदा नमः शिवाय ते सदाशिवाय शम्भवे॥ ४ ॥

सहस्र-पुण्डरीक-पूजनैक-शून्यदर्शनात्
सहस्रनेत्र-कल्पितार्चनाऽच्युताय भक्तितः।
सहस्रभानुमण्डल-प्रकाश-चक्रदायिने
सदा नमः शिवाय ते सदाशिवाय शम्भवे॥५॥

रसारथाय रम्यपत्र-भृद्रथाङ्गपाणये
रसाधरेन्द्र-चापशिञ्जिनी-कृतानिलाशिने ।
स्वसारथी-कृताजनुन्न-वेदरूपवाजिने
सदा नमः शिवाय ते सदाशिवाय शम्भवे॥६॥

अति-प्रगल्भ-वीरभद्र-सिंहनाद-गर्जित-
श्रुतिप्रभीत-दक्षयाग-भोगिनाक-सद्मनाम्।
गतिप्रदाय गर्जिताखिल-प्रपञ्चसाक्षिणे
सदा नमः शिवाय ते सदाशिवाय शम्भवे॥७॥

मृकण्डुसूनु-रक्षणावधूतदण्ड-पाणये
सुगन्धमण्डल-स्फुरत्-प्रभाजितामृतांशवे।
अखण्डभोग-सम्पदर्थलोक-भावितात्मने
सदा नमः शिवाय ते सदाशिवाय शम्भवे॥८॥

मधुरिपु-विधि-शक्र-मुख्य-देवैरपि नियमार्चित-पादपङ्कजाय।
कनकगिरि-शरासनाय तुभ्यं रजत-सभापतये नमः शिवाय॥९॥

हालास्यनाथाय महेश्वराय
हालाहलालङ्कृत-कन्धराय ।
मीनेक्षणायाः पतये शिवाय
नमो नमः सुन्दर-ताण्डवाय॥१०॥

॥इति श्री-हालास्यमाहात्म्ये पतञ्जलिकृतं श्री-सदाशिवाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ चरणश्रृङ्गरहित-नटराज-स्तोत्रम् ॥

सदञ्चित-मुदञ्चित-निकुञ्चित-पदं झलझलञ्चलित-मञ्जु-कटकम्
पतञ्जलि-दृगञ्जन-मनञ्जन-मचञ्चलपदं जनन-भञ्जन-करम्।
कदम्बरुचिमम्बरवसं परममम्बुद-कदम्बक-विडम्बक-गलम्
चिदम्बुधि-मणिं बुध-हृदम्बुज-रविं-पर-चिदम्बर-नटं हृदि भज॥ १ ॥

हरं त्रिपुर-भञ्जनम् अनन्तकृतकङ्कणम् अखण्डदय-मन्तरहितम्
विरिञ्चिसुरसंहतिपुरन्धर-विचिन्तितपदं तरुणचन्द्रमकुटम्।
परं पद-विखण्डितयमं भसित-मण्डिततनुं मदनवञ्चन-परम्
चिरन्तनममुं प्रणवसञ्चितनिधिं पर-चिदम्बर-नटं हृदि भज॥ २ ॥

अनन्तमखिलं जगदभङ्ग-गुणतुङ्गममतं धृतविधुं सुरसरित्
तरङ्ग-निकुरम्ब-धृति-लम्पट-जटं शमनदम्बसुहरं भवहरम्।
शिवं दशदिगन्तर-विजृम्भितकरं करलसन्मृगशिशुं पशुपतिम्
हरं शशिधनञ्जयपतङ्गनयनं पर-चिदम्बर-नटं हृदि भज॥ ३ ॥

अनन्तनवरत्नविलसत्कटककिङ्किणिझलं झलझलं झलरवम्
मुकुन्दविधि-हस्तगतमद्दल-लयध्वनिधिमिद्धिमित-नर्तन-पदम्।
शकुन्तरथ-बर्हिरथ-नन्दिमुख-शृङ्गिरिटि-भृङ्गिगण-सङ्घनिकटम्
सनन्दसनक-प्रमुख-वन्दित-पदं पर-चिदम्बर-नटं हृदि भज॥ ४ ॥

अनन्तमहसं त्रिदशवन्द्य-चरणं मुनि-हृदन्तर-वसन्तममलम्
कबन्ध-वियदिन्द्ववनि-गन्धवह-वह्निमख-बन्धुरविमञ्जु-वपुषम्।
अनन्तविभवं त्रिजगदन्तर-मणिं त्रिनयनं त्रिपुर-खण्डन-परम्
सनन्द-मुनि-वन्दित-पदं सकरुणं पर-चिदम्बर-नटं हृदि भज॥ ५ ॥

अचिन्त्यमलिवृन्द-रुचि-बन्धुरगलं कुरित-कुन्द-निकुरम्ब-धवलम्
मुकुन्द-सुरवृन्द-बलहन्तृ-कृतवन्दन-लसन्तम्-अहिकुण्डल-धरम्।
अकम्पमनुकम्पित-रतिं सुजन-मङ्गलनिधिं गजहरं पशुपतिम्
धनञ्जयनुतं प्रणत-रञ्जनपरं पर-चिदम्बर-नटं हृदि भज॥६॥

परं सुरवरं पुरहरं पशुपतिं जनित-दन्तिमुख-षण्मुखममुम्
मृडं कनक-पिङ्गल-जटं सनकपङ्कज-रविं सुमनसं हिमरुचिम्।
असङ्घमनसं जलधि-जन्मकरलं कवलयन्त-मतुलं गुणनिधिम्
सनन्द-वरदं शमितमिन्दु-वदनं पर-चिदम्बर-नटं हृदि भज॥७॥

अजं क्षितिरथं भुजगपुङ्गवगुणं कनक-श्रृङ्गि-धनुषं करलसत्
कुरङ्ग-पृथु-टङ्क-परशुं रुचिर-कुङ्कुम-रुचिं डमरुकं च दधतम्।
मुकुन्द-विशिखं नमदवन्ध्य-फलदं निगम-वृन्द-तुरगं निरुपमम्
सचण्डिकममुं झटिति संहृतपुरं पर-चिदम्बर-नटं हृदि भज॥८॥

अनङ्गपरिपन्थिनमजं क्षिति-धुरन्धरमलं करुणयन्तमखिलम्
ज्वलन्तमनलं दधतमन्तकरिपुं सततमिन्द्रमुख-वन्दितपदम्।
उदञ्चदरविन्दकुल-बन्धुशत-बिम्बरुचि-संहति-सुगन्धि-वपुषम्
पतञ्जलिनुतं प्रणवपञ्जर-शुकं पर-चिदम्बर-नटं हृदि भज॥९॥

इति स्तवममुं भुजगपुङ्गव-कृतं प्रतिदिनं पठति यः कृतमुखः
सदः प्रभुपद-द्वितयदर्शनपदं सुललितं चरण-श्रृङ्ग-रहितम्।
सरःप्रभव-सम्भव-हरित्पति-हरिप्रमुख-दिव्यनुत-शङ्करपदम्
स गच्छति परं न तु जनुर्जलनिधिं परमदुःखजनकं दुरितदम्॥१०॥

॥इति श्रीपतञ्जलिमुनिप्रणीतं चरणश्रृङ्गरहित-नटराजस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ शम्भुस्तुतिः ॥

नमामि शम्भुं पुरुषं पुराणं
नमामि सर्वज्ञमपारभावम्।
नमामि रुद्रं प्रभुमक्षयं तं
नमामि शर्वं शिरसा नमामि॥ १॥

नमामि देवं परमव्ययं तम्
उमापतिं लोकगुरुं नमामि।
नमामि दारिद्र्यविदारणं तं
नमामि रोगापहरं नमामि॥ २॥

नमामि कल्याणमचिन्त्यरूपं
नमामि विश्वोद्भवबीजरूपम्।
नमामि विश्वस्थितिकारणं तं
नमामि संहारकरं नमामि॥ ३॥

नमामि गौरीप्रियमव्ययं तं
नमामि नित्यं क्षरमक्षरं तम्।
नमामि चिद्रूपममेयभावं
त्रिलोचनं तं शिरसा नमामि॥ ४॥

नमामि कारुण्यकरं भवस्य
भयङ्करं वाऽपि सदा नमामि।
नमामि दातारमभीप्सितानां
नमामि सोमेशमुमेशमादौ॥ ५॥

नमामि वेदत्रयलोचनं तं
नमामि मूर्तित्रयवर्जितं तम्।
नमामि पुण्यं सदसद्व्यतीतं
नमामि तं पापहरं नमामि॥ ६॥
नमामि विश्वस्य हिते रतं तं
नमामि रूपाणि बहूनि धत्ते।
यो विश्वगोप्ता सदसत्प्रणेता
नमामि तं विश्वपतिं नमामि॥ ७॥
यज्ञेश्वरं सम्प्रति हव्यकव्यं
तथागतिं लोकसदाशिवो यः।
आराधितो यश्च ददाति सर्वं
नमामि दानप्रियमिष्टदेवम्॥ ८॥
नमामि सोमेश्वरमस्वतन्त्रम्
उमापतिं तं विजयं नमामि।
नमामि विघ्नेश्वरनन्दिनाथं
पुत्रप्रियं तं शिरसा नमामि॥ ९॥
नमामि देवं भवदुःखशोक-
विनाशनं चन्द्रधरं नमामि।
नमामि गङ्गाधरमीशमीड्यम्
उमाधवं देववरं नमामि॥ १०॥
नमाम्यजादीशपुरन्दरादि-
सुरासुरैरर्चितपादपद्मम् ।
नमामि देवीमुखवादनानाम्
ईक्षार्थमक्षित्रितयं य ऐच्छत्॥ ११॥

पञ्चामृतैर्गन्धसुधूपदीपैर्-
विचित्रपुष्पैर्विविधैश्च मन्त्रैः।
अन्नप्रकारैः सकलोपचारैः
सम्पूजितं सोममहं नमामि॥ १२॥

॥इति श्रीब्रह्ममहापुराणे त्रयोविंशाधिकशततमाध्यायान्तर्गतं श्रीरामकृतं शम्भुस्तुतिः सम्पूर्णा॥

॥उमामहेश्वरस्तोत्रम्॥

नमः शिवाभ्यां नवयौवनाभ्याम्
परस्पराश्लिष्टवपुर्धराभ्याम् ।
नगेन्द्रकन्यावृषकेतनाभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥ १॥

नमः शिवाभ्यां सरसोत्सवाभ्याम्
नमस्कृताभीष्टवरप्रदाभ्याम् ।
नारायणेनार्चितपादुकाभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥ २॥

नमः शिवाभ्यां वृषवाहनाभ्याम्
विरिञ्चिविष्ण्विन्द्रसुपूजिताभ्याम्।
विभूतिपाटीरविलेपनाभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥ ३॥

नमः शिवाभ्यां जगदीश्वराभ्याम्
जगत्पतिभ्यां जयविग्रहाभ्याम्।
जम्भारिमुख्यैरभिवन्दिताभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥४॥

नमः शिवाभ्यां परमौषधाभ्याम्
पञ्चाक्षरी-पञ्जररञ्जिताभ्याम् ।
प्रपञ्च-सृष्टि-स्थिति-संहृताभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥५॥

नमः शिवाभ्यामतिसुन्दराभ्याम्
अत्यन्तमासक्तहृदम्बुजाभ्याम्।
अशेषलोकैकहितङ्कराभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥६॥

नमः शिवाभ्यां कलिनाशनाभ्याम्
कङ्कालकल्याणवपुर्धराभ्याम्।
कैलासशैलस्थितदेवताभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥७॥

नमः शिवाभ्यामशुभापहाभ्याम्
अशेषलोकैकविशेषिताभ्याम्।
अकुण्ठिताभ्यां स्मृतिसम्भृताभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥८॥

नमः शिवाभ्यां रथवाहनाभ्याम्
रवीन्दुवैश्वानरलोचनाभ्याम् ।
राका-शशाङ्काभ-मुखाम्बुजाभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥९॥

नमः शिवाभ्यां जटिलन्धराभ्याम्
जरामृतिभ्यां च विवर्जिताभ्याम्।
जनार्दनाब्जोद्भवपूजिताभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥१०॥

नमः शिवाभ्यां विषमेक्षणाभ्याम्
बिल्वच्छदामल्लिकदामभृद्भ्याम्।
शोभावती-शान्तवतीश्वराभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥११॥

नमः शिवाभ्यां पशुपालकाभ्याम्
जगत्त्रयीरक्षण-बद्धहृद्भ्याम्।
समस्तदेवासुरपूजिताभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥१२॥

स्तोत्रं त्रिसन्ध्यं शिवपार्वतीभ्याम्
भक्त्या पठेद्-द्वादशकं नरो यः।
स सर्वसौभाग्य-फलानि भुङ्क्ते
शतायुरन्ते शिवलोकमेति॥१३॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-उमामहेश्वरस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ अर्धनारीश्वर अष्टकम् ॥

चाम्पेयगौरार्ध-शरीरकायै
कर्पूरगौरार्ध-शरीरकाय ।
धम्मिल्लकायै च जटाधराय
नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ १ ॥

कस्तूरिकाकुङ्कुमचर्चितायै
चितारजःपुञ्जविचर्चिताय ।
कृतस्मरायै विकृतस्मराय
नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ २ ॥

झणत्क्वणत्कङ्कण-नूपुरायै
पादाब्जराजत्-फणिनूपुराय ।
हेमाङ्गदायै च भुजङ्गदाय
नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ ३ ॥

विशालनीलोत्पललोचनायै
विकासिपङ्केरुहलोचनाय ।
समेक्षणायै विषमेक्षणाय
नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ ४ ॥

मन्दारमालाकलितालकायै
कपालमालाङ्कितकन्धराय ।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय
नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ ५ ॥

अम्भोधरश्यामलकुन्तलायै
तटित्प्रभाताम्रजटाधराय ।
निरीश्वरायै निखिलेश्वराय
नमः शिवायै च नमः शिवाय॥ ६ ॥

प्रपञ्चसृष्ट्युन्मुखलास्यकायै
समस्तसंहारकताण्डवाय ।
जगज्जनन्यै जगदेकपित्रे
नमः शिवायै च नमः शिवाय॥ ७ ॥

प्रदीप्तरत्नोज्ज्वलकुण्डलायै
स्फुरन्महापन्नगभूषणाय ।
शिवान्वितायै च शिवान्विताय
नमः शिवायै च नमः शिवाय॥ ८ ॥

एतत्पठेदष्टकमिष्टदं यो
भक्त्या स मान्यो भुवि दीर्घजीवी।
प्राप्नोति सौभाग्यमनन्तकालम्
भूयात् सदा तस्य समस्तसिद्धिः॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-अर्धनारीश्वर अष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ शिवशिवास्तुतिः ॥

नमो नमस्ते गिरिशाय तुभ्यम्
नमो नमस्ते गिरिकन्यकायै।
नमो नमस्ते वृषभध्वजाय
सिंहध्वजायै च नमो नमस्ते॥ १॥

नमो नमो भूतिविभूषणाय
नमो नमश्चन्दनरूषितायै।
नमो नमः फालविलोचनाय
नमो नमः पद्मविलोचनायै॥ २॥

त्रिशूलहस्ताय नमो नमस्ते
नमो नमः पद्मलसत्करायै।
नमो नमो दिग्वसनाय तुभ्यम्
चित्राम्बरायै च नमो नमस्ते॥ ३॥

चन्द्रावतंसाय नमो नमस्ते
नमोऽस्तु चन्द्राभरणाञ्चितायै।
नमः सुवर्णाङ्कितकुण्डलाय
नमोऽस्तु रत्नोज्ज्वलकुण्डलायै॥ ४॥

नमोऽस्तु ताराग्रहमालिकाय
नमोऽस्तु हारान्वितकन्धरायै।
सुवर्णवर्णाय नमो नमस्ते
नमः सुवर्णाधिकसुन्दरायै॥ ५॥

नमो नमस्ते त्रिपुरान्तकाय
नमो नमस्ते मधुनाशनायै।
नमो नमस्त्वन्धकसूदनाय
नमो नमः कैटभसूदनायै॥ ६॥

नमो नमो ज्ञानमयाय नित्यम्
नमश्चिदानन्दघनप्रदायै ।
नमो जटाजूटविराजिताय
नमोऽस्तु वेणीफणिमण्डितायै॥ ७॥

नमोऽस्तु कर्पूरसाकराय
नमो लसत्कुङ्कुममण्डितायै।
नमोऽस्तु बिल्वाम्रफलार्चिताय
नमोऽस्तु कुन्दप्रसवार्चितायै॥ ८॥

नमो जगन्मण्डलमण्डनाय
नमो मणिभ्राजितमण्डनायै।
नमोऽस्तु वेदान्तगणस्तुताय
नमोऽस्तु विश्वेश्वरसंस्तुतायै॥ ९॥

नमोऽस्तु सर्वामरपूजिताय
नमोऽस्तु पद्मार्चितपादुकायै।
नमः शिवालिङ्गितविग्रहाय
नमः शिवालिङ्गितविग्रहायै॥ १०॥

नमो नमस्ते जनकाय नित्यम्
नमो नमस्ते गिरिजे जनन्यै।
नमो नमोऽनङ्गहराय नित्यम्
नमो नमोऽनङ्गविवर्धनायै॥ ११॥

नमो नमस्तेऽस्तु विषाशनाय
नमो नमस्तेऽस्तु सुधाशनायै।
नमो नमस्तेऽस्तु महेश्वराय
श्रीचन्दने देवि नमो नमस्ते॥ १२॥

॥ इति श्रीमत्कार्त्तिकेयविरचितः श्री-शिवशिवास्तुतिः सम्पूर्णा॥

❀❀❀

॥ दक्षिणामूर्त्यष्टकम् ॥

विश्वं दर्पणदृश्यमाननगरीतुल्यं निजान्तर्गतम्
पश्यन्नात्मनि मायया बहिरिवोद्भूतं यदा निद्रया।
यः साक्षात्कुरुते प्रबोधसमये स्वात्मानमेवाद्वयं
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये॥ १ ॥

बीजस्यान्तरिवाङ्कुरो जगदिदं प्राङ्निर्विकल्पं पुनः
मायाकल्पितदेशकालकलनावैचित्र्यचित्रीकृतम्।
मायावीव विजृम्भयत्यपि महायोगीव यः स्वेच्छया
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये॥ २ ॥

यस्यैव स्फुरणं सदाऽऽत्मकमसत्कल्पार्थकं भासते
साक्षात् तत्त्वमसीति वेदवचसा यो बोधयत्याश्रितान्।
यत्साक्षात्करणाद्भवेन्न पुनरावृत्तिर्भवाम्भोनिधौ
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये॥ ३ ॥

नानाच्छिद्रघटोदरस्थितमहादीपप्रभाभास्वरं
ज्ञानं यस्य तु चक्षुरादिकरणद्वारा बहिः स्पन्दते।
जानामीति तमेव भान्तमनुभात्येतत्समस्तं जगत्
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये॥ ४ ॥

देहं प्राणमपीन्द्रियाण्यपि चलां बुद्धिं च शून्यं विदुः
स्त्रीबालान्धजडोपमास्त्वहमिति भ्रान्ता भृशं वादिनः।
मायाशक्तिविलासकल्पितमहाव्यामोहसंहारिणे
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये॥ ५ ॥

राहुग्रस्तदिवाकरेन्दुसदृशो मायासमाच्छादनात्
सन्मात्रः करणोपसंहरणतो योऽभूत्सुषुप्तः पुमान्।
प्रागस्वाप्समिति प्रबोधसमये यः प्रत्यभिज्ञायते
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये॥ ६॥

बाल्यादिष्वपि जागृदादिषु तथा सर्वास्ववस्थास्वपि
व्यावृत्तास्वनुवर्तमानमहमित्यन्तः स्फुरन्तं सदा।
स्वात्मानं प्रकटीकरोति भजतां यो मुद्रया भद्रया
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये॥ ७॥

विश्वं पश्यति कार्यकारणतया स्वस्वामिसम्बन्धतः
शिष्याचार्यतया तथैव पितृपुत्राद्यात्मना भेदतः।
स्वप्ने जागृति वा य एष पुरुषो मायापरिभ्रामितः
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये॥ ८॥

भूरम्भांस्यनलोऽनिलोऽम्बरमहर्नाथो हिमांशुः पुमान्
इत्याभाति चराचरात्मकमिदं यस्यैव मूर्त्यष्टकम्।
नान्यत् किञ्चन विद्यते विमृशतां यस्मात्परस्माद्विभोः
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये॥

सर्वात्मत्वमिति स्फुटीकृतमिदं यस्मादमुष्मिन् स्तवे
तेनास्य श्रवणात्तदर्थमननाद्ध्यानाच्च सङ्कीर्तनात्।
सर्वात्मत्वमहाविभूतिसहितं स्यादीश्वरत्वं स्वतः
सिध्येत् तत्पुनरष्टधा परिणतं चैश्वर्यमव्याहतम्॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-दक्षिणामूर्त्यष्टकं सम्पूर्णम्॥

वटविटपिसमीपे भूमिभागे निषण्णम्
सकलमुनिजनानां ज्ञानदातारमारात्।
त्रिभुवनगुरुमीशं दक्षिणामूर्तिदेवम्
जननमरणदुःखच्छेददक्षं नमामि॥

॥ दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम् ॥

उपासकानां यदुपासनीयम्
उपात्तवासं वटशाखिमूले।
तद्धाम दाक्षिण्यजुषा स्वमूर्त्या
जागर्तु चित्ते मम बोधरूपम्॥ १ ॥

अद्राक्षमक्षीणदयानिधानम्
आचार्यमाद्यं वटमूलभागे।
मौनेन मन्दस्मितभूषितेन
महर्षि लोकस्य तमो नुदन्तम्॥ २ ॥

विद्रावितारशेष-तमोगुणेन
मुद्राविशेषेण मुहुर्मुनीनाम्।
निरस्य मायां दयया विधत्ते
देवो महांस्तत्त्वमसीति बोधम्॥ ३ ॥

अपारकारुण्यसुधातरङ्गैः
अपाङ्गपातैरवलोकयन्तम् ।
कठोरसंसारनिदाघतप्तान्
मुनीनहं नौमि गुरुं गुरूणाम्॥ ४ ॥

ममाद्यदेवो वटमूलवासी
कृपाविशेषात्कृतसन्निधानः।
ओङ्काररूपामुपदिश्य विद्याम्
आविद्यकध्वान्तमपाकरोतु॥५॥

कलाभिरिन्दोरिव कल्पिताङ्गं
मुक्ताकलापैरिव बद्धमूर्तिम्।
आलोकये देशिकमप्रमेयम्
अनाद्यविद्यातिमिरप्रभातम्॥६॥

स्वदक्षजानुस्थितवामपादम्
पादोदरालङ्कृतयोगपट्टम् ।
अपस्मृतेराहितपादमङ्गे
प्रणौमि देवं प्रणिधानवन्तम्॥७॥

तत्त्वार्थमन्तेवसतामृषीणाम्
युवाऽपि यः सन्नुपदेष्टुमीष्टे।
प्रणौमि तं प्राक्तनपुण्यजालैः
आचार्यमाश्चर्यगुणाधिवासम्॥८॥

एकेन मुद्रां परशुं करेण
करेण चान्येन मृगं दधानः।
स्वजानुविन्यस्तकरः पुरस्तात्
आचार्यचूडामणिराविरस्तु॥९॥

आलेपवन्तं मदनाङ्गभूत्या
शार्दूलकृत्त्या परिधानवन्तम्।
आलोकये कञ्चनदेशिकेन्द्रम्
अज्ञानवाराकरबाडवाग्निम् ॥१०॥

चारुस्मितं सोमकलावतंसम्
वीणाधरं व्यक्तजटाकलापम्।
उपासते केचन योगिनस्त्वाम्
उपात्तनादानुभवप्रमोदम् ॥११॥

उपासते यं मुनयः शुकाद्याः
निराशिषो निर्ममताधिवासाः।
तं दक्षिणामूर्तितनुं महेशम्
उपास्महे मोहमहार्तिशान्त्यै॥१२॥

कान्त्या निन्दितकुन्दकन्दलवपुर्न्यग्रोधमूले वसन्
कारुण्यामृतवारिभिर्मुनिजनं सम्भावयन् वीक्षितैः।
मोहध्वान्तविभेदनं विरचयन् बोधेन तत्तादृशा
देवस्तत्त्वमसीति बोधयतु मां मुद्रावता पाणिना॥१३॥

अगौरगात्रैरललाटनेत्रैः
अशान्तवेषैरभुजङ्गभूषैः।
अबोधमुद्रैरनपास्तनिद्रैः
अपूर्णकामैरमरैरलं नः॥१४॥

दैवतानि कति सन्ति चावनौ
नैव तानि मनसो मतानि मे।
दीक्षितं जडधियामनुग्रहे
दक्षिणाभिमुखमेव दैवतम्॥ १५॥

मुदिताय मुग्धशशिनावतंसिने
भसितावलेपरमणीयमूर्तये ।
जगदीन्द्रजालरचनापटीयसे
महसे नमोऽस्तु वटमूलवासिने॥ १६॥

व्यालम्बिनीभिः परितो जटाभिः
कलावशेषेण कलाधरेण।
पश्यल्ललाटेन मुखेन्दुना च
प्रकाशसे चेतसि निर्मलानाम्॥ १७॥

उपासकानां त्वमुमासहायः
पूर्णेन्दुभावं प्रकटीकरोषि।
यदद्य ते दर्शनमात्रतो मे
द्रवत्यहो मानसचन्द्रकान्तः॥ १८॥

यस्ते प्रसन्नामनुसन्दधानो
मूर्तिं मुदा मुग्धशशाङ्कमौलेः।
ऐश्वर्यमायुर्लभते च विद्याम्
अन्ते च वेदान्तमहारहस्यम्॥ १९॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-दक्षिणामूर्तिस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ दक्षिणामूर्तिस्तोत्रं वृषभदेवकृतम् ॥

अगणितगुणमप्रमेयमाद्यम्
सकलजगत्स्थितिसंयमादिहेतुम्।
उपरतमनोयोगिहृन्मन्दिरन्त
सततमहं दक्षिणामूर्तिमीडे ॥ १ ॥

निरवधिसुखमिष्टदातारमीड्यम्
नतजनमनस्तापभेदैकदक्षम्।
भवविपिनदवाग्निनामधेयम्
सततमहं दक्षिणामूर्तिमीडे ॥ २ ॥

त्रिभुवनगुरुमागमैकप्रमाणम्
त्रिजगत्कारणसूत्रयोगमायम्।
रविशतभास्वरमीहितप्रदानम्
सततमहं दक्षिणामूर्तिमीडे ॥ ३ ॥

अविरतभवभावनाऽतिदूरम्
पदपद्मद्वयभाविनामदूरम् ।
भवजलधिसुतारणाङ्घ्रिपोतम्
सततमहं दक्षिणामूर्तिमीडे ॥ ४ ॥

कृतनिलयमनिशं वटाकमूले
निगमशिखाव्रातबोधितैकरूपम्।
धृतमुद्राङ्गुलिगम्यचारुबोधम्
सततमहं दक्षिणामूर्तिमीडे ॥ ५ ॥

द्रुहिणसुतपूजिताङ्घ्रिपद्मम्
पदपद्मानतमोक्षदानदक्षम् ।
कृतगुरुकुलवासयोगिमित्रम्
सततमहं दक्षिणामूर्तिमीडे ॥ ६ ॥

यतिवरहृदयेसदाविभान्तम्
रतिपतिशतकोटिसुन्दराङ्गमाद्यम्।
परहितनिरतात्मनां सुसेव्यम्
सततमहं दक्षिणामूर्तिमीडे ॥ ७ ॥

स्मितधवलविकासिताननाब्जम्
श्रुतिसुलभं वृषभाधिरूढगात्रम्।
सितजलजसुशोभदेहकान्तिम्
सततमहं दक्षिणामूर्तिमीडे ॥ ८ ॥

वृषभकृतमिदमिष्टसिद्धिदम्
गुरुवरदेवसन्निधौ पठेद्यः ।
सकलदुरितदुःखवर्गहानिम्
व्रजति चिरं ज्ञानवान् शम्भुलोकम् ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीमद्वृषभदेवकृतं दक्षिणामूर्तिस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम् समरपुङ्गवदीक्षितकृतम् ॥

आधिक्यम् अस्माज्जगतोऽधिगन्तुं विश्वाधिकोक्तेर्विषयं प्रपद्ये।
कालग्रहग्राहभयापनुत्त्यै कृतान्तशिक्षाकृतिनं प्रपद्ये ॥ १ ॥

श‍ृङ्गारभूजृम्भणवारणाय प्रसूनकोदण्डरिपुं प्रपद्ये।
विनेतुम् आर्तिं विषयाध्वजन्यां वटद्रुमाधोवसतिं प्रपद्ये॥ २॥

मोहातिरेकस्मयमोषणाय पादार्दितापस्मरणं प्रपद्ये।
कर्माटवीपाटनकौतुकेन पाणौ विराजत्परशुं प्रपद्ये॥ ३॥

विशुद्धविज्ञानविकासहेतोः प्रबोधमुद्राभरितं प्रपद्ये।
तापत्रयाटोपसमापनाय प्रालेयधामाभरणं प्रपद्ये॥ ४॥

वैमल्यसम्पादनवाञ्छयाऽहं मन्दाकिनीमाल्यधरं प्रपद्ये।
प्रसादलाभं परम् ईहमानो मुग्धस्मितोल्लासिमुखं प्रपद्ये॥ ५॥

व्यथाम् अशेषाम् अपनेतुकामो नाम्ना मृडं नाथम् अहं प्रपद्ये।
अनाद्यविद्याशमनं प्रपद्ये नाम्ना महिम्नाऽपि च शङ्करं त्वाम्[१] ॥ ६॥

सर्वज्ञतासारभृतं प्रपद्ये निस्सीमसौहित्यनिधिं प्रपद्ये।
अनादिबोधायतनं प्रपद्ये स्वतन्त्रतायाः सदनं प्रपद्ये॥ ७॥

हरं प्रपद्येऽहम् अलुप्तशक्तिम् अमेयसामर्थ्यम् अहं प्रपद्ये।
शिवं प्रपद्ये जनकं विधातुः ईशं हृषीकेशगुरुं प्रपद्ये॥८॥

एवं प्रपत्तिम् ईशाने तन्वते तत्त्वदर्शिनः।
तत्क्रतुन्यायरसिकाः तत्तादृशफलाप्तये॥ ९॥

[१] एतत् श्लोकार्धं श्रीचन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वतीश्रीपादैः पूरितम् इति मद्रपुरीवास्तव्यैः प्राध्यापकवीऴिनाथमहाभागैः निवेदितम्।

॥ इति श्री-समरपुङ्गवदीक्षितकृतयात्राप्रबन्धग्रन्थे विद्यमानं
श्री-दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम् सम्पूर्णम्॥

॥ गुर्वष्टकम् ॥

शरीरं सुरूपं तथा वा कलत्रं
यशश्चारु चित्रं धनं मेरुतुल्यम्।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥ १॥

कलत्रं धनं पुत्रपौत्रादिसर्वं
गृहं बान्धवाः सर्वमेतद्धि जातम्।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥ २॥

षडङ्गादिवेदो मुखे शास्त्रविद्या
कवित्वादि गद्यं सुपद्यं करोति।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥ ३॥

विदेशेषु मान्यः स्वदेशेषु धन्यः
सदाचारवृत्तेषु मत्तो न चान्यः।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥ ४॥

क्षमामण्डले भूपभूपालबृन्दैः
सदा सेवितं यस्य पादारविन्दम्।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥ ५॥

यशो मे गतं दिक्षु दानप्रतापात्
जगद्वस्तुसर्वं करे यत्प्रसादात्।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥ ६ ॥

न भोगे न योगे न वा वाजिराजौ
न कन्तामुखे नैव वित्तेषु चित्तम्।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥ ७ ॥

अरण्ये न वा स्वस्य गेहे न कार्ये
न देहे मनो वर्तते मे त्वनर्घ्ये।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥ ८ ॥

गुरोरष्टकं यः पठेत्पुण्यदेही
यतिर्भूपतिर्ब्रह्मचारी च गेही।
लभेद्वाञ्छितार्थं पदं ब्रह्मसंज्ञं
गुरोरुक्तवाक्ये मनो यस्य लग्नम्॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ श्री-गुर्वष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ तोटकाष्टकम्॥

शङ्करं शङ्कराचार्यं केशवं बादरायणम्।
सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः॥

नारायणं पद्मभुवं वसिष्ठं शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम्।
श्री-शङ्कराचार्यमथास्य पद्मपादं च हस्तामलकं च शिष्यम्
तं तोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद्गुरून् सन्ततमानतोऽस्मि॥

विदिताखिल-शास्त्र-सुधा-जलधे महितोपनिषत्-कथितार्थ-निधे।
हृदये कलये विमलं चरणं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥१॥

करुणा-वरुणालय पालय मां भव-सागर-दुःख-विदून-हृदम्।
रचयाखिल-दर्शन-तत्त्व-विदं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥२॥

भवता जनता सुहिता भविता निज-बोध-विचारण-चारु-मते।
कलयेश्वर-जीव-विवेक-विदं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥३॥

भव एव भवानिति मे नितरां समजायत चेतसि कौतुकिता।
मम वारय मोह-महा-जलधिं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥४॥

सुकृतेऽधिकृते बहुधा भवतो भविता सम-दर्शन-लालसता।
अतिदीनमिमं परिपालय मां भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥५॥

जगतीमवितुं कलिताकृतयो विचरन्ति महा-महसश्छलतः।
अहिमांशुरिवात्र विभासि पुरो भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥६॥

गुरु-पुङ्गव पुङ्गव-केतन ते समतामयतां न हि कोऽपि सुधीः।
शरणागत-वत्सल तत्त्व-निधे भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥७॥

विदिता न मया विशदैक-कला न च किञ्चन काञ्चनमस्ति गुरो।
द्रुतमेव विधेहि कृपां सहजां भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥८॥

॥इति श्री-तोटकाचार्यविरचितं श्री-तोटकाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ कामाक्षी सुप्रभातम् ॥

जगदवन विधौ त्वं जागरूका भवानि
तव तु जननि निद्रामात्मवत्कल्पयित्वा।
प्रतिदिवसमहं त्वां बोधयामि प्रभाते
त्वयि कृतमपराधं सर्वमेतं क्षमस्व॥

यदि प्रभातं तव सुप्रभातम्
तदा प्रभातं मम सुप्रभातम्।
तस्मात् प्रभाते तव सुप्रभातम्
वक्ष्यामि मातः कुरु सुप्रभातम्॥

॥ गुरु-ध्यानम् ॥

यस्याङ्घ्रिपद्म-मकरन्दनिषेवणात् त्वम्
जिह्वां गताऽसि वरदे मम मन्दबद्धः।
यस्याम्ब नित्यमनघे हृदये विभासि
तं चन्द्रशेखरगुरुं प्रणमामि नित्यम्॥

जये जयेन्द्रो गुरुणा ग्रहीतो
मठाधिपत्ये शशिशेखरेण।
यथा गुरुः सर्वगुणोपपन्नो
जयत्यसौ मङ्गलमातनोतु॥

शुभं दिशतु नो देवी कामाक्षी सर्वमङ्गला
शुभं दिशतु नो देवी कामकोटी-मठेशः।
शुभं दिशतु तच्छिष्य-सद्गुरुर्नो जयेन्द्रो
सर्वं मङ्गलमेवास्तु मङ्गलानि भवन्तु नः॥

॥ सुप्रभातम् ॥

कामाक्षि देव्यम्ब तवाऽऽर्द्रदृष्ट्या
मूकः स्वयं मूककविर्यथाऽसीत्।
तथा कुरु त्वं परमेशजाये
त्वत्पादमूले प्रणतं दयार्द्रे ॥ १ ॥

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ वरदे उत्तिष्ठ जगदीश्वरि।
उत्तिष्ठ जगदाधारे त्रैलोक्यं मङ्गलं कुरु ॥ २ ॥

श्रृणोषि कच्चिद्-ध्वनिरुत्थितोऽयम्
मृदङ्गभेरीपटहानकानाम् ।
वेदध्वनिं शिक्षितभूसुराणाम्
श्रृणोषि भद्रे कुरु सुप्रभातम् ॥ ३ ॥

श्रृणोषि भद्रे ननु शङ्खघोषम्
वैतालिकानां मधुरं च गानम्।
श्रृणोषि मातः पिककुक्कुटानाम्
ध्वनिं प्रभाते कुरु सुप्रभातम् ॥ ४ ॥

मातर्निरीक्ष्य वदनं भगवान् शशाङ्को -
लज्जान्वितः स्वयमहो निलयं प्रविष्टः।
द्रष्टुं त्वदीय वदनं भगवान् दिनेशो -
ह्यायाति देवि सदनं कुरु सुप्रभातम् ॥ ५ ॥

पश्याम्ब केचिद्-धृतपूर्णकुम्भाः
केचिद्-दयार्द्रे धृतपुष्पमालाः।
काचित् शुभाङ्ग्यो ननुवाद्यहस्ताः
तिष्ठन्ति तेषां कुरु सुप्रभातम् ॥ ६ ॥

भेरीमृदङ्गपणवानकवाद्यहस्ताः
स्तोतुं महेशदयिते स्तुतिपाठकास्त्वाम्।
तिष्ठन्ति देवि समयं तव काङ्क्षमाणाः
ह्युत्तिष्ठ दिव्यशयनात् कुरु सुप्रभातम्॥७॥

मातर्निरीक्ष्य वदनं भगवान् त्वदीयम्
नैवोत्थितः शशिधिया शयितस्तवाङ्के।
सम्बोधयाऽऽशु गिरिजे विमलं प्रभातम्
जातं महेशदयिते कुरु सुप्रभातम्॥८॥

अन्तश्चरन्त्यास्तव भूषणानाम्
झल्झल्ध्वनिं नूपुरकङ्कणानाम्।
श्रुत्वा प्रभाते तव दर्शनार्थी
द्वारि स्थितोऽहं कुरु सुप्रभातम्॥९॥

वाणी पुस्तकमम्बिके गिरिसुते पद्मानि पद्मासना
रम्भा त्वम्बरडम्बरं गिरिसुता गङ्गा च गङ्गाजलम्।
काली तालयुगं मृदङ्गयुगलं बृन्दा च नन्दा तथा
नीला निर्मलदर्पण-धृतवती तासां प्रभातं शुभम्॥१०॥

उत्थाय देवि शयनाद्भगवान् पुरारिः
स्नातुं प्रयाति गिरिजे सुरलोकनद्याम्।
नैको हि गन्तुमनघे रमते दयार्द्रे
ह्युत्तिष्ठ देवि शयनात् कुरु सुप्रभातम्॥११॥

पश्याम्ब केचित्फलपुष्पहस्ताः
केचित् पुराणानि पठन्ति मातः।
पठन्ति वेदान् बहवस्तवाऽऽरे
तेषां जनानां कुरु सुप्रभातम्॥ १२॥

लावण्यशेवधिमवेक्ष्य चिरं त्वदीयम्
कन्दर्पदर्पदलनोऽपि वशं गतस्ते।
कामारि-चुम्बित-कपोलयुगं त्वदीयम्
द्रष्टुं स्थिता वयमये कुरु सुप्रभातम्॥ १३॥

गाङ्गेयतोयममवाह्य मुनीश्वरास्त्वाम्
गङ्गाजलैः स्नपयितुं बहवो घटांश्च।
धृत्वा शिरःसु भवतीमभिकाङ्क्षमाणाः
द्वारि स्थिता हि वरदे कुरु सुप्रभातम्॥ १४॥

मन्दार-कुन्द-कुसुमैरपि जातिपुष्पैः
मालाकृता विरचितानि मनोहराणि।
माल्यानि दिव्यपदयोरपि दातुमम्ब
तिष्ठन्ति देवि मुनयः कुरु सुप्रभातम्॥ १५॥

काञ्ची-कलाप-परिरम्भनितम्बबिम्बम्
काश्मीर-चन्दन-विलेपित-कण्ठदेशम्।
कामेश-चुम्बित-कपोलमुदारनासाम्
द्रष्टुं स्थिता वयमये कुरु सुप्रभातम्॥ १६॥

मन्दस्मितं विमलचारुविशालनेत्रम्
कण्ठस्थलं कमलकोमलगर्भगौरम्।
चक्राङ्कितं च युगलं पदयोर्मृगाक्षि
द्रष्टुं स्थिता वयमये कुरु सुप्रभातम्॥ १७॥

मन्दस्मितं त्रिपुरनाशकरं पुरारेः
कामेश्वरप्रणयकोपहरं स्मितं ते।
मन्दस्मितं विपुलहासमवेक्षितुं ते
मातः स्थिता वयमये कुरु सुप्रभातम्॥ १८॥

माता शिशूनां परिरक्षणार्थम्
न चैव निद्रावशमेति लोके।
माता त्रयाणां जगतां गतिस्त्वम्
सदा विनिद्रा कुरु सुप्रभातम्॥ १९॥

मातर्मुरारिकमलासनवन्दिताङ्घ्रेः
हृद्यानि दिव्यमधुराणि मनोहराणि।
श्रोतुं तवाम्ब वचनानि शुभप्रदानि
द्वारि स्थिता वयमये कुरु सुप्रभातम्॥ २०॥

दिगम्बरो ब्रह्मकपालपाणिः
विकीर्णकेशः फणिवेष्टिताङ्गः।
तथाऽपि मातस्तव देविसङ्गात्
महेश्वरोऽभूत् कुरु सुप्रभातम्॥ २१॥

अयि तु जननि दत्तस्तन्यपानेन देवि
द्रविडशिशुरभूद्वै ज्ञानसम्पन्नमूर्तिः।
द्रविडतनयभुक्तक्षीरशेषं भवानि
वितरसि यदि मातः सुप्रभातं भवेन्मे॥ २२॥

जननि तव कुमारः स्तन्यपानप्रभावात्
शिशुरपि तव भर्तुः कर्णमूले भवानि।
प्रणवपदविशेषं बोधयामास देवि
यदि मयि च कृपा ते सुप्रभातं भवेन्मे॥ २३॥

त्वं विश्वनाथस्य विशालनेत्रा
हालास्यनाथस्य नु मीननेत्रा।
एकाम्रनाथस्य नु कामनेत्रा
कामेशजाये कुरु सुप्रभातम्॥ २४॥

श्रीचन्द्रशेखरगुरुर्भगवान् शरण्ये
त्वत्पादभक्तिभरितः फलपुष्पपाणिः।
एकाम्रनाथदयिते तव दर्शनार्थी
तिष्ठत्ययं यतिवरो मम सुप्रभातम्॥ २५॥

एकाम्रनाथदयिते ननु कामपीठे
सम्पूजिताऽसि वरदे गुरुशङ्करेण।
श्रीशङ्करादिगुरुवर्य-समर्चिताङ्घ्रिम्
द्रष्टुं स्थिता वयमये कुरु सुप्रभातम्॥ २६॥

दुरितशमनदक्षौ मृत्युसन्तासदक्षौ
चरणमुपगतानां मुक्तिदौ ज्ञानदौ तौ।
अभयवरदहस्तौ द्रष्टुमम्ब स्थितोऽहम्
त्रिपुरदलनजाये सुप्रभातं ममाऽऽर्यै॥ २७॥

मातस्त्वदीयचरणं हरिपद्मजाद्यैः
वन्द्यं रथाङ्ग-सरसीरुह-शङ्खचिह्नम्।
द्रष्टुं च योगिजनमानसराजहंसम्
द्वारि स्थितोऽस्मि वरदे कुरु सुप्रभातम्॥ २८॥

पश्यन्तु केचिद्वदनं त्वदीयम्
स्तुवन्तु कल्याणगुणांस्तवान्ये।
नमन्तु पादाब्जयुगं त्वदीयाः
द्वारि स्थितानां कुरु सुप्रभातम्॥ २९॥

केचित् सुमेरोः शिखरेऽतितुङ्गे
केचिन्मणिद्वीपवरे विशाले।
पश्यन्तु केचित् त्वमृताब्धिमध्ये
पश्याम्यहं त्वामिह सुप्रभातम्॥ ३०॥

शम्भोर्वामाङ्कसंस्थां शशिनिभवदनां नीलपद्मायताक्षीम्
श्यामाङ्गां चारुहासां निबिडतरकुचां पक्वबिम्बाधरोष्ठीम्।
कामाक्षीं कामदात्रीं कुटिलकचभरां भूषणैर्भूषिताङ्गीम्
पश्यामः सुप्रभाते प्रणतजनिमतामद्य नः सुप्रभातम्॥ ३१॥

कामप्रदाकल्पतरुर्विभासि
नान्या गतिर्मे ननु चातकोऽहम्।
वर्षस्यमोघः कनकाम्बुधाराः
काश्चित्तु धारा मयि कल्पयाऽऽशु॥ ३२॥

त्रिलोचनप्रियां वन्दे वन्दे त्रिपुरसुन्दरीम्।
त्रिलोकनायिकां वन्दे सुप्रभातं ममाम्बिके॥ ३३॥

कामाक्षि देव्यम्ब तवाऽऽर्द्रदृष्ट्या
कृतं मयेदं खलु सुप्रभातम्।
सद्यः फलं मे सुखमम्ब लब्धम्
तथा च मे दुःखदशा गता हि॥ ३४॥

ये वा प्रभाते पुरतस्तवाऽऽर्यै
पठन्ति भक्त्या ननु सुप्रभातम्।
शृण्वन्ति ये वा त्वयि बद्धचित्ताः
तेषां प्रभातं कुरु सुप्रभातम्॥ ३५॥

॥ इति श्री-लक्ष्मीकान्त-शर्मा-विरचितं श्री-कामाक्षीसुप्रभातं सम्पूर्णम्॥

॥ कामाक्षी-माहात्म्यम्॥

स्वामिपुष्करिणीतीर्थं पूर्वसिन्धुः पिनाकिनी।
शिलाह्रदश्चतुर्मध्यं यावत् तुण्डीरमण्डलम्॥ १॥

मध्ये तुण्डीरभूवृत्तं कम्पा-वेगवती-द्वयोः।
तयोर्मध्यं कामकोष्ठं कामाक्षी तत्र वर्तते॥ २॥

स एव विग्रहो देव्या मूलभूतोऽद्रिराड्भुवः।
नान्योऽस्ति विग्रहो देव्याः काञ्च्यां तन्मूलविग्रहः॥ ३॥

जगत्कामकलाकारं नाभिस्थानं भुवः परम्।
पदपद्मस्य कामाक्ष्याः महापीठमुपास्महे॥ ४॥

कामकोटिः स्मृतः सोऽयं कारणादेव चिन्नभः।
यत्र कामकृतो धर्मो जन्तुना येन केन वा।
सकृद्वाऽपि सुधर्माणां फलं फलति कोटिशः॥ ५॥

यो जपेत् कामकोष्ठेऽस्मिन् मन्त्रमिष्टार्थदैवतम्।
कोटिवर्णफलेनैव मुक्तिलोकं स गच्छति॥ ६॥

यो वसेत् कामकोष्ठेऽस्मिन् क्षणार्धं वा तदर्धकम्।
मुच्यते सर्वपापेभ्यः साक्षाद्देवी नराकृतिः॥ ७॥

गायत्रीमण्डपाधारं भूनाभिस्थानमुत्तमम्।
पुरुषार्थप्रदं शम्भोर्बिलाभ्रं तं नमाम्यहम्॥ ८॥

यः कुर्यात् कामकोष्ठस्य बिलाभ्रस्य प्रदक्षिणम्।
पदसङ्ख्याक्रमेणैव गोगर्भजननं लभेत्॥ ९॥

विश्वकारणनेत्राढ्यां श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरीम्।
बन्धकासुरसंहन्त्रीं कामाक्षीं तामहं भजे॥ १०॥

पराजन्मदिने काञ्च्यां महाभ्यन्तरमार्गतः।
योऽर्चयेत् तत्र कामाक्षीं कोटिपूजाफलं लभेत्।
तत्फलोत्पन्नकैवल्यं सकृत् कामाक्षिसेवया॥ ११॥

त्रिस्थाननिलयं देवं त्रिविधाकारमच्युतम्।
प्रतिलिङ्गाग्रसंयुक्तं भूतबन्धं तमाश्रये॥१२॥

य इदं प्रातरुत्थाय स्नानकाले पठेन्नरः।
द्वादशश्लोकमात्रेण श्लोकोक्तफलमाप्नुयात्॥

॥इति श्री-कामाक्षी-विलासे त्रयोविंशोऽध्याये श्री-कामाक्षी-माहात्म्यं सम्पूर्णम्॥

॥कामाक्षी-स्तोत्रम्॥

कल्पानोकह-पुष्प-जाल-विलसन्-नीलालकां मातृकाम्
कान्तां कञ्ज-दलेक्षणां कलि-मल-प्रध्वंसिनीं कालिकाम्।
काञ्ची-नूपुर-हार-दाम-सुभगां काञ्ची-पुरी-नायिकाम्
कामाक्षीं करि-कुम्भ-सन्निभ-कुचां वन्दे महेशप्रियाम्॥१॥

काशाभांशुक-भासुरां प्रविलसत्-कोशातकी-सन्निभाम्
चन्द्रार्कानल-लोचनां सुरुचिरालङ्कार-भूषोज्ज्वलाम्।
ब्रह्म-श्रीपति-वासवादि-मुनिभिः संसेविताङ्घ्रि-द्वयाम्
कामाक्षीं गज-राज-मन्द-गमनां वन्दे महेशप्रियाम्॥२॥

ऐं क्लीं सौर्-इति यां वदन्ति मुनयस्तत्त्वार्थ-रूपां पराम्
वाचाम् आदिम-कारणं हृदि सदा ध्यायन्ति यां योगिनः।
बालां फाल-विलोचनां नव-जपा-वर्णां सुषुम्नाश्रिताम्
कामाक्षीं कलितावतंस-सुभगां वन्दे महेशप्रियाम्॥३॥

यत्पादाम्बुज-रेणु-लेशम् अनिशं लब्ध्वा विधत्ते विधिर्-
विश्वं तत् परिपाति विष्णुरखिलं यस्याः प्रसादाच्चिरम्।
रुद्रः संहरति क्षणात् तदखिलं यन्मायया मोहितः
कामाक्षीम् अति-चित्र-चारु-चरितां वन्दे महेशप्रियाम्॥ ४॥

सूक्ष्मात् सूक्ष्म-तरां सुलक्षित-तनुं क्षान्ताक्षरैर्लक्षिताम्
वीक्षा-शिक्षित-राक्षसां त्रिभुवन-क्षेमङ्करीम् अक्षयाम्।
साक्षाल्लक्षण-लक्षिताक्षर-मयीं दाक्षायणीं साक्षिणीम्
कामाक्षीं शुभलक्षणैः सुललितां वन्दे महेशप्रियाम्॥ ५॥

ओङ्काराङ्गण-दीपिकाम् उपनिषत्-प्रासाद-पारावतीम्
आम्नायाम्बुधि-चन्द्रिकाम् अघ-तमः-प्रध्वंस-हंस-प्रभाम्।
काञ्ची-पट्टण-पञ्जरान्तर-शुकीं कारुण्य-कल्लोलिनीम्
कामाक्षीं शिव-कामराज-महिषीं वन्दे महेशप्रियाम्॥ ६॥

ह्रीङ्कारात्मक-वर्ण-मात्र-पठनादैन्द्रीं श्रियं तन्वतीम्
चिन्मात्रां भुवनेश्वरीम् अनुदिनं भिक्षा-प्रदान-क्षमाम्।
विश्वाघौघ-निवारिणीं विमलिनीं विश्वम्भरां मातृकाम्
कामाक्षीं परिपूर्ण-चन्द्र-वदनां वन्दे महेशप्रियाम्॥ ७॥

वाग्-देवीति च यां वदन्ति मुनयः क्षीराब्धि-कन्येति च
क्षोणी-भृत्-तनयेति च श्रुति-गिरो याम् आमनन्ति स्फुटम्।
एकानेक-फल-प्रदां बहु-विधाऽऽकारास्तनूस्तन्वतीम्
कामाक्षीं सकलार्ति-भञ्जन-परां वन्दे महेशप्रियाम्॥ ८॥

मायाम् आदिम-कारणं त्रिजगताम् आराधिताङ्घ्रि-द्वयाम्
आनन्दामृत-वारि-राशि-निलयां विद्यां विपश्चिद्धियाम्।
माया-मानुष-रूपिणीं मणि-लसन्मध्यां महामातृकाम्
कामाक्षीं करिराज-मन्दगमनां वन्दे महेशप्रियाम्॥ ९॥

कान्ता काम-दुघा करीन्द्र-गमना कामारि-वामाङ्क-गा
कल्याणी कलितावतार-सुभगा कस्तूरिका-चर्चिता।
कम्पा-तीर-रसाल-मूल-निलया कारुण्य-कल्लोलिनी
कल्याणानि करोतु मे भगवती काञ्ची-पुरी-देवता॥ १०॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-कामाक्षीस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ मीनाक्षीपञ्चरत्नम्॥

उद्यद्भानु-सहस्रकोटिसदृशां केयूरहारोज्ज्वलाम्
बिम्बोष्ठीं स्मितदन्तपङ्क्तिरुचिरां पीताम्बरालङ्कृताम्।
विष्णुब्रह्मसुरेन्द्रसेवितपदां तत्त्वस्वरूपां शिवाम्
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सन्ततमहं कारुण्यवारान्निधिम्॥ १॥

मुक्ताहारलसत्किरीटरुचिरां पूर्णेन्दुवक्त्रप्रभाम्
शिञ्जन्नूपुरकिङ्किणीमणिधरां पद्मप्रभाभासुराम्।
सर्वाभीष्टफलप्रदां गिरिसुतां वाणीरमासेविताम्
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सन्ततमहं कारुण्यवारान्निधिम्॥ २॥

श्रीविद्यां शिववामभागनिलयां ह्रीङ्कारमन्त्रोज्ज्वलाम्
श्रीचक्राङ्कित-बिन्दुमध्यवसतीं श्रीमत्सभानायकीम्।
श्रीमत्षण्मुखविघ्नराजजननीं श्रीमज्जगन्मोहिनीम्
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सन्ततमहं कारुण्यवारान्निधिम्॥ ३॥

श्रीमत्सुन्दरनायकीं भयहरां ज्ञानप्रदां निर्मलाम्
श्यामाभां कमलासनार्चितपदां नारायणस्यानुजाम्।
वीणावेणुमृदङ्गवाद्यरसिकां नानाविधाडाम्बिकाम्
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सन्ततमहं कारुण्यवारान्निधिम्॥ ४॥

नानायोगिमुनीन्द्रहृन्निवसतीं नानार्थसिद्धिप्रदाम्
नानापुष्पविराजिताङ्घ्रियुगलां नारायणेनार्चिताम्।
नादब्रह्ममयीं परात्परतरां नानार्थतत्त्वात्मिकाम्
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सन्ततमहं कारुण्यवारान्निधिम्॥ ५॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-मीनाक्षीपञ्चरत्नं सम्पूर्णम्॥

॥ ललितापञ्चरत्नम्॥

प्रातः स्मरामि ललितावदनारविन्दम्
बिम्बाधरं पृथुलमौक्तिकशोभिनासम्।
आकर्णदीर्घनयनं मणिकुण्डलाढ्यम्
मन्दस्मितं मृगमदोज्ज्वलभालदेशम्॥ १॥

प्रातर्भजामि ललिताभुजकल्पवल्लीम्
रत्नाङ्गुलीयलसदङ्गुलिपल्लवाढ्याम्।
माणिक्यहेमवलयाङ्गदशोभमानाम्
पुण्ड्रेक्षुचापकुसुमेषुसृणीर्दधानाम् ॥२॥

प्रातर्नमामि ललिताचरणारविन्दम्
भक्तेष्टदाननिरतं भवसिन्धुपोतम्।
पद्मासनादिसुरनायकपूजनीयम्
पद्माङ्कुशध्वजसुदर्शनलाञ्छनाढ्यम्॥३॥

प्रातः स्तुवे परशिवां ललितां भवानीम्
त्रय्यन्तवेद्यविभवां करुणानवद्याम्।
विश्वस्य सृष्टिविलयस्थितिहेतुभूताम्
विश्वेश्वरीं निगमवाङ्मनसातिदूराम्॥४॥

प्रातर्वदामि ललिते तव पुण्यनाम
कामेश्वरीति कमलेति महेश्वरीति।
श्रीशाम्भवीति जगतां जननी परेति
वाग्देवतेति वचसा त्रिपुरेश्वरीति॥५॥

यः श्लोकपञ्चकमिदं ललिताम्बिकायाः
सौभाग्यदं सुललितं पठति प्रभाते।
तस्मै ददाति ललिता झटिति प्रसन्ना
विद्यां श्रियं विमलसौख्यमनन्तकीर्तिम्॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-ललितापञ्चरत्नं सम्पूर्णम्॥

॥ मूकसारः ॥

॥ १-आर्याशतके ॥

[कारण-पर-चिद्रूपा काञ्चीपुर-सीम्नि कामपीठगता ।
काचन विहरति करुणा काश्मीर-स्तबक-कोमलाङ्गलता] ॥ १ ॥१-१

कुण्डलि कुमारि कुटिले चण्डि चराचर-सवित्रि चामुण्डे ।
गुणिनि गुहारिणि गुह्ये गुरुमूर्ते त्वां नमामि कामाक्षि ॥ २ ॥१-४६

अभिदाकृतिर्भिदाकृतिरचिदाकृतिरपि चिदाकृतिर्मातः ।
अनहन्ता त्वमहन्ता भ्रमयसि कामाक्षि शाश्वती विश्वम् ॥ ३ ॥१-४७

काम-परिपन्थि-कामिनि कामेश्वरि काम-पीठ-मध्य-गते ।
काम-दुघा भव कमले काम-कले कामकोटि कामाक्षि ॥ ४ ॥१-४८

लीये पुर-हर-जाये माये तव तरुण-पल्लव-च्छाये ।
चरणे चन्द्रा-भरणे काञ्ची-शरणे नतार्ति-संहरणे ॥ ५ ॥१-७२

स्मर-मथन-वरण-लोला मन्मथ-हेला-विलास-मणि-शाला ।
कनक-रुचि-चौर्य-शीला त्वमम्ब बाला कराब्ज-धृत-माला ॥ ६ ॥१-७३

अन्तरपि बहिरपि त्वं जन्तुततेरन्तकान्तकृदहन्ते ।
चिन्तितसन्तानवतां सन्ततमपि तन्तनीषि महिमानम् ॥ ७ ॥१-९८

[जय जय जगदम्ब शिवे
जय जय कामाक्षि जय जयाद्रिसुते ।
जय जय महेशदयिते
जय जय चिद्गगनकौमुदीधारे] ॥ ८ ॥१-१००

॥ २-पादारविन्दशतके ॥

जपालक्ष्मीशोणो जनितपरमज्ञाननलिनी-
विकासव्यासङ्गो विफलितजगज्जाड्यगरिमा ।
मनःपूर्वाद्रिं मे तिलकयतु कामाक्षि तरसा
तमस्काण्डद्रोही तव चरणपाथोजरमणः ॥ ९ ॥२-१७

गिरां दूरौ चोरौ जडिमतिमिराणां कृतजगत्
परित्राणौ शोणौ मुनिहृदयलीलैकनिपुणौ ।
नखैः स्मेरौ सारौ निगमवचसां खण्डितभव-
ग्रहोन्मादौ पादौ तव जननि कामाक्षि कलये ॥ १० ॥२-४४

भवाम्भोधौ नौकां जडिमविपिने पावकशिखाम्
अमर्त्येन्द्रादीनामधिमुकुटमुत्तंसकलिकाम् ।
जगत्तापे ज्योत्स्नामकृतकवचःपञ्जरपुटे
शुकस्त्रीं कामाक्ष्या मनसि कलये पादयुगलीम् ॥ ११ ॥२-४९

कवित्वश्रीमिश्रीकरणनिपुणौ रक्षणचणौ
विपन्नानां श्रीमन्नलिनमसृणौ शोणकिरणौ ।
मुनीन्द्राणामन्तःकरणशरणौ मन्दसरणौ
मनोज्ञौ कामाक्ष्या दुरितहरणौ नौमि चरणौ ॥ १२ ॥२-७३

परस्मात्सर्वस्मादपि च परयोर्मुक्तिकरयोः
नखश्रीभिर्ज्योत्स्नाकलिततुलयोस्ताम्रतलयोः ।
निलीये कामाक्ष्या निगमनुतयोर्नाकिनतयोः
निरस्तप्रोन्मीलन्नलिनमदयोरेव पदयोः ॥ १३ ॥२-७४

रणन्मञ्जीराभ्यां ललितगमनाभ्यां सुकृतिनाम्
मनोवास्तव्याभ्यां मथिततिमिराभ्यां नखरुचा।
निधेयाभ्यां पत्या निजशिरसि कामाक्षि सततम्
नमस्ते पादाभ्यां नलिनमृदुलाभ्यां गिरिसुते॥१४॥२-९६

यशः सूते मातर्मधुरकवितां पक्ष्मलयते
श्रियं दत्ते चित्ते कमपि परिपाकं प्रथयते।
सतां पाशग्रन्थिं शिथिलयति किं किं न कुरुते
प्रपन्ने कामाक्ष्याः प्रणतिपरिपाटी चरणयोः॥१५॥२-९९

मनीषां माहेन्द्रीं ककुभमिव ते कामपि दशाम्
प्रधत्ते कामाक्ष्याश्चरणतरुणादित्यकिरणः।
यदीये सम्पर्के धृतरसमरन्दा कवयताम्
परीपाकं धत्ते परिमलवती सूक्तिनलिनी॥१६॥२-१००

॥३-स्तुतिशतके॥

राकाचन्द्रसमानकान्तिवदना नाकाधिराजस्तुता
मूकानामपि कुर्वती सुरधुनीनीकाशवाग्वैभवम्।
श्रीकाञ्चीनगरीविहाररसिका शोकापहन्त्री सताम्
एका पुण्यपरम्परा पशुपतेराकारिणी राजते॥१७॥३-११

जाता शीतल-शैलतः सुकृतिनां दृश्या परं देहिनां
लोकानां क्षण-मात्र-संस्मरणतः सन्ताप-विच्छेदिनी।
आश्चर्यं बहु खेलनं वितनुते नैश्चल्य-माबिभ्रती
कम्पायास्तट-सीम्नि काऽपि तटिनी कारुण्य-पाथोमयी॥१८॥३-१२

वरीवर्तु स्थेमा त्वयि मम गिरां देवि मनसो
नरीनर्तु प्रौढा वदनकमले वाक्यलहरी।
चरीचर्तु प्रज्ञाजननि जडिमानः परजने
सरीसर्तु स्वैरं जननि मयि कामाक्षि करुणा ॥१९॥३-४८

परा विद्या हृद्याश्रितमदनविद्या मरकत-
प्रभानीला लीलापरवशितशूलायुधमनाः।
तमःपूरं दूरं चरणनतपौरन्दरपुरी-
मृगाक्षी कामाक्षी कमलतरलाक्षी नयतु मे ॥२०॥३-५६

यस्या वाटी हृदयकमलं कौसुमी योगभाजाम्
यस्याः पीठी सततशिशिरा शीकरैर्माकरन्दैः।
यस्याः पेटी श्रुतिपरिचलन्मौलिरत्नस्य काञ्ची
सा मे सोमाभरणमहिषी साधयेत्काङ्क्षितानि ॥२१॥३-७७

परामृतझरीप्लुता जयति नित्यमन्तश्चरी
भुवामपि बहिश्चरी परमसंविदेकात्मिका।
महद्भिरपरोक्षिता सततमेव काञ्चीपुरे
ममान्वहमहम्मतिर्मनसि भातु माहेश्वरी ॥२२॥३-९०

चराचरजगन्मयीं सकलहृन्मयीं चिन्मयीम्
गुणत्रयमयीं जगत्त्रयमयीं त्रिधामामयीम्।
परापरमयीं सदा दशदिशां निशाहर्मयीम्
परां सततसन्मयीं मनसि चिन्मयीं शीलये ॥२३॥३-९७

भुवनजननि भूषाभूतचन्द्रे नमस्ते
कलुषशमनि कम्पातीरगेहे नमस्ते।
निखिलनिगमवेद्ये नित्यरूपे नमस्ते
परशिवमयि पाशच्छेदहस्ते नमस्ते ॥२४॥३-९९

समरविजयकोटी साधकानन्दधाटी
मृदुगुणपरिपेटी मुख्यकादम्बवाटी।
मुनिनुतपरिपाटी मोहिताजाण्डकोटी
परमशिववधूटी पातु मां कामकोटी ॥२५॥३-१०१

॥४-कटाक्षशतके॥

मातर्जयन्ति ममता-ग्रह-मोक्षणानि
माहेन्द्र-नील-रुचि-शिक्षण-दक्षिणानि।
कामाक्षि कल्पित-जगत्त्रय-रक्षणानि
त्वद्वीक्षणानि वरदान-विचक्षणानि ॥२६॥४-२

नीलोऽपि रागमधिकं जनयन्पुरारेः
लोलोऽपि भक्तिमधिकां दृढयन्नराणाम्।
वक्रोऽपि देवि नमतां समतां वितन्वन्
कामाक्षि नृत्यतु मयि त्वदपाङ्गपातः ॥२७॥४-१६

अत्यन्त-शीतलमतन्द्रयतु क्षणार्धम्
अस्तोक-विभ्रममनङ्गविलासकन्दम्।
अल्प-स्मितादृतमपारकृपाप्रवाहम्
अक्षि-प्ररोहमचिरान्मयि कामकोटि ॥२८॥४-२४

मातः क्षणं स्नपय मां तव वीक्षितेन
मन्दाक्षितेन सुजनैरपरोक्षितेन।
कामाक्षि कर्म-तिमिरोत्कर-भास्करेण
श्रेयस्करेण मधुप-द्युति-तस्करेण ॥२९॥४-४५

कैवल्यदाय करुणारसकिङ्कराय
कामाक्षि कन्दलितविभ्रमशङ्कराय।
आलोकनाय तव भक्तशिवङ्कराय
मातर्नमोऽस्तु परतन्त्रितशङ्कराय॥३०॥४-४७

संसारघर्मपरितापजुषां नराणाम्
कामाक्षि शीतलतराणि तवेक्षितानि।
चन्द्रातपन्ति घनचन्दनकर्दमन्ति
मुक्तागुणन्ति हिमवारिनिषेचनन्ति॥३१॥४-७७

बाणेन पुष्पधनुषः परिकल्प्यमान-
त्राणेन भक्तमनसां करुणाकरेण।
कोणेन कोमलदृशस्तव कामकोटि
शोणेन शोषय शिवे मम शोकसिन्धुम्॥३२॥४-१४

अज्ञातभक्तिरसमप्रसरद्विवेकम्
अत्यन्तगर्वमनधीतसमस्तशास्त्रम्।
अप्राप्तसत्यमसमीपगतं च मुक्तेः
कामाक्षि मामवतु ते करुणाकटाक्षः॥३३॥४-१००

॥५-मन्दस्मितशतके॥

कर्पूरैरमृतैर्जगज्जननि ते कामाक्षि चन्द्रातपैः
मुक्ताहारगुणैर्मृणालवलयैर्मुग्धस्मितश्रीरियम्।
श्रीकाञ्चीपुरनायिके समतया संस्तूयते सज्जनैः
तत्तादृङ्मम तापशान्तिविधये किं देवि मन्दायते॥३४॥५-२४

चेतः शीतलयन्तु नः पशुपतेरानन्दजीवातवो
नम्राणां नयनाध्वसीमसु शरच्चन्द्रातपोपक्रमाः।
संसाराख्यसरोरुहाकरखलीकारे तुषारोत्कराः
कामाक्षि स्मरकीर्तिबीजनिकरास्त्वन्मन्दहासाङ्कुराः॥३५॥५-३१

सूतिः श्वेतिमकन्दलस्य वसतिः शृङ्गारसारश्रियः
पूर्तिः सूक्तिझरीरसस्य लहरी कारुण्यपाथोनिधेः।
वाटी काचन कौसुमी मधुरिमस्वाराज्यलक्ष्म्यास्तव
श्रीकामाक्षि ममास्तु मङ्गलकरी हासप्रभाचातुरी॥३६॥५-८५

इन्धाने भववीतिहोत्रनिवहे कर्मौघचण्डानिल-
प्रौढिम्ना बहुलीकृते निपतितं सन्तापचिन्ताकुलम्।
मातर्मां परिषिञ्च किञ्चिदमलैः पीयूषवर्षैरिव
श्रीकामाक्षि तव स्मितद्युतिकणैः शैशिर्यलीलाकरैः॥३७॥५-१४

क्रीडालोलकृपासरोरुहमुखीसौधाङ्गणेभ्यः कवि-
श्रेणीवाक्परिपाटिकामृतझरीसूतीगृहेभ्यः शिवे।
निर्वाणाङ्कुरसार्वभौमपदवीसिंहासनेभ्यस्तव
श्रीकामाक्षि मनोज्ञमन्दहसितज्योतिष्कणेभ्यो नमः॥३८॥५-१००

आर्यामेव विभावयन् मनसि यः पादारविन्दं पुरः
पश्यन्नारभते स्तुतिं स नियतं लब्ध्वा कटाक्ष-च्छविम्।
कामाक्ष्या मृदुल-स्मितांशु-लहरी-ज्योत्स्ना-वयस्यान्विताम्
आरोहत्यपवर्ग-सौध-वलभीमानन्द-वीची-मयीम् ॥३९॥५-१०१

॥इति श्री-काञ्चीजगद्गुरु-श्री-चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती-श्रीचरणैः श्री-मूकमहाकविप्रणीतायाः मूकपञ्चशत्याः सङ्ग्रहीतं मूकसारः सम्पूर्णः॥

❀❀❀

॥ गौरीदशकम् ॥

लीलारब्धस्थापितलुप्ताखिललोकां
लोकातीतैर्योगिभिरन्तश्चिरमृग्याम्।
बालादित्यश्रेणिसमानद्युतिपुञ्जां
गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे ॥ १ ॥

प्रत्याहारध्यानसमाधिस्थितिभाजां
नित्यं चित्ते निर्वृतिकाष्ठां कलयन्तीम्।
सत्यज्ञानानन्दमयीं तां तनुरूपां
गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे ॥ २ ॥

चन्द्रापीडानन्दितमन्दस्मितवक्त्रां
चन्द्रापीडालङ्कृतनीलालकभाराम्।
इन्द्रोपेन्द्राद्यर्चितपादाम्बुजयुग्मां
गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे ॥ ३ ॥

आदिक्षान्तामक्षरमूर्त्या विलसन्तीं
भूते भूते भूतकदम्बप्रसवित्रीम्।
शब्दब्रह्मानन्दमयीं तां तडिदाभां
गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे ॥ ४ ॥

मूलाधारादुत्थितवीथ्या विधिरन्ध्रं
सौरं चान्द्रं व्याप्य विहारज्वलिताङ्गीम्।
येयं सूक्ष्मात् सूक्ष्मतनुस्तां सुखरूपां
गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे ॥ ५ ॥

नित्यः शुद्धो निष्कल एको जगदीशः
साक्षी यस्याः सर्गविधौ संहरणे च।
विश्वत्राणक्रीडनलोलां शिवपत्नीं
गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे ॥६॥

यस्याः कुक्षौ लीनमखण्डं जगदण्डं
भूयो भूयः प्रादुरभूदुत्थितमेव।
पत्या सार्धं तां रजताद्रौ विहरन्तीं
गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे॥७॥

यस्यामोतं प्रोतमशेषं मणिमाला
सूत्रे यद्वत् क्वापि चरं चाप्यचरं च।
तामध्यात्मज्ञानपदव्या गमनीयां
गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे ॥८॥

नानाकारैः शक्तिकदम्बैर्भुवनानि
व्याप्य स्वैरं क्रीडति येयं स्वयमेका।
कल्याणीं तां कल्पलतामानतिभाजां
गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे ॥९॥

आशापाशक्लेशविनाशं विदधानां
पादाम्भोजध्यानपराणां पुरुषाणाम्।
ईशामीशार्धाङ्गहरां तामभिरामां
गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे ॥१०॥

प्रातःकाले भावविशुद्धः प्रणिधानाद्
भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः।
वाचां सिद्धिं सम्पदमग्र्यां शिवभक्तिं
तस्यावश्यं पर्वतपुत्री विदधाति॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-गौरीदशकं सम्पूर्णम्॥

॥कल्याणवृष्टिस्तोत्रम्॥

कल्याणवृष्टिभिरिवामृतपूरिताभिर्-
लक्ष्मीस्वयंवरणमङ्गलदीपिकाभिः ।
सेवाभिरम्ब तव पादसरोजमूले
नाकारि किं मनसि भक्तिमतां जनानाम्॥ १॥

एतावदेव जननि स्पृहणीयमास्ते
त्वद्वन्दनेषु सलिलस्थगिते च नेत्रे।
सान्निध्यमुद्यदरुणायुतसोदरस्य
त्वद्विग्रहस्य परया सुधया प्लुतस्य॥ २॥

ईशित्वभावकलुषाः कति नाम सन्ति
ब्रह्मादयः प्रतियुगं प्रलयाभिभूताः।
एकः स एव जननि स्थिरसिद्धिरास्ते
यः पादयोस्तव सकृत्प्रणतिं करोति॥ ३॥

लब्ध्वा सकृत् त्रिपुरसुन्दरि तावकीनम्
कारुण्यकन्दलितकान्तिभरं कटाक्षम्।
कन्दर्पकोटिसुभगास्त्वयि भक्तिभाजः
सम्मोहयन्ति तरुणीर्भुवनत्रयेषु॥४॥

ह्रीङ्कारमेव तव नाम गृणन्ति वेदा
मातस्त्रिकोणनिलये त्रिपुरे त्रिनेत्रे।
त्वत्संस्मृतौ यमभटादिभयं विहाय
दीव्यन्ति नन्दनवने सह लोकपालैः॥५॥

हन्तुः पुरामधिगलं परिपूर्यमाणः
क्रूरः कथं न भविता गरलस्य वेगः।
आश्वासनाय किल मातरिदं तवार्धम्
देहस्य शश्वदमृताप्लुतशीतलस्य॥६॥

सर्वज्ञतां सदसि वाक्पटुतां प्रसूते
देवि त्वदङ्घ्रिसरसीरुहयोः प्रणामः।
किं च स्फुरन्मकुटमुज्ज्वलमातपत्रं
द्वे चामरे च वसुधां महतीं ददाति॥७॥

कल्पद्रुमैरभिमतप्रतिपादनेषु
कारुण्यवारिधिभिरम्ब भवत्कटाक्षैः।
आलोकय त्रिपुरसुन्दरि मामनाथम्
त्वय्येव भक्तिभरितं त्वयि दत्तदृष्टिम्॥८॥

हन्तेतरेष्वपि मनांसि निधाय चान्ये
भक्तिं वहन्ति किल पामरदैवतेषु।
त्वामेव देवि मनसा वचसा स्मरामि
त्वामेव नौमि शरणं जगति त्वमेव॥९॥

लक्ष्येषु सत्स्वपि तवाक्षिविलोकनानाम्
आलोकय त्रिपुरसुन्दरि मां कथञ्चित्।
नूनं मयाऽपि सदृशं करुणैकपात्रम्
जातो जनिष्यति जनो न च जायते च॥१०॥

ह्रीं ह्रीमिति प्रतिदिनं जपतां जनानाम्
किं नाम दुर्लभमिह त्रिपुराधिवासे।
मालाकिरीटमदवारणमाननीयान्स्-
तान्सेवते वसुमती स्वयमेव लक्ष्मीः॥११॥

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
साम्राज्यदानकुशलानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरितौघहरोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यम्॥१२॥

कल्पोपसंहरण-कल्पित-ताण्डवस्य
देवस्य खण्डपरशोः परमेश्वरस्य।
पाशाङ्कुशैक्षव-शरासन-पुष्पबाणा
सा साक्षिणी विजयते तव मूर्तिरेका॥१३॥

लग्नं सदा भवतु मातरिदं तवार्धम्
तेजः परं बहुल-कुङ्कुम-पङ्क-शोणम्।
भास्वत्किरीटममृतांशुकलावतंसम्
मध्ये त्रिकोणमुदितं परमामृतार्द्रम्॥ १४॥

ह्रीङ्कारमेव तव नाम तदेव रूपम्
त्वन्नाम सुन्दरि सरोजनिवासमूले।
त्वत्तेजसा परिणतं वियदादि भूतम्
सौख्यं तनोति सरसीरुहसम्भवादेः॥ १५॥

ह्रीङ्कारत्रयसम्पुटेन महता मन्त्रेण सन्दीपितम्
स्तोत्रं यः प्रतिवासरं तव पुरो मातर्जपेन्मन्त्रवित्।
तस्य क्षोणिभुजो भवन्ति वशगा लक्ष्मीश्चिरस्थायिनी
वाणी निर्मलसूक्तिभारभरिता जागर्ति दीर्घं वयः॥ १६॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-कल्याणवृष्टिस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ श्यामलादण्डकम्॥

॥ ध्यानम्॥

माणिक्यवीणामुपलालयन्तीम्
मदालसां मञ्जुलवाग्विलासाम्।
माहेन्द्रनीलद्युतिकोमलाङ्गीम्
मातङ्गकन्यां मनसा स्मरामि॥ १॥

चतुर्भुजे चन्द्रकलावतंसे कुचोन्नते कुङ्कुमरागशोणे।
पुण्ड्रेक्षुपाशाङ्कुशपुष्पबाणहस्ते नमस्ते जगदेकमातः॥२॥

॥ विनियोगः ॥

माता मरकतश्यामा मातङ्गी मदशालिनी।
कुर्यात् कटाक्षं कल्याणी कदम्बवनवासिनी॥

॥ स्तुतिः ॥

जय मातङ्गतनये जय नीलोत्पलद्युते।
जय सङ्गीतरसिके जय लीलाशुकप्रिये॥

॥ दण्डकम् ॥

जय जननि सुधासमुद्रान्-तरुद्यन्-मणिद्वीप-संरूढ-बिल्वाटवी-मध्य-कल्प-द्रुमाकल्प-कादम्ब-कान्तार-वासप्रिये कृत्तिवासप्रिये सर्वलोकप्रिये' सादरारब्ध-सङ्गीत-सम्भावना-सम्भ्रमालोल-नीपस्रगाबद्ध-चूलीसनाथत्रिके सानुमत्पुत्रिके' शेखरीभूत-शीतांशुरेखा-मयूखावली-बद्ध-सुस्निग्ध-नीलालकश्रेणि- शृङ्गारिते लोकसम्भाविते' कामलीला-धनुः सन्निभ-भ्रूलता-पुष्प- सन्दोह-सन्देह-कृल्लोचने वाक्सुधासेचने' चारुगोरोचनापङ्क-केलीलला-माभिरामे सुरामे रमे' प्रोल्लसद्ध्-वालिका-मौक्तिकश्रेणिका-चन्द्रिका-मण्डलोद्भासि-गण्डस्थलन्यस्त-कस्तूरिका-पत्ररेखा-समुद्भूत-सौरभ्य-सम्भ्रान्त-भृङ्गाङ्गनागीत-सान्द्रीभवन्-मन्द्रतन्त्रीस्वरे सुस्वरे भास्वरे' वल्लकी-वादन-प्रक्रिया-लोल-तालीदलाबद्ध-ताटङ्क-भूषाविशेषान्विते सिद्ध-सम्मानिते' दिव्यहालाम-दोद्वेलहेलाल-सच्चक्षुरान्दोलन-श्रीसमाक्षिप्त-कर्णैक-नीलोत्पले श्यामले पूरिताशेष-लोकाभि-

वाञ्छाफले श्रीफले’ स्वेद-बिन्दूल्लसद्-भाल-लावण्य-निष्यन्द-सन्दोह-सन्देह-कृन्नासिका-मौक्तिके सर्वमन्त्रात्मिके कालिके’ मुग्ध-मन्दस्मितो-दारवक्त्रस्फुरत्-पूग-कर्पूर-ताम्बूल-खण्डोत्करे ज्ञानमुद्राकरे सर्वसम्पत्करे पद्मभास्वत्करे श्रीकरे’ कुन्द-पुष्पद्युतिस्निग्ध-दन्तावली-निर्मलालोल-कल्लोल-सम्मेल-नस्मेरशोणाधरे चारुवीणाधरे पक्वबिम्बाधरे’ सुललित-नवयौवनारम्भ-चन्द्रोदयोद्वेल-लावण्य-दुग्धार्णवाविर्भवत्कम्बु-बिम्बोक-भृत्कन्थरे सत्कला-मन्दिरे मन्थरे’ दिव्य-रत्नप्रभा-बन्धुरच्छन्न-हारादि-भूषा-समुद्योतमाना- नवद्याङ्गशोभे शुभे’ रत्न-केयूर-रश्मिच्छटा-पल्लव-प्रोल्लसद्-दोल्लता-राजिते योगिभिः पूजिते’ विश्व-दिङ्मण्डलव्याप्त-माणिक्य-तेजः स्फुरत्-कङ्कणालङ्कृते विभ्रमालङ्कृते साधुभिः सत्कृते’ वासरारम्भ-वेला-समुज्जृम्भ-माणारविन्द-प्रतिद्वन्द्वि-पाणिद्वये सन्ततोद्यद्दये अद्वये’ दिव्य-रत्नोर्मिका-दीधिति-स्तोम-सन्ध्यायमा-नाङ्गुली-पल्लवोद्यन्न-खेन्दु-प्रभा-मण्डले सन्नुताखण्डले चित्प्रभामण्डले प्रोल्लसत्कुण्डले’ तारकाराजि-नीकाश-हारावलिस्मेर-चारुस्तना-भोगभारानमन्मध्य-वल्लीवलिच्छेद-वीची-समुद्यत्-समुल्लास-सन्दर्शिताकार-सौन्दर्य-रत्नाकरे वल्लकी-भृत्करे किङ्कर-श्रीकरे’ हेम-कुम्भोप-मोत्तुङ्ग-वक्षोजभारावनम्रे त्रिलोकावनम्रे’ लसद्वृत्त-गम्भीर-नाभी-सरस्तीर-शैवाल-शङ्काकर-श्यामरोमावली-भूषणे मञ्जुसम्भाषणे’ चारुशिञ्चत्कटीसूत्र-निर्भर्त्सितानङ्ग-लीला-धनुश्शिञ्चिनी-डम्बरे दिव्यरत्नाम्बरे’ पद्मरागोल्लसन्-मेखला-भास्वर-श्रोणि-शोभाजित-स्वर्ण-भूभृत्तले चन्द्रिका-शीतले’ विकसित-नवकिंशुकाताम्र-दिव्यांशु-कच्छन्न-चारूरु-शोभा-पराभूत-सिन्दूर-शोणाय-मानेन्द्र-मातङ्ग-हस्तार्गले वैभवानर्गले श्यामले’ कोमलस्निग्ध-नीलोत्पलोत्-पादितानङ्ग-तूणीर-शङ्काकरोदाम-जङ्घालते चारुलीलागते’

नम्र-दिक्पाल-सीमन्तिनि कुन्तलस्निग्ध-नीलप्रभा-पुञ्जसञ्जात-दूर्वाङ्कु-राशङ्क-सारङ्ग-संयोग-रिङ्खन्न-खेन्दूज्ज्वले प्रोज्ज्वले निर्मले' प्रह्वदेवेश-लक्ष्मीश-भूतेश-तोयेश-वागीश-कीनाश-दैत्येश-यक्षेश-वाय्वग्नि-माणिक्य-संहृष्ट-कोटीर-बाला-तपोद्दामलाक्षा-रसारुण्य-तारुण्य-लक्ष्मी-गृहीताङ्घ्रि-पद्मे सुपद्मे उमे' सुरुचिर-नवरत्न-पीठस्थिते सुस्थिते रत्नपद्मासने रत्नसिंहासने शङ्खपद्मद्वयोपाश्रिते विश्रिते तत्र विघ्नेश-दुर्गावटु-क्षेत्रपालैर्युते मत्तमातङ्ग-कन्या-समूहान्विते' मञ्जुलामेनकाद्यङ्गनामानिते भैरवैरष्टभिर्वेष्टिते देवि वामादिभिः शक्तिभिः सेविते धात्रि-लक्ष्म्यादि-शक्त्यष्टकैः संयुते मातृकामण्डलैर्मण्डिते' यक्ष-गन्धर्व-सिद्धाङ्गना-मण्डलैरर्चिते पञ्चबाणात्मिके पञ्चबाणेन रत्या च सम्भाविते प्रीतिभाजा वसन्तेन चानन्दिते' भक्तिभाजां परं श्रेयसे कल्पसे' योगिनां मानसे द्योतसे' छन्दसामोजसा भ्राजसे' गीत-विद्या-विनोदादि तृष्णेन कृष्णेन सम्पूज्यसे भक्तिमच्चेतसा वेधसा स्तूयसे विश्वहृद्येन वाद्येन विद्याधरैर्गीयसे' श्रवणहरदक्षिणक्वाणया वीणया किन्नरैर्गीयसे यक्षगन्धर्व-सिद्धाङ्गना-मण्डलैरर्च्यसे' सर्वसौभाग्य-वाञ्छावतीभिर्वधूभिः सुराणां समाराध्यसे सर्वविद्याविशेषात्मकं चाटुगाथा-समुच्चारणं कण्ठ-मूलोल्ल-सद्वर्णराजित्रयं कोमलश्यामलो-दारपक्षद्वयं तुण्डशोभाति-धूरीभवत् किंशुकाभं तं शुकं लालयन्ती परिक्रीडसे' पाणिपद्मद्वयेना-क्षमालामपि स्फाटिकीं ज्ञानसारात्मकं पुस्तकं चापरेणाङ्कुशं पाशमाबिभ्रति येन सञ्चिन्त्यसे चेतसा तस्य वक्त्रान्तरात् गद्यपद्यात्मिका भारती निःसरेत्' येन वा यावका भाकृतिर्भाव्यसे तस्य वश्या भवन्ति स्त्रियः पूरुषाः' येन वा शातकुम्भद्युतिर्भाव्यसे' सोऽपि लक्ष्मीसहस्रैः परिक्रीडते' किं न सिद्ध्येद्वपुः श्यामलं कोमलं चन्द्र-चूडान्वितं तावकं ध्यायतः' तस्य लीला सरोवारिधिः' तस्य केलीवनं नन्दनं' तस्य भद्रासनं भूतलं' तस्य

गीर्देवता किङ्करी' तस्य चाऽऽज्ञाकरी श्री-स्वयम्' सर्वतीर्थात्मिके सर्वमन्त्रात्मिके सर्वतन्त्रात्मिके सर्वयन्त्रात्मिके' सर्वपीठात्मिके सर्वसत्त्वात्मिके सर्वशक्त्यात्मिके' सर्वविद्यात्मिके सर्वयोगात्मिके सर्वरागात्मिके' सर्वशब्दात्मिके सर्ववर्णात्मिके सर्वविश्वात्मिके सर्वगे' हे जगन्मातृके' पाहि मां पाहि मां पाहि माम्' देवि तुभ्यं नमो देवि तुभ्यं नमो देवि तुभ्यं नमः॥

॥इति महाकवि कालिदासविरचितं श्री-श्यामलादण्डकं सम्पूर्णम्॥

॥महिषासुरमर्दिनि स्तोत्रम्॥

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दिनुते
गिरिवर-विन्ध्य-शिरोधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूरिकृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१॥

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवनपोषिणि शङ्करतोषिणि किल्बिषमोषिणि घोषरते।
दनुज-निरोषिणि दितिसुत-रोषिणि दुर्मद-शोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥२॥

अयि जगदम्ब-मदम्ब-कदम्ब-वनप्रिय-वासिनि हासरते
शिखरि शिरोमणि तुङ्ग-हिमालय-शृङ्ग-निजालय-मध्यगते।
मधु-मधुरे मधु-कैटभ-गञ्जिनि कैटभ-भञ्जिनि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥३॥

अयि शतखण्ड-विखण्डित-रुण्ड-वितुण्डित-शुण्ड-गजाधिपते
रिपु-गज-गण्ड-विदारण-चण्ड-पराक्रम-शुण्ड-मृगाधिपते।
निज-भुज-दण्ड-निपातित-खण्ड-विपातित-मुण्ड-भटाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥४॥

अयि रण-दुर्मद-शत्रु-वधोदित-दुर्धर-निर्जर-शक्तिभृते
चतुर-विचार-धुरीण-महाशिव-दूतकृत-प्रमथाधिपते।
दुरित-दुरीह-दुराशय-दुर्मति-दानवदूत-कृतान्तमते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥५॥

अयि शरणागत-वैरि-वधूवर-वीर-वराभय-दायकरे
त्रिभुवन-मस्तक-शूल-विरोधि शिरोधि कृतामल-शूलकरे।
दुमिदुमि-तामर-दुन्दुभिनाद-महो-मुखरीकृत-तिग्मकरे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥६॥

अयि निज-हुङ्कृति मात्र-निराकृत-धूम्रविलोचन-धूम्रशते
समर-विशोषित-शोणित-बीज-समुद्भव-शोणित-बीजलते।
शिव-शिव-शुम्भ-निशुम्भ-महाहव-तर्पित-भूत-पिशाचरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥७॥

धनुरनु-सङ्ग-रणक्षणसङ्ग-परिस्फुर-दङ्ग-नटत्कटके
कनक-पिशङ्ग-पृषत्क-निषङ्ग-रसद्भट-शृङ्ग-हतावटुके।
कृत-चतुरङ्ग-बलक्षिति-रङ्ग-घटद्बहुरङ्ग-रटद्बटुके
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥८॥

जय जय जप्य-जयेजय-शब्द-परस्तुति-तत्पर-विश्वनुते
भण-भण-भिञ्झिमि-भिङ्कृत-नूपुर-सिञ्जित-मोहित-भूतपते।
नटित-नटार्ध-नटीनट-नायक-नाटित-नाट्य-सुगानरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥९॥

अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोहर-कान्तियुते
श्रित-रजनी-रजनी-रजनी-रजनी-रजनीकर-वक्त्रवृते।
सुनयन-विभ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमराधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१०॥

सहित-महाहव-मल्लम-तल्लिक-मल्लित-रल्लक-मल्लरते
विरचित-वल्लिक-पल्लिक-मल्लिक-भिल्लिक-भिल्लिक-वर्गवृते।
सितकृत-फुल्लसमुल्ल-सितारुण-तल्लज-पल्लव-सल्ललिते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥११॥

अविरल-गण्ड-गलन्मद-मेदुर-मत्त-मतङ्गज-राजपते
त्रिभुवन-भूषण-भूत-कलानिधि रूप-पयोनिधि राजसुते।
अयि सुद-तीजन-लालसमानस-मोहन-मन्मथ-राजसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१२॥

कमल-दलामल-कोमल-कान्ति कलाकलितामल-भाललते
सकल-विलास-कलानिलयक्रम-केलि-चलत्कल-हंसकुले।
अलिकुल-सङ्कुल-कुवलय-मण्डल-मौलिमिलद्बकुलालि-कुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१३॥

करमुरली-रव-वीजित-कूजित-लज्जित-कोकिल-मञ्जुमते
मिलित-पुलिन्द-मनोहर-गुञ्जित-रञ्जितशैल-निकुञ्जगते।
निजगुणभूत-महाशबरीगण-सद्गुण-सम्भृत-केलितले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ १४॥

कटितट-पीत-दुकूल-विचित्र-मयूख-तिरस्कृत-चन्द्ररुचे
प्रणत-सुरासुर-मौलिमणिस्फुर-दंशुल-सन्नख-चन्द्ररुचे।
जित-कनकाचल-मौलिपदोर्जित-निर्भर-कुञ्जर-कुम्भकुचे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ १५॥

विजित-सहस्त्रकरैक-सहस्त्रकरैक-सहस्त्रकरैकनुते
कृतसुरतारक-सङ्गरतारक-सङ्गरतारक-सूनुसुते ।
सुरथ-समाधि समानसमाधि समाधिसमाधि सुजातरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ १६ ॥

पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं स शिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत्।
तव पदमेव परम्पदमित्यनुशीलयतो मम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ १७॥

कनकलसत्कल-सिन्धुजलैरनुसिञ्चिनुते गुण-रङ्गभुवम्
भजति स किं न शचीकुच-कुम्भ-तटी-परिरम्भ-सुखानुभवम्।
तव चरणं शरणं करवाणि नतामरवाणि निवासि शिवम्
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ १८॥

तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते
किमु पुरुहूत-पुरीन्दुमुखी-सुमुखीभिरसौ विमुखी क्रियते।
मम तु मतं शिवनामधने भवती कृपया किमुत क्रियते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१९॥

अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
अयि जगतो जननी कृपयाऽसि यथाऽसि तथाऽनुमितासिरते।
यदुचितमत्र भवत्युररि कुरुतादुरुतापमपाकुरुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥२०॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-महिषासुरमर्दिनि-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥शीतलाष्टकम्॥

अस्य श्रीशीतलास्तोत्रस्य महादेव ऋषिः।
अनुष्टुप् छन्दः। शीतला देवता। लक्ष्मीर्बीजम्।
भवानी शक्तिः। सर्वविस्फोटकनिवृत्यर्थे जपे विनियोगः॥

ईश्वर उवाच

वन्देऽहं शीतलां देवीं रासभस्थां दिगम्बराम्।
मार्जनीकलशोपेतां शूर्पालङ्कृतमस्तकाम्॥१॥

वन्देऽहं शीतलां देवीं सर्वरोगभयापहाम्।
यामासाद्य निवर्तेत विस्फोटकभयं महत्॥२॥

शीतले शीतले चेति यो ब्रूयाद्दाहपीडितः।
विस्फोटकभयं घोरं क्षिप्रं तस्य प्रणश्यति॥ ३॥

यस्त्वामुदकमध्ये तु ध्यात्वा सम्पूजयेन्नरः।
विस्फोटकभयं घोरं गृहे तस्य न जायते॥ ४॥

शीतले ज्वरदग्धस्य पूतिगन्धयुतस्य च।
प्रणष्टचक्षुषः पुंसस्त्वामाहुर्जीवनौषधम्॥ ५॥

शीतले तनुजान् रोगान् नृणां हरसि दुस्त्यजान्।
विस्फोटकविदीर्णानां त्वमेकाऽमृतवर्षिणी॥ ६॥

गलगण्डग्रहा रोगा ये चान्ये दारुणा नृणाम्।
त्वदनुध्यानमात्रेण शीतले यान्ति सङ्क्षयम्॥ ७॥

न मन्त्रो नौषधं तस्य पापरोगस्य विद्यते।
त्वामेकां शीतले धात्रीं नान्यां पश्यामि देवताम्॥ ८॥

मृणालतन्तुसदृशीं नाभिहृन्मध्यसंस्थिताम्।
यस्त्वां सञ्चिन्तयेद्देवि तस्य मृत्युर्न जायते॥ ९॥

अष्टकं शीतलादेव्या यो नरः प्रपठेत्सदा।
विस्फोटकभयं घोरं गृहे तस्य न जायते॥ १०॥

श्रोतव्यं पठितव्यं च श्रद्धाभक्तिसमन्वितैः।
उपसर्गविनाशाय परं स्वस्त्ययनं महत्॥ ११॥

शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता।
शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः॥ १२॥

रासभो गर्दभश्चैव खरो वैशाखनन्दनः।
शीतलावाहनश्चैव दूर्वाकन्दनिकृन्तनः॥ १३॥

एतानि खरनामानि शीतलाग्रे तु यः पठेत्।
तस्य गेहे शिशूनां च शीतलारुङ् न जायते॥ १४॥

शीतलाष्टकमेवेदं न देयं यस्यकस्यचित्।
दातव्यं च सदा तस्मै श्रद्धाभक्तियुताय वै॥ १५॥

॥ इति श्री-स्कान्दपुराणे श्री-शीतलाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ अन्नपूर्णास्तोत्रम्॥

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी
निर्धूताखिलघोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी।
प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी॥ १॥

नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी
मुक्ताहारविलम्बमानविलसद्-वक्षोजकुम्भान्तरी।
काश्मीरागरुवासिता रुचिकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी॥ २॥

योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मैकनिष्ठाकरी
चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी।
सर्वैश्वर्यकरी तपःफलकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी॥ ३॥

कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी उमा शङ्करी
कौमारी निगमार्थगोचरकरी ओङ्कारबीजाक्षरी।
मोक्षद्वारकवाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी॥४॥

दृश्यादृश्यविभूतिवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी
लीलानाटकसूत्रखेलनकरी विज्ञानदीपाङ्कुरी।
श्रीविश्वेशमनःप्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी॥५॥

आदिक्षान्तसमस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी
काश्मीरा त्रिपुरेश्वरी त्रिनयनी विश्वेश्वरी शर्वरी।
स्वर्गद्वारकवाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी॥६॥

उर्वी सर्वजनेश्वरी जयकरी माता कृपासागरी
वेणीनीलसमानकुन्तलधरी नित्यान्नदानेश्वरी।
साक्षान्मोक्षकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी॥७॥

देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी
वामे स्वादुपयोधरा प्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी।
भक्ताभीष्टकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी॥८॥

चन्द्रार्कानलकोटिकोटिसदृशी चन्द्रांशुबिम्बाधरी
चन्द्रार्काग्निसमानकुण्डलधरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी।
मालापुस्तकपाशसाङ्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी॥ ९॥

क्षत्रत्राणकरी महाऽभयकरी माता कृपासागरी
सर्वानन्दकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी।
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी॥ १०॥

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति॥

माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम्॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-अन्नपूर्णास्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ षष्ठीदेवी स्तोत्रम्॥

प्रियव्रत उवाच

नमो देव्यै महादेव्यै सिद्ध्यै शान्त्यै नमो नमः।
शुभायै देवसेनायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥ १॥

वरदायै पुत्रदायै धनदायै नमो नमः।
सुखदायै मोक्षदायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥ २॥

शक्तेः षष्ठांशरूपायै सिद्धायै च नमो नमः।
मायायै सिद्धयोगिन्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥३॥

पारायै पारदायै च षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
सारायै सारदायै च पारायै सर्वकर्मणाम्॥४॥

बालाधिष्ठातृदेव्यै च षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
कल्याणदायै कल्याण्यै फलदायै च कर्मणाम्।
प्रत्यक्षायै च भक्तानां षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥५॥

पूज्यायै स्कन्दकान्तायै सर्वेषां सर्वकर्मसु।
देवरक्षणकारिण्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥६॥

शुद्धसत्त्वस्वरूपायै वन्दितायै नृणां सदा।
हिंसाक्रोधैर्वर्जितायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥७॥

धनं देहि प्रियां देहि पुत्रं देहि सुरेश्वरि।
धर्मं देहि यशो देहि षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥८॥

भूमिं देहि प्रजां देहि देहि विद्यां सुपूजिते।
कल्याणं च जयं देहि षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥९॥

इति देवीं च संस्तूय लेभे पुत्रं प्रियव्रतः।
यशस्विनं च राजेन्द्रं षष्ठीदेवीप्रसादतः॥१०॥

षष्ठीस्तोत्रमिदं ब्रह्मण् यः श्रृणोति च वत्सरम्।
अपुत्रो लभते पुत्रं वरं सुचिरजीवनम्॥११॥

वर्षमेकं च या भक्त्या संयतेदं श्रृणोति च।
सर्वपापाद्विनिर्मुक्ता महावन्ध्या प्रसूयते॥१२॥

वीरपुत्रं च गुणिनं विद्यावन्तं यशस्विनम्।
सुचिरायुष्मन्तमेव षष्ठीमातृप्रसादतः॥ १३॥

काकवन्ध्या च या नारी मृतापत्या च या भवेत्।
वर्षं श्रुत्वा लभेत्पुत्रं षष्ठीदेवीप्रसादतः॥ १४॥

रोगयुक्ते च बाले च पिता माता श‍ृणोति च।
मासं च मुच्यते बालः षष्ठीदेवीप्रसादतः॥ १५॥

॥ इति श्री-ब्रह्मवैवर्तमहापुराणे प्रकृतिखण्डे श्री-नारद-नारायण-संवादे षष्ठ्युपाख्याने श्री-प्रियव्रतविरचितं श्री-षष्ठीदेवीस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

❀❀❀

॥ रुक्मिणीकृत गौरीस्तोत्रम्॥

नमस्ये त्वामम्बिकेऽभीक्ष्णं स्वसन्तानयुतां शिवाम्।
भूयात्पतिर्मे भगवान् कृष्णस्तदनुमोदताम्॥

॥ कामाक्षी-माहात्म्यम्॥

स्वामिपुष्करिणीतीर्थं पूर्वसिन्धुः पिनाकिनी।
शिलाह्रदश्चतुर्मध्यं यावत् तुण्डीरमण्डलम्॥ १॥

मध्ये तुण्डीरभूवृत्तं कम्पा-वेगवती-द्वयोः।
तयोर्मध्यं कामकोष्ठं कामाक्षी तत्र वर्तते॥ २॥

स एव विग्रहो देव्या मूलभूतोऽद्रिराड्भुवः।
नान्योऽस्ति विग्रहो देव्याः काञ्च्यां तन्मूलविग्रहः॥ ३॥

जगत्कामकलाकारं नाभिस्थानं भुवः परम्।
पदपद्मस्य कामाक्ष्याः महापीठमुपास्महे॥४॥

कामकोटिः स्मृतः सोऽयं कारणादेव चिन्नभः।
यत्र कामकृतो धर्मो जन्तुना येन केन वा।
सकृद्वाऽपि सुधर्माणां फलं फलति कोटिशः॥५॥

यो जपेत् कामकोष्ठेऽस्मिन् मन्त्रमिष्टार्थदैवतम्।
कोटिवर्णफलेनैव मुक्तिलोकं स गच्छति॥६॥

यो वसेत् कामकोष्ठेऽस्मिन् क्षणार्धं वा तदर्धकम्।
मुच्यते सर्वपापेभ्यः साक्षाद्देवी नराकृतिः॥७॥

गायत्रीमण्डपाधारं भूनाभिस्थानमुत्तमम्।
पुरुषार्थप्रदं शम्भोर्बिलाभ्रं तं नमाम्यहम्॥८॥

यः कुर्यात् कामकोष्ठस्य बिलाभ्रस्य प्रदक्षिणम्।
पदसङ्ख्याक्रमेणैव गोगर्भजननं लभेत्॥९॥

विश्वकारणनेत्राढ्यां श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरीम्।
बन्धकासुरसंहन्त्रीं कामाक्षीं तामहं भजे॥१०॥

पराजन्मदिने काञ्च्यां महाभ्यन्तरमार्गतः।
योऽर्चयेत् तत्र कामाक्षीं कोटिपूजाफलं लभेत्।
तत्फलोत्पन्नकैवल्यं सकृत् कामाक्षिसेवया॥११॥

त्रिस्थाननिलयं देवं त्रिविधाकारमच्युतम्।
प्रतिलिङ्गाग्रसंयुक्तं भूतबन्धं तमाश्रये॥१२॥

य इदं प्रातरुत्थाय स्नानकाले पठेन्नरः।
द्वादशश्लोकमात्रेण श्लोकोक्तफलमाप्नुयात्॥

॥इति श्री-कामाक्षी-विलासे त्रयोविंशोऽध्याये श्री-कामाक्षी-माहात्म्यं सम्पूर्णम्॥

॥दुर्गापञ्चरत्नम्॥

ते ध्यान-योगानुगता अपश्यन्
त्वामेव देवीं स्वगुणैर्निगूढाम्।
त्वमेव शक्तिः परमेश्वरस्य
मां पाहि सर्वेश्वरि मोक्षदात्रि॥१॥

देवात्मशक्तिः श्रुतिवाक्यगीता
महर्षि लोकस्य पुरः प्रसन्ना।
गुहा परं व्योम सतः प्रतिष्ठा
मां पाहि सर्वेश्वरि मोक्षदात्रि॥२॥

परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयसे
श्वेताश्व-वाक्योदित-देवि दुर्गे।
स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया ते
मां पाहि सर्वेश्वरि मोक्षदात्रि॥३॥

देवात्मशब्देन शिवात्मभूता
यत्कूर्मवायव्यवचो विवृत्या।
त्वं पाशविच्छेदकरी प्रसिद्धा
मां पाहि सर्वेश्वरि मोक्षदात्रि॥४॥

त्वं ब्रह्मपुच्छा विविधा मयूरी
ब्रह्म-प्रतिष्ठाऽस्युपदिष्ट-गीता।
ज्ञानस्वरूपात्मतयाऽखिलानाम्
मां पाहि सर्वेश्वरि मोक्षदात्रि॥५॥

॥इति श्री-काञ्चीजगद्गुरु-श्री-चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती-श्रीचरणैः विरचितं श्री-दुर्गापञ्चरत्नं सम्पूर्णम्॥

॥दुर्गास्तोत्रम्॥

श्री-नारायण उवाच

स्तोत्रं च श्रूयतां ब्रह्मन् सर्वविघ्नविनाशकम्।
सुखदं मोक्षदं सारं भवसन्तारकारणम्॥

श्रीकृष्ण उवाच

त्वमेव सर्वजननी मूलप्रकृतिरीश्वरी।
त्वमेवाऽऽद्या सृष्टिविधौ स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका॥१॥

कार्यार्थे सगुणा त्वं च वस्तुतो निर्गुणा स्वयम्।
परब्रह्मस्वरूपा त्वं सत्या नित्या सनातनी॥२॥

तेजःस्वरूपा परमा भक्तानुग्रहविग्रहा।
सर्वस्वरूपा सर्वेशा सर्वाधारा परात्परा॥३॥

सर्वबीजस्वरूपा च सर्वपूज्या निराश्रया।
सर्वज्ञा सर्वतोभद्रा सर्वमङ्गलमङ्गला॥४॥

सर्वबुद्धिस्वरूपा च सर्वशक्तिस्वरूपिणी।
सर्वज्ञानप्रदा देवी सर्वज्ञा सर्वभाविनी॥५॥

त्वं स्वाहा देवदाने च पितृदाने स्वधा स्वयम्।
दक्षिणा सर्वदाने च सर्वशक्तिस्वरूपिणी॥६॥

निद्रा त्वं च दया त्वं च तृष्णा त्वं चाऽऽत्मनः प्रिया।
क्षुत्क्षान्तिः शान्तिरीशा च कान्तिस्तुष्टिश्च शाश्वती॥७॥

श्रद्धा पुष्टिश्च तन्द्रा च लज्जा शोभा प्रभा तथा।
सतां सम्पत्स्वरूपा श्रीर्विपत्तिरसतामिह॥८॥

प्रीतिरूपा पुण्यवतां पापिनां कलहाङ्कुरा।
शश्वत्कर्ममयी शक्तिः सर्वदा सर्वजीविनाम्॥९॥

देवेभ्यः स्वपदो दात्री धातुर्धात्री कृपामयी।
हिताय सर्वदेवानां सर्वासुरविनाशिनी॥१०॥

योगनिद्रा योगरूपा योगदात्री च योगिनाम्।
सिद्धिस्वरूपा सिद्धानां सिद्धिदा सिद्धियोगिनी॥११॥

माहेश्वरी च ब्रह्माणी विष्णुमाया च वैष्णवी।
भद्रदा भद्रकाली च सर्वलोकभयङ्करी॥१२॥

ग्रामे ग्रामे ग्रामदेवी गृहदेवी गृहे गृहे।
सतां कीर्तिः प्रतिष्ठा च निन्दा त्वमसतां सदा॥१३॥

महायुद्धे महामारी दुष्टसंहाररूपिणी।
रक्षास्वरूपा शिष्टानां मातेव हितकारिणी॥१४॥

वन्द्या पूज्या स्तुता त्वं च ब्रह्मादीनां च सर्वदा।
ब्राह्मण्यरूपा विप्राणां तपस्या च तपस्विनाम्॥ १५॥

विद्या विद्यावतां त्वं च बुद्धिर्बुद्धिमतां सताम्।
मेधा स्मृतिस्वरूपा च प्रतिभा प्रतिभावताम्॥ १६॥

राज्ञां प्रतापरूपा च विशां वाणिज्यरूपिणी।
सृष्टौ सृष्टिस्वरूपा त्वं रक्षारूपा च पालने॥ १७॥

तथाऽन्ते त्वं महामारी विश्वे विश्वैश्च पूजिते।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च मोहिनी॥ १८॥

दुरत्यया मे माया त्वं यया सम्मोहितं जगत्।
यया मुग्धो हि विद्वांश्च मोक्षमार्गं न पश्यति॥ १९॥

॥ फलश्रुतिः ॥

इत्यात्मना कृतं स्तोत्रं दुर्गाया दुर्गनाशनम्।
पूजाकाले पठेद्यो हि सिद्धिर्भवति वाञ्छिता॥ २०॥

वन्ध्या च काकवन्ध्या च मृतवत्सा च दुर्भगा।
श्रुत्वा स्तोत्रं वर्षमेकं सुपुत्रं लभते ध्रुवम्॥ २१॥

कारागारे महाघोरे यो बद्धो दृढबन्धने।
श्रुत्वा स्तोत्रं मासमेकं बन्धनान्मुच्यते ध्रुवम्॥ २२॥

यक्ष्मग्रस्तो गलत्कुष्ठी महाशूली महाज्वरी।
श्रुत्वा स्तोत्रं वर्षमेकं सद्यो रोगात् प्रमुच्यते॥ २३॥

पुत्रभेदे प्रजाभेदे पत्नीभेदे च दुर्गतः।
श्रुत्वा स्तोत्रं मासमेकं लभते नात्र संशयः॥२४॥

राजद्वारे श्मशाने च महारण्ये रणस्थले।
हिंस्रजन्तुसमीपे च श्रुत्वा स्तोत्रं प्रमुच्यते॥२५॥

गृहदाहे च दावाग्नौ दस्युसैन्यसमन्विते।
स्तोत्रश्रवणमात्रेण लभते नात्र संशयः॥२६॥

महादरिद्रो मूर्खश्च वर्षं स्तोत्रं पठेत्तु यः।
विद्यावान् धनवांश्चैव स भवेन्नात्र संशयः॥२७॥

॥इति श्रीब्रह्मवैवर्तमहापुराणे प्रकृतिखण्डे षड्षष्टितमेऽध्याये श्री-नारद-नारायण-संवादे दुर्गोपाख्याने श्री-कृष्णविरचितं श्री-दुर्गास्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥दुर्गाचन्द्रकलास्तुतिः॥

वेधोहरीश्वरस्तुत्यां विहर्त्रीं विन्ध्यभूधरे।
हरप्राणेश्वरीं वन्दे हन्त्रीं विबुधविद्विषाम्॥१॥

अभ्यर्थनेन सरसीरुहसम्भवस्य
त्यक्त्वोदिता भगवदक्षिपिधानलीलाम्।
विश्वेश्वरी विपदपाकरणे पुरस्तात्
माता ममास्तु मधुकैटभयोर्निहन्त्री॥२॥

प्राङ्निर्जरेषु निहितैर्निजशक्तिलेशैः
एकीभवद्भिरुदिताऽखिललोकगुप्त्यै ।
सम्पन्नशस्त्रनिकरा च तदायुधस्थैः
माता ममास्तु महिषान्तकरी पुरस्तात्॥ ३॥

प्रालेयशैलतनयातनुकान्तिसम्पत्-
कोशोदिता कुवलयच्छविचारुदेहा।
नारायणी नमदभीप्सितकल्पवल्ली
सुप्रीतिमावहतु शुम्भनिशुम्भहन्त्री॥ ४॥

विश्वेश्वरीति महिषान्तकरीति यस्याः
नारायणीत्यपि च नामभिरङ्कितानि।
सूक्तानि पङ्कजभुवा च सुरर्षिभिश्च
दृष्टानि पावकमुखैश्च शिवां भजे ताम्॥ ५॥

उत्पत्तिदैत्यहननस्तवनात्मकानि
संरक्षकाण्यखिलभूतहिताय यस्याः।
सूक्तान्यशेषनिगमान्तविदः पठन्ति
तां विश्वमातरमजस्त्रमभिष्टवीमि॥ ६॥

ये वैप्रचित्तपुनरुत्थितशुम्भमुख्यैः
दुर्भिक्षघोरसमयेन च कारितासु।
आविष्कृतास्त्रिजगदार्तिषु रूपभेदाः
तैरम्बिका समभिरक्षतु मां विपद्भ्यः॥ ७॥

सूक्तं यदीयमरविन्दभवादिदृष्टम्
आवर्त्य देव्यनुपदं सुरथः समाधिः।
द्वावप्यवापतुरभीष्टमनन्यलभ्यं
तामादिदेवतरुणीं प्रणमामि मूर्ध्ना॥८॥

माहिष्मतीतनुभवं च रुरुं च हन्तुम्
आविष्कृतैर्निजरसादवतारभेदैः ।
अष्टादशाहतनवाहतकोटिसङ्ख्यैः
अम्बा सदा समभिरक्षतु मां विपद्भ्यः॥९॥

एतच्चरित्रमखिलं लिखितं हि यस्याः
सम्पूजितं सदन एव निवेशितं वा।
दुर्गं च तारयति दुस्तरमप्यशेषं
श्रेयः प्रयच्छति च सर्वमुमां भजे ताम्॥१०॥

यत्पूजनस्तुतिनमस्कृतिभिर्भवन्ति
प्रीताः पितामहरमेशहरास्त्रयोऽपि।
तेषामपि स्वकगुणैर्ददती वपूंषि
तामीश्वरस्य तरुणीं शरणं प्रपद्ये॥११॥

कान्तारमध्यदृढलग्नतयाऽवसन्नाः
मग्नाश्च वारिधिजले रिपुभिश्च रुद्धाः।
यस्याः प्रपद्य चरणौ विपदस्तरन्ति
सा मे सदाऽस्तु हृदि सर्वजगत्सवित्री॥१२॥

बन्धे वधे महति मृत्युभये प्रसक्ते
वित्तक्षये च विविधे य महोपतापे।
यत्पादपूजनमिह प्रतिकारमाहुः
सा मे समस्तजननी शरणं भवानी॥ १३॥

बाणासुरप्रहितपन्नगबन्धमोक्षः
तद्बाहुदर्पदलनादुषया च योगः।
प्राद्युम्निना द्रुतमलभ्यत यत्प्रसादात्
सा मे शिवा सकलमप्यशुभं क्षिणोतु॥ १४॥

पापः पुलस्त्यतनयः पुनरुत्थितो माम्
अद्यापि हर्तुमयमागत इत्युदीतम्।
यत्सेवनेन भयमिन्दिरयाऽवधूतं
तामादिदेवतरुणीं शरणं गतोऽस्मि॥ १५॥

यद् ध्यानजं सुखमवाप्यमनन्तपुण्यैः
साक्षात्तमच्युतपरिग्रहमाश्ववापुः ।
गोपाङ्गनाः किल यदर्चनपुण्यमात्राः
सा मे सदा भगवती भवतु प्रसन्ना॥ १६॥

रात्रिं प्रपद्य इति मन्त्रविदः प्रपन्नान्
उद्बोध्य मृत्यवधिमन्यफलैः प्रलोभ्य।
बुद्धा च तद्विमुखतां प्रतनं नयन्तीम्
आकाशमादिजननीं जगतां भजे ताम्॥ १७॥

देशकालेषु दुष्टेषु दुर्गाचन्द्रकलास्तुतिः।
सन्ध्ययोरनुसन्धेया सर्वापद्विनिवृत्तये॥ १८॥

॥ इति श्रीदुर्गाचन्द्रकलास्तुतिः सम्पूर्णा॥

॥ दुर्गास्तोत्रम् (युधिष्ठिरकृतम्) ॥

वैशम्पायन उवाच

विराटनगरं रम्यं गच्छमानो युधिष्ठिरः।
अस्तुवन्मनसा देवीं दुर्गां त्रिभुवनेश्वरीम्॥ १ ॥

यशोदागर्भसम्भूतां नारायणवरप्रियाम्।
नन्दगोपकुले जातां मङ्गल्यां कुलवर्धनीम्॥ २ ॥

कंसविद्रावणकरीमसुराणां क्षयङ्करीम्।
शिलातटविनिक्षिप्तामाकाशं प्रति गामिनीम्॥ ३ ॥

वासुदेवस्य भगिनीं दिव्यमाल्यविभूषिताम्।
दिव्याम्बरधरां देवीं खड्गखेटकधारिणीम्॥ ४ ॥

भारावतरणे पुण्ये ये स्मरन्ति सदा शिवाम्।
तान् वै तारयसे पापात्पङ्के गामिव दुर्बलाम्॥ ५ ॥

स्तोतुं प्रचक्रमे भूयो विविधैः स्तोत्रसम्भवैः।
आमन्त्र्य दर्शनाकाङ्क्षी राजा देवीं सहानुजः॥ ६ ॥

नमोऽस्तु वरदे कृष्णे कुमारि ब्रह्मचारिणि।
बालार्कसदृशाकारे पूर्णचन्द्रनिभानने॥ ७ ॥

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रे पीनश्रोणिपयोधरे।
मयूरपिच्छवलये केयूराङ्गदधारिणि॥ ८ ॥

भासि देवि यथा पद्मा नारायणपरिग्रहः।
स्वरूपं ब्रह्मचर्यं च विशदं तव खेचरि॥ ९ ॥

कृष्णच्छविसमा कृष्णा सङ्कर्षणसमानना।
बिभ्रती विपुलौ बाहू शक्रध्वजसमुच्छ्रयौ॥ १०॥

पात्री च पङ्कजी घण्टी स्त्री विशुद्धा च या भुवि।
पाशं धनुर्महाचक्रं विविधान्यायुधानि च॥ ११॥

कुण्डलाभ्यां सुपूर्णाभ्यां कर्णाभ्यां च विभूषिता।
चन्द्रविस्पर्धिना देवि मुखेन त्वं विराजसे॥ १२॥

मुकुटेन विचित्रेण केशबन्धेन शोभिना।
भुजङ्गाभोगवासेन श्रोणिसूत्रेण राजता॥ १३॥

विभ्राजसे चाबद्धेन भोगेनेवेह मन्दरः।
ध्वजेन शिखिपिच्छानामुच्छ्रितेन विराजसे॥ १४॥

कौमारं व्रतमास्थाय त्रिदिवं पावितं त्वया।
तेन त्वं स्तूयसे देवि त्रिदशैः पूज्यसेऽपि च॥ १५॥

त्रैलोक्यरक्षणार्थाय महिषासुरनाशिनि।
प्रसन्ना मे सुरश्रेष्ठे दयां कुरु शिवा भव॥ १६॥

जया त्वं विजया चैव सङ्ग्रामे च जयप्रदा।
ममापि विजयं देहि वरदा त्वं च साम्प्रतम्॥ १७॥

विन्ध्ये चैव नगश्रेष्ठे तव स्थानं हि शाश्वतम्।
कालि कालि महाकालि शीधुमांसपशुप्रिये॥ १८॥

कृतानुयात्रा भूतैस्त्वं वरदा कामचारिणी।
भारावतारे ये च त्वां संस्मरिष्यन्ति मानवाः॥ १९॥

प्रणमन्ति च ये त्वां हि प्रभाते तु नरा भुवि।
न तेषां दुर्लभं किञ्चित्पुत्रतो धनतोऽपि वा॥२०॥

दुर्गात्तारयसे दुर्गे तत् त्वं दुर्गा स्मृता जनैः।
कान्तारेष्ववसन्नानां मग्नानां च महार्णवे।
दस्युभिर्वा निरुद्धानां त्वं गतिः परमा नृणाम्॥२१॥

जलप्रतरणे चैव कान्तारेष्वटवीषु च।
ये स्मरन्ति महादेवि न च सीदन्ति ते नराः॥२२॥

त्वं कीर्तिः श्रीर्धृतिः सिद्धिर्ह्रीर्विद्या सन्ततिर्मतिः।
सन्ध्या रात्रिः प्रभा निद्रा ज्योत्स्ना कान्तिः क्षमा दया॥२३॥

नृणां च बन्धनं मोहं पुत्रनाशं धनक्षयम्।
व्याधिं मृत्युं भयं चैव पूजिता नाशयिष्यसि॥२४॥

सोऽहं राज्यात्परिभ्रष्टः शरणं त्वां प्रपन्नवान्।
प्रणतश्च यथा मूर्ध्ना तव देवि सुरेश्वरि॥२५॥

त्राहि मां पद्मपत्राक्षि सत्ये सत्या भवस्व नः।
शरणं भव मे दुर्गे शरण्ये भक्तवत्सले॥२६॥

एवं स्तुता हि सा देवी दर्शयामास पाण्डवम्।
उपगम्य तु राजानमिदं वचनमब्रवीत्॥२७॥

देव्युवाच

श्रृणु राजन्महाबाहो मदीयं वचनं प्रभो।
भविष्यत्यचिरादेव सङ्ग्रामे विजयस्तव॥२८॥

मम प्रसादान्निर्जित्य हत्वा कौरववाहिनीम्।
राज्यं निष्कण्टकं कृत्वा भोक्ष्यसे मेदिनीं पुनः॥ २९॥

भ्रातृभिः सहितो राजन्प्रीतिं प्राप्स्यसि पुष्कलाम्।
मत्प्रसादाच्च ते सौख्यमारोग्यं च भविष्यति॥ ३०॥

ये च सङ्कीर्तयिष्यन्ति लोके विगतकल्मषाः।
तेषां तुष्टा प्रदास्यामि राज्यमायुर्वपुः सुतम्॥ ३१॥

प्रवासे नगरे वाऽपि सङ्ग्रामे शत्रुसङ्कटे।
अटव्यां दुर्गकान्तारे सागरे गहने गिरौ॥ ३२॥

ये स्मरिष्यन्ति मां राजन् यथाऽहं भवता स्मृता।
न तेषां दुर्लभं किञ्चिदस्मिन् लोके भविष्यति॥ ३३॥

इदं स्तोत्रवरं भक्त्या शृणुयाद्वा पठेत वा।
तस्य सर्वाणि कार्याणि सिद्धिं यास्यन्ति पाण्डवाः॥ ३४॥

मत्प्रसादाच्च वः सर्वान्विराटनगरे स्थितान्।
न प्रज्ञास्यन्ति कुरवो नरा वा तन्निवासिनः॥ ३५॥

इत्युक्त्वा वरदा देवी युधिष्ठिरमरिन्दमम्।
रक्षां कृत्वा च पाण्डूनां तत्रैवान्तरधीयत॥ ३६॥

॥ इति श्रीमन्महाभारते विराटपर्वणि पाण्डवप्रवेशपर्वणि अष्टमोऽध्यायः॥

॥ परशुरामकृत-दुर्गास्तोत्रम् ॥

श्री-परशुराम उवाच

श्रीकृष्णस्य च गोलोके परिपूर्णतमस्य च।
आविर्भूता विग्रहतः परा सृष्ट्युन्मुखस्य च॥ १ ॥

सूर्यकोटिप्रभायुक्ता वस्त्रालङ्कारभूषिता।
वह्निशुद्धांशुकाधाना सुस्मिता सुमनोहरा॥ २ ॥

नवयौवनसम्पन्ना सिन्दूरारुण्यशोभिता।
ललितं कबरीभारं मालतीमाल्यमण्डितम्॥ ३ ॥

अहोऽनिर्वचनीया त्वं चारुमूर्तिं च बिभ्रती।
मोक्षप्रदा मुमुक्षूणां महाविष्णोर्विधिः स्वयम्॥ ४ ॥

मुमोह क्षणमात्रेण दृष्ट्वा त्वां सर्वमोहिनीम्।
बालैः सम्भूय सहसा सस्मिता धाविता पुरा॥ ५ ॥

सद्भिः ख्याता तेन राधा मूलप्रकृतिरीश्वरी।
कृष्णस्त्वां सहसा भीतो वीर्याधानं चकार ह॥ ६ ॥

ततो डिम्भं महज्जज्ञे ततो जातो महान्विराट्।
यस्यैव लोमकूपेषु ब्रह्माण्डान्यखिलानि च॥ ७ ॥

राधारतिक्रमेणैव तन्निःश्वासो बभूव ह।
स निःश्वासो महावायुः स विराड्विश्वधारकः॥ ८ ॥

भयघर्मजलेनैव पुप्लुवे विश्वगोलकम्।
स विराड् विश्वनिलयो जलराशिर्बभूव ह॥ ९ ॥

ततस्त्वं पञ्चधा भूय पञ्चमूर्तीश्च बिभ्रती।
प्राणाधिष्ठातृमूर्तिर्या कृष्णस्य परमात्मनः॥ १०॥

कृष्णप्राणाधिकां राधां तां वदन्ति पुराविदः।
वेदाधिष्ठातृमूर्तिर्या वेदशास्त्रप्रसूरपि॥ ११॥

तं सावित्रीं शुद्धरूपां प्रवदन्ति मनीषिणः।
ऐश्वर्याधिष्ठातृमूर्तिः शान्तिस्त्वं शान्तरूपिणी॥ १२॥

लक्ष्मीं वदन्ति सन्तस्तां शुद्धां सत्त्वस्वरूपिणीम्।
रागाधिष्ठात्री या देवी शुक्लमूर्तिः सतां प्रसूः॥ १३॥

सरस्वतीं तां शास्त्रज्ञां शास्त्रज्ञाः प्रवदन्त्यहो।
बुद्धिर्विद्या सर्वशक्तेर्या मूर्तिरधिदेवता॥ १४॥

सर्वमङ्गलदा सन्तो वदन्ति सर्वमङ्गलाम्।
सर्वमङ्गलमङ्गल्या सर्वमङ्गलरूपिणी॥ १५॥

सर्वमङ्गलबीजस्य शिवस्य निलयेऽधुना।
शिवे शिवास्वरूपा त्वं लक्ष्मीर्नारायणान्तिके॥ १६॥

सरस्वती च सावित्री वेदसूर्ब्रह्मणः प्रिया।
राधा रासेश्वरस्यैव परिपूर्णतमस्य च॥ १७॥

परमानन्दरूपस्य परमानन्दरूपिणी।
त्वत्कलांशांशकलया देवानामपि योषितः॥ १८॥

त्वं विद्या योषितः सर्वाः सर्वेषां बीजरूपिणी।
छाया सूर्यस्य चन्द्रस्य रोहिणी सर्वमोहिनी॥ १९॥

शची शक्रस्य कामस्य कामिनी रतिरीश्वरी।
वरुणानी जलेशस्य वायोः स्त्रीः प्राणवल्लभा॥ २०॥

वह्नेः प्रिया हि स्वाहा च कुबेरस्य च सुन्दरी।
यमस्य तु सुशीला च नैर्ऋतस्य च कैटभी॥ २१॥

ऐशानी स्याच्छशिकला शतरूपा मनोः प्रिया।
देवहूतिः कर्दमस्य वसिष्ठस्याप्यरुन्धती॥ २२॥

लोपामुद्राऽप्यगस्त्यस्य देवमाताऽदितिस्तथा।
अहल्या गौतमस्यापि सर्वाधारा वसुन्धरा॥ २३॥

गङ्गा च तुलसी चापि पृथिव्यां या सरिद्वरा।
एताः सर्वाश्च या ह्यन्या सर्वास्त्वत्कलयाऽम्बिके॥ २४॥

गृहलक्ष्मीर्गृहे नृणां राजलक्ष्मीश्च राजसु।
तपस्विनां तपस्या त्वं गायत्री ब्राह्मणस्य च॥ २५॥

सतां सत्त्वस्वरूपा त्वमसतां कलहाङ्कुरा।
ज्योतीरूपा निर्गुणस्य शक्तिस्त्वं सगुणस्य च॥ २६॥

सूर्ये प्रभास्वरूपा त्वं दाहिका च हुताशने।
जले शैत्यस्वरूपा च शोभारूपा निशाकरे॥ २७॥

त्वं भूमौ गन्धरूपा च आकाशे शब्दरूपिणी।
क्षुत्पिपासादयस्त्वं च जीविनां सर्वशक्तयः॥ २८॥

सर्वबीजस्वरूपा त्वं संसारे साररूपिणी।
स्मृतिर्मेधा च बुद्धिर्वा ज्ञानशक्तिर्विपश्चिताम्॥ २९॥

कृष्णेन विद्या या दत्ता सर्वज्ञानप्रसूः शुभा।
शूलिने कृपया सा त्वं यया मृत्युञ्जयः शिवः॥ ३०॥

सृष्टिपालनसंहारशक्तयस्त्रिविधाश्च याः।
ब्रह्मविष्णुमहेशानां सा त्वमेव नमोऽस्तु ते॥ ३१॥

मधुकैटभभीत्या च त्रस्तो धाता प्रकम्पितः।
स्तुत्वा मुक्तश्च यां देवीं तां मूर्ध्ना प्रणमाम्यहम्॥ ३२॥

मधुकैटभयोर्युद्धे त्राताऽसौ विष्णुरीश्वरीम्।
बभूव शक्तिमान् स्तुत्वा तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥ ३३॥

त्रिपुरस्य महायुद्धे सरथे पतिते शिवे।
यां तुष्टुवुः सुराः सर्वे तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥ ३४॥

विष्णुना वृषरूपेण स्वयं शम्भुः समुत्थितः।
जघान त्रिपुरं स्तुत्वा तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥ ३५॥

यदाज्ञया वाति वातः सूर्यस्तपति सन्ततम्।
वर्षतीन्द्रो दहत्यग्निस्तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥ ३६॥

यदाज्ञया हि कालश्च शश्वद्-भ्रमति वेगतः।
मृत्युश्चरति जन्तूनां तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥ ३७॥

स्त्रष्टा सृजति सृष्टिं च पाता पाति यदाज्ञया।
संहर्ता संहरेत् काले तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥ ३८॥

ज्योतिःस्वरूपो भगवाञ्छ्रीकृष्णो निर्गुणः स्वयम्।
यया विना न शक्तश्च सृष्टिं कर्तुं नमामि ताम्॥ ३९॥

रक्ष रक्ष जगन्मातरपराधं क्षमस्व मे।
शिशूनामपराधेन कुतो माता हि कुप्यति॥ ४०॥

इत्युक्त्वा परशुरामश्च नत्वा तां च रुरोद ह।
तुष्टा दुर्गा सम्भ्रमेण चाभयं च वरं ददौ॥ ४१॥

अमरो भव हे पुत्र वत्स सुस्थिरतां व्रज।
शर्वप्रसादात् सर्वत्र जयोऽस्तु तव सन्ततम्॥ ४२॥

सर्वान्तरात्मा भगवांस्तुष्टः स्यात्सन्ततं हरिः।
भक्तिर्भवतु ते कृष्णे शिवदे च शिवे गुरौ॥ ४३॥

इष्टदेवे गुरौ यस्य भक्तिर्भवति शाश्वती।
तं हन्तुं न हि शक्ताश्च रुष्टा वा सर्वदेवताः॥ ४४॥

श्रीकृष्णस्य च भक्तस्त्वं शिष्यो वै शङ्करस्य च।
गुरुपत्नीं स्तौषि यस्मात् कस्त्वां हन्तुमिहेश्वरः॥ ४५॥

अहो न कृष्णभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित्।
अन्यदेवेषु ये भक्ता न भक्ता वा निरङ्कुशाः॥ ४६॥

चन्द्रमा बलवांस्तुष्टो येषां भाग्यवतां भृगो।
तेषां तारागणा रुष्टाः किं कुर्वन्ति च दुर्बलाः॥ ४७॥

यस्मै तुष्टः पालयति नरदेवो महान् सुखी।
तस्य किं वा करिष्यन्ति रुष्टा भृत्याश्च दुर्बलाः॥ ४८॥

इत्युक्त्वा पार्वती तुष्टा दत्त्वा रामाय चाऽऽशिषम्।
जगामान्तःपुरं तूर्णं हर्षशब्दो बभूव ह॥ ४९॥

॥ फलश्रुतिः ॥

स्तोत्रं वै काण्वशाखोक्तं पूजाकाले च यः पठेत्।
यात्राकाले च प्रातर्वा वाञ्छितार्थं लभेद्ध्रुवम्॥ ५० ॥

पुत्रार्थी लभते पुत्रं कन्यार्थी कन्यकां लभेत्।
विद्यार्थी लभते विद्यां प्रजार्थी चाऽऽप्नुयात् प्रजाम्॥ ५१ ॥

भ्रष्टराज्यो लभेद्राज्यं नष्टवित्तो धनं लभेत्।
यस्य रुष्टो गुरुर्देवो राजा वा बान्धवोऽथवा॥ ५२ ॥

तस्मै तुष्टश्च वरदः स्तोत्रराजप्रसादतः।
दस्युग्रस्तो फणिग्रस्तः शत्रुग्रस्तो भयानकः॥ ५३ ॥

व्याधिग्रस्तो भवेन्मुक्तः स्तोत्रस्मरणमात्रतः।
राजद्वारे श्मशाने च कारागारे च बन्धने॥ ५४ ॥

जलराशौ निमग्नश्च मुक्तस्तत्स्मृतिमात्रतः।
स्वामिभेदे पुत्रभेदे मित्रभेदे च दारुणे॥ ५५ ॥

स्तोत्रस्मरणमात्रेण वाञ्छितार्थं लभेद्ध्रुवम्।
कृत्वा हविष्यं वर्षं च स्तोत्रराजं श्रृणोति या॥ ५६ ॥

भक्त्या दुर्गां च सम्पूज्य महावन्ध्या प्रसूयते।
लभते सा दिव्यपुत्रं ज्ञानिनं चिरजीविनम्।
असौभाग्या च सौभाग्यं षण्मासश्रवणाल्लभेत्॥ ५७ ॥

नवमासं काकवन्ध्या मृतवत्सा च भक्तितः।
स्तोत्रराजं या श्रृणोति सा पुत्रं लभते ध्रुवम्॥ ५८ ॥

कन्यामाता पुत्रहीना पञ्चमासं श्रृणोति या।
घटे सम्पूज्य दुर्गां च सा पुत्रं लभते ध्रुवम्॥५९॥

॥इति श्री-ब्रह्मवैवर्तमहापुराणे गणपतिखण्डे पञ्चचत्वारिंशोऽध्याये श्री-नारद-नारायण-संवादे श्री-परशुरामकृतं श्री-दुर्गास्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

❁❁❁

॥ गायत्रीस्तोत्रम् ॥

॥ गायत्री-ध्यानम् ॥

मुक्ता-विद्रुम-हेम-नील-धवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैः
युक्तामिन्दु-निबद्ध-रत्न-मकुटां तत्त्वार्थ-वर्णात्मिकाम्।
गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशाः शुभ्रं कपालं गदाम्
शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे॥

नारद उवाच

भक्तानुकम्पिन् सर्वज्ञ हृदयं पापनाशनम्।
गायत्र्याः कथितं तस्माद्गायत्र्याः स्तोत्रमीरय॥ १ ॥

आदिशक्ते जगन्मातर्भक्तानुग्रहकारिणि।
सर्वत्र व्यापिकेऽनन्ते श्रीसन्ध्ये ते नमोऽस्तु ते॥ २ ॥

त्वमेव सन्ध्या गायत्री सावित्री च सरस्वती।
ब्रह्माणी वैष्णवी रौद्री रक्तश्वेता सितेतरा॥ ३ ॥

प्रातर्बाला च मध्याह्ने यौवनस्था भवेत्पुनः।
वृद्धा सायं भगवती चिन्त्यते मुनिभिः सदा॥ ४ ॥

हंसस्था गरुडारूढा तथा वृषभवाहिनी।
ऋग्वेदाध्यायिनी भूमौ दृश्यते या तपस्विभिः॥ ५ ॥

यजुर्वेदं पठन्ती च ह्यन्तरिक्षे विराजते।
या सामगाऽपि सर्वेषु भ्राम्यमाणा तथा भुवि॥ ६ ॥

रुद्रलोकं गता त्वं हि विष्णुलोकनिवासिनी।
त्वमेव ब्रह्मणो लोकेऽमर्त्यानुग्रहकारिणी॥७॥

सप्तर्षिप्रीतिजननी माया बहुवरप्रदा।
शिवयोः करनेत्रोत्था ह्यश्रुस्वेदसमुद्भवा॥८॥

आनन्दजननी दुर्गा दशधा परिपठ्यते।
वरेण्या वरदा चैव वरिष्ठा वरवर्णिनी॥९॥

गरिष्ठा च वराही च वरारोहा च सप्तमी।
नीलगङ्गा तथा सन्ध्या सर्वदा भोगमोक्षदा॥१०॥

भागीरथी मर्त्यलोके पाताले भोगवत्यपि।
त्रिलोकवाहिनी देवी स्थानत्रयनिवासिनी॥११॥

भूर्लोकस्था त्वमेवासि धरित्री शोकधारिणी।
भुवो लोके वायुशक्तिः स्वर्लोके तेजसां निधिः॥१२॥

महर्लोके महासिद्धिर्जनलोकेऽजनेत्यपि।
तपस्विनी तपोलोके सत्यलोके तु सत्यवाक्॥१३॥

कमला विष्णुलोके च गायत्री ब्रह्मलोकगा।
रुद्रलोके स्थिता गौरी हरार्धाङ्गनिवासिनी॥१४॥

अहमो महतश्चैव प्रकृतिस्त्वं हि गीयसे।
साम्यावस्थात्मिका त्वं हि शबलब्रह्मरूपिणी॥१५॥

ततः परा पराशक्तिः परमा त्वं हि गीयसे।
इच्छाशक्तिः क्रियाशक्तिर्ज्ञानशक्तिस्त्रिशक्तिदा॥१६॥

गङ्गा च यमुना चैव विपाशा च सरस्वती।
सरयू रेविका सिन्धुर्नर्मदैरावती तथा॥ १७॥

गोदावरी शतद्रुश्च कावेरी देवलोकगा।
कौशिकी चन्द्रभागा च वितस्ता च सरस्वती॥ १८॥

गण्डकी तापिनी तोया गोमती वेत्रवत्यपि।
इडा च पिङ्गला चैव सुषुम्णा च तृतीयका॥ १९॥

गान्धारी हस्तजिह्वा च पूषाऽपूषा तथैव च।
अलम्बुषा कुहूश्चैव शङ्खिनी प्राणवाहिनी॥ २०॥

नाडी च त्वं शरीरस्था गीयसे प्राक्तनैर्बुधैः।
हृत्पद्मस्था प्राणशक्तिः कण्ठस्था स्वप्ननायिका॥ २१ ॥

तालुस्था त्वं सदाधारा बिन्दुस्था बिन्दुमालिनी।
मूले तु कुण्डलीशक्तिर्व्यापिनी केशमूलगा॥ २२॥

शिखामध्यासना त्वं हि शिखाग्रे तु मनोन्मनी।
किमन्यद्बहुनोक्तेन यत्किञ्चिज्जगतीत्रये॥ २३॥

तत्सर्वं त्वं महादेवि श्रिये सन्ध्ये नमोऽस्तु ते।
इतीदं कीर्तितं स्तोत्रं सन्ध्यायां बहुपुण्यदम्॥ २४॥

महापापप्रशमनं महासिद्धिविदायकम्।
य इदं कीर्तयेत् स्तोत्रं सन्ध्याकाले समाहितः॥ २५॥

अपुत्रः प्राप्नुयात् पुत्रं धनार्थी धनमाप्नुयात्।
सर्वतीर्थतपोदानयज्ञयोगफलं लभेत्॥ २६॥

भोगान् भुक्त्वा चिरं कालमन्ते मोक्षमवाप्नुयात्।
तपस्विभिः कृतं स्तोत्रं स्नानकाले तु यः पठेत्॥ २७॥

यत्र कुत्र जले मग्नः सन्ध्यामज्जनजं फलम्।
लभते नात्र सन्देहः सत्यं सत्यं तु नारद॥ २८॥

शृणुयाद्योऽपि तद्भक्त्या स तु पापात् प्रमुच्यते।
पीयूषसदृशं वाक्यं सन्ध्योक्तं नारदेरितम्॥ २९॥

॥ इति श्री-गायत्री स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

❀❀❀

॥ कनकधारास्तवम् ॥

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती
भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला
माङ्गल्यदास्तु मम मङ्गलदेवतायाः ॥ १ ॥

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि।
माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या
सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः ॥ २ ॥

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्दम्
आनन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम् ।
आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रम्
भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः ॥ ३ ॥

बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या
हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥ ४ ॥

कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारेः
धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव।
मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्तिः
भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः ॥ ५ ॥

प्राप्तं पदं प्रथमतः खलु यत्प्रभावात्
माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन।
मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धम्
मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः ॥ ६ ॥

विश्वामरेन्द्रपदवीभ्रमदानदक्षम्
आनन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्द्धम्
इन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः ॥ ७ ॥

इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्र-
दृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते।
दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टाम्
पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः ॥ ८ ॥

दद्याद्दयानुपवनो द्रविणाम्बुधाराम्
अस्मिन्नकिञ्चनविहङ्गशिशौ विषण्णे।
दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरम्
नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः ॥ ९ ॥

गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति
शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति।
सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै
तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ॥ १० ॥

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै
रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै
पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै॥ ११ ॥

नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै
नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूम्यै।
नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै
नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै॥ १२ ॥

नमोऽस्तु हेमाम्बुजपीठिकायै
नमोऽस्तु भूमण्डलनायिकायै।
नमोऽस्तु देवादिदयापरायै
नमोऽस्तु शार्ङ्गायुधवल्लभायै॥ १३ ॥

नमोऽस्तु देव्यै भृगुनन्दनायै
नमोऽस्तु विष्णोरुरसि स्थितायै।
नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै
नमोऽस्तु दामोदरवल्लभायै॥ १४ ॥

नमोऽस्तु कान्त्यै कमलेक्षणायै
नमोऽस्तु भूत्यै भुवनप्रसूत्यै।
नमोऽस्तु देवादिभिरर्चितायै
नमोऽस्तु नन्दात्मजवल्लभायै॥ १५ ॥

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये॥ १६ ॥

यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः
सेवकस्य सकलार्थसम्पदः।
सन्तनोति वचनाङ्गमानसैः
त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे॥ १७॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्॥ १८॥

दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्ट-
स्वर्वाहिनी विमलचारुजलाप्लुताङ्गीम्।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष-
लोकाधिनाथगृहिणीम् अमृताब्धिपुत्रीम्॥ १९॥

कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं
करुणापूरतरङ्गितैरपाङ्गैः ।
अवलोकय मामकिञ्चनानां
प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः॥ २०॥

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमीभिरन्वहम्
त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम्।
गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो
भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः ॥ २१ ॥

देवि प्रसीद जगदीश्वरि लोकमातः
कल्याणगात्रि कमलेक्षणजीवनाथे।
दारिद्र्यभीतिहृदयं शरणागतं माम्
आलोकय प्रतिदिनं सदयैरपाङ्गैः ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-कनकधारास्तवं सम्पूर्णम् ॥

॥ महालक्ष्म्यष्टकम् ॥

इन्द्र उवाच

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥

नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयङ्करि।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि।
मन्त्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥ ४ ॥

आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्तिमहेश्वरि।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥५॥

स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्ति महोदरे।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥६॥

पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥७॥

श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥८॥

महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा॥

एककाले पठेन्नित्यं महापापविनाशनम्।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः॥

त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम्।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा॥

॥इति श्रीमद्पद्मपुराणे श्री-महालक्ष्म्यष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥लक्ष्मीस्तोत्रम् विष्णुपुराणान्तर्गतम्॥

श्री-पराशर उवाच

सिंहासनगतः शक्रः सम्प्राप्य त्रिदिवं पुनः।
देवराज्ये स्थितो देवीं तुष्टावाब्जकरां ततः॥१॥

इन्द्र उवाच

नमस्ये सर्वलोकानां जननीमब्जसम्भवाम्।
श्रियमुन्निद्रपद्माक्षीं विष्णुवक्षःस्थलस्थिताम्॥ २ ॥

पद्मालयां पद्मकरां पद्मपत्रनिभेक्षणाम्।
वन्दे पद्ममुखीं देवीं पद्मनाभप्रियामहम्॥ ३ ॥

त्वं सिद्धिस्त्वं स्वधा स्वाहा सुधा त्वं लोकपावनी।
सन्ध्या रात्रिः प्रभा भूतिर्मेधा श्रद्धा सरस्वती॥ ४ ॥

यज्ञविद्या महाविद्या गुह्यविद्या च शोभने।
आत्मविद्या च देवि त्वं विमुक्तिफलदायिनी॥ ५ ॥

आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिस्त्वमेव च।
सौम्यासौम्यैर्जगद्रूपैस्त्वयैतद्देवि पूरितम्॥ ६ ॥

का त्वन्या त्वामृते देवि सर्वयज्ञमयं वपुः।
अध्यास्ते देवदेवस्य योगचिन्त्यं गदाभृतः॥ ७ ॥

त्वया देवि परित्यक्तं सकलं भुवनत्रयम्।
विनष्टप्रायमभवत्त्वयेदानीं समेधितम्॥ ८ ॥

दाराः पुत्रास्तथाऽऽगारसुहृद्धान्यधनादिकम्।
भवत्येतन्महाभागे नित्यं त्वद्वीक्षणान्नृणाम्॥ ९ ॥

शरीरारोग्यमैश्वर्यमरिपक्षक्षयः सुखम्।
देवि त्वद्दृष्टिदृष्टानां पुरुषाणां न दुर्लभम्॥ १० ॥

त्वं माता सर्वलोकानां देवदेवो हरिः पिता।
त्वयैतद्विष्णुना चाम्ब जगद्व्याप्तं चराचरम्॥ ११ ॥

मा नः कोशस्तथा गोष्ठं मा गृहं मा परिच्छदम्।
मा शरीरं कलत्रं च त्यजेथाः सर्वपावनि॥१२॥

मा पुत्रान्मा सुहृद्वर्गं मा पशून्मा विभूषणम्।
त्यजेथा मम देवस्य विष्णोर्वक्षःस्थलालये॥१३॥

सत्त्वेन सत्यशौचाभ्यां तथा शीलादिभिर्गुणैः।
त्यज्यन्ते ते नराः सद्यः सन्त्यक्ता ये त्वयाऽमले॥१४॥

त्वया विलोकिताः सद्यः शीलाद्यैरखिलैर्गुणैः।
कुलैश्वर्यैश्च युज्यन्ते पुरुषा निर्गुणा अपि॥१५॥

स श्लाघ्यः स गुणी धन्यः स कुलीनः स बुद्धिमान्।
स शूरः स च विक्रान्तो यस्त्वया देवि वीक्षितः॥१६॥

सद्यो वैगुण्यमायान्ति शीलाद्याः सकला गुणाः।
पराङ्मुखी जगद्धात्री यस्य त्वं विष्णुवल्लभे॥१७॥

न ते वर्णयितुं शक्ता गुणाञ्जिह्वाऽपि वेधसः।
प्रसीद देवि पद्माक्षि माऽस्मांस्त्याक्षीः कदाचन॥१८॥

श्री-पराशर उवाच

एवं श्रीः संस्तुता सम्यक् प्राह हृष्टा शतक्रतुम्।
शृण्वतां सर्वदेवानां सर्वभूतस्थिता द्विज॥१९॥

श्रीरुवाच

परितुष्टाऽस्मि देवेश स्तोत्रेणानेन ते हरे।
वरं वृणीष्व यस्त्विष्टो वरदाऽहं तवाऽऽगता॥२०॥

इन्द्र उवाच

वरदा यदि मे देवि वरार्हो यदि वाऽप्यहम्।
त्रैलोक्यं न त्वया त्याज्यमेष मेऽस्तु वरः परः॥ २१॥

स्तोत्रेण यस्तथैतेन त्वां स्तोष्यत्यब्धिसम्भवे।
स त्वया न परित्याज्यो द्वितीयोऽस्तु वरो मम॥ २२॥

श्रीरुवाच

त्रैलोक्यं त्रिदशश्रेष्ठ न सन्त्यक्ष्यामि वासव।
दत्तो वरो मयाऽयं ते स्तोत्राराधनतुष्टया॥ २३॥

यश्च सायं तथा प्रातः स्तोत्रेणानेन मानवः।
मां स्तोष्यति न तस्याहं भविष्यामि पराङ्मुखी॥ २४॥

॥ इति श्री-विष्णुपुराणे श्री-लक्ष्मीस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ महालक्ष्मीस्तुतिः (अगस्त्यकृतम्)॥

अगस्तिरुवाच

मातर्नमामि कमले कमलायताक्षि
श्रीविष्णुहृत्कमलवासिनि विश्वमातः।
क्षीरोदजे कमलकोमलगर्भगौरि
लक्ष्मि प्रसीद सततं नमतां शरण्ये॥ १॥

त्वं श्रीरुपेन्द्रसदने मदनैकमातर्-
ज्योत्स्नाऽसि चन्द्रमसि चन्द्रमनोहरास्ये।
सूर्ये प्रभाऽसि च जगत्त्रितये प्रभाऽसि
लक्ष्मि प्रसीद सततं नमतां शरण्ये॥ २॥

त्वं जातवेदसि सदा दहनात्मशक्तिर्-
वेधास्त्वया जगदिदं विविधं विदध्यात्।
विश्वम्भरोऽपि बिभृयादखिलं भवत्या
लक्ष्मि प्रसीद सततं नमतां शरण्ये॥ ३॥

त्वत्त्यक्तमेतदमले हरते हरोऽपि
त्वं पासि हंसि विदधासि परावरासि।
ईड्यो बभूव हरिरप्यमले त्वदाप्त्या
लक्ष्मि प्रसीद सततं नमतां शरण्ये॥ ४॥

शूरः स एव स गुणी स बुधः स धन्यो
मान्यः स एव कुलशीलकलाकलापैः।
एकः शुचिः स हि पुमान् सकलेऽपि लोके
यत्रापतेत्तव शुभे करुणाकटाक्षः॥ ५॥

यस्मिन्वसेः क्षणमहो पुरुषे गजेऽश्वे
स्त्रैणे तृणे सरसि देवकुले गृहेऽन्ने।
रत्ने पतत्रिणि पशौ शयने धरायाम्
सश्रीकमेव सकले तदिहास्ति नान्यत्॥ ६॥

त्वत्स्पृष्टमेव सकलं शुचितां लभेत
त्वत्त्यक्तमेव सकलं त्वशुचीह लक्ष्मि।
त्वन्नाम यत्र च सुमङ्गलमेव तत्र
श्रीविष्णुपत्नि कमले कमलालयेऽपि॥ ७॥

लक्ष्मीं श्रियं च कमलां कमलालयां च
पद्मां रमां नलिनयुग्मकरां च मां च।
क्षीरोदजाममृतकुम्भकरामिरां च
विष्णुप्रियामिति सदा जपतां क्व दुःखम्॥८॥

ये पठिष्यन्ति च स्तोत्रं त्वद्भक्त्या मत्कृतं सदा।
तेषां कदाचित् सन्तापो माऽस्तु माऽस्तु दरिद्रता॥९॥

माऽस्तु चेष्टवियोगश्च माऽस्तु सम्पत्तिसङ्क्षयः।
सर्वत्र विजयश्चाऽस्तु विच्छदो माऽस्तु सन्ततेः॥१०॥

श्रीरुवाच

एवमस्तु मुने सर्वं यत्त्वया परिभाषितम्।
एतत् स्तोत्रस्य पठनं मम सान्निध्यकारणम्॥११॥

अलक्ष्मीः कालकर्णी च तद्गेहे न विशेत् क्वचित्।
गजाश्वपशुशान्त्यर्थमेतत्स्तोत्रं सदा जपेत्॥१२॥

इदं बीजरहस्यं मे रक्षणीयं प्रयत्नतः।
श्रद्धाहीने न दातव्यं न देयश्चाशुचौ क्वचित्॥१३॥

॥इति श्रीस्कन्दमहापुराणे एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां चतुर्थे काशीखण्डेऽगस्त्यप्रस्थानं नाम पञ्चमेऽध्याये श्री-अगस्तिकृता महालक्ष्मीस्तुतिः सम्पूर्णा॥

॥ सरस्वतीस्तोत्रम् अगस्त्यमुनि प्रोक्तम् ॥

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा पूजिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥ १ ॥

दोर्भिर्युक्ता चतुर्भिः स्फटिकमणिनिभैरक्षमालां दधाना
हस्तेनैकेन पद्मं सितमपि च शुकं पुस्तकं चापरेण।
भासा कुन्देन्दुशङ्खस्फटिकमणिनिभा भासमानाऽसमाना
सा मे वाग्देवतेयं निवसतु वदने सर्वदा सुप्रसन्ना॥ २ ॥

सुरासुरसेवितपादपङ्कजा
करे विराजत्कमनीयपुस्तका।
विरिञ्चिपत्नी कमलासनस्थिता
सरस्वती नृत्यतु वाचि मे सदा॥ ३ ॥

सरस्वती सरसिजकेसरप्रभा
तपस्विनी सितकमलासनप्रिया।
घनस्तनी कमलविलोललोचना
मनस्विनी भवतु वरप्रसादिनी॥ ४ ॥

सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि।
विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा॥ ५ ॥

सरस्वति नमस्तुभ्यं सर्वदेवि नमो नमः।
शान्तरूपे शशिधरे सर्वयोगे नमो नमः॥ ६ ॥

नित्यानन्दे निराधारे निष्कलायै नमो नमः।
विद्याधरे विशालाक्षि शुद्धज्ञाने नमो नमः॥७॥

शुद्धस्फटिकरूपायै सूक्ष्मरूपे नमो नमः।
शब्दब्रह्मि चतुर्हस्ते सर्वसिद्ध्यै नमो नमः॥८॥

मुक्तालङ्कृत-सर्वाङ्ग्यै मूलाधारे नमो नमः।
मूलमन्त्रस्वरूपायै मूलशक्त्यै नमो नमः॥९॥

मनो मणिमहायोगे वागीश्वरि नमो नमः।
वाग्भ्यै वरदहस्तायै वरदायै नमो नमः॥१०॥

वेदायै वेदरूपायै वेदान्तायै नमो नमः।
गुणदोषविवर्जिन्यै गुणदीप्त्यै नमो नमः॥११॥

सर्वज्ञाने सदानन्दे सर्वरूपे नमो नमः।
सम्पन्नायै कुमार्यै च सर्वज्ञे ते नमो नमः॥१२॥

योगानार्य उमादेव्यै योगानन्दे नमो नमः।
दिव्यज्ञान त्रिनेत्रायै दिव्यमूर्त्यै नमो नमः॥१३॥

अर्धचन्द्रजटाधारि चन्द्रबिम्बे नमो नमः।
चन्द्रादित्यजटाधारि चन्द्रबिम्बे नमो नमः॥१४॥

अणुरूपे महारूपे विश्वरूपे नमो नमः।
अणिमाद्यष्टसिद्धायै आनन्दायै नमो नमः॥१५॥

ज्ञान-विज्ञान-रूपायै ज्ञानमूर्ते नमो नमः।
नानाशास्त्र-स्वरूपायै नानारूपे नमो नमः॥१६॥

पद्मदा पद्मवंशा च पद्मरूपे नमो नमः।
परमेष्ठ्यै परामूर्त्यै नमस्ते पापनाशिनि॥ १७॥

महादेव्यै महाकाल्यै महालक्ष्म्यै नमो नमः।
ब्रह्मविष्णुशिवायै च ब्रह्मनार्यै नमो नमः॥ १८॥

कमलाकरपुष्पा च कामरूपे नमो नमः।
कपालि कर्मदीप्तायै कर्मदायै नमो नमः॥ १९॥

सायं प्रातः पठेन्नित्यं षण्मासात् सिद्धिरुच्यते।
चोरव्याघ्रभयं नास्ति पठतां शृण्वतामपि॥ २०॥

इत्थं सरस्वतीस्तोत्रम् अगस्त्यमुनिवाचकम्।
सर्वसिद्धिकरं नृणां सर्वपापप्रणाशनम्॥ २१॥

॥ इति श्री-अगस्त्यमुनि-प्रोक्तं श्री-सरस्वतीस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ सिद्धसरस्वतीस्तोत्रं श्रीमद्-ब्रह्मविरचितम्॥

॥ न्यासः॥

ॐ अस्य श्रीसरस्वतीस्तोत्रमन्त्रस्य।
ब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीसरस्वती देवता।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः।

॥ स्तोत्रम्॥

आरूढा श्वेतहंसे भ्रमति च गगने दक्षिणे चाक्षसूत्रम्
वामे हस्ते च दिव्याम्बरकनकमयं पुस्तकं ज्ञानगम्या।
सा वीणां वादयन्ती स्वकरकरजपैः शास्त्रविज्ञानशब्दैः
क्रीडन्ती दिव्यरूपा करकमलधरा भारती सुप्रसन्ना॥ १॥

श्वेतपद्मासना देवी श्वेतगन्धानुलेपना।
अर्चिता मुनिभिः सर्वैर्ऋषिभिः स्तूयते सदा।
एवं ध्यात्वा सदा देवीं वाञ्छितं लभते नरः॥ २॥

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीम्
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्॥ ३॥

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥ ४॥

ह्लीं ह्लौं हृद्यैकबीजे शशिरुचिकमले कल्पविस्पष्टशोभे
भव्ये भव्यानुकूले कुमतिवनदवे विश्ववन्द्याङ्घ्रिपद्मे।
पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणजनमनोमोदसम्पादयित्रि
प्रोत्फुल्लज्ञानकूटे हरिनिजदयिते देवि संहारसारे॥ ५॥

ऐं ऐं ऐं दृष्टमन्त्रे कमलभवमुखाम्भोजभूतस्वरूपे
रूपारूपप्रकाशे सकलगुणमये निर्गुणे निर्विकारे।
न स्थूले नैव सूक्ष्मेऽप्यविदितविभवे नापि विज्ञानतत्त्वे
विश्वे विश्वान्तरात्मे सुरवरनमिते निष्कले नित्यशुद्धे॥ ६॥

ह्लीं ह्लीं ह्लीं जाप्यतुष्टे हिमरुचिमुकुटे वल्लकीव्यग्रहस्ते
मातर्मातर्नमस्ते दह दह जडतां देहि बुद्धिं प्रशस्ताम्।
विद्ये वेदान्तवेद्ये परिणतपठिते मोक्षदे मुक्तिमार्गे
मार्गातीतस्वरूपे भव मम वरदा शारदे शुभ्रहारे॥ ७॥

धीं धीं धीं धारणाख्ये धृतिमतिनतिभिर्नामभिः कीर्तनीये
नित्येऽनित्ये निमित्ते मुनिगणनमिते नूतने वै पुराणे।
पुण्ये पुण्यप्रवाहे हरिहरनमिते नित्यशुद्धे सुवर्णे
मातर्मात्रार्धतत्त्वे मतिमति मतिदे माधवप्रीतिमोदे॥८॥

हूं हूं हूं स्वरूपे दह दह दुरितं पुस्तकव्यग्रहस्ते
सन्तुष्टाकारचित्ते स्मितमुखि सुभगे जृम्भिणि स्तम्भविद्ये।
मोहे मुग्धप्रवाहे कुरु मम विमतिध्वान्तविध्वंसमीडे
गीर्गौर्वाग्भारति त्वं कविवररसनासिद्धिदे सिद्धिसाध्ये॥९॥

स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे मम खलु रसनां नो कदाचित् त्यजेथा
मा मे बुद्धिर्विरुद्धा भवतु न च मनो देवि मे यातु पापम्।
मा मे दुःखं कदाचित् क्वचिदपि विषयेऽप्यस्तु मे नाकुलत्वम्
शास्त्रे वादे कवित्वे प्रसरतु मम धीर्माऽस्तु कुण्ठा कदाऽपि॥१०॥

इत्येतैः श्लोकमुख्यैः प्रतिदिनमुषसि स्तौति यो भक्तिनम्रो
वाणी वाचस्पतेरप्यविदितविभवो वाक्पटुर्मृष्टकण्ठः।
स्यादिष्टाद्यर्थलाभैः सुतमिव सततं पातितं सा च देवी
सौभाग्यं तस्य लोके प्रभवति कविता विघ्नमस्तं प्रयाति॥११॥

निर्विघ्नं तस्य विद्या प्रभवति सततं चाश्रुतग्रन्थबोधः
कीर्तिस्त्रैलोक्यमध्ये निवसति वदने शारदा तस्य साक्षात्।
दीर्घायुर्लोकपूज्यः सकलगुणनिधिः सन्ततं राजमान्यो -
वाग्देव्याः सम्प्रसादात् त्रिजगति विजयी जायते सत्सभासु॥१२॥

ब्रह्मचारी व्रती मौनी त्रयोदश्यां निरामिषः।
सारस्वतो जनः पाठात् सकृदिष्टार्थलाभवान्॥१३॥

पक्षद्वये त्रयोदश्याम् एकविंशतिसङ्ख्यया।
अविच्छिन्नः पठेद्धीमान् ध्यात्वा देवीं सरस्वतीम्॥ १४॥

सर्वपापविनिर्मुक्तः सुभगो लोकविश्रुतः।
वाञ्छितं फलमाप्नोति लोकेऽस्मिन्नात्र संशयः॥ १५॥

ब्रह्मणेति स्वयं प्रोक्तं सरस्वत्याः स्तवं शुभम्।
प्रयत्नेन पठेन्नित्यं सोऽमृतत्वाय कल्पते॥ १६॥

॥ इति श्रीमद्ब्रह्मणा विरचितं श्री-सिद्धसरस्वतीस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ शारदाभुजङ्गप्रयाताष्टकम्॥

सुवक्षोजकुम्भां सुधापूर्णकुम्भाम्
प्रसादावलम्बां प्रपुण्यावलम्बाम्।
सदास्येन्दुबिम्बां सदानोष्ठबिम्बाम्
भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम्॥ १॥

कटाक्षे दयार्द्रां करे ज्ञानमुद्राम्
कलाभिर्विनिद्रां कलापैः सुभद्राम्।
पुरस्त्रीं विनिद्रां पुरस्तुङ्गभद्राम्
भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम्॥ २॥

ललामाङ्कफालां लसद्गानलोलाम्
स्वभक्तैकपालां यशःश्रीकपोलाम्।
करे त्वक्षमालां कनत्प्रत्नलोलाम्
भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम्॥ ३॥

सुसीमन्तवेणीं दृशा निर्जितैणीम्
रमत्कीरवाणीं नमद्वज्रपाणीम्।
सुधामन्थरास्यां मुदा चिन्त्यवेणीम्
भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम्॥४॥

सुशान्तां सुदेहां दृगन्ते कचान्ताम्
लसत्सल्लताङ्गीमनन्तामचिन्त्याम्।
स्मरेत्तापसैः सङ्गपूर्वस्थितां ताम्
भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम्॥५॥

कुरङ्गे तुरङ्गे मृगेन्द्रे खगेन्द्रे
मराले मदेभे महोक्षेऽधिरूढाम्।
महत्यां नवम्यां सदा सामरूपाम्
भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम्॥६॥

ज्वलत्कान्तिवह्निं जगन्मोहनाङ्गीम्
भजे मानसाम्भोजसुभ्रान्तभृङ्गीम्।
निजस्तोत्रसङ्गीतनृत्यप्रभाङ्गीम्
भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम्॥७॥

भवाम्भोजनेत्राजसम्पूज्यमानाम्
लसन्मन्दहासप्रभावक्त्रचिह्नाम् ।
चलच्चञ्चलाचारुताटङ्ककर्णौ
भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम्॥८॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-शारदाभुजङ्गप्रयाताष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ शारदा प्रार्थना ॥

नमस्ते शारदे देवि काश्मीरपुरवासिनि।
त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च देहि मे ॥ १ ॥

या श्रद्धा धारणा मेधा वाग्देवी विधिवल्लभा।
भक्तजिह्वाग्रसदना शमादिगुणदायिनी ॥ २ ॥

नमामि यामिनीं नाथलेखालङ्कृतकुन्तलाम्।
भवानीं भवसन्तापनिर्वापणसुधानदीम् ॥ ३ ॥

भद्रकाल्यै नमो नित्यं सरस्वत्यै नमो नमः।
वेदवेदाङ्गवेदान्तविद्यास्थानेभ्य एव च ॥ ४ ॥

ब्रह्मस्वरूपा परमा ज्योतिरूपा सनातनी।
सर्वविद्याधिदेवी या तस्यै वाण्यै नमो नमः ॥ ५ ॥

यया विना जगत्सर्वं शश्वज्जीवन्मृतं भवेत्।
ज्ञानाधिदेवी या तस्यै सरस्वत्यै नमो नमः ॥ ६ ॥

यया विना जगत्सर्वं मूकमुन्मत्तवत् सदा।
या देवी वागधिष्ठात्री तस्यै वाण्यै नमो नमः ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-शारदा-प्रार्थना सम्पूर्णा ॥

॥ वाणीस्तवनम् ॥

श्री-नारायण उवाच

वाग्देवतायाः स्तवनं श्रूयतां सर्वकामदम्।
महामुनिर्याज्ञवल्क्यो येन तुष्टाव तां पुरा॥ १ ॥

गुरुशापाच्च स मुनिर्हतविद्यो बभूव ह।
तदा जगाम दुःखार्तो रविस्थानं च पुण्यदम्॥ २ ॥

सम्प्राप्य तपसा सूर्यं कोणार्के दृष्टिगोचरे।
तुष्टाव सूर्यं शोकेन रुरोद स पुनः पुनः॥ ३ ॥

सूर्यस्तं पाठयामास वेदवेदाङ्गमीश्वरः।
उवाच स्तुहि वाग्देवीं भक्त्या च स्मृतिहेतवे॥ ४ ॥

तमित्युक्त्वा दीननाथो ह्यन्तर्धानं जगाम सः।
मुनिः स्नात्वा च तुष्टाव भक्तिनम्रात्मकन्धरः॥ ५ ॥

याज्ञवल्क्य उवाच

कृपां कुरु जगन्मातर्मामेवं हततेजसम्।
गुरुशापात्स्मृतिभ्रष्टं विद्याहीनं च दुःखितम्॥ ६ ॥

ज्ञानं देहि स्मृतिं देहि विद्यां विद्याधिदेवते।
प्रतिष्ठां कवितां देहि शाक्तं शिष्यप्रबोधिकाम्॥ ७ ॥

ग्रन्थनिर्मितिशक्तिं च सच्छिष्यं सुप्रतिष्ठितम्।
प्रतिभां सत्सभायां च विचारक्षमतां शुभाम्॥ ८ ॥

लुप्तां सर्वां दैववशान्नवं कुरु पुनः पुनः।
यथाऽङ्कुरं जनयति भगवान्योगमायया॥९॥

ब्रह्मस्वरूपा परमा ज्योतिरूपा सनातनी।
सर्वविद्याधिदेवी या तस्यै वाण्यै नमो नमः॥१०॥

यया विना जगत्सर्वं शश्वज्जीवन्मृतं सदा।
ज्ञानाधिदेवी या तस्यै सरस्वत्यै नमो नमः॥११॥

यया विना जगत्सर्वं मूकमुन्मत्तवत्सदा।
वागधिष्ठातृदेवी या तस्यै वाण्यै नमो नमः॥१२॥

हिमचन्दनकुन्देन्दुकुमुदाम्भोजसन्निभा ।
वर्णाधिदेवी या तस्यै चाक्षरायै नमो नमः॥१३॥

विसर्गबिन्दुमात्राणां यदधिष्ठानमेव च।
इत्थं त्वं गीयसे सद्भिर्भारत्यै ते नमो नमः॥१४॥

यया विनाऽत्र सङ्ख्याकृत्सङ्ख्यां कर्तुं न शक्नुते।
कालसङ्ख्यास्वरूपा या तस्यै देव्यै नमो नमः॥१५॥

व्याख्यास्वरूपा या देवी व्याख्याधिष्ठातृदेवता।
भ्रमसिद्धान्तरूपा या तस्यै देव्यै नमो नमः॥१६॥

स्मृतिशक्तिर्ज्ञानशक्तिर्बुद्धिशक्तिस्वरूपिणी ।
प्रतिभा कल्पनाशक्तिर्या च तस्यै नमो नमः॥१७॥

सनत्कुमारो ब्रह्माणं ज्ञानं पप्रच्छ यत्र वै।
बभूव जडवत्सोऽपि सिद्धान्तं कर्तुमक्षमः॥१८॥

तदाऽऽजगाम भगवानात्मा श्रीकृष्ण ईश्वरः।
उवाच स च तं स्तौहि वाणीमिति प्रजापते॥१९॥

स च तुष्टाव तां ब्रह्मा चाऽऽज्ञया परमात्मनः।
चकार तत्प्रसादेन तदा सिद्धान्तमुत्तमम्॥२०॥

यदाप्यनन्तं पप्रच्छ ज्ञानमेकं वसुन्धरा।
बभूव मूकवत्सोऽपि सिद्धान्तं कर्तुमक्षमः॥२१॥

तदा त्वां च स तुष्टाव सन्त्रस्तः कश्यपाज्ञया।
ततश्चकार सिद्धान्तं निर्मलं भ्रमभञ्जनम्॥२२॥

व्यासः पुराणसूत्रं समपृच्छद्वाल्मिकिं यदा।
मौनीभूतः स सस्मार त्वामेव जगदम्बिकाम्॥२३॥

तदा चकार सिद्धान्तं त्वद्वरेण मुनीश्वरः।
स प्राप निर्मलं ज्ञानं प्रमादध्वंसकारणम्॥२४॥

पुराणसूत्रं श्रुत्वा स व्यासः कृष्णकलोद्भवः।
त्वां सिषेवे च दध्यौ तं शतवर्षं च पुष्करे॥२५॥

तदा त्वत्तो वरं प्राप्य स कवीन्द्रो बभूव ह।
तदा वेदविभागं च पुराणानि चकार ह॥२६॥

यदा महेन्द्रे पप्रच्छ तत्त्वज्ञानं शिवा शिवम्।
क्षणं त्वामेव सञ्चिन्त्य तस्यै ज्ञानं ददौ विभुः॥२७॥

पप्रच्छ शब्दशास्त्रं च महेन्द्रश्च बृहस्पतिम्।
दिव्यं वर्षसहस्त्रं च स त्वां दध्यौ च पुष्करे॥२८॥

तदा त्वत्तो वरं प्राप्य दिव्यं वर्षसहस्रकम्।
उवाच शब्दशास्त्रं च तदर्थं च सुरेश्वरम्॥ २९॥

अध्यापिताश्च यैः शिष्या यैरधीतं मुनीश्वरैः।
ते च त्वां परिसञ्चिन्त्य प्रवर्तन्ते सुरेश्वरि॥ ३०॥

त्वं संस्तुता पूजिता च मुनीन्द्रमनुमानवैः।
दैत्येन्द्रैश्च सुरैश्चापि ब्रह्मविष्णुशिवादिभिः॥ ३१॥

जडीभूतः सहस्रास्यः पञ्चवक्त्रश्चतुर्मुखः।
यां स्तोतुं किमहं स्तौमि तामेकास्येन मानवः॥ ३२॥

इत्युक्त्वा याज्ञवल्क्यश्च भक्तिनम्रात्मकन्धरः।
प्रणनाम निराहारो रुरोद च मुहुर्मुहुः॥ ३३॥

तदा ज्योतिः स्वरूपा सा तेनाऽदृष्टाऽप्युवाच तम्।
सुकवीन्द्रो भवेत्युक्त्वा वैकुण्ठं च जगाम ह॥ ३४॥

महामूर्खश्च दुर्मेधा वर्षमेकं च यः पठेत्।
स पण्डितश्च मेधावी सुकविश्च भवेद्ध्रुवम्॥ ३५॥

॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्तमहापुराणे प्रकृतिखण्डे श्री-नारद-नारायण-संवादे श्री-याज्ञवल्क्योक्तं श्री-वाणीस्तवनं सम्पूर्णम्॥

॥ सरस्वतीस्तोत्रं बृहस्पतिविरचितम्॥

बृहस्पतिरुवाच

सरस्वति नमस्यामि चेतनां हृदि संस्थिताम्।
कण्ठस्थां पद्मयोनिं त्वां ह्रीङ्कारां सुप्रियां सदा॥ १॥

मतिदां वरदां चैव सर्वकामफलप्रदाम्।
केशवस्य प्रियां देवीं वीणाहस्तां वरप्रदाम्॥ २॥

मन्त्रप्रियां सदा हृद्यां कुमतिध्वंसकारिणीम्।
स्वप्रकाशां निरालम्बामज्ञानतिमिरापहाम्॥ ३॥

मोक्षप्रियां शुभां नित्यां सुभगां शोभनप्रियाम्।
पद्मोपविष्टां कुण्डलिनीं शुक्लवस्त्रां मनोहराम्॥ ४॥

आदित्यमण्डले लीनां प्रणमामि जनप्रियाम्।
ज्ञानाकारां जगद्दीपां भक्तविघ्नविनाशिनीम्॥ ५॥

इति सत्यं स्तुता देवी वागीशेन महात्मना।
आत्मानं दर्शयामास शरदिन्दुसमप्रभाम्॥ ६॥

श्रीसरस्वत्युवाच

वरं वृणीष्व भद्रं त्वं यत्ते मनसि वर्तते।

बृहस्पतिरुवाच

प्रसन्ना यदि मे देवि परं ज्ञानं प्रयच्छ मे॥ ७॥

श्रीसरस्वत्युवाच

दत्तं ते निर्मलं ज्ञानं कुमतिध्वंसकारकम्।
स्तोत्रेणानेन मां भक्त्या ये स्तुवन्ति सदा नराः॥ ८॥

लभन्ते परमं ज्ञानं मम तुल्यपराक्रमाः।
कवित्वं मत्प्रसादेन प्राप्नुवन्ति मनोगतम्॥ ९॥

त्रिसन्ध्यं प्रयतो भूत्वा यस्त्विमं पठते नरः।
तस्य कण्ठे सदा वासं करिष्यामि न संशयः॥१०॥

॥इति श्री-रुद्रयामले श्री-बृहस्पतिविरचितं श्री-सरस्वतीस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

❁❁❁

॥ सुब्रह्मण्यभुजङ्गम् ॥

सदा बालरूपाऽपि विघ्नाद्रिहन्त्री
महादन्तिवक्त्राऽपि पञ्चास्यमान्या।
विधीन्द्रादिमृग्या गणेशाभिधा मे
विधत्तां श्रियं काऽपि कल्याणमूर्तिः ॥ १ ॥

न जानामि शब्दं न जानामि चार्थम्
न जानामि पद्यं न जानामि गद्यम्।
चिदेका षडास्या हृदि द्योतते मे
मुखान्निस्सरन्ते गिरश्चापि चित्रम्॥ २ ॥

मयूराधिरूढं महावाक्यगूढम्
मनोहारिदेहं महच्चित्तगेहम्।
महीदेवदेवं महावेदभावम्
महादेवबालं भजे लोकपालम्॥ ३ ॥

यदा सन्निधानं गता मानवा मे
भवाम्भोधिपारं गतास्ते तदैव।
इति व्यञ्जयन् सिन्धुतीरे य आस्ते
तमीडे पवित्रं पराशक्तिपुत्रम्॥ ४ ॥

यथाब्धेस्तरङ्गा लयं यान्ति तुङ्गास्-
तथैवापदः सन्निधौ सेवतां मे।
इतीवोर्मिपङ्क्तीर्नृणां दर्शयन्तम्
सदा भावये हृत्सरोजे गुहं तम्॥ ५ ॥

गिरौ मन्निवासे नरा येऽधिरूढास्-
तदा पर्वते राजते तेऽधिरूढाः।
इतीव ब्रुवन् गन्धशैलाधिरूढः
स देवो मुदे मे सदा षण्मुखोऽस्तु॥ ६॥

महाम्भोधितीरे महापापचोरे
मुनीन्द्रानुकूले सुगन्धाख्यशैले।
गुहायां वसन्तं स्वभासा लसन्तम्
जनार्तिं हरन्तं श्रयामो गुहं तम्॥ ७॥

लसत्स्वर्णगेहे नृणां कामदोहे
सुमस्तोमसञ्छन्नमाणिक्यमञ्चे।
समुद्यत्सहस्रार्कतुल्यप्रकाशम्
सदा भावये कार्त्तिकेयं सुरेशम्॥ ८॥

रणद्धंसके मञ्जुलेऽत्यन्तशोणे
मनोहारिलावण्यपीयूषपूर्णे।
मनःषट्पदो मे भवक्लेशतप्तः
सदा मोदतां स्कन्द ते पादपद्मे॥ ९॥

सुवर्णाभदिव्याम्बरैर्भासमानाम्
क्वणत्किङ्किणीमेखलाशोभमानाम्।
लसद्धेमपट्टेन विद्योतमानाम्
कटिं भावये स्कन्द ते दीप्यमानाम्॥ १०॥

पुलिन्देशकन्याघनाभोगतुङ्ग-
स्तनालिङ्गनासक्तकाश्मीररागम्।
नमस्याम्यहं तारकारे तवोरः
स्वभक्तावने सर्वदा सानुरागम्॥ ११॥

विधौ क्लृप्तदण्डान् स्वलीलाधृताण्डान्
निरस्तेभशुण्डान् द्विषत्कालदण्डान्।
हतेन्द्रारिषण्डाञ्जगत्त्राणशौण्डान्
सदा ते प्रचण्डान् श्रये बाहुदण्डान्॥ १२॥

सदा शारदाः षण्मृगाङ्का यदि स्युः
समुद्यन्त एव स्थिताश्चेत् समन्तात्।
सदा पूर्णबिम्बाः कलङ्कैश्च हीनास्-
तदा त्वन्मुखानां ब्रुवे स्कन्द साम्यम्॥ १३॥

स्फुरन्मन्दहासैः सहंसानि चञ्चत्
कटाक्षावलीभृङ्गसङ्घोज्ज्वलानि ।
सुधास्यन्दिबिम्बाधराणीशसूनो
तवाऽऽलोकये षण्मुखाम्भोरुहाणि॥ १४॥

विशालेषु कर्णान्तदीर्घेष्वजस्रम्
दयास्यन्दिषु द्वादशस्वीक्षणेषु।
मयीषत् कटाक्षः सकृत् पातितश्चेद्-
भवेत् ते दयाशील का नाम हानिः॥ १५॥

सुताङ्गोद्भवो मेऽसि जीवेति षड्वा
जपन् मन्त्रमीशो मुदा जिघ्रते यान्।
जगद्भारभृद्भ्यो जगन्नाथ तेभ्यः
किरीटोज्ज्वलेभ्यो नमो मस्तकेभ्यः॥ १६॥

स्फुरद्रत्नकेयूरहाराभिरामश्-
चलत्कुण्डलश्रीलसद्गण्डभागः।
कटौ पीतवासाः करे चारुशक्तिः
पुरस्तान्ममास्तां पुरारेस्तनूजः॥ १७॥

इहाऽऽयाहि वत्सेति हस्तान् प्रसार्या-
ऽऽह्वयत्यादराच्छङ्करे मातुरङ्कात्।
समुत्पत्य तातं श्रयन्तं कुमारम्
हराश्लिष्टगात्रं भजे बालमूर्तिम्॥ १८॥

कुमारेशसूनो गुह स्कन्द सेना-
पते शक्तिपाणे मयूराधिरूढ।
पुलिन्दात्मजाकान्त भक्तार्तिहारिन्
प्रभो तारकारे सदा रक्ष मां त्वम्॥ १९॥

प्रशान्तेन्द्रिये नष्टसंज्ञे विचेष्टे
कफोद्गारिवक्त्रे भयोत्कम्पिगात्रे।
प्रयाणोन्मुखे मय्यनाथे तदानीम्
द्रुतं मे दयालो भवाग्रे गुह त्वम्॥ २०॥

कृतान्तस्य दूतेषु चण्डेषु कोपाद्-
दहच्छिन्धि भिन्धीति मां तर्जयत्सु।
मयूरं समारुह्य मा भीरिति त्वम्
पुरः शक्तिपाणिर्ममाऽऽयाहि शीघ्रम्॥२१॥

प्रणम्यासकृत् पादयोस्ते पतित्वा
प्रसाद्य प्रभो प्रार्थयेऽनेकवारम्।
न वक्तुं क्षमोऽहं तदानीं कृपाब्धे
न कार्याऽन्तकाले मनागप्युपेक्षा॥२२॥

सहस्राण्डभोक्ता त्वया शूरनामा
हतस्तारकः सिंहवक्त्रश्च दैत्यः।
ममान्तर्हृदिस्थं मनःक्लेशमेकम्
न हंसि प्रभो किं करोमि क्व यामि॥२३॥

अहं सर्वदा दुःखभारावसन्नो -
भवान् दीनबन्धुस्त्वदन्यं न याचे।
भवद्भक्तिरोधं सदा क्लृप्तबाधम्
ममाधिं द्रुतं नाशयोमासुत त्वम्॥२४॥

अपस्मारकुष्ठक्षयार्शःप्रमेह-
ज्वरोन्मादगुल्मादिरोगा महान्तः।
पिशाचाश्च सर्वे भवत्पत्रभूतिम्
विलोक्य क्षणात् तारकारे द्रवन्ते॥२५॥

दृशि स्कन्दमूर्तिः श्रुतौ स्कन्दकीर्तिर्-
मुखे मे पवित्रं सदा तच्चरित्रम्।
करे तस्य कृत्यं वपुस्तस्य भृत्यम्
गुहे सन्तु लीना ममाशेषभावाः॥ २६॥

मुनीनामुताहो नृणां भक्तिभाजाम्
अभीष्टप्रदाः सन्ति सर्वत्र देवाः।
नृणामन्त्यजानामपि स्वार्थदाने
गुहाद्देवमन्यं न जाने न जाने॥ २७॥

कलत्रं सुता बन्धुवर्गः पशुर्वा
नरो वाऽथ नारी गृहे ये मदीयाः।
यजन्तो नमन्तः स्तुवन्तो भवन्तम्
स्मरन्तश्च ते सन्तु सर्वे कुमार॥ २८॥

मृगाः पक्षिणो दंशका ये च दुष्टास्-
तथा व्याधयो बाधका ये मदङ्गे।
भवच्छक्तितीक्ष्णाग्रभिन्नाः सुदूरे
विनश्यन्तु ते चूर्णितक्रौञ्चशैल॥ २९॥

जनित्री पिता च स्वपुत्रापराधम्
सहेते न किं देवसेनाधिनाथ।
अहं चातिबालो भवाँल्लोकतातः
क्षमस्वापराधं समस्तं महेश॥ ३०॥

नमः केकिने शक्तये चापि तुभ्यम्
नमश्छाग तुभ्यं नमः कुक्कुटाय।
नमः सिन्धवे सिन्धुदेशाय तुभ्यम्
पुनः स्कन्दमूर्ते नमस्ते नमोऽस्तु॥ ३१॥

जयाऽऽनन्दभूमन् जयापारधामन्
जयामोघकीर्ते जयाऽऽनन्दमूर्ते।
जयाऽऽनन्दसिन्धो जयाशेषबन्धो
जय त्वं सदा मुक्तिदानेशसूनो॥ ३२॥

भुजङ्गाख्यवृत्तेन क्लृप्तं स्तवं यः
पठेद्भक्तियुक्तो गुहं सम्प्रणम्य।
स पुत्रान् कलत्रं धनं दीर्घमायुर्-
लभेत् स्कन्दसायुज्यमन्ते नरः सः॥ ३३॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-सुब्रह्मण्यभुजङ्गं सम्पूर्णम्॥

॥ गुहपञ्चरत्नम्॥

ओङ्कारनगरस्थं तं निगमान्तवनेश्वरम्।
नित्यमेकं शिवं शान्तं वन्दे गुहमुमासुतम्॥ १॥

वाचामगोचरं स्कन्दं चिदुद्यानविहारिणम्।
गुरुमूर्तिं महेशानं वन्दे गुहमुमासुतम्॥ २॥

सच्चिदनन्दरूपेशं संसारध्वान्तदीपकम्।
सुब्रह्मण्यमनाद्यन्तं वन्दे गुहमुमासुतम्॥ ३॥

स्वामिनाथं दयासिन्धुं भवाब्धेस्तारकं प्रभुम्।
निष्कलङ्कं गुणातीतं वन्दे गुहमुमासुतम्॥४॥

निराकारं निराधारं निर्विकारं निरामयम्।
निर्द्वन्द्वं च निरालम्बं वन्दे गुहमुमासुतम्॥५॥

॥इति श्री-गुहपञ्चरत्नं सम्पूर्णम्॥

॥सुब्रह्मण्यपञ्चरत्नम्॥

षडाननं चन्दनलेपिताङ्गं
महोरसं दिव्यमयूरवाहनम्।
रुद्रस्य सूनुं सुरलोकनाथं
ब्रह्मण्यदेवं शरणं प्रपद्ये॥१॥

जाज्वल्यमानं सुरवृन्दवन्द्यं
कुमार-धारातट-मन्दिरस्थम्।
कन्दर्परूपं कमनीयगात्रं
ब्रह्मण्यदेवं शरणं प्रपद्ये॥२॥

द्विषड्भुजं द्वादशदिव्यनेत्रं
त्रयीतनुं शूलमसीदधानम्।
शेषावतारं कमनीयरूपं
ब्रह्मण्यदेवं शरणं प्रपद्ये॥३॥

सुरारिघोराहवशोभमानं
सुरोत्तमं शक्तिधरं कुमारम्।
सुधार-शक्त्यायुध-शोभिहस्तं
ब्रह्मण्यदेवं शरणं प्रपद्ये॥४॥

इष्टार्थसिद्धिप्रदमीशपुत्रं
मिष्टान्नदं भूसुरकामधेनुम्।
गङ्गोद्भवं सर्वजनानुकूलं
ब्रह्मण्यदेवं शरणं प्रपद्ये॥५॥

यः श्लोकपञ्चकमिदं पठतीह भक्त्या
ब्रह्मण्यदेव-विनिवेशित-मानसः सन्।
प्राप्नोति भोगमखिलं भुवि यद्यदिष्टम्
अन्ते स गच्छति मुदा गुहसाम्यमेव॥

॥इति श्री-सुब्रह्मण्यपञ्चरत्नं सम्पूर्णम्॥

॥प्रज्ञाविवर्धन-कार्त्तिकेय-स्तोत्रम्॥

स्कन्द उवाच

योगीश्वरो महासेनः कार्त्तिकेयोऽग्निनन्दनः।
स्कन्दः कुमारः सेनानीः स्वामी शङ्करसम्भवः॥१॥

गाङ्गेयस्ताम्रचूडश्च ब्रह्मचारी शिखिध्वजः।
तारकारिरुमापुत्रः क्रौञ्चारिश्च षडाननः॥२॥

शब्दब्रह्मसमुद्रश्च सिद्धः सारस्वतो गुहः।
सनत्कुमारो भगवान् भोगमोक्षफलप्रदः॥३॥

शरजन्मा गणाधीशपूर्वजो मुक्तिमार्गकृत्।
सर्वागमप्रणेता च वाञ्छितार्थप्रदायकः॥४॥

अष्टाविंशतिनामानि मदीयानीति यः पठेत्।
प्रत्यूषं श्रद्धया युक्तो मूको वाचस्पतिर्भवेत्॥५॥

महामन्त्रमयानीति मम नामानुकीर्तनम्।
महाप्रज्ञामवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा॥ ६॥

पुष्यनक्षत्रम् आरभ्य दशवारं पठेन्नरः।
पुष्यनक्षत्र-पर्यन्तेऽश्वत्थमूले दिने दिने।
पुरश्चरण-मात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ ७॥

॥ इति श्री-रुद्रयामलरहस्ये प्रज्ञाविवर्धन-कार्त्तिकेय-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ सुब्रह्मण्यषोडशनामस्तोत्रम्॥

सुब्रह्मण्यं प्रणाम्यहं सर्वज्ञं सर्वगं सदा।
अभीप्सितार्थ-सिद्ध्यर्थं प्रवक्ष्ये नामषोडशम्॥ १॥

प्रथमो ज्ञानशक्त्यात्मा द्वितीयो स्कन्द एव च।
अग्निभूश्च तृतीयः स्याद् बाहुलेयश्चतुर्थकः॥ २॥

गाङ्गेयः पञ्चमो विद्यात् षष्ठः शरवणोद्भवः।
सप्तमः कार्त्तिकेयः स्यात् कुमारः स्यादथाष्टकः॥ ३॥

नवमः षण्मुखश्चैव दशमः कुक्कुटध्वजः।
एकादशः शक्तिधरो गुहो द्वादश एव च॥ ४॥

त्रयोदशो ब्रह्मचारी षाण्मातुरश्चतुर्दशः।
क्रौञ्चभित् पञ्चदशकः षोडशः शिखिवाहनः॥ ५॥

एतद्षोडशनामानि जपेत् सम्यक् सदादरम्।
विवाहे दुर्गमे मार्गे दुर्जये च तथैव च॥ ६॥

कवित्वे च महाशास्त्रे विज्ञानार्थी फलं लभेत्।
कन्यार्थी लभते कन्यां जयार्थी लभते जयम्॥७॥

पुत्रार्थी पुत्रलाभं च धनार्थी लभते धनम्।
आयुरारोग्यवश्यश्च धनधान्य-सुखावहम्॥ ॥८॥

॥इति श्री-शङ्करसंहितायां शिवरहस्यखण्डे
श्री-सुब्रह्मण्यषोडशनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

❀❀❀

॥ हरिहरात्मजाष्टकम् ॥

हरिवरासनं विश्वमोहनम्
हरिदधीश्वरम् आराध्यपादुकम्।
अरिविमर्दनं नित्यनर्तनम्
हरिहरात्मजं देवमाश्रये॥ १॥

चरणकीर्तनं भक्तमानसम्
भरणलोलुपं नर्तनालसम्।
अरुणभासुरं भूतनायकम्
हरिहरात्मजं देवमाश्रये॥ २॥

प्रणयसत्यकं प्राणनायकम्
प्रणतकल्पकं सुप्रभञ्चितम्।
प्रणवमन्दिरं कीर्तनप्रियम्
हरिहरात्मजं देवमाश्रये॥ ३॥

तुरगवाहनं सुन्दराननम्
वरगदायुधं वेदवर्णितम्।
गुरुकृपाकरं कीर्तनप्रियम्
हरिहरात्मजं देवमाश्रये॥ ४॥

त्रिभुवनार्चितं देवतात्मकम्
त्रिनयनप्रभुं दिव्यदेशिकम्।
त्रिदशपूजितं चिन्तितप्रदम्
हरिहरात्मजं देवमाश्रये॥ ५॥

भवभयापहं भावुकावकम्
भुवनमोहनं भूतिभूषणम्।
धवलवाहनं दिव्यवारणम्
हरिहरात्मजं देवमाश्रये॥ ६॥

कलमृदुस्मितं सुन्दराननम्
कलभकोमलं गात्रमोहनम्।
कलभकेसरीं वाजिवाहनम्
हरिहरात्मजं देवमाश्रये॥ ७॥

श्रितजनप्रियं चिन्तितप्रदम्
श्रुतिविभूषणं साधुजीवनम्।
श्रुतिमनोहरं गीतलालसम्
हरिहरात्मजं देवमाश्रये॥ ८॥

॥ इति श्री-हरिहरात्मजाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ शास्तादशकम्॥

लोकवीरं महापूज्यं सर्वरक्षकरं विभुम्।
पार्वती-हृदयानन्दं शास्तारं प्रणमाम्यहम्॥ १॥

विप्रपूज्यं विश्ववन्द्यं विष्णुशम्भोर्प्रियं सुतम्।
क्षिप्रप्रसादनिरतं शास्तारं प्रणमाम्यहम्॥ २॥

मतमातङ्गगमनं कारुण्यामृतपूरितम्।
सर्वविघ्नहरं देवं शास्तारं प्रणमाम्यहम्॥ ३॥

अस्मद्कुलेश्वरं देवम् अस्मच्छत्रुविनाशकम्।
अस्मदिष्टप्रददरं शास्तारं प्रणमाम्यहम्॥४॥

पाण्ड्येशवंशतिलकं केरळे केलिविग्रहम्।
आर्तत्राणपरं देवं शास्तारं प्रणमाम्यहम्॥५॥

त्र्यम्बकपुरादीशं गणाधिपसमन्वितम्।
गजारूढमहं वन्दे शास्तारं प्रणमाम्यहम्॥६॥

शिववीर्यसमुद्भूतं श्रीनिवासतनूद्भवं।
शिखिवाहानुजं वन्दे शास्तारं प्रणमाम्यहम्॥७॥

यस्य धन्वन्तरिर्माता पिता देवो महेश्वरः।
तं शास्तारमहं वन्दे महारोगनिवारणम्॥८॥

भूतनाथ सदानन्द सर्वभूतदयापर।
रक्ष रक्ष महाबाहो शास्त्रे तुभ्यं नमो नमः॥९॥

आश्यामकोमलविशालतनुं विचित्रम्
वसोऽवसान अरुणोत्फलदामहस्तम्।
उत्तुङ्गरत्नमकुटं कुटिलाग्रकेशम्
शास्तारमिष्टवरदं शरणं प्रपद्ये॥१०॥

॥इति श्री-शास्तादशकं सम्पूर्णम्॥

❀❀❀

॥ नवग्रहस्तोत्रम् ॥

जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥ १ ॥

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥ २ ॥

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥ ३ ॥

प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥ ४ ॥

देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥ ५ ॥

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥ ६ ॥

नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥ ७ ॥

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥ ८ ॥

पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥ ९ ॥

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति॥ १०॥

नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्॥ ११॥

ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तस्कराग्निसमुद्भवाः।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः॥ १२॥

॥ इति श्रीव्यासविरचितं नवग्रहस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ नवग्रहमङ्गलाष्टकम्॥

भास्वानर्कसमिच्च रक्तकिरणः सिंहाधिपः काश्यपो -
गुर्विन्दोश्च कुजस्य मित्रमरिगः त्रिस्थः शुभः प्राङ्मुखः।
शत्रुर्भार्गवसौरयोः प्रियः कुजः कालिङ्गदेशाधिपो -
मध्ये वर्तुलमण्डले स्थितिमितः कुर्यात्सदा मङ्गलम्॥ १॥

चन्द्रः कर्कटकप्रभुः सितरुचिश्चात्रेयगोत्रोद्भवः
चाग्नेये चतुरश्रकोऽपरमुखो गौर्यर्चया तर्पितः।
षट्सप्ताग्निदशाद्यशोभनफलोऽशत्रुर्बुधार्कप्रियः
सौम्यो यामुनदेशपर्णजसमित्कुर्यात्सदा मङ्गलम्॥ २॥

भौमो दक्षिणदिक्त्रिकोणनिलयोऽवन्तीपतिः खादिर-
प्रीतो वृश्चिकमेषयोरधिपतिर्गुर्वर्कचन्द्रप्रियः।
ज्ञारिः षट्त्रिशुभप्रदश्च वसुधादाता गुहाधीश्वरो
भारद्वाजकुलाधिपोऽरुणरुचिः कुर्यात्सदा मङ्गलम्॥ ३॥

सौम्यः पीत उदङ्मुखः समिदपामार्गोऽत्रिगोत्रोद्भवो -
बाणेशानगतः सुहृद्रविसुतो वैरीकृतानुष्णरुक्।
कन्यायुग्मपतिर्दशाष्टमचतुःषण्णेत्रगः शोभनो -
विष्ण्वाराधनतर्पितो मगधपः कुर्यात्सदा मङ्गलम्॥४॥

जीवश्चोत्तरदिङ्मुखोत्तरककुब्जातोऽङ्गिरो गोत्रदः
पीतोऽश्वत्थसमिच्च सिन्ध्वधिपतिः चापर्क्षमीनाधिपः।
सूर्येन्दुक्षितिजप्रियः सितबुधारातिः समो भानुजे -
सप्तापत्यतपोऽर्थगः शुभकरः कुर्यात्सदा मङ्गलम्॥५॥

शुक्रो भार्गवगोत्रजः सितरुचिः पूर्वाननः पूर्वदिक्
काम्बोजाधिपतिस्तुलावृषभगश्चौदुम्बरैस्तर्पितः ।
सौम्यर्क्यौः सुहृदम्बिकास्तुतिवशात् प्रीतोर्कचन्द्राहितो -
नारीभोगकरः शुभो भृगुसुतः कुर्यात्सदा मङ्गलम्॥६॥

सौरिः कृष्णरुचिश्च पश्चिममुखः सौराष्ट्रपः काश्यपो -
नाथः कुम्भमृगर्क्षयोः प्रियसुहृत् शुक्रज्ञयोर्रुद्रगः।
षड्त्रिस्थः शुभदो शुभो धनुगतिश्चापाकृतौ मण्डले
सन्तिष्ठन् चिरजीवितादिफलदः कुर्यात्सदा मङ्गलम्॥७॥

राहुर्बर्बरदेशपो निर्ऋतौ कृष्णाङ्गशूर्पासनो
याम्याशाभिमुखश्च चन्द्ररविरुध् पैठीनसिः क्रौर्यवान्।
षड्त्रिस्थः शुभकृत् करालवदनः प्रीतश्च दूर्वाहुतौ
दुर्गापूजनतः प्रसन्नहृदयः कुर्यात्सदा मङ्गलम्॥८॥

केतुर्जैमिनिगोत्रजः कुशसमिद्वायव्यकोणेस्थितः
चित्राङ्कध्वजलाञ्छनो हि भगवान् याम्याननः शोभनः।
सन्तुष्टो गणनाथपूजनवशात् गङ्गादितीर्थप्रदः
षड्विस्थः शुभकृच्च चित्रिततनुः कुर्यात्सदा मङ्गलम्॥९॥

॥इति श्री-नवग्रहमङ्गलाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥नवग्रहपीडाहरस्तोत्रम्॥

ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः।
विषमस्थानसम्भूतां पीडां हरतु मे रविः॥१॥

रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः।
विषमस्थानसम्भूतां पीडां हरतु मे विधुः॥२॥

भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत् सदा।
वृष्टिकृद्वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु मे कुजः॥३॥

उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः।
सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु मे बुधः॥४॥

देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः।
अनेकशिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः॥५॥

दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः।
प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां हरतु मे भृगुः॥६॥

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः॥७॥

महाशिरा महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः।
अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी॥८॥

अनेकरूपवर्णैश्च शतशोऽथ सहस्रशः।
उत्पातरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः॥९॥

॥इति ब्रह्माण्डपुराणोक्तं नवग्रहपीडाहरस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

❀❀❀

आरोग्यं प्रददातु नो दिनकरश्चन्द्रो यशो निर्मलम्
भूतिं भूमिसुतः सुधांशुतनयः प्रज्ञां गुरुर्गौरवम्।
काव्यः कोमलवाग्विलासमतुलं मन्दो मुदं सर्वदा
राहुर्बाहुबलं विरोधशमनं केतुः कुलस्योन्नतिम्॥

॥सूर्यग्रहण-पीडापरिहारश्लोकः॥

इन्द्रोऽनलो दण्डधरश्च ऋक्षः प्रचेतसो वायु-कुबेर-ईशाः।
मज्जन्म-ऋक्षे मम राशि-संस्थे अर्कोऽपरागं शमयन्तु सर्वे॥

॥चन्द्रग्रहण-पीडापरिहारश्लोकः॥

इन्द्रोऽनलो दण्डधरश्च ऋक्षः प्रचेतसो वायु-कुबेर-ईशाः।
मज्जन्म-ऋक्षे मम राशि-संस्थे सोमोऽपरागं शमयन्तु सर्वे॥

❀❀❀

॥ सूर्यप्रातःस्मरणस्तोत्रम् ॥

प्रातः स्मरामि खलु तत्सवितुर्वरेण्यम्
रूपं हि मण्डलमृचोऽथ तनुर्यजूंषि।
सामानि यस्य किरणाः प्रभवादिहेतुम्
ब्रह्माहरात्मकमलक्ष्यमचिन्त्यरूपम् ॥ १ ॥

प्रातर्नमामि तरणिं तनुवाङ्मनोभि-
र्ब्रह्मेन्द्रपूर्वकसुरैर्नुतमर्चितं च।
वृष्टिप्रमोचनविनिग्रहहेतुभूतम्
त्रैलोक्यपालनपरं त्रिगुणात्मकं च ॥ २ ॥

प्रातर्भजामि सवितारमनन्तशक्तिम्
पापौघशत्रुभयरोगहरं परं च।
तं सर्वलोककलनात्मककालमूर्तिम्
गोकण्ठबन्धनविमोचनमादिदेवम् ॥ ३ ॥

श्लोकत्रयमिदं भानोः प्रातः प्रातः पठेत्तु यः।
स सर्वव्याधिनिर्मुक्तः परं सुखमवाप्नुयात् ॥

॥ इति श्री-सूर्यप्रातःस्मरणस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ आदित्यहृदयम् ॥

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्।
रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम् ॥ १ ॥

दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम्।
उपागम्याब्रवीद्रामम् अगस्त्यो भगवान् ऋषिः ॥ २ ॥

राम राम महाबाहो श्रृणु गुह्यं सनातनम्।
येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसि॥ ३॥

आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्।
जयावहं जपेन्नित्यम् अक्षय्यं परमं शिवम्॥ ४॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम्।
चिन्ताशोकप्रशमनम् आयुर्वर्धनमुत्तमम्॥ ५॥

रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम्।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम्॥ ६॥

सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः।
एष देवासुरगणान् लोकान् पाति गभस्तिभिः॥ ७॥

एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः।
महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपां पतिः॥ ८॥

पितरो वसवः साध्या ह्यश्विनौ मरुतो मनुः।
वायुर्वह्निः प्रजाप्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः॥ ९॥

आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान्।
सुवर्णसदृशो भानुर्विश्वरेता दिवाकरः॥ १०॥

हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान्।
तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्ड अंशुमान्॥ ११॥

हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनो भास्करो रविः।
अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शङ्खः शिशिरनाशनः॥ १२॥

व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुस्सामपारगः।
घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवङ्गमः॥१३॥

आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः।
कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः॥१४॥

नक्षत्रग्रहताराणाम् अधिपो विश्वभावनः।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तु ते॥१५॥

नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः॥१६॥

जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः।
नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः॥१७॥

नम उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः।
नमः पद्मप्रबोधाय मार्तण्डाय नमो नमः॥१८॥

ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूर्यायादित्यवर्चसे।
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः॥१९॥

तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः॥२०॥

तप्तचामीकराभाय वह्नये विश्वकर्मणे।
नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे॥२१॥

नाशयत्येष वै भूतं तदेव सृजति प्रभुः।
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः॥२२॥

एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः।
एष एवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम्॥ २३॥

वेदाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च।
यानि कृत्यानि लोकेषु सर्व एष रविः प्रभुः॥ २४॥

एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च।
कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव॥ २५॥

पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम्।
एतत् त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसि॥ २६॥

अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं वधिष्यसि।
एवमुक्त्वा तदाऽगस्त्यो जगाम च यथाऽऽगतम्॥ २७॥

एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत्तदा।
धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान्॥ २८॥

आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वा तु परं हर्षमवाप्तवान्।
त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान्॥ २९॥

रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा युद्धाय समुपागमत्।
सर्वयत्नेन महता वधे तस्य धृतोऽभवत्॥ ३०॥

अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः।
निशिचरपतिसङ्क्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति॥ ३१॥

॥ इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये युद्धकाण्डे आदित्यहृदयं नाम सप्तोत्तरशततमः सर्गः॥

॥ सूर्यकवचम् ॥

याज्ञवल्क्य उवाच

श्रृणुष्व मुनिशार्दूल सूर्यस्य कवचं शुभम्।
शरीरारोग्यदं दिव्यं सर्वसौभाग्यदायकम्॥ १ ॥

देदीप्यमानमुकुटं स्फुरन्मकरकुण्डलम्।
ध्यात्वा सहस्रकिरणं स्तोत्रमेतदुदीरयेत्॥ २ ॥

शिरो मे भास्करः पातु ललाटं मेऽमितद्युतिः।
नेत्रे दिनमणिः पातु श्रवणे वासरेश्वरः॥ ३ ॥

घ्राणं घर्मघृणिः पातु वदनं वेदवाहनः।
जिह्वां मे मानदः पातु कण्ठं मे सुरवन्दितः॥ ४ ॥

स्कन्धौ प्रभाकरः पातु वक्षः पातु जनप्रियः।
पातु पादौ द्वादशात्मा सर्वाङ्गं सकलेश्वरः॥ ५ ॥

सूर्यरक्षात्मकं स्तोत्रं लिखित्वा भूर्जपत्रके।
दधाति यः करे तस्य वशगाः सर्वसिद्धयः॥ ६ ॥

सुस्नातो यो जपेत्सम्यग्योऽधीते स्वस्थमानसः।
स रोगमुक्तो दीर्घायुः सुखं पुष्टिं च विन्दति॥ ७ ॥

॥ इति श्री-याज्ञवल्क्यमुनिविरचितं श्री-सूर्यकवचस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ सूर्यमण्डल स्तोत्रम् ॥

नमोऽस्तु सूर्याय सहस्त्ररश्मये सहस्त्रशाखान्वितसम्भवात्मने।
सहस्त्रयोगोद्भवभावभागिने सहस्त्रसङ्ख्यायुगधारिणे नमः॥

यन्मण्डलं दीप्तिकरं विशालं रत्नप्रभं तीव्रमनादिरूपम्।
दारिद्र्यदुःखक्षयकारणं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्॥ १ ॥

यन्मण्डलं देवगणैः सुपूजितं विप्रैः स्तुतं भावनमुक्तिकोविदम्।
तं देवदेवं प्रणमामि सूर्यं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्॥ २ ॥

यन्मण्डलं ज्ञानघनं त्वगम्यं त्रैलोक्यपूज्यं त्रिगुणात्मरूपम्।
समस्त-तेजोमय-दिव्यरूपं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्॥ ३ ॥

यन्मण्डलं गूढमतिप्रबोधं धर्मस्य वृद्धिं कुरुते जनानाम्।
यत्सर्वपापक्षयकारणं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्॥ ४ ॥

यन्मण्डलं व्याधिविनाशदक्षं यदृग्यजुःसामसु सम्प्रगीतम्।
प्रकाशितं येन च भूर्भुवः स्वः पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्॥ ५ ॥

यन्मण्डलं वेदविदो वदन्ति गायन्ति यच्चारण-सिद्धसङ्घाः।
यद्योगिनो योगजुषां च सङ्घाः पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्॥ ६ ॥

यन्मण्डलं सर्वजनैश्च पूजितं ज्योतिश्च कुर्यादिह मर्त्यलोके।
यत्कालकालाद्यमनादिरूपं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्॥ ७ ॥

यन्मण्डलं विष्णुचतुर्मुखाख्यं यदक्षरं पापहरं जनानाम्।
यत्कालकल्पक्षयकारणं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्॥ ८ ॥

यन्मण्डलं विश्वसृजं प्रसिद्धमुत्पत्ति-रक्षा-प्रलय-प्रगल्भम्।
यस्मिञ्जगत्संहरतेऽखिलं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्॥ ९॥

यन्मण्डलं सर्वगतस्य विष्णोरात्मा परं धाम विशुद्धतत्त्वम्।
सूक्ष्मान्तरैर्योगपथानुगम्यं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्॥ १०॥

यन्मण्डलं वेदविदो वदन्ति गायन्ति यच्चारण-सिद्धसङ्घाः।
यन्मण्डलं वेदविदः स्मरन्ति पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्॥ ११॥

यन्मण्डलं वेदविदोपगीतं यद्योगिनां योगपथानुगम्यम्।
तत्सर्ववेद्यं प्रणमामि सूर्यं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्॥ १२॥

सूर्यमण्डलसुस्तोत्रं यः पठेत् सततं नरः।
सर्वपापविशुद्धात्मा सूर्यलोके महीयते॥ १३॥

॥ इति श्री-भविष्योत्तरपुराणे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सूर्यमण्डलस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

यो देवः सविताऽस्माकं धियो धर्मादि-गोचरे।
प्रेरयेत् तस्य यद्भर्गस्तद्वरेण्यमुपास्महे॥

॥ द्वादशार्यासूर्यस्तुतिः ॥

उद्यन्नद्य विवस्वानारोहन्नुत्तरां दिवं देवः।
हृद्रोगं मम सूर्यो हरिमाणं चाऽऽशु नाशयतु॥ १॥

निमिषार्धेनैकेन द्वे च शते द्वे सहस्रे द्वे।
क्रममाण योजनानां नमोऽस्तु ते नलिननाथाय॥ २॥

कर्म-ज्ञान-ख-दशकं मनश्च जीव इति विश्व-सर्गाय।
द्वादशधा यो विचरति स द्वादश-मूर्तिरस्तु मोदाय॥ ३॥

त्वं हि यजुर्ऋक् साम त्वमागमस्त्वं वषट्कारः।
त्वं विश्वं त्वं हंसस्त्वं भानो परमहंसश्च॥ ४॥

शिवरूपाज्ज्ञानमहं त्वत्तो मुक्तिं जनार्दनाकारात्।
शिखिरूपादैश्वर्यं त्वत्तश्चारोग्यमिच्छामि॥ ५॥

त्वचि दोषा दृशि दोषा हृदि दोषा येऽखिलेन्द्रियज-दोषाः।
तान् पूषा हतदोषः किञ्चिद्रोषाग्निना दहतु॥ ६॥

धर्मार्थ-काम-मोक्ष-प्रतिरोधानुग्र-ताप-वेग-करान्।
बन्दी-कृतेन्द्रिय-गणान् गदान् विखण्डयतु चण्डांशुः॥ ७॥

येन विनेदं तिमिरं जगदेत्य ग्रसति चरमचरमखिलम्।
धृतबोधं तं नलिनीभर्तारं हर्तारमापदामीडे॥ ८॥

यस्य सहस्राभीशोरभीशु-लेशो हिमांशु-बिम्बगतः।
भासयति नक्तमखिलं भेदयतु विपद्-गणानरुणः॥ ९॥

तिमिरमिव नेत्र-तिमिरं पटलमिवाशेष-रोग-पटलं नः।
काशमिवाधि-निकायं कालपिता रोगयुक्ततां हरतात्॥ १०॥

वाताश्मरी-गदार्शस्त्वग्-दोष-महोदर-प्रमेहांश्च।
ग्रहणी-भगन्दराख्या महतीस्त्वं मे रुजो हंसि॥ ११॥

त्वं माता त्वं शरणं त्वं धाता त्वं धनं त्वमाचार्यः।
त्वं त्राता त्वं हर्ता विपदामर्क प्रसीद मम भानो॥ १२॥

इत्यार्या-द्वादशकं साम्बस्य पुरो नभःस्थलात् पतितम्।
पठतां भाग्य-समृद्धिः समस्त-रोग-क्षयश्च स्यात्॥१३॥

॥इति श्री-द्वादशार्यासूर्यस्तुतिः सम्पूर्णा॥

॥सूर्यार्यास्तोत्रम्॥

शुकतुण्डच्छवि-सवितुश्चण्डरुचेः पुण्डरीकवनबन्धोः।
मण्डलमुदितं वन्दे कुण्डलमाखण्डलाशायाः॥१॥

यस्योदयास्तसमये सुरमुकुट-निघृष्ट-चरणकमलोऽपि।
कुरुतेऽञ्जलिं त्रिनेत्रः स जयति धाम्नां निधिः सूर्यः॥२॥

उदयाचल-तिलकाय प्रणतोऽस्मि विवस्वते ग्रहेशाय।
अम्बर-चूडामणये दिग्वनिताकर्णपूराय॥३॥

जयति जनानन्दकरः करनिकर-निरस्त-तिमिर-सङ्घातः।
लोकालोकालोकः कमलारुणमण्डलः सूर्यः॥४॥

प्रतिबोधित-कमलवनः कृतघटनश्चक्रवाकमिथुनानाम्।
दर्शित-समस्तभुवनः परहितनिरतो रविः सदा जयति॥५॥

अपनयतु सकलकलिकृतमलपटलं सप्रतप्तकनकाभः।
अरविन्द-वृन्द-विघटन-पटुतरकिरणोत्करः सविता॥६॥

उदयाद्रि-चारुचामरहरित हयखुरपरिहितरेणुराग।
हरितहय हरितपरिकर गगनाङ्गनदीपक नमस्तेऽस्तु॥७॥

उदितवति त्वयि विकसति मुकुलीयति समस्त-मस्तमितबिम्बे।
न ह्यन्यस्मिन्दिनकर सकलं कमलायते भुवनम्॥८॥

जयति रविरुदयसमये बालातपः कनकसन्निभो यस्य।
कुसुमाञ्जलिरिव जलधौ तरन्ति रथसप्तयः सप्त॥९॥

आर्याः साम्बपुरे सप्त आकाशात्पतिता भुवि।
यस्य कण्ठे गृहे वाऽपि न स लक्ष्म्या वियुज्यते॥१०॥

आर्याः सप्त सदा यस्तु सप्तम्यां सप्तधा जपेत्।
तस्य गेहं च देहं च पद्मा सत्यं न मुञ्चति॥११॥

निधिरेश दरिद्राणां रोगिणां परमौषधम्।
सिद्धिः सकलकार्याणां गाथेयं संस्मृता रवेः॥१२॥

॥इति श्रीयाज्ञवल्क्यविरचितं सूर्यार्यास्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥सूर्यस्तुतिः॥

नमो नमो वरेण्याय वरदायांशुमालिने।
ज्योतिर्मय नमस्तुभ्यमनन्तायाजिताय ते॥१॥

त्रिलोकचक्षुषे तुभ्यं त्रिगुणायामृताय च।
नमो धर्माय हंसाय जगज्जननहेतवे॥२॥

नरनारीशरीराय नमो मीढुष्टमाय ते।
प्रज्ञानायाखिलेशाय सप्ताश्वाय त्रिमूर्तये॥३॥

नमो व्याहृतिरूपाय त्रिलक्षायाशुगामिने।
हर्यश्वाय नमस्तुभ्यं नमो हरितबाहवे॥४॥

एकलक्षविलक्षाय बहुलक्षाय दण्डिने।
एकसंस्थद्विसंस्थाय बहुसंस्थाय ते नमः॥५॥

शक्तित्रयाय शुक्लाय रवये परमेष्ठिने।
त्वं शिवस्त्वं हरिर्देव त्वं ब्रह्मा त्वं दिवस्पतिः॥ ६॥

त्वमोङ्कारो वषट्कारः स्वधा स्वाहा त्वमेव हि।
त्वामृते परमात्मानं न तत्पश्यामि दैवतम्॥ ७॥

॥ इति श्री-सौरपुराणान्तर्गता मनुकृता सूर्यस्तुतिः सम्पूर्णा॥

॥ सूर्यस्तवराजः॥

वसिष्ठ उवाच

स्तुवंस्तत्र ततः साम्बः कृशो धमनि सन्ततः।
राजन् नामसहस्रेण सहस्रांशुं दिवाकरम्॥ १॥

खिद्यमानं तु तं दृष्ट्वा सूर्यः कृष्णात्मजं तदा।
स्वप्ने तु दर्शनं दत्त्वा पुनर्वचनमब्रवीत्॥ २॥

श्री-सूर्य उवाच

साम्ब साम्ब महाबाहो शृणु जाम्बवतीसुत।
अलं नामसहस्रेण पठंस्त्वेवं स्तवं शुभम्॥ ३॥

यानि नामानि गुह्यानि पवित्राणि शुभानि च।
तानि ते कीर्तयिष्यामि श्रुत्वा तमवधारय॥ ४॥

ॐ विकर्तनो विवस्वांश्च मार्तण्डो भास्करो रविः।
लोकप्रकाशकः श्रीमाँल्लोकचक्षुर्ग्रहेश्वरः॥ ५॥

लोकसाक्षी त्रिलोकेशः कर्ता हर्ता तमिस्रहा।
तपनस्तापनश्चैव शुचिः सप्ताश्ववाहनः॥ ६॥

गभस्तिहस्तो ब्रह्मा च सर्वदेवनमस्कृतः।
एकविंशतिरित्येष स्तव इष्टः सदा मम॥७॥

शरीरारोग्यदश्चैव धनवृद्धियशस्करः।
स्तवराज इति ख्यातस्त्रिषु लोकेषु विश्रुतः॥८॥

य एतेन महाबाहो द्वे सन्ध्येऽस्तमनोदये।
स्तौति मां प्रणतो भूत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते॥९॥

कायिकं वाचिकं चापि मानसं यच्च दुष्कृतम्।
तत् सर्वमेकजाप्येन प्रणश्यति ममाग्रतः॥१०॥

एष जप्यश्च होमश्च सन्ध्योपासनमेव च।
बलिमन्त्रोऽर्घ्यमन्त्रश्च धूपमन्त्रस्तथैव च॥११॥

अन्नप्रदाने स्नाने च प्रणिपाते प्रदक्षिणे।
पूजितोऽयं महामन्त्रः सर्वव्याधिहरः शुभः॥१२॥

एवमुक्त्वा तु भगवान् भास्करो जगदीश्वरः।
आमन्त्र्य कृष्णतनयं तत्रैवान्तरधीयत॥१३॥

साम्बोऽपि स्तवराजेन स्तुत्वा सप्ताश्ववाहनम्।
पूतात्मा नीरुजः श्रीमांस्तस्माद्रोगाद्विमुक्तवान्॥१४॥

॥इति साम्बपुराणे रोगापनयने श्रीसूर्यवक्त्रविनिर्गतः स्तवराजः सम्पूर्णः॥

॥ चन्द्राष्टविंशतिनामस्तोत्रम् ॥

चन्द्रस्य शृणु नामानि शुभदानि महीपते।
यानि श्रुत्वा नरो दुःखान्मुच्यते नात्र संशयः ॥ १ ॥

सुधाकरो विधुः सोमो ग्लौरब्जः कुमुदप्रियः।
लोकप्रियः शुभ्रभानुश्चन्द्रमा रोहिणीपतिः ॥ २ ॥

शशी हिमकरो राजा द्विजराजो निशाकरः।
आत्रेय इन्दुः शीतांशुरोषधीशः कलानिधिः ॥ ३ ॥

जैवातृको रमाभ्राता क्षीरोदार्णवसम्भवः।
नक्षत्रनायकः शम्भुशिरश्चूडामणिर्विभुः ॥ ४ ॥

तापहर्ता नभोदीपो नामान्येतानि यः पठेत्।
प्रत्यहं भक्तिसंयुक्तस्तस्य पीडा विनश्यति ॥ ५ ॥

तद्दिने च पठेद्यस्तु लभेत्सर्वं समीहितम्।
ग्रहादीनां च सर्वेषां भवेच्चन्द्रबलं सदा ॥ ६ ॥

॥ इति श्री-चन्द्राष्टविंशतिनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ अङ्गारकस्तोत्रम् ॥

अङ्गारकः शक्तिधरो लोहिताङ्गो धरासुतः।
कुमारो मङ्गलो भौमो महाकायो धनप्रदः ॥ १ ॥

ऋणहर्ता दृष्टिकर्ता रोगकृद्रोगनाशनः।
विद्युत्प्रभो व्रणकरः कामदो धनहृत् कुजः ॥ २ ॥

सामगानप्रियो रक्तवस्त्रो रक्तायतेक्षणः।
लोहितो रक्तवर्णश्च सर्वकर्मावबोधकः॥ ३॥

रक्तमाल्यधरो हेमकुण्डली ग्रहनायकः।
नामान्येतानि भौमस्य यः पठेत्सततं नरः॥ ४॥

ऋणं तस्य च दौर्भाग्यं दारिद्र्यं च विनश्यति।
धनं प्राप्नोति विपुलं स्त्रियं चैव मनोरमाम्।
वंशोद्योतकरं पुत्रं लभते नात्र संशयः॥ ५॥

योऽर्चयेदह्नि भौमस्य मङ्गलं बहुपुष्पकैः।
सर्वा नश्यति पीडा च तस्य ग्रहकृता ध्रुवम्॥ ६॥

॥ इति श्री-स्कान्दपुराणे श्री-अङ्गारकस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ बुधपञ्चविंशतिनामस्तोत्रम्॥

बुधो बुद्धिमतां श्रेष्ठो बुद्धिदाता धनप्रदः।
प्रियङ्गुकलिकाश्यामः कञ्जनेत्रो मनोहरः॥ १॥

ग्रहोपमो रौहिणेयो नक्षत्रेशो दयाकरः।
विरुद्धकार्यहन्ता च सौम्यो बुद्धिविवर्धनः॥ २॥

चन्द्रात्मजो विष्णुरूपी ज्ञानिज्ञो ज्ञानिनायकः।
ग्रहपीडाहरो दारपुत्रधान्यपशुप्रदः॥ ३॥

लोकप्रियः सौम्यमूर्तिर्गुणदो गुणिवत्सलः।
पञ्चविंशतिनामानि बुधस्यैतानि यः पठेत्॥ ४॥

स्मृत्वा बुधं सदा तस्य पीडा सर्वा विनश्यति।
तद्दिने वा पठेद्यस्तु लभते स मनोगतम्॥५॥

॥इति श्री-पद्मपुराणे श्री-बुधपञ्चविंशतिनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥बृहस्पतिस्तोत्रम्॥

गुरुर्बृहस्पतिर्जीवः सुराचार्यो विदां वरः।
वागीशो धिषणो दीर्घश्मश्रुः पीताम्बरो युवा॥ १ ॥

सुधादृष्टिर्ग्रहाधीशो ग्रहपीडापहारकः।
दयाकरः सौम्यमूर्तिः सुरार्च्यः कुड्मलद्युतिः॥ २ ॥

लोकपूज्यो लोकगुरुर्नीतिज्ञो नीतिकारकः।
तारापतिश्चाङ्गिरसो वेदवेद्यः पितामहः॥ ३ ॥

भक्त्या बृहस्पतिं स्मृत्वा नामान्येतानि यः पठेत्।
अरोगी बलवान् श्रीमान् पुत्रवान् स भवेन्नरः॥४॥

जीवेद्वर्षशतं मर्त्यः पापं नश्यति नश्यति।
यः पूजयेद्गुरुदिने पीतगन्धाक्षताम्बरैः॥५॥

पुष्पदीपोपहारैश्च पूजयित्वा बृहस्पतिम्।
ब्राह्मणान्भोजयित्वा च पीडाशान्तिर्भवेद्गुरोः॥ ६ ॥

॥इति श्रीस्कान्दपुराणे श्री-बृहस्पतिस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ शुक्रचतुर्विंशतिनामस्तोत्रम् ॥

शृण्वन्तु मुनयः सर्वे शुक्रस्तोत्रमिदं शुभम्।।
रहस्यं सर्वभूतानां शुक्रप्रीतिकरं शुभम्॥ १॥ ॥१॥

येषां सङ्कीर्तनान्नित्यं सर्वान् कामानवाप्नुयात्।
तानि शुक्रस्य नामानि कथयामि शुभानि च॥२॥

शुक्रः शुभग्रहः श्रीमान् वर्षकृद्वर्षविघ्नकृत्।
तेजोनिधिर्ज्ञानदाता योगी योगविदां वरः॥३॥

दैत्यसञ्जीवनो धीरो दैत्यनेतोशना कविः।
नीतिकर्ता ग्रहाधीशो विश्वात्मा लोकपूजितः॥४॥

शुक्लमाल्याम्बरधरः श्रीचन्दनसमप्रभः।
अक्षमालाधरः काव्यः तपोमूर्तिर्धनप्रदः॥५॥

चतुर्विंशतिनामानि अष्टोत्तरशतं यथा।
देवस्याग्रे विशेषेण पूजां कृत्वा विधानतः॥६॥

य इदं पठति स्तोत्रं भार्गवस्य महात्मनः।
विषमस्थोऽपि भगवान् तुष्टः स्यान्नात्र संशयः॥७॥

स्तोत्रं भृगोरिदमनन्तगुणप्रदं यो
भक्त्या पठेच्च मनुजो नियतः शुचिः सन्।
प्राप्नोति नित्यमतुलां श्रियमीप्सितार्थान्
राज्यं समस्तधनधान्ययुतां समृद्धिम्॥८॥

॥ इति श्री-स्कान्दपुराणे श्री-शुक्रचतुर्विंशतिनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ दशरथकृत शनैश्चराष्टकम् ॥

अस्य श्रीशनैश्चरस्तोत्रमन्त्रस्य दशरथ ऋषिः। शनैश्चरो देवता। त्रिष्टुप् छन्दः।
शनैश्चरप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

दशरथ उवाच

कोणोऽन्तको रौद्र यमोऽथ बभ्रुः कृष्णः शनिः पिङ्गलमन्दसौरिः।
नित्यं स्मृतो यो हरते च पीडां तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥ १॥

सुरासुराः किम्पुरुषोरगेन्द्रा गन्धर्वविद्याधरपन्नगाश्च।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥ २॥

नरा नरेन्द्राः पशवो मृगेन्द्रा वन्याश्च ये कीटपतङ्गभृङ्गाः।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥ ३॥

देशाश्च दुर्गाणि वनानि यत्र सेनानिवेशाः पुरपत्तनानि।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥ ४॥

तिलैर्यवैर्माषगुडान्नदानैर्लोहेन नीलाम्बरदानतो वा।
प्रीणाति मन्त्रैर्निजवासरे च तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥ ५॥

प्रयागकूले यमुनातटे च सरस्वतीपुण्यजले गुहायाम्।
यो योगिनां ध्यानगतोऽपि सूक्ष्मस्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥ ६॥

अन्यप्रदेशात्स्वगृहं प्रविष्टस्तदीयवारे स नरः सुखी स्यात्।
गृहाद्गतो यो न पुनः प्रयाति तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥ ७॥

स्रष्टा स्वयम्भूर्भुवनत्रयस्य त्राता हरीशो हरते पिनाकी।
एकस्त्रिधा ऋग्यजुस्साममूर्तिस्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥ ८॥

शन्यष्टकं यः प्रयतः प्रभाते नित्यं सुपुत्रैः पशुबान्धवैश्च।
पठेत्तु सौख्यं भुवि भोगयुक्तः प्राप्नोति निर्वाणपदं तदन्ते॥

कोणस्थः पिङ्गलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः॥

एतानि दशनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
शनैश्चरकृता पीडा न कदाचिद्भविष्यति॥

॥इति श्री-दशरथकृतं श्री-शनैश्चराष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥राहुपञ्चविंशतिनामस्तोत्रम्॥

राहुर्दानवमन्त्री च सिंहिकाचित्तनन्दनः।
अर्धकायः सदा क्रोधी चन्द्रादित्यविमर्दनः॥१॥

रौद्रो रुद्रप्रियो दैत्यः स्वर्भानुर्भानुभीतिदः।
ग्रहराजः सुधापायी राकातिथ्यभिलाषुकः॥२॥

कालदृष्टिः कालरूपः श्रीकण्ठहृदयाश्रयः।
विधुन्तुदः सैंहिकेयो घोररूपो महाबलः॥३॥

ग्रहपीडाकरो दंष्ट्री रक्तनेत्रो महोदरः।
पञ्चविंशतिनामानि स्मृत्वा राहुं सदा नरः॥४॥

यः पठेन्महती पीडा तस्य नश्यति केवलम्।
आरोग्यं पुत्रमतुलां श्रियं धान्यं पशूंस्तथा॥५॥

ददाति राहुस्तस्मै यः पठते स्तोत्रमुत्तमम्।
सततं पठते यस्तु जीवेद्वर्षशतं नरः॥६॥

॥ इति श्रीस्कान्दपुराणे श्री-राहुपञ्चविंशतिनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ केतुपञ्चविंशतिनामस्तोत्रम् ॥

केतुः कालः कलयिता धूम्रकेतुर्विवर्णकः।
लोककेतुर्महाकेतुः सर्वकेतुर्भगप्रदः॥ १॥

रौद्रो रुद्रप्रियो रुद्रः क्रूरकर्मा सुगन्धधृक्।
पलालधूमसङ्काशश्चित्रयज्ञोपवीतधृक् ॥ २॥

तारागणविमर्दी च जैमिनेयो ग्रहाधिपः।
गणेशदेवो विघ्नेशो विषरोगार्तिनाशनः॥ ३॥

प्रव्राज्यदो ज्ञानदश्च तीर्थयात्राप्रवर्तकः।
पञ्चविंशतिनामानि केतोर्यः सततं पठेत्॥ ४॥

तस्य नश्यति बाधा च सर्वा केतुप्रसादतः।
धनधान्यपशूनां च भवेद्वृद्धिर्न संशयः॥ ५॥

॥ इति श्री-स्कान्दपुराणे श्री-केतुपञ्चविंशतिनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

❀❀❀

॥ गङ्गाष्टकम् ॥

भगवति भवलीलामौलिमाले तवाम्भः
कणमणुपरिमाणं प्राणिनो ये स्पृशन्ति।
अमरनगरनारीचामरमरग्राहिणीनां
विगतकलिकलङ्कातङ्कमङ्के लुठन्ति॥ १ ॥

ब्रह्माण्डं खण्डयन्ती हरशिरसि जटावल्लिमुल्लासयन्ती
स्वर्लोकादापतन्ती कनकगिरिगुहागण्डशैलात् स्खलन्ती।
क्षोणी पृष्ठे लुठन्ती दुरितचयचमूं निर्भरं भर्त्सयन्ती
पाथोधिं पूरयन्ती सुरनगरसरित् पावनी नः पुनातु॥ २ ॥

मज्जनमातङ्गकुम्भच्युतमदमदिरामोदमत्तालिजालम्
स्नानैः सिद्धाङ्गनानां कुचयुगविगलत् कुङ्कुमासङ्गपिङ्गम्।
सायं प्रातर्मुनीनां कुशकुसुमचयैश्छिन्नतीरस्थनीरम्
पायान्नो गाङ्गमम्भः करिकलभकराक्रान्तरं हस्तरङ्गम्॥ ३ ॥

आदावादिपितामहस्य नियमव्यापारपात्रे जलं
पश्चात् पन्नगशायिनो भगवतः पादोदकं पावनम्।
भूयः शम्भुजटाविभूषणमणिर्जह्नोर्महर्षेरियं
कन्या कल्मषनाशिनी भगवती भागीरथी पातु माम्॥ ४ ॥

शैलेन्द्रादवतारिणी निजजल-मज्जज्जनोत्तारिणी
पारावारविहारिणी भवभयश्रेणी-समुत्सारिणी।
शेषाहेरनुकारिणी हरशिरोवल्लीदलाकारिणी
काशीप्रान्तविहारिणी विजयते गङ्गा मनोहारिणी॥ ५ ॥

कुतो वीची वीचिस्तव यदि गता लोचनपथम्
त्वमापीता पीताम्बरपुरिनिवासं वितरसि।
त्वदुत्सङ्गे गङ्गे पतति यदि कायस्तनुभृताम्
तदा मातः शान्तक्रतवपदलाभोऽप्यतिलघुः॥ ६॥

भगवति तव तीरे नीरमात्राशनोऽहम्
विगतविषयतृष्णः कृष्णमाराधयामि।
सकलकलुषभङ्गे स्वर्गसोपानगङ्गे
तरलतरतरङ्गे देवि गङ्गे प्रसीद॥ ७॥

मातर्जाह्नवी शम्भुसङ्गवलिते मौलौ निधायाञ्जलिं
त्वत्तीरे वपुषोऽवसानसमये नारायणाङ्घ्रिद्वयम्।
सानन्दं स्मरतो भविष्यति मम प्राणप्रयाणोत्सवे
भूयाद् भक्तिरविच्युता हरिहराद्वैतात्मिका शाश्वती॥ ८॥

गङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत् प्रयतो नरः।
सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोकं स गच्छति॥ ९॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ श्री-गङ्गाष्टकं सम्पूर्णम्॥

गङ्गे त्रैलोक्यसारे सकलसुरवधूधौतविस्तीर्णतोये
पूर्णब्रह्मस्वरूपे हरिचरणरजोहारिणि स्वर्गमार्गे।
प्रायश्चितं यदि स्यात् तव जलकणिका ब्रह्महत्यादिपापे
कस्त्वां स्तोतुं समर्थः त्रिजगदघहरे देवि गङ्गे प्रसीद॥

॥ गङ्गादशहरास्तोत्रम् ॥

ब्रह्मोवाच

नमः शिवायै गङ्गायै शिवदायै नमो नमः।
नमस्ते रुद्ररूपिण्यै शाङ्कर्यै ते नमो नमः ॥ १ ॥

नमस्ते विश्वरूपिण्यै ब्रह्ममूर्त्यै नमो नमः।
सर्वदेवस्वरूपिण्यै नमो भेषजमूर्तये ॥ २ ॥

सर्वस्य सर्वव्याधीनां भिषक्-श्रेष्ठे नमोऽस्तु ते।
स्थाणुजङ्गमसम्भूतविषहन्त्र्यै नमो नमः ॥ ३ ॥

भोगोपभोगदायिन्यै भोगवत्यै नमो नमः।
मन्दाकिन्यै नमस्तेऽस्तु स्वर्गदायै नमो नमः ॥ ४ ॥

नमस्त्रैलोक्यभूषायै जगद्धात्र्यै नमो नमः।
नमः त्रिशुक्लसंस्थायै तेजोवत्यै नमो नमः ॥ ५ ॥

नन्दायै लिङ्गधारिण्यै नारायण्यै नमो नमः।
नमस्ते विश्वमुख्यायै रेवत्यै ते नमो नमः ॥ ६ ॥

बृहत्यै ते नमस्तेऽस्तु लोकधात्र्यै नमो नमः।
नमस्ते विश्वमित्रायै नन्दिन्यै ते नमो नमः ॥ ७ ॥

पृथ्व्यै शिवामृतायै च सुवृषायै नमो नमः।
शान्तायै च वरिष्ठायै वरदायै नमो नमः ॥ ८ ॥

उस्रायै सुखदोग्ध्र्यै च सञ्जीविन्यै नमो नमः।
ब्रह्मिष्ठायै ब्रह्मदायै दुरितघ्न्यै नमो नमः ॥ ९ ॥

प्रणतार्तिप्रभञ्जिन्यै जगन्मात्रे नमोऽस्तु ते।
सर्वापत्प्रतिपक्षायै मङ्गलायै नमो नमः॥ १०॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते॥ ११॥

निर्लेपायै दुर्गहन्त्र्यै दक्षायै ते नमो नमः।
परात्परतरे तुभ्यं नमस्ते मोक्षदे सदा॥ १२॥

गङ्गे ममाग्रतो भूया गङ्गे मे देवि पृष्ठतः।
गङ्गे मे पार्श्वयोरेहि त्वयि गङ्गेऽस्तु मे स्थितिः॥ १३॥

आदौ त्वमन्ते मध्ये च सर्वं त्वं गां गते शुभे।
त्वमेव मूलप्रकृतिस्त्वं हि नारायणः परः।
गङ्गे त्वं परमात्मा च शिवस्तुभ्यं नमः शिवे॥ १४॥

य इदं पठति स्तोत्रं भक्त्या नित्यं नरोऽपि यः।
श्रृणुयाच्छ्रद्धया युक्तः कायवाक्चित्तसम्भवैः॥ १५॥

दशधा संस्थितैर्दोषैः सर्वैरेव प्रमुच्यते।
सर्वान्कामानवाप्नोति प्रेत्य ब्रह्मणि लीयते॥ १६॥

ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमी हस्तसंयुता।
तस्यां दशम्यामेतच्च स्तोत्रं गङ्गाजले स्थितः॥ १७॥

यः पठेद्दशकृत्वस्तु दरिद्रो वाऽपि चाक्षमः।
सोऽपि तत्फलमाप्नोति गङ्गां सम्पूज्य यत्नतः॥ १८॥

अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः।
परदारोपसेवा च कायिकं त्रिविधं स्मृतम्॥ १९॥

पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वशः।
असम्बद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम्॥ २०॥

परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसाऽनिष्टचिन्तनम्।
वितथाभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधं स्मृतम्॥ २१॥

एतानि दश पापानि हर त्वं मम जाह्नवि।
दशपापहरा यस्मात्तस्माद्दशहरा स्मृता॥ २२॥

त्रयस्त्रिंशच्छतं पूर्वान् पितॄनथ पितामहान्।
उद्धरत्येव संसारान्मन्त्रेणानेन पूजिता॥ २३॥

नमो भगवत्यै दशपापहरायै गङ्गायै नारायण्यै रेवत्यै
शिवायै दक्षायै अमृतायै विश्वरूपिण्यै नन्दिन्यै ते नमो नमः॥

सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां
करधृतकलशोद्यत्सोत्पलामत्यभीष्टाम्।
विधिहरिहररूपां सेन्दुकोटीरजुष्टां
कलितसितदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि॥ २४॥

आदावादिपितामहस्य निगमव्यापारपात्रे जलं
पश्चात्पन्नगशायिनो भगवतः पादोदकं पावनम्।
भूयः शम्भुजटाविभूषणमणिर्जह्नोर्महर्षेरियं
देवी कल्मषनाशिनी भगवती भागीरथी दृश्यते॥ २५॥

गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति॥ २६॥

॥ इति स्कन्दे महापुराणे एकाशीति साहस्र्यां संहितायां तृतीये काशीखण्डे धर्माब्धिस्था श्रीगङ्गादशहरास्तुतिः सम्पूर्णा॥

॥ यमुनाष्टकम् ॥

मुरारिकायकालिमाललामवारिधारिणी
तृणीकृतत्रिविष्टपा त्रिलोकशोकहारिणी।
मनोऽनुकूलकूलकुञ्जपुञ्जधूतदुर्मदा
धुनोतु नो मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा॥ १॥

मलापहारिवारिपूरिभूरिमण्डितामृता
भृशं प्रवातकप्रपञ्चनातिपण्डितानिशा।
सुनन्दनन्दिनाङ्गसङ्गरागरञ्जिता हिता
धुनोतु नो मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा॥ २॥

लसत्तरङ्गसङ्गधूतभूतजातपातका
नवीनमाधुरीधुरीणभक्तिजातचातका ।
तटान्तवा सदा सहंससंसृताह्निकामदा
धुनोतु नो मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा॥ ३॥

विहाररासस्वेदभेदधीरतीरमारुता
गता गिरामगोचरे यदीयनीरचारुता।
प्रवाहसाहचर्यपूतमेदिनीनदीनदा
धुनोतु नो मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा॥ ४॥

तरङ्गसङ्गसैकतान्तरातितं सदासिता
शरन्निशाकरांशुमञ्जुमञ्जरी सभाजिता।
भवार्चनाप्रचारुणाम्बुनाऽधुना विशारदा
धुनोतु नो मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा॥ ५॥

जलान्तकेलिकारिचारुराधिकाङ्गरागिणी
स्वभर्तुरन्यदुर्लभाङ्गताङ्गतांशभागिनी ।
स्वदत्तसुप्तसप्तसिन्धुभेदिनातिकोविदा
धुनोतु नो मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा॥ ६ ॥

जलच्युताच्युताङ्गरागलम्पटालिशालिनी
विलोलराधिकाकचान्तचम्पकालिमालिनी।
सदावगाहनावतीर्णभर्तृभृत्यनारदा
धुनोतु नो मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा॥ ७॥

सदैव नन्दिनन्दकेलिशालिकुञ्जमञ्जुला
तटोत्थफुल्लमल्लिकाकदम्बरेणुसूज्ज्वला ।
जलावगाहिनां नृणां भवाब्धिसिन्धुपारदा
धुनोतु नो मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा॥ ८॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-यमुनाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ नर्मदाष्टकम् ॥

सबिन्दु-सिन्धु-सुस्खलत्-तरङ्ग-भङ्ग-रञ्जितम्
द्विषत्सु पाप-जात-जातकादि-वारि-संयुतम्।
कृतान्त-दूत-काल-भूत-भीति-हारि-वर्मदे
त्वदीय-पाद-पङ्कजं नमामि देवि नर्मदे॥ १ ॥

त्वदम्बु-लीन-दीन-मीन-दिव्य-सम्प्रदायकम्
कलौ मलौघ-भार-हारि-सर्व-तीर्थ-नायकम्।
सुमच्छ-कच्छ-नक्र-चक्र-वाक-चक्र-शर्मदे
त्वदीय-पाद-पङ्कजं नमामि देवि नर्मदे॥ २॥

महा-गभीर-नीर-पूर-पाप-धूत-भूतलम्
ध्वनत्-समस्त-पातकारि-दारिताप-दाछलम्।
जगल्लये महाभये मृकण्डु-सूनु-हर्म्यदे
त्वदीय-पादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे॥ ३॥

गतं तदैव मे भयं त्वदम्बु वीक्षितं यदा
मृकण्डु-सूनु-शौनका-सुरारि-सेवितं सदा।
पुनर्-भवाब्धि-जन्मजं भवाब्धि-दुःख-वर्मदे
त्वदीय-पाद-पङ्कजं नमामि देवि नर्मदे॥ ४॥

अलक्ष्य-लक्ष-किन्नरामरासुरादि-पूजितम्
सुलक्ष-नीर-तीर-धीर-पक्षि-लक्ष-कूजितम्।
वसिष्ठ-शिष्ट-पिप्पलादि-कर्दमादि-शर्मदे
त्वदीय-पादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे॥ ५॥

सनत्कुमार-नाचिकेत-कश्यपात्रि-षत्पदैः
धृतं स्वकीय-मानसेषु नारदादि-षत्पदैः।
रवीन्दु-रन्ति-देव-देवराज-कर्म-शर्मदे
त्वदीय-पाद-पङ्कजं नमामि देवि नर्मदे॥ ६॥

अलक्ष-लक्ष-लक्ष-पाप-लक्ष-सारसायुधम्
ततस्तु जीव-जन्तु-तन्तु-भुक्ति-मुक्ति-दायकम्।
विरिञ्चि-विष्णु-शङ्कर-स्वकीय-धाम-वर्मदे
त्वदीय-पाद-पङ्कजं नमामि देवि नर्मदे॥ ७॥

अहो धृतं स्वनं श्रुतं महेशि-केश-जातटे
किरात-सूत-बाडबेषु पण्डिते शठे नटे।
दुरन्त-पाप-तापहारि-सर्व-जन्तु-शर्मदे
त्वदीय-पाद-पङ्कजं नमामि देवि नर्मदे॥८॥

इदं तु नर्मदाष्टकं त्रिकालमेव ये सदा
पठन्ति ते निरन्तरं न यान्ति दुर्गतिं कदा।
सुलभ्यदेहदुर्लभं महेशधामगौरवम्
पुनर्भवा नरा न वै विलोकयन्ति रौरवम्॥९॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-नर्मदाष्टकम् सम्पूर्णम्॥

॥त्रिवेणीस्तोत्रम्॥

मुक्तामयालङ्कृतमुद्रवेणी भक्ताभयत्राणसुबद्धवेणी।
मत्तालिगुञ्जन्मकरन्दवेणी श्रीमत्प्रयागे जयति त्रिवेणी॥१॥

लोकत्रयैश्वर्यनिदानवेणी तापत्रयोच्चाटनबद्धवेणी।
धर्मा-ऽर्थकामाकलनैकवेणी श्रीमत्प्रयागे जयति त्रिवेणी॥२॥

मुक्ताङ्गनामोहन-सिद्धवेणी भक्तान्तरानन्द-सुबोधवेणी।
वृत्त्यन्तरोद्वेगविवेकवेणी श्रीमत्प्रयागे जयति त्रिवेणी॥३॥

दुग्धोदधिस्फूर्जसुभद्रवेणी नीलाभ्रशोभाललिता च वेणी।
स्वर्णप्रभाभासुरमध्यवेणी श्रीमत्प्रयागे जयति त्रिवेणी॥४॥

विश्वेश्वरोत्तुङ्गकपर्दिवेणी विरिञ्चिविष्णुप्रणतैकवेणी।
त्रयीपुराणा सुरसार्धवेणी श्रीमत्प्रयागे जयति त्रिवेणी॥५॥

माङ्गल्यसम्पत्तिसमृद्धवेणी मात्रान्तरन्यस्तनिदानवेणी।
परम्परापातकहारिवेणी श्रीमत्प्रयागे जयति त्रिवेणी॥६॥

निमज्जदुन्मज्जमनुष्यवेणी त्रयोदयोभाग्यविवेकवेणी।
विमुक्तजन्माविभवैकवेणी श्रीमत्प्रयागे जयति त्रिवेणी॥७॥

सौन्दर्यवेणी सुरसार्धवेणी माधुर्यवेणी महनीयवेणी।
रत्नैकवेणी रमणीयवेणी श्रीमत्प्रयागे जयति त्रिवेणी॥८॥

सारस्वताकार-विघातवेणी कालिन्दकन्यामयलक्ष्यवेणी।
भागीरथीरूप-महेशवेणी श्रीमत्प्रयागे जयति त्रिवेणी॥९॥

श्रीमद्भवानीभवनैकवेणी लक्ष्मीसरस्वत्यभिमानवेणी।
माता त्रिवेणी त्रयीरत्नवेणी श्रीमत्प्रयागे जयति त्रिवेणी॥१०॥

त्रिवेणीदशकं स्तोत्रं प्रातर्नित्यं पठेन्नरः।
तस्य वेणी प्रसन्ना स्याद् विष्णुलोकं स गच्छति॥११॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-त्रिवेणीस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥कावेरी प्रार्थना॥

मरुद्वृधे महाभागे महादेवि मनोहरे।
सर्वाभीष्टप्रदे देवि स्नास्थितां पुण्यवर्धिनि॥१॥

सर्वपापक्षयकरे मम पापं विनाशय।
कवेरकन्ये कावेरि समुद्रमहिषिप्रिये॥ २॥

देहि मे भक्तिमुक्ति त्वं सर्वतीर्थस्वरूपिणि।
सिन्धुवर्यै दयासिन्धो मामुद्धर दयाम्बुधे॥ ३॥

स्त्रियं देहि सुतं देहि श्रियं देहि ततः स्वगा।
आयुष्यं देहि चाऽऽरोग्यं ऋणान्मुक्तं कुरुष्व माम्॥ ४॥

तासां च सरितां मध्ये सह्यकन्याऽघनाशिनि।
कावेरि लोकविख्याता जनतापनिवारिणि॥ ५॥

॥ इति श्री-ब्रह्माण्ड पुराणे कावरी प्रार्थना सम्पूर्णा॥

॥ कार्तवीर्यार्जुन-द्वादशनामस्तोत्रम् ॥

ॐ श्रीं क्रों कार्तवीर्यार्जुनाय नमः।

कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्रवान्।
तस्य स्मरणमात्रेण गतं नष्टं च लभ्यते॥ १ ॥

कार्तवीर्यः खलद्वेषी कृतवीर्यसुतो बली।
सहस्रबाहुः शत्रुघ्नो रक्तवासा धनुर्धरः॥ २ ॥

रक्तगन्धो रक्तमाल्यो राजा स्मर्तुरभीष्टदः।
द्वादशैतानि नामानि कार्तवीर्यस्य यः पठेत्॥ ३ ॥

सम्पदस्तत्र जायन्ते जनस्तत्र वशं गतः।
आनयत्याशु दूरस्थं क्षेमलाभयुतं प्रियम्॥ ४ ॥

सहस्रबाहुसशरं महितं सचापम्
रक्ताम्बरं रक्तकिरीटकुण्डलम्।
चोरादि-दुष्टभय-नाशम् इष्टदं तम्
ध्यायेन्महाबल-विजृम्भित-कार्तवीर्यम्॥ ५ ॥

यस्य स्मरणमात्रेण सर्वदुःखक्षयो भवेत्।
यन्नामानि महावीर्यश्चार्जुनः कृतवीर्यवान्॥ ६ ॥

हैहयाधिपतेः स्तोत्रं सहस्रावृत्तिकारितम्।
वाञ्छितार्थप्रदं नृणां स्वराज्यं सुकृतं यदि॥ ७ ॥

॥ इति कार्तवीर्य द्वादशनाम स्तोत्रम् ॥

॥ यमभयनिवारणस्तोत्रम् ॥

अतिभीषण कटुभाषण यम किङ्कर पटली
कृतताडन परिपीडन मरणागमसमये।
उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्
शिव शङ्कर शिव शङ्कर हर मे हर दुरितम्॥

॥ यमाष्टकम् ॥

श्रीनारायण उवाच

हरेरुत्कीर्तनं श्रुत्वा सावित्री यमवक्रतः।
साश्रुनेत्रा सपुलका यमं पुनरुवाच सा॥ १ ॥

सावित्र्युवाच

हरेरुत्कीर्तनं धर्म स्वकुलोद्धारकारणम्।
श्रोतृणां चैव वक्तृणां जन्ममृत्युजराहरम्॥ २ ॥

दानानां च व्रतानां च सिद्धीनां तपसां परम्।
योगानां चैव वेदानां सेवनं कीर्तनं हरेः॥ ३ ॥

मुक्तत्वममरत्वं च सर्वसिद्धित्वमेव वा।
श्रीकृष्णसेवनस्यैव कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥ ४ ॥

भजामि केन विधिना श्रीकृष्णं प्रकृतेः परम्।
मूढां मामबलां तात वद वेदविदां वर॥ ५ ॥

शुभकर्मविपाकं च श्रुतं नृणां मनोहरम्।
कर्माशुभविपाकं च तन्मे व्याख्यातुमर्हसि॥ ६ ॥

इत्युक्त्वा सा सती ब्रह्मन् भक्तिनम्रात्मकन्धरा।
तुष्टाव धर्मराजं च वेदोक्तेन स्तवेन च॥७॥

सावित्र्युवाच

तपसा धर्ममाराध्य पुष्करे भास्करः पुरा।
धर्मांशं यं सुतं प्राप धर्मराजं नमाम्यहम्॥८॥

समता सर्वभूतेषु यस्य सर्वस्य साक्षिणः।
अतो यन्नाम शमनमिति तं प्रणमाम्यहम्॥९॥

येनान्तश्च कृतो विश्वे सर्वेषां जीविनां परम्।
कामानुरूपकालेन तं कृतान्तं नमाम्यहम्॥१०॥

बिभर्ति दण्डं दण्ड्याय पापिनां शुद्धिहेतवे।
नमामि तं दण्डधरं यः शास्ता सर्वकर्मणाम्॥११॥

विश्वे च कलयत्येव सर्वायुश्चापि सन्ततम्।
अतीव दुर्निवार्यं च तं कालं प्रणमाम्यहम्॥१२॥

तपस्वी वैष्णवो धर्मी यः संयमी विजितेन्द्रियः।
जीविनां कर्मफलदं तं यमं प्रणमाम्यहम्॥१३॥

स्वात्मारामश्च सर्वज्ञो मित्रं पुण्यकृतां भवेत्।
पापिनां क्लेशदो यस्य पुण्यं मित्रं नमाम्यहम्॥१४॥

यज्जन्म ब्रह्मणो वंशे ज्वलन्तं ब्रह्मतेजसा।
यो ध्यायति परं ब्रह्म ब्रह्मवंशं नमाम्यहम्॥१५॥

इत्युक्त्वा सा च सावित्री प्रणनाम यमं मुने।
यमस्तां विष्णुभजनं कर्मपाकमुवाच ह॥१६॥

इदं यमाष्टकं नित्यं प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
यमात्तस्य भयं नास्ति सर्वपापात्प्रमुच्यते॥ १७॥

महापापी यदि पठेन्नित्यं भक्त्या च नारद।
यमः करोति संशुद्धं कायव्यूहेन निश्चितम्॥ १८॥

॥ इति श्री-ब्रह्मवैवर्तमहापुराणे प्रकृतिखण्डे श्री-नारद-नारायण-संवादे श्री-तुलस्योपाख्याने श्री-सावित्रीकृतयमस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ कलिदोषनिवारणस्तोत्रम्॥

कार्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्या नलस्य च।
ऋतुपर्णस्य राजर्षेः कीर्तनं कलिनाशनम्॥

॥ अवैधव्यप्रार्थनास्तोत्रम्॥

ओङ्कारपूर्विके देवि वीणापुस्तकधारिणि।
वेदमातर्नमस्तुभ्यं अवैधव्यं प्रयच्छ मे॥

पतिव्रते महाभागे भर्तुश्च प्रियवादिनि।
अवैधव्यं च सौभाग्यं देहि त्वं मम सुव्रते।
पुत्रान् पौत्रांश्च सौख्यं च सौमङ्गल्यं च देहि मे॥

❀❀❀

॥ वन्दे मातरम्॥

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्यश्यामलां मातरम्।

शुभ्र-ज्योत्स्नाम् पुलकित-यामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदलशोभिनीम्।
सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्॥
सप्तकोटि कण्ठ-कलकल-निनाद-कराले
निसप्तकोटि-भुजैर्धृत-खरकरवाले
के बोले मा तुमी अबले
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम्
रिपुदलवारिणीं मातरम्॥
तुमि विद्या तुमि धर्म तुमि हृदि तुमि मर्म।
त्वं हि प्राणाः शरीरे बाहु ते तुमि मा शक्ति।
हृदये तुमि मा भक्ति
तोमारै प्रतिमा गडि मन्दिरे मन्दिरे॥
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमलदल विहारिणी
वाणी विद्यादायिनी नमामि त्वाम्
नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्
सुजलां सुफलां मातरम्॥
श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्
धरणीं भरणीं मातरम्॥

॥ क्षमा प्रार्थना ॥

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
तानि सर्वाणि हे देव क्षमस्व पुरुषोत्तम॥

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो॥

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं तु यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव नारायण नमोऽस्तु ते॥

विसर्गबिन्दुमात्राणि पदपादाक्षराणि च।
न्यूनानि चातिरिक्तानि क्षमस्व पुरुषोत्तम॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग् भवेत्॥
सर्वं श्री-कृष्णार्पणमस्तु॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥
हरिः ॐ तत् सत्॥

❀❀❀

विभागः २

शतनामस्तोत्राणि

॥ गणेशाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

विनायको विघ्नराजो गौरीपुत्रो गणेश्वरः।
स्कन्दाग्रजोऽव्ययो पूतो दक्षोऽध्यक्षो द्विजप्रियः॥ १ ॥

अग्निगर्भच्छिदिन्द्रश्रीप्रदो वाणीबलप्रदः।
सर्वसिद्धिप्रदः शर्वतनयः शर्वरीप्रियः॥ २ ॥

सर्वात्मकः सृष्टिकर्ता देवोऽनेकार्चितः शिवः।
शुद्धो बुद्धिप्रियः शान्तो ब्रह्मचारी गजाननः॥ ३ ॥

द्वैमात्रेयो मुनिस्तुत्यो भक्तविघ्नविनाशनः।
एकदन्तश्चतुर्बाहुश्चतुरः शक्तिसंयुतः॥ ४ ॥

लम्बोदरः शूर्पकर्णो हरिर्ब्रह्मविदुत्तमः।
कालो ग्रहपतिः कामी सोमसूर्याग्निलोचनः॥ ५ ॥

पाशाङ्कुशधरश्चण्डो गुणातीतो निरञ्जनः।
अकल्मषः स्वयंसिद्धः सिद्धार्चितपदाम्बुजः॥ ६ ॥

बीजपूरफलासक्तो वरदः शाश्वतः कृतिः।
विद्वत्प्रियो वीतभयो गदी चक्रीक्षुचापधृत्॥ ७ ॥

श्रीदोऽजोत्पलकरः श्रीपतिः स्तुतिहर्षितः।
कुलाद्रिभेत्ता जटिलः कलिकल्मषनाशनः॥ ८ ॥

चन्द्रचूडामणिः कान्तः पापहारी समाहितः।
आश्रितः श्रीकरः सौम्यो भक्तवाञ्छितदायकः॥ ९ ॥

शान्तः कैवल्यसुखदः सच्चिदानन्दविग्रहः।
ज्ञानी दयायुतो दान्तो ब्रह्म द्वेषविवर्जितः॥ १०॥

प्रमत्तदैत्यभयदः श्रीकण्ठो विबुधेश्वरः।
रमार्चितो विधिर्नागराजयज्ञोपवीतवान्॥ ११॥

स्थूलकण्ठः स्वयङ्कर्ता सामघोषप्रियो परः।
स्थूलतुण्डोऽग्रणीर्धीरो वागीशः सिद्धिदायकः॥ १२॥

दूर्वाबिल्वप्रियोऽव्यक्तमूर्तिरद्भुतमूर्तिमान्।
शैलेन्द्रतनुजोत्सङ्गखेलनोत्सुकमानसः ॥ १३॥

स्वलावण्यसुधासारजितमन्मथविग्रहः ।
समस्तजगदाधारो मायी मूषिकवाहनः।
हृष्टस्तुष्टः प्रसन्नात्मा सर्वसिद्धिप्रदायकः॥ १४॥

॥ इति श्री-गणेशाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ गणपत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्॥

॥ ध्यानम्॥

ॐकारसन्निभमिभाननमिन्दुभालम्
मुक्ताग्रबिन्दुममलद्युतिमेकदन्तम् ।
लम्बोदरं कलचतुर्भुजमादिदेवम्
ध्यायेन्महागणपतिं मतिसिद्धिकान्तम्॥

॥ स्तोत्रम्॥

गणेश्वरो गणक्रीडो महागणपतिस्तथा।
विश्वकर्ता विश्वमुखो दुर्जयो धूर्जयो जयः॥ १॥

सुरूपः सर्वनेत्राधिवासो वीरासनाश्रयः।
योगाधिपस्तारकस्थः पुरुषो गजकर्णकः॥२॥

चित्राङ्गः श्यामदशनो भालचन्द्रश्चतुर्भुजः।
शम्भुतेजा यज्ञकायः सर्वात्मा सामबृंहितः॥३॥

कुलाचलांसो व्योमनाभिः कल्पद्रुमवनालयः।
निम्ननाभिः स्थूलकुक्षिः पीनवक्षा बृहद्भुजः॥४॥

पीनस्कन्धः कम्बुकण्ठो लम्बोष्ठो लम्बनासिकः।
सर्वावयवसम्पूर्णः सर्वलक्षणलक्षितः॥५॥

इक्षुचापधरः शूली कान्तिकन्दलिताश्रयः।
अक्षमालाधरो ज्ञानमुद्रावान् विजयावहः॥६॥

कामिनीकामनाकाममालिनीकेलिलालितः।
अमोघसिद्धिराधार आधाराधेयवर्जितः॥७॥

इन्दीवरदलश्याम इन्दुमण्डलनिर्मलः।
कर्मसाक्षी कर्मकर्ता कर्माकर्मफलप्रदः॥८॥

कमण्डलुधरः कल्पः कपर्दी कटिसूत्रभृत्।
कारुण्यदेहः कपिलो गुह्यागमनिरूपितः॥९॥

गुहाशयो गुहाब्धिस्थो घटकुम्भो घटोदरः।
पूर्णानन्दः परानन्दो धनदो धरणीधरः॥१०॥

बृहत्तमो ब्रह्मपरो ब्रह्मण्यो ब्रह्मवित्प्रियः।
भव्यो भूतालयो भोगदाता चैव महामनाः॥११॥

वरेण्यो वामदेवश्च वन्द्यो वज्रनिवारणः।
विश्वकर्ता विश्वचक्षुर्हवनं हव्यकव्यभुक्॥ १२॥

स्वतन्त्रः सत्यसङ्कल्पस्तथा सौभाग्यवर्धनः।
कीर्तिदः शोकहारी च त्रिवर्गफलदायकः॥ १३॥

चतुर्बाहुश्चतुर्दन्तश्चतुर्थीतिथिसम्भवः ।
सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्॥ १४॥

कामरूपः कामगतिर्द्विरदो द्वीपरक्षकः।
क्षेत्राधिपः क्षमाभर्ता लयस्थो लड्डुकप्रियः॥ १५॥

प्रतिवादिमुखस्तम्भो दुष्टचित्तप्रसादनः।
भगवान् भक्तिसुलभो याज्ञिको याजकप्रियः॥ १६॥

इत्येवं देवदेवस्य गणराजस्य धीमतः।
शतमष्टोत्तरं नाम्नां सारभूतं प्रकीर्तितम्॥ १७॥

सहस्रनाम्नामाकृष्य मया प्रोक्तं मनोहरम्।
ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय स्मृत्वा देवं गणेश्वरम्।
पठेत्स्तोत्रमिदं भक्त्या गणराजः प्रसीदति॥ १८॥

॥ इति श्रीगणेशपुराणे उपासनाखण्डे श्रीगणपत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ गणपति गकार अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्॥

गकाररूपो गम्बीजो गणेशो गणवन्दितः।
गणनीयो गणोगण्यो गणनातीतसद्गुणः॥ १॥

गगनादिकसृद्गङ्गासुतो गङ्गासुतार्चितः।
गङ्गाधरप्रीतिकरो गवीशेड्यो गदापहः ॥ २ ॥

गदाधरनुतो गद्यपद्यात्मककवित्वदः।
गजास्यो गजलक्ष्मीवान् गजवाजिरथप्रदः ॥ ३ ॥

गञ्जानिरतशिक्षाकृद्गणितज्ञो गणोत्तमः।
गण्डदानाञ्चितो गन्ता गण्डोपलसमाकृतिः ॥ ४ ॥

गगनव्यापको गम्यो गमानादिविवर्जितः।
गण्डदोषहरो गण्डभ्रमद्भ्रमरकुण्डलः ॥ ५ ॥

गतागतज्ञो गतिदो गतमृत्युर्गतोद्भवः।
गन्धप्रियो गन्धवाहो गन्धसिन्धूरबृन्दगः ॥ ६ ॥

गन्धादिपूजितो गव्यभोक्ता गर्गादिसन्नुतः।
गरिष्ठो गरभिद्गर्वहरो गरलिभूषणः ॥ ७ ॥

गविष्ठो गर्जितारावो गभीरहृदयो गदी।
गलत्कुष्ठहरो गर्भप्रदो गर्भार्भरक्षकः ॥ ८ ॥

गर्भाधारो गर्भवासि-शिशुज्ञान-प्रदायकः।
गरुत्मत्तुल्यजवनो गरुडध्वजवन्दितः ॥ ९ ॥

गयेडितो गयाश्राद्धफलदश्च गयाकृतिः।
गदाधरावतारी च गन्धर्वनगरार्चितः ॥ १० ॥

गन्धर्वगानसन्तुष्टो गरुडाग्रजवन्दितः।
गणरात्रसमाराध्यो गर्हणस्तुति-साम्यधीः ॥ ११ ॥

गर्ताभनाभिर्गव्यूतिदीर्घतुण्डो गभस्तिमान्।
गर्हिताचारदूरश्च गरुडोपलभूषितः॥ १२॥

गजारिविक्रमो गन्धमूषवाजी गतश्रमः।
गवेषणीयो गहनो गहनस्थमुनिस्तुतः॥ १३॥

गवयच्छिद्गण्डकभिद्गह्वरापथवारणः।
गजदन्तायुधो गर्जद्रिपुघ्नो गजकर्णिकः॥ १४॥

गजचर्मामयच्छेत्ता गणाध्यक्षो गणार्चितः।
गणिकानर्तनप्रीतो गच्छन् गन्धफली प्रियः॥ १५॥

गन्धकादिरसाधीशो गणकानन्ददायकः।
गरभादिजनुर्हर्ता गण्डकीगाहनोत्सुकः॥ १६॥

गण्डूषीकृतवाराशिः गरिमालघिमादिदः।
गवाक्षवत्सौधवासी गर्भितो गर्भिणीनुतः॥ १७॥

गन्धमादनशैलाभो गण्डभेरुण्डविक्रमः।
गदितो गद्गदारावसंस्तुतो गह्वरीपतिः॥ १८॥

गजेशो गरीयान् गद्येड्यो गतभीर्गदितागमः।
गर्हणीय गुणाभावो गङ्गादिकशुचिप्रदः॥ १९॥

गणनातीत-विद्या-श्री-बलायुष्यादि-दायकः।
एवं श्रीगणनाथस्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम्॥ २०॥

पठनाच्छ्रवणात् पुंसां श्रेयः प्रेमप्रदायकम्।
पूजान्ते यः पठेन्नित्यं प्रीतः सन् तस्य विघ्नराट्॥ २१॥

यं यं कामयते कामं तं तं शीघ्रं प्रयच्छति।
दूर्वयाभ्यर्चयन् देवमेकविंशतिवासरान्॥ २२॥

एकविंशतिवारं यो नित्यं स्तोत्रं पठेद्यदि।
तस्य प्रसन्नो विघ्नेशः सर्वान् कामान् प्रयच्छति॥ २३॥

॥ इति श्री-गणपति गकार अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

❀❀❀

॥ रामाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

श्रीराघवं दशरथात्मजमप्रमेयं सीतापतिं रघुकुलान्वयरत्नदीपम्।
आजानुबाहुमरविन्ददलायताक्षं रामं निशाचरविनाशकरं नमामि॥

॥ स्तोत्रम् ॥

श्रीरामो रामभद्रश्च रामचन्द्रश्च शाश्वतः।
राजीवलोचनः श्रीमान् राजेन्द्रो रघुपुङ्गवः॥ १ ॥

जानकीवल्लभो जैत्रो जितामित्रो जनार्दनः।
विश्वामित्रप्रियो दान्तः शरणत्राणतत्परः॥ २ ॥

वालिप्रमथनो वाग्मी सत्यवाक् सत्यविक्रमः।
सत्यव्रतो व्रतधरः सदा हनुमदाश्रितः॥ ३ ॥

कौसलेयः खरध्वंसी विराधवधपण्डितः।
विभीषणपरित्राता हरकोदण्डखण्डनः॥ ४ ॥

सप्ततालप्रभेत्ता च दशग्रीवशिरोहरः।
जामदग्न्यमहादर्पदलनस्ताटकान्तकः॥ ५ ॥

वेदान्तसारो वेदात्मा भवरोगस्य भेषजम्।
दूषणत्रिशिरोहन्ता त्रिमूर्तिस्त्रिगुणात्मकः॥ ६ ॥

त्रिविक्रमस्त्रिलोकात्मा पुण्यचारित्रकीर्तनः।
त्रिलोकरक्षको धन्वी दण्डकारण्यकर्तनः॥ ७ ॥

अहल्याशापशमनः पितृभक्तो वरप्रदः।
जितेन्द्रियो जितक्रोधो जितामित्रो जगद्गुरुः ॥ ८ ॥

ऋक्षवानरसङ्घाती चित्रकूटसमाश्रयः।
जयन्तत्राणवरदः सुमित्रापुत्रसेवितः ॥ ९ ॥

सर्वदेवादिदेवश्च मृतवानरजीवनः।
मायामारीचहन्ता च महादेवो महाभुजः ॥ १० ॥

सर्वदेवस्तुतः सौम्यो ब्रह्मण्यो मुनिसंस्तुतः।
महायोगो महोदारः सुग्रीवेप्सितराज्यदः ॥ ११ ॥

सर्वपुण्याधिकफलः स्मृतसर्वाघनाशनः।
अनादिरादिपुरुषो महापूरुष एव च ॥ १२ ॥

पुण्योदयो दयासारः पुराणपुरुषोत्तमः।
स्मितवक्रो मितभाषी पूर्वभाषी च राघवः ॥ १३ ॥

अनन्तगुणगम्भीरो धीरोदात्तगुणोत्तमः।
मायामानुषचारित्रो महादेवादिपूजितः ॥ १४ ॥

सेतुकृज्जितवारीशः सर्वतीर्थमयो हरिः।
श्यामाङ्गः सुन्दरः शूरः पीतवासा धनुर्धरः ॥ १५ ॥

सर्वयज्ञाधिपो यज्वा जरामरणवर्जितः।
शिवलिङ्गप्रतिष्ठाता सर्वापगुणवर्जितः ॥ १६ ॥

परमात्मा परं ब्रह्म सच्चिदानन्दविग्रहः।
परञ्ज्योतिः परन्धाम पराकाशः परात्परः।
परेशः पारगः पारः सर्वदेवात्मकः परः ॥ १७ ॥

॥ इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखण्डे
श्रीरामाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ आञ्जनेयाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

आञ्जनेयो महावीरो हनुमान् मारुतात्मजः।
तत्त्वज्ञानप्रदः सीतादेवीमुद्राप्रदायकः ॥ १ ॥

अशोकवनिकाच्छेत्ता सर्वमायाविभञ्जनः।
सर्वबन्धविमोक्ता च रक्षोविध्वंसकारकः ॥ २ ॥

परविद्यापरीहर्ता परशौर्यविनाशकः।
परमन्त्रनिराकर्ता परयन्त्रप्रभेदकः ॥ ३ ॥

सर्वग्रहविनाशी च भीमसेनसहायकृत्।
सर्वदुःखहरः सर्वलोकचारी मनोजवः ॥ ४ ॥

पारिजातद्रुमूलस्थः सर्वमन्त्रस्वरूपवान्।
सर्वतन्त्रस्वरूपी च सर्वयन्त्रात्मिकस्तथा ॥ ५ ॥

कपीश्वरो महाकायः सर्वरोगहरः प्रभुः।
बलसिद्धिकरः सर्वविद्यासम्पत्प्रदायकः ॥ ६ ॥

कपिसेनानायकश्च भविष्यच्चतुराननः।
कुमारब्रह्मचारी च रत्नकुण्डलदीप्तिमान् ॥ ७ ॥

चञ्चलद्वालसन्नद्धो लम्बमानशिखोज्ज्वलः।
गन्धर्वविद्यातत्त्वज्ञो महाबलपराक्रमः ॥ ८ ॥

कारागृहविमोक्ता च शृङ्खलाबन्धमोचकः।
सागरोत्तारकः प्राज्ञो रामदूतः प्रतापवान्॥ ९॥

वानरः केसरीसूनुः सीताशोकनिवारणः।
अञ्जनागर्भसम्भूतो बालार्कसदृशाननः॥ १०॥

विभीषणप्रियकरो दशग्रीवकुलान्तकः।
लक्ष्मणप्राणदाता च वज्रकायो महाद्युतिः॥ ११॥

चिरञ्जीवी रामभक्तो दैत्यकार्यविघातकः।
अक्षहन्ता काञ्चनाभः पञ्चवक्त्रो महातपाः॥ १२॥

लङ्किणीभञ्जनः श्रीमान् सिंहिकाप्राणभञ्जनः।
गन्धमादनशैलस्थो लङ्कापुरविदाहकः॥ १३॥

सुग्रीवसचिवो धीरः शूरो दैत्यकुलान्तकः।
सुरार्चितो महातेजो रामचूडामणिप्रदः॥ १४॥

कामरूपी पिङ्गलाक्षो वार्धिमैनाकपूजितः।
कबलीकृतमार्तण्डमण्डलो विजितेन्द्रियः॥ १५॥

रामसुग्रीवसन्धाता महिरावणमर्दनः।
स्फटिकाभो वागधीशो नवव्याकृतिपण्डितः॥ १६॥

चतुर्बाहुर्दीनबन्धुर्महात्मा भक्तवत्सलः।
सञ्जीवननगाहर्ता शुचिर्वाग्मी धृतव्रतः॥ १७॥

कालनेमिप्रमथनो हरिमर्कटमर्कटः।
दान्तः शान्तः प्रसन्नात्मा शतकण्ठमदापहः॥ १८॥

योगी रामकथालोलः सीतान्वेषणपण्डितः।
वज्रदंष्ट्रो वज्रनखो रुद्रवीर्यसमुद्भवः॥१९॥

इन्द्रजित्प्रहितामोघब्रह्मास्त्रविनिवारकः।
पार्थध्वजाग्रसंवासी शरपञ्जरहेलकः॥२०॥

दशबाहुर्लोकपूज्यो जाम्बवत्प्रीतिवर्धनः।
सीतासमेतश्रीरामपादसेवाधुरन्धरः ॥२१॥

॥इति श्री-आञ्जनेयाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥कृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्॥

ॐ अस्य श्रीकृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य श्रीशेष ऋषिः।
अनुष्टुप्-छन्दः। श्रीकृष्णो देवता।
श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे श्री-कृष्णाष्टोत्तरशतनामजपे विनियोगः।

॥ध्यानम्॥

शिखिमुकुटविशेषं नीलपद्माङ्गदेशम्
विधुमुखकृतकेशं कौस्तुभापीतवेशम्।
मधुररवकलेशं शं भजे भ्रातृशेषम्
व्रजजनवनितेशं माधवं राधिकेशम्॥

श्रीशेष उवाच

वसुन्धरे वरारोहे जनानामस्ति मुक्तिदम्।
सर्वमङ्गलमूर्धन्यमणिमाद्यष्टसिद्धिदम् ॥

महापातककोटिघ्नं सर्वतीर्थफलप्रदम्।
समस्तजपयज्ञानां फलदं पापनाशनम्॥

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि नाम्नामष्टोत्तर शतम्।
सहस्रनाम्नां पुण्यानां त्रिरावृत्या तु यत्फलम्॥

एकावृत्या तु कृष्णस्य नामैकं तत्प्रयच्छति।
तस्मात्पुण्यतरं चैतत्स्तोत्रं पातकनाशनम्॥

नाम्नामष्टोत्तरशतस्याहमेव ऋषिः प्रिये।
छन्दोऽनुष्टुब्देवता तु योगः कृष्णप्रियावहः॥

॥स्तोत्रम्॥

श्रीकृष्णः कमलानाथो वासुदेवः सनातनः।
वसुदेवात्मजः पुण्यो लीलामानुषविग्रहः॥१॥

श्रीवत्सकौस्तुभधरो यशोदावत्सलो हरिः।
चतुर्भुजात्तचक्रासिगदाशङ्खाम्बुजायुधः ॥२॥

देवकीनन्दनः श्रीशो नन्दगोपप्रियात्मजः।
यमुनावेगसंहारी बलभद्रप्रियानुजः॥३॥

पूतनाजीवितहरः शकटासुरभञ्जनः।
नन्दव्रजजनानन्दी सच्चिदानन्दविग्रहः॥४॥

नवनीतविलिप्ताङ्गो नवनीतनटोऽनघः।
नवनीतनवाहारो मुचुकुन्दप्रसादकः॥५॥

षोडशस्त्रीसहस्रेशस्त्रिभङ्गी मधुराकृतिः।
शुकवागमृताब्धीन्दुर्गोविन्दो योगिनां पतिः॥६॥

वत्सवाटचरोऽनन्तो धेनुकासुरभञ्जनः।
तृणीकृततृणावर्तो यमलार्जुनभञ्जनः॥ ७॥

उत्तालतालभेत्ता च तमालश्यामलाकृतिः।
गोपगोपीश्वरो योगी कोटिसूर्यसमप्रभः॥ ८॥

इलापतिः परञ्ज्योतिर्यादवेन्द्रो यदूद्वहः।
वनमाली पीतवासाः पारिजातापहारकः॥ ९॥

गोवर्धनाचलोद्धर्ता गोपालः सर्वपालकः।
अजो निरञ्जनः कामजनकः कञ्जलोचनः॥ १०॥

मधुहा मथुरानाथो द्वारकानायको बली।
वृन्दावनान्तसञ्चारी तुलसीदामभूषणः॥ ११॥

स्यमन्तकमणेर्हर्ता नरनारायणात्मकः।
कुब्जाकृष्णाम्बरधरो मायी परमपूरुषः॥ १२॥

मुष्टिकासुरचाणूरमल्लयुद्धविशारदः।
संसारवैरी कंसारिर्मुरारिर्नरकान्तकः॥ १३॥

अनादिब्रह्मचारी च कृष्णाव्यसनकर्षकः।
शिशुपालशिरश्छेत्ता दुर्योधनकुलान्तकः॥ १४॥

विदुराक्रूरवरदो विश्वरूपप्रदर्शकः।
सत्यवाक् सत्यसङ्कल्पः सत्यभामारतो जयी॥ १५॥

सुभद्रापूर्वजो विष्णुर्भीष्ममुक्तिप्रदायकः।
जगद्गुरुर्जगन्नाथो वेणुनादविशारदः॥ १६॥

वृषभासुरविध्वंसी बाणासुरकरान्तकः।
युधिष्ठिरप्रतिष्ठाता बर्हिबर्हावतंसकः॥१७॥

पार्थसारथिरव्यक्तो गीतामृतमहोदधिः।
कालीयफणिमाणिक्यरञ्जितश्रीपदाम्बुजः॥१८॥

दामोदरो यज्ञभोक्ता दानवेन्द्रविनाशकः।
नारायणः परब्रह्म पन्नगाशनवाहनः॥१९॥

जलक्रीडासमासक्तगोपीवस्त्रापहारकः ।
पुण्यश्लोकस्तीर्थपादो वेदवेद्यो दयानिधिः॥२०॥

सर्वतीर्थात्मकः सर्वग्रहरूपी परात्परः।
इत्येवं कृष्णदेवस्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम्॥२१॥

कृष्णेन कृष्णभक्तेन श्रुत्वा गीतामृतं पुरा।
स्तोत्रं कृष्णप्रियकरं कृतं तस्मान्मया श्रुतम्॥२२॥

कृष्णप्रेमामृतं नाम परमानन्ददायकम्।
अत्युपद्रवदुःखघ्नं परमायुष्यवर्धनम्॥२३॥

दानं व्रतं तपस्तीर्थं यत्कृतं त्विह जन्मनि।
पठतां शृण्वतां चैव कोटिकोटिगुणं भवेत्॥२४॥

पुत्त्रप्रदमपुत्त्राणामगतीनां गतिप्रदम्।
धनावहं दरिद्राणां जयेच्छूनां जयावहम्॥२५॥

शिशूनां गोकुलानां च पुष्टिदं पुण्यवर्धनम्।
बालरोगग्रहादीनां शमनं शान्तिकारकम्॥२६॥

अन्ते कृष्णस्मरणदं भवतापत्रयापहम्।
असिद्धसाधकं भद्रे जपादिकरमात्मनाम्॥ २७॥

कृष्णाय यादवेन्द्राय ज्ञानमुद्राय योगिने।
नाथाय रुक्मिणीशाय नमो वेदान्तवेदिने॥ २८॥

इमं मन्त्रं महादेवि जपन्नेव दिवानिशम्।
सर्वग्रहानुग्रहभाक् सर्वप्रियतमो भवेत्॥ २९॥

पुत्रपौत्रैः परिवृतः सर्वसिद्धिसमृद्धिमान्।
निषेव्यभोगानन्तेऽपि कृष्णसायुज्यमाप्नुयात्॥ ३०॥

॥ इति श्रीब्रह्माण्डे महापुराणे वायुप्रोक्ते मध्यभागे तृतीय उपोद्घातपादे भार्गवचरिते षड्त्रिंशत्तमोऽध्यायान्तर्गत श्रीकृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ लक्ष्मीनारायणाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्॥

श्रीर्विष्णुः कमला शार्ङ्गी लक्ष्मीर्वैकुण्ठनायकः।
पद्मालया चतुर्बाहुः क्षीराब्धितनयाऽच्युतः॥ १॥

इन्दिरा पुण्डरीकाक्षो रमा गरुडवाहनः।
भार्गवी शेषपर्यङ्को विशालाक्षी जनार्दनः॥ २॥

स्वर्णाङ्गी वरदो देवी हरिरिन्दुमुखी प्रभुः।
सुन्दरी नरकध्वंसी लोकमाता मुरान्तकः॥ ३॥

भक्तप्रिया दानवारिरम्बिका मधुसूदनः।
वैष्णवी देवकीपुत्रो रुक्मिणी केशिमर्दनः॥ ४॥

वरलक्ष्मी जगन्नाथः कीरवाणी हलायुधः।
नित्या सत्यव्रतो गौरी शौरिः कान्ता सुरेश्वरः॥५॥

नारायणी हृषीकेशः पद्महस्ता त्रिविक्रमः।
माधवी पद्मनाभश्च स्वर्णवर्णा निरीश्वरः॥६॥

सती पीताम्बरः शान्ता वनमाली क्षमाऽनघः।
जयप्रदा बलिध्वंसी वसुधा पुरुषोत्तमः॥७॥

राज्यप्रदाऽखिलाधारो माया कंसविदारणः।
महेश्वरी महादेवो परमा पुण्यविग्रहः॥८॥

रमा मुकुन्दः सुमुखी मुचुकुन्दवरप्रदः।
वेदवेद्याऽब्धि-जामाता सुरूपाऽर्कैन्दुलोचनः॥९॥

पुण्याङ्गना पुण्यपादो पावनी पुण्यकीर्तनः।
विश्वप्रिया विश्वनाथो वाग्रूपी वासवानुजः॥१०॥

सरस्वती स्वर्णगर्भो गायत्री गोपिकाप्रियः।
यज्ञरूपा यज्ञभोक्ता भक्ताभीष्टप्रदा गुरुः॥११॥

स्तोत्रक्रिया स्तोत्रकारः सुकुमारी सवर्णकः।
मानिनी मन्दरधरो सावित्री जन्मवर्जितः॥१२॥

मन्त्रगोप्त्री महेष्वासो योगिनी योगवल्लभः।
जयप्रदा जयकरो रक्षित्री सर्वरक्षकः॥१३॥

अष्टोत्तरशतं नाम्नां लक्ष्म्या नारायणस्य च।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय सर्वदा विजयी भवेत्॥१४॥

॥इति श्री-लक्ष्मीनारायणाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ नृसिंहाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

नारसिंहो महासिंहो दिव्यसिंहो महाबलः।
उग्रसिंहो महादेवः स्तम्भजश्चोग्रलोचनः॥ १ ॥

रौद्रः सर्वाद्भुतः श्रीमान् योगानन्दस्त्रिविक्रमः।
हरिः कोलाहलश्चक्री विजयो जयवर्धनः॥ २॥

पञ्चाननः परब्रह्म अघोरो घोरविक्रमः।
ज्वालामुखो ज्वालामाली महाज्वालो महाप्रभुः॥ ३ ॥

निटिलाक्षः सहस्राक्षो दुर्निरीक्ष्यः प्रतापनः।
महादंष्ट्रायुधः प्राज्ञश्चण्डकोपी सदाशिवः॥ ४॥

हिरण्यकशिपुध्वंसी दैत्यदानवभञ्जनः।
गुणभद्रो महाभद्रो बलभद्रो सुभद्रकः॥ ५॥

करालो विकरालश्च विकर्ता सर्वकर्तृकः।
शिंशुमारस्त्रिलोकात्मा ईशः सर्वेश्वरो विभुः॥ ६ ॥

भैरवाडम्बरो दिव्यश्चाच्युतः कविमाधवः।
अधोक्षजोऽक्षरः शर्वो वनमाली वरप्रदः॥ ७॥

विश्वम्भरोऽद्भुतो भव्यो विष्णुश्च पुरुषोत्तमः।
अमोघास्त्रो नखास्त्रश्च सूर्यज्योतिः सुरेश्वरः॥ ८॥

सहस्रबाहुः सर्वज्ञः सर्वसिद्धिप्रदायकः।
वज्रदंष्ट्रो वज्रनखो महानादः परन्तपः॥ ९॥

सर्वमन्त्रैकरूपश्च सर्वयन्त्रविदारणः।
सर्वतन्त्रात्मकोऽव्यक्तः सुव्यक्तो भक्तवत्सलः॥ १०॥

वैशाखशुक्लसम्भूतः शरणागतवत्सलः।
उदारकीर्तिः पुण्यात्मा महात्मा चण्डविक्रमः॥ ११॥

वेदत्रयप्रपूज्यश्च भगवान् परमेश्वरः।
श्रीवत्साङ्कः श्रीनिवासो जगद्व्यापी जगन्मयः॥ १२॥

जगत्पालो जगन्नाथो महाकायो द्विरूपभृत्।
परमात्मा परञ्ज्योतिर्निर्गुणश्च नृकेसरी॥ १३॥

परतत्त्वं परन्धाम सच्चिदानन्दविग्रहः।
लक्ष्मीनृसिंहः सर्वात्मा धीरः प्रह्लादपालकः॥ १४॥

॥ इति श्री-नृसिंहाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ हयग्रीवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्॥

॥ ध्यानम्॥

वन्दे पूरितचन्द्रमण्डलगतं श्वेतारविन्दासनम्
मन्दाकिन्यमृताब्धिकुन्दकुमुदक्षीरेन्दुहासं हरिम्।
मुद्रापुस्तकशङ्खचक्रविलसच्छ्रीमद्भुजामण्डितम्
नित्यं निर्मलभारतीपरिमलं विश्वेशमश्वाननम्॥ १॥

ज्ञानानन्दमयं देवं निर्मलं स्फटिकाकृतिम्।
आधारं सर्वविद्यानां हयग्रीवमुपास्महे॥

॥ स्तोत्रम् ॥

हयग्रीवो महाविष्णुः केशवो मधुसूदनः।
गोविन्दः पुण्डरीकाक्षो विष्णुर्विश्वम्भरो हरिः॥ २॥

आदित्यः सर्ववागीशः सर्वाधारः सनातनः।
निराधारो निराकारो निरीशो निरुपद्रवः॥ ३॥

निरञ्जनो निष्कलङ्को नित्यतृप्तो निरामयः।
चिदानन्दमयः साक्षी शरण्यः सर्वदायकः॥ ४॥

श्रीमान् लोकत्रयाधीशः शिवः सारस्वतप्रदः।
वेदोद्धर्त्ता वेदनिधिर्वेदवेद्यः प्रभूतनः॥ ५॥

पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिः परात्परः।
परमात्मा परञ्ज्योतिः परेशः पारगः परः॥ ६॥

सर्ववेदात्मको विद्वान् वेदवेदाङ्गपारगः।
सकलोपनिषद्वेद्यो निष्कलः सर्वशास्त्रकृत्॥ ७॥

अक्षमालाज्ञानमुद्रायुक्तहस्तो वरप्रदः।
पुराणपुरुषः श्रेष्ठः शरण्यः परमेश्वरः॥ ८॥

शान्तो दान्तो जितक्रोधो जितामित्रो जगन्मयः।
जगन्मृत्युहरो जीवो जयदो जाड्यनाशनः॥ ९॥

जनप्रियो जनस्तुत्यो जापकप्रियकृत्प्रभुः।
विमलो विश्वरूपश्च विश्वगोप्ता विधिस्तुतः॥ १०॥

विधीन्द्रशिवसंस्तुत्यः शान्तिदः क्षान्तिपारगः।
श्रेयप्रदः श्रुतिमयः श्रेयसां पतिरीश्वरः॥ ११॥

अच्युतोऽनन्तरूपश्च प्राणदः पृथिवीपतिः।
अव्यक्तो व्यक्तरूपश्च सर्वसाक्षी तमोहरः॥१२॥

अज्ञाननाशको ज्ञानी पूर्णचन्द्रसमप्रभः।
ज्ञानदो वाक्पतिर्योगी योगीशः सर्वकामदः॥१३॥

महायोगी महामौनी मौनीशः श्रेयसां पतिः।
हंसः परमहंसश्च विश्वगोप्ता विराट् स्वराट्॥१४॥

शुद्धस्फटिकसङ्काशो जटामण्डलसंयुतः।
आदिमध्यान्तरहितः सर्ववागीश्वरेश्वरः॥१५॥

॥इति श्री-हयग्रीवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्॥

॥ध्यानम्॥

शङ्खं चक्रं जलौकां दधदमृतघटं चारुदोर्भिश्चतुर्भिः
सूक्ष्मस्वच्छातिहृद्यांशुक-परिविलसन्मौलिमम्भोजनेत्रम्।
कालाम्भोदोज्ज्वलाङ्गं कटितटविलसच्चारूपीताम्बराढ्यम्
वन्दे धन्वन्तरिं तं निखिलगदवनप्रौढदावाग्निलीलम्॥

॥स्तोत्रम्॥

धन्वन्तरिः सुधापूर्णकलशाढ्यकरो हरिः।
जरामृतित्रस्तदेवप्रार्थनासाधकः प्रभुः॥१॥

निर्विकल्पो निस्समानो मन्दस्मितमुखाम्बुजः।
आञ्जनेयप्रापिताद्रिः पार्श्वस्थविनतासुतः॥२॥

निमग्नमन्दरधरः कूर्मरूपी बृहत्तनुः।
नीलकुञ्चितकेशान्तः परमाद्भुतरूपधृत्॥ ३॥

कटाक्षवीक्षणाश्वस्तवासुकिः सिंहविक्रमः।
स्मर्तृहृद्रोगहरणो महाविष्ण्वंशसम्भवः॥ ४॥

प्रेक्षणीयोत्पलश्याम आयुर्वेदाधिदैवतम्।
भेषजग्रहणानेहस्स्मरणीयपदाम्बुजः ॥ ५॥

नवयौवनसम्पन्नः किरीटान्वितमस्तकः।
नक्रकुण्डलसंशोभिश्रवणद्वयशष्कुलिः ॥ ६॥

दीर्घपीवरदोर्दण्डः कम्बुग्रीवोऽम्बुजेक्षणः।
चतुर्भुजः शङ्खधरश्चक्रहस्तो वरप्रदः॥ ७॥

सुधापात्रोपरिलसदाम्रपत्रलसत्करः ।
शतपद्माढ्यहस्तश्च कस्तूरीतिलकाञ्चितः॥ ८॥

सुकपोलः सुनासश्च सुन्दरभ्रूलताञ्चितः।
स्वङ्गुलीतलशोभाढ्यो गूढजत्रुर्महाहनुः॥ ९॥

दिव्याङ्गदलसद्बाहुः केयूरपरिशोभितः।
विचित्ररत्नखचितवलयद्वयशोभितः ॥ १०॥

समोल्लसत्सुजातांसश्चाङ्गुलीयविभूषितः।
सुधागन्धरसास्वादमिलद्भृङ्गमनोहरः ॥ ११॥

लक्ष्मीसमर्पितोत्फुल्लकञ्जमालालसद्गलः ।
लक्ष्मीशोभितवक्षस्को वनमालाविराजितः॥ १२॥

नवरत्नमणीक्लृप्तहारशोभितकन्धरः ।
हीरनक्षत्रमालादिशोभारञ्जितदिङ्मुखः ॥ १३ ॥

विरजोऽम्बरसंवीतो विशालोराः पृथुश्रवाः ।
निम्ननाभिः सूक्ष्ममध्यः स्थूलजङ्घो निरञ्जनः ॥ १४ ॥

सुलक्षणपदाङ्गुष्ठः सर्वसामुद्रिकान्वितः ।
अलक्तकारक्तपादो मूर्तिमद्वार्धिपूजितः ॥ १५ ॥

सुधार्थान्योन्यसंयुध्यद्देवदैतेयसान्त्वनः ।
कोटिमन्मथसङ्काशः सर्वावयवसुन्दरः ॥ १६ ॥

अमृतास्वादनोद्युक्तदेवसङ्घपरिष्टुतः ।
पुष्पवर्षणसंयुक्तगन्धर्वकुलसेवितः ॥ १७ ॥

शङ्खतूर्यमृदङ्गादिसुवादित्राप्सरोवृतः ।
विष्वक्सेनादियुक्पार्श्वः सनकादिमुनिस्तुतः ॥ १८ ॥

साश्चर्यसस्मितचतुर्मुखनेत्रसमीक्षितः ।
साशङ्कसम्भ्रमदितिदनुवंश्यसमीडितः ॥ १९ ॥

नमनोन्मुखदेवादिमौलीरत्नलसत्पदः ।
दिव्यतेजःपुञ्जरूपः सर्वदेवहितोत्सुकः ॥ २० ॥

स्वनिर्गमक्षुब्धदुग्धवाराशिर्दुन्दुभिस्वनः ।
गन्धर्वगीतापदानश्रवणोत्कमहामनाः ॥ २१ ॥

निष्किञ्चनजनप्रीतो भवसम्प्राप्तरोगहृत् ।
अन्तर्हितसुधापात्रो महात्मा मायिकाग्रणीः ॥ २२ ॥

क्षणार्धमोहिनीरूपः सर्वस्त्रीशुभलक्षणः।
मदमत्तेभगमनः सर्वलोकविमोहनः॥२३॥

स्त्रंसन्नीवीग्रन्थिबन्धासक्तदिव्यकराङ्गुलिः।
रत्नदर्वीलसद्धस्तो देवदैत्यविभागकृत्॥२४॥

सङ्ख्यातदेवतान्यासो दैत्यदानववञ्चकः।
देवामृतप्रदाता च परिवेषणहृष्टधीः॥२५॥

उन्मुखोन्मुखदैत्येन्द्रदन्तपङ्क्तिविभाजकः।
पुष्पवत्सुविनिर्दिष्टराहुरक्षःशिरोहरः ॥२६॥

राहुकेतुग्रहस्थानपश्चाद्गतिविधायकः ।
अमृतालाभनिर्विण्णयुध्यद्देवारिसूदनः॥२७॥

गरुत्मद्वाहनारूढः सर्वेशस्तोत्रसंयुतः।
स्वस्वाधिकारसन्तुष्टशक्रवह्न्यादिपूजितः॥२८॥

मोहिनीदर्शनायातस्थाणुचित्तविमोहकः ।
शचीस्वाहादिदिक्पालपत्नीमण्डलसन्नुतः॥२९॥

वेदान्तवेद्यमहिमा सर्वलोकैकरक्षकः।
राजराजप्रपूज्याङ्घ्रिश्चिन्तितार्थप्रदायकः॥३०॥

धन्वन्तरेर्भगवतो नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।
यः पठेत्सततं भक्त्या नीरोगः सुखभाग्भवेत्॥३१॥

॥इति बृहद्ब्रह्मानन्दोपनिषदान्तर्गतं श्री-धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ विष्णोरष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रम् ॥

अष्टोत्तरशतस्थानेष्वाविर्भूतं जगत्पतिम्।
नमामि जगतामीशं नारायणमनन्यधीः ॥ १ ॥

श्रीवैकुण्ठे वासुदेवमामोदे कर्षणाह्वयम्।
प्रद्युम्नं च प्रमोदाख्ये सम्मोदे चानिरुद्धकम् ॥ २ ॥

सत्यलोके तथा विष्णुं पद्माक्षं सूर्यमण्डले।
क्षीराब्धौ शेषशयनं श्वेतद्वीपेतु तारकम् ॥ ३ ॥

नारायणं बदर्याख्ये नैमिषे हरिमव्ययम्।
शालग्रामं हरिक्षेत्रे अयोध्यायां रघूत्तमम् ॥ ४ ॥

मथुरायां बालकृष्णं मायायां मधुसूदनम्।
काश्यां तु भोगशयनमवन्त्यामवनीपतिम् ॥ ५ ॥

द्वारवत्यां यादवेन्द्रं व्रजे गोपीजनप्रियम्।
वृन्दावने नन्दसूनुं गोविन्दं कालियह्रदे ॥ ६ ॥

गोवर्धने गोपवेषं भवघ्नं भक्तवत्सलम्।
गोमन्तपर्वते शौरिं हरिद्वारे जगत्पतिम् ॥ ७ ॥

प्रयागे माधवं चैव गयायां तु गदाधरम्।
गङ्गासागरगे विष्णुं चित्रकूटे तु राघवम् ॥ ८ ॥

नन्दिग्रामे राक्षसघ्नं प्रभासे विश्वरूपिणम्।
श्रीकूर्मे कूर्ममचलं नीलाद्रौ पुरुषोत्तमम् ॥ ९ ॥

सिंहाचले महासिंहं गदिनं तुलसीवने।
घृतशैले पापहरं श्वेताद्रौ सिंहरूपिणम्॥ १०॥

योगानन्दं धर्मपुर्यां काकुले त्वान्ध्रनायकम्।
अहोबिले गारुडाद्रौ हिरण्यासुरमर्दनम्॥ ११॥

विट्ठलं पाण्डुरङ्गे तु वेङ्कटाद्रौ रमासखम्।
नारायणं यादवाद्रौ नृसिंहं घटिकाचले॥ १२॥

वरदं वारणगिरौ काञ्च्यां कमललोचनम्।
यथोक्तकारिणं चैव परमेशपुराश्रयम्॥ १३॥

पाण्डवानां तथा दूतं त्रिविक्रममथोन्नतम्।
कामासिक्यां नृसिंहं च तथाष्टभुजसङ्ज्ञकम्॥ १४॥

मेघाकारं शुभाकारं शेषाकारं तु शोभनम्।
अन्तरा शितिकण्ठस्य कामकोट्यां शुभप्रदम्॥ १५॥

कालमेघं खगारूढं कोटिसूर्यसमप्रभम्।
दिव्यं दीपप्रकाशं च देवानामधिपं मुने॥ १६॥

प्रवालवर्णं दीपाभं काञ्च्यामष्टादशस्थितम्।
श्रीगृध्रसरसस्तीरे भान्तं विजयराघवम्॥ १७॥

वीक्षारण्ये महापुण्ये शयानं वीरराघवम्।
तोताद्रौ तुङ्गशयनं गजार्तिघ्नं गजस्थले॥ १८॥

महाबलं बलिपुरे भक्तिसारे जगत्पतिम्।
महावराहं श्रीमुष्णे महीन्द्रे पद्मलोचनम्॥ १९॥

श्रीरङ्गे तु जगन्नाथं श्रीधामे जानकीप्रियम्।
सारक्षेत्रे सारनाथं खण्डने हरचापहम्॥ २०॥

श्रीनिवासस्थले पूर्णं सुवर्णं स्वर्णमन्दिरे।
व्याघ्रपुर्यां महाविष्णुं भक्तिस्थाने तु भक्तिदम्॥ २१॥

श्वेतह्रदे शान्तमूर्तिमग्निपुर्यां सुरप्रियम्।
भर्गाख्यं भार्गवस्थाने वैकुण्ठाख्ये तु माधवम्॥ २२॥

पुरुषोत्तमे भक्तसखं चक्रतीर्थे सुदर्शनम्।
कुम्भकोणे चक्रपाणिं भूतस्थाने तु शार्ङ्गिणम्॥ २३॥

कपिस्थले गजार्तिघ्नं गोविन्दं चित्रकूटके।
अनुत्तमं चोत्तमायां श्वेताद्रौ पद्मलोचनम्॥ २४॥

पार्थस्थले परब्रह्म कृष्णाकोट्यां मधुद्विषम्।
नन्दपुर्यां महानन्दं वृद्धपुर्यां वृषाश्रयम्॥ २५॥

असङ्गं सङ्गमग्रामे शरण्ये शरणं महत्।
दक्षिणद्वारकायां तु गोपालं जगतां पतिम्॥ २६॥

सिंहक्षेत्रे महासिंहं मल्लारिं मणिमण्डपे।
निबिडे निबिडाकारं धानुष्के जगदीश्वरम्॥ २७॥

मौहूरे कालमेघं तु मधुरायां तु सुन्दरम्।
वृषभाद्रौ महापुण्ये परमस्वामिसञ्ज्ञकम्॥ २८॥

श्रीमद्वरगुणे नाथं कुरुकायां रमासखम्।
गोष्ठीपुरे गोष्ठपतिं शयानं दर्भसंस्तरे॥ २९॥

धन्विमङ्गलके शौरिं बलाढ्यं भ्रमरस्थले।
कुरङ्गे तु तथा पूर्णं कृष्णामेकं वटस्थले॥ ३०॥

अच्युतं क्षुद्रनद्यां तु पद्मनाभमनन्तके।
एतानि विष्णोः स्थानानि पूजितानि महात्मभिः॥ ३१॥

अधिष्ठितानि देवेश तत्रासीनं च माधवम्।
यः स्मरेत्सततं भक्त्या चेतसानन्यगामिना॥ ३२॥

स विधूयातिसंसारबन्धं याति हरेः पदम्।
अष्टोत्तरशतं विष्णोः स्थानानि पठता स्वयम्॥ ३३॥

अधीताः सकला वेदाः कृताश्च विविधा मखाः।
सम्पादिता तथा मुक्तिः परमानन्ददायिनी॥ ३४॥

अवगाढानि तीर्थानि ज्ञातः स भगवान् हरिः।
आद्यमेतत्स्वयं व्यक्तं विमानं रङ्गसञ्ज्ञकम्।
श्रीमुष्णं वेङ्कटाद्रिं च शालग्रामं च नैमिषम्॥ ३५॥

तोताद्रिं पुष्करं चैव नरनारायणाश्रमम्।
अष्टौ मे मूर्तयः सन्ति स्वयं व्यक्ता महीतले॥ ३६॥

॥ इति श्रीविष्णोरष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ वेङ्कटेशाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्॥

सिद्धा ऊचुः

भगवन् वेङ्कटेशस्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।
अनुब्रूहि दयासिन्धो क्षिप्रसिद्धिप्रदं नृणाम्॥

नारद उवाच

सावधानेन मनसा शृण्वन्तु तदिदं शुभम्।
जप्तं वैखानसैः पूर्वं सर्वसौभाग्यवर्धनम्॥

॥ स्तोत्रम्॥

ओङ्कारपरमार्थश्च नरनारायणात्मकः।
मोक्षलक्ष्मीप्राणकान्तो वेङ्कटाचलनायकः॥ १॥

करुणापूर्णहृदयः टेङ्कारजपसौख्यदः।
शास्त्रप्रमाणगम्यश्च यमाद्यष्टाङ्गगोचरः॥ २॥

भक्तलोकैकवरदो वरेण्यो भयनाशनः।
यजमानस्वरूपश्च हस्तन्यस्तसुदर्शनः॥ ३॥

रमावताररङ्गेशो णाकारजपसुप्रियः।
यज्ञेशो गतिदाता च जगतीवल्लभो वरः॥४॥

रक्षःसन्दोहसंहर्ता वर्चस्वी रघुपुङ्गवः।
दानधर्मपरो याजी घनश्यामलविग्रहः॥५॥

हरादिसर्वदेवेड्यो रामो यदुकुलाग्रणीः।
श्रीनिवासो महात्मा च तेजस्वी तत्त्वसन्निधिः॥ ६॥

त्वमर्थलक्ष्यरूपश्च रूपवान् पावनो यशः।
सर्वेशो कमलाकान्तो लक्ष्मीसल्लापसम्मुखः॥७॥

चतुर्मुखप्रतिष्ठाता राजराजवरप्रदः।
चतुर्वेदशिरोरत्नं रमणो नित्यवैभवः॥८॥

दासवर्गपरित्राता नारदादिमुनिस्तुतः।
यादवाचलवासी च खिद्यद्भक्तार्तिभञ्जनः ॥ ९ ॥

लक्ष्मीप्रसादको विष्णुर्देवेशो रम्यविग्रहः।
माधवो लोकनाथश्च लालिताखिलसेवकः ॥ १० ॥

यक्षगन्धर्ववरदः कुमारो मातृकार्चितः।
रटद्बालकपोषी च शेषशैलकृतस्थलः ॥ ११ ॥

षाड्गुण्यपरिपूर्णश्च द्वैतदोषनिवारणः।
तिर्यग्जन्त्वर्चिताङ्घ्रिश्च नेत्रानन्दकरोत्सवः ॥ १२ ॥

द्वादशोत्तमलीलश्च दरिद्रजनरक्षकः।
शत्रुकृत्यादिभीतिघ्नो भुजङ्गशयनप्रियः ॥ १३ ॥

जाग्रद्रहस्यावासो यः शिष्टानां परिपालकः।
वरेण्यः पूर्णबोधश्च जन्मसंसारभेषजम् ॥ १४ ॥

कार्त्तिकेयवपुर्धारी यतिशेखरभावितः।
नरकादिभयध्वंसी रथोत्सवकलाधरः ॥ १५ ॥

लोकार्चामुख्यमूर्तिश्च केशवाद्यवतारवान्।
शास्त्रश्रुतानन्तलीलो यमशिक्षानिबर्हणः ॥ १६ ॥

मानसंरक्षणपर इरिणाङ्कुरधान्यदः।
नेत्रहीनाक्षिदायी च मतिहीनमतिप्रदः ॥ १७ ॥

हिरण्यदानसङ्ग्राही मोहजालनिकृन्तनः।
दधिलाजाक्षतार्च्यश्च यातुधानविनाशनः ॥ १८ ॥

यजुर्वेदशिखागम्यो वेङ्कटो दक्षिणास्थितः।
सारपुष्करणीतीरो रात्रौदेवगणार्चितः॥ १९॥

यत्नवत्फलसन्धाता श्रीञ्जपाद्धनवृद्धिकृत्।
क्लीङ्कारजापिकाम्यार्थप्रदानसदयान्तरः ॥ २०॥

सौं सर्वसिद्धिसन्धाता नमस्कर्तुरभीष्टदः।
मोहिताखिललोकश्च नानारूपव्यवस्थितः॥ २१॥

राजीवलोचनो यज्ञवराहो गणवेङ्कटः।
तेजोराशीक्षणः स्वामी हार्दाविद्यानिवारणः॥ २२॥

इति श्रीवेङ्कटेशस्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।
प्रातः प्रातः समुत्थाय यः पठेद्भक्तिमान्नरः।
सर्वेष्टार्थानवाप्नोति वेङ्कटेशप्रसादतः॥

॥ इति श्री-वेङ्कटेशाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ हरिहराष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्॥

॥ ध्यानम्॥

माधवोमाधवावीशौ सर्वसिद्धिविधायिनौ।
वन्दे परस्परात्मानौ परस्परनुतिप्रियौ॥

॥ स्तोत्रम्॥

गोविन्द माधव मुकुन्द हरे मुरारे
शम्भो शिवेश शशिशेखर शूलपाणे।
दामोदराच्युत जनार्दन वासुदेव
त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति॥ १॥

गङ्गाधरान्धकरिपो हर नीलकण्ठ
वैकुण्ठ कैटभरिपो कमठाब्जपाणे।
भूतेश खण्डपरशो मृड चण्डिकेश
त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति॥ २॥
विष्णो नृसिंह मधुसूदन चक्रपाणे
गौरीपते गिरिश शङ्कर चन्द्रचूड।
नारायणासुरनिबर्हणा शार्ङ्गपाणे
त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति॥ ३॥
मृत्युञ्जयोग्र विषमेक्षण कामशत्रो
श्रीकान्त पीतवसनाम्बुदनील शौरे।
ईशान कृत्तिवसन त्रिदशैकनाथ
त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति॥ ४॥
लक्ष्मीपते मधुरिपो पुरुषोत्तमाद्य
श्रीकण्ठ दिग्वसन शान्त पिनाकपाणे।
आनन्दकन्द धरणीधर पद्मनाभ
त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति॥ ५॥
सर्वेश्वर त्रिपुरसूदन देवदेव
ब्रह्मण्यदेव गरुडध्वज शङ्खपाणे।
त्र्यक्षोरगाभरण बालमृगाङ्कमौले
त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति॥ ६॥
श्रीराम राघव रमेश्वर रावणारे
भूतेश मन्मथरिपो प्रमथाधिनाथ।
चाणूरमर्दन हृषीकपते मुरारे
त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति॥ ७॥

शूलिन् गिरीश रजनीशकलावतंस
कंसप्रणाशन सनातन केशिनाश।
भर्ग त्रिनेत्र भव भूतपते पुरारे
त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति॥ ८॥

गोपीपते यदुपते वसुदेवसूनो
कर्पूरगौर वृषभध्वज भालनेत्र।
गोवर्धनोद्धरण धर्मधुरीण गोप
त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति॥ ९॥

स्थाणो त्रिलोचन पिनाकधर स्मरारे
कृष्णानिरुद्ध कमलाकर कल्मषारे।
विश्वेश्वर त्रिपथगार्द्रजटाकलाप
त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति॥ १०॥

अष्टोत्तराधिकशतेन सुचारुनाम्नाम्
सन्दर्भितां ललितरत्नकदम्बकोन।
सन्नामकां दृढगुणां द्विजकण्ठगां यः
कुर्यादिमांस्त्रजमहो स यमं न पश्येत्॥ ११॥

अगस्तिरुवाच

यो धर्मराजरचितां ललितप्रबन्धाम्
नामावलीं सकलकल्मषबीजहन्त्रीम्।
धीरोऽत्र कौस्तुभभृतः शशिभूषणस्य
नित्यं जपेत् स्तनरसं स पिबेन्न मातुः॥ १२॥

॥ इति श्रीस्कन्दमहापुराणे काशीखण्डपूर्वार्धे यमप्रोक्तं
श्रीहरिहराष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

❀❀❀

॥ शिवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

॥ स्तोत्रम् ॥

शिवो महेश्वरः शम्भुः पिनाकी शशिशेखरः।
वामदेवो विरूपाक्षः कपर्दी नीललोहितः॥ १॥

शङ्करः शूलपाणिश्च खट्वाङ्गी विष्णुवल्लभः।
शिपिविष्टोऽम्बिकानाथः श्रीकण्ठो भक्तवत्सलः॥ २॥

भवः शर्वस्त्रिलोकेशः शितिकण्ठः शिवाप्रियः।
उग्रः कपालिः कामारिरन्धकासुरसूदनः॥ ३॥

गङ्गाधरो ललाटाक्षः कालकालः कृपानिधिः।
भीमः परशुहस्तश्च मृगपाणिर्जटाधरः॥ ४॥

कैलासवासी कवची कठोरस्त्रिपुरान्तकः।
वृषाङ्को वृषभारूढो भस्मोद्धूलितविग्रहः॥ ५॥

सामप्रियः स्वरमयस्त्रयीमूर्तिरनीश्वरः।
सर्वज्ञः परमात्मा च सोमसूर्याग्निलोचनः॥ ६॥

हविर्यज्ञमयः सोमः पञ्चवक्त्रः सदाशिवः।
विश्वेश्वरो वीरभद्रो गणनाथः प्रजापतिः॥७॥

हिरण्यरेता दुर्धर्षो गिरीशो गिरिशोऽनघः।
भुजङ्गभूषणो भर्गो गिरिधन्वा गिरिप्रियः॥८॥

कृत्तिवासाः पुरारातिर्भगवान् प्रमथाधिपः।
मृत्युञ्जयः सूक्ष्मतनुर्जगद्व्यापी जगद्गुरुः॥९॥

व्योमकेशो महासेनजनकश्चारुविक्रमः।
रुद्रो भूतपतिः स्थाणुरहिर्बुध्न्यो दिगम्बरः॥१०॥

अष्टमूर्तिरनेकात्मा सात्त्विकः शुद्धविग्रहः।
शाश्वतः खण्डपरशुरजः पाशविमोचकः॥११॥

मृडः पशुपतिर्देवो महादेवोऽव्ययः प्रभुः।
पूषदन्तभिदव्यग्रो दक्षाध्वरहरो हरः॥१२॥

भगनेत्रभिदव्यक्तः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
अपवर्गप्रदोऽनन्तस्तारकः परमेश्वरः॥१३॥

॥ फलश्रुतिः ॥

इमानि दिव्यनामानि जप्यन्ते सर्वदा मया।
नामकल्पलतेयं मे सर्वाभीष्टप्रदायिनि॥१४॥

नामान्येतानि सुभगे शिवदानि न संशयः।
वेदसर्वस्वभूतानि नामान्येतानि वस्तुतः॥१५॥

एतानि यानि नामानि तानि सर्वार्थदान्यतः।
जप्यन्ते सादरं नित्यं मया नियमपूर्वकम्॥ १६॥

वेदेषु शिवनामानि श्रेष्ठान्यघहराणि च।
सन्त्यनन्तानि सुभगे वेदेषु विविधेष्वपि॥ १७॥

तेभ्यो नामानि सङ्गृह्य कुमाराय महेश्वरः।
अष्टोत्तरसहस्रं तु नाम्नामुपदिशत् पुरा॥ १८॥

॥ इति शाक्तप्रमोदे श्रीशिवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ शङ्कराचार्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्॥

॥ ध्यानम्॥

कैलासाचल-मध्यस्थं कामिताभीष्टदायकम्।
ब्रह्मादि-प्रार्थना-प्राप्त-दिव्यमानुष-विग्रहम् ॥

भक्तानुग्रहणैकान्त-शान्त-स्वान्त-समुज्ज्वलम्।
संयज्ञं संयमीन्द्राणां सार्वभौमं जगद्गुरुम्॥

किङ्करीभूतभक्तैनः पङ्कजातविशोषणम्।
ध्यायामि शङ्कराचार्यं सर्वलोकैकशङ्करम् ॥

॥ स्तोत्रम्॥

श्रीशङ्कराचार्यवर्यो ब्रह्मज्ञानप्रदायकः।
अज्ञानतिमिरादित्यः सुज्ञानाम्बुधिचन्द्रमा॥ १॥

वर्णाश्रमप्रतिष्ठाता श्रीमान् मुक्तिप्रदायकः।
शिष्योपदेशनिरतो भक्ताभीष्टप्रदायकः॥ २॥

सूक्ष्मतत्त्वरहस्यज्ञः कार्याकार्यप्रबोधकः।
ज्ञानमुद्राञ्चितकरः शिष्य-हृत्ताप-हारकः॥ ३॥

पारिव्राज्याश्रमोद्धर्ता सर्वतन्त्रस्वतन्त्रधीः।
अद्वैतस्थापनाचार्यः साक्षाच्छङ्कररूपभृत्॥ ४॥

षण्मतस्थापनाचार्यस्त्रयीमार्गप्रकाशकः।
वेदवेदान्ततत्त्वज्ञो दुर्वादिमतखण्डनः॥ ५॥

वैराग्यनिरतः शान्तः संसारार्णवतारकः।
प्रसन्नवदनाम्भोजः परमार्थप्रकाशकः॥ ६॥

पुराणस्मृतिसारज्ञो नित्यतृप्तो महच्छुचिः।
नित्यानन्दो निरातङ्को निःसङ्गो निर्मलात्मकः॥ ७॥

निर्ममो निरहङ्कारो विश्ववन्द्यपदाम्बुजः।
सत्त्वप्रधानः सद्भावः सङ्ख्यातीतगुणोज्ज्वलः॥ ८॥

अनघः सारहृदयः सुधीः सारस्वतप्रदः।
सत्यात्मा पुण्यशीलश्च साङ्ख्ययोगविचक्षणः॥ ९॥

तपोराशिर्महातेजा गुणत्रयविभागवित्।
कलिघ्नः कालधर्मज्ञस्तमोगुणनिवारकः॥ १०॥

भगवान् भारतीजेता शारदाह्वानपण्डितः।
धर्माधर्मविभागज्ञो लक्ष्यभेदप्रदर्शकः॥ ११॥

नादबिन्दुकलाभिज्ञो योगिहृत्पद्मभास्करः।
अतीन्द्रिय-ज्ञाननिधिर्नित्यानित्यविवेकवान्॥ १२॥

चिदानन्दश्चिन्मयात्मा परकाय-प्रवेशकृत्।
अमानुष-चरित्राढ्यः क्षेमदायी क्षमाकरः॥ १३॥

भवो भद्रप्रदो भूरिमहिमा विश्वरञ्जकः।
स्वप्रकाशः सदाधारो विश्वबन्धुः शुभोदयः॥ १४॥

विशालकीर्तिर्वागीशः सर्वलोकहितोत्सुकः।
कैलासयात्रा-सम्प्राप्त-चन्द्रमौलि-प्रपूजकः ॥ १५॥

काञ्च्यां श्रीचक्र-राजाख्य-यन्त्रस्थापन-दीक्षितः।
श्रीचक्रात्मक-ताटङ्क-पोषिताम्बा-मनोरथः ॥ १६॥

श्रीब्रह्मसूत्रोपनिषद्भाष्यादिग्रन्थकल्पकः।
चतुर्दिक्चतुराम्नायप्रतिष्ठाता महामतिः॥ १७॥

द्विसप्तति-मतोच्छेत्ता सर्वदिग्विजयप्रभुः।
काषायवसनोपेतो भस्मोद्धूलितविग्रहः॥ १८॥

ज्ञानात्मकैकदण्डाढ्यः कमण्डलुलसत्करः।
व्याससन्दर्शनप्रीतो भगवत्पादसंज्ञकः॥ १९॥

चतुःषष्टिकलाभिज्ञो ब्रह्मराक्षस-मोक्षदः।
सौन्दर्यलहरीमुख्यबहुस्तोत्रविधायकः ॥ २०॥

श्रीमन्मण्डनमिश्राख्यस्वयम्भूजयसन्नुतः।
तोटकाचार्यसम्पूज्यः पद्मपादार्चिताङ्घ्रिकः॥ २१॥

हस्तामलकयोगीन्द्रब्रह्मज्ञानप्रदायकः ।
सुरेश्वरादि-सच्छिष्य-सन्न्यासाश्रम-दायकः ॥ २२ ॥

निर्व्याजकरुणामूर्तिर्जगत्पूज्यो जगद्गुरुः ।
भेरीपटहवाद्यादिराजलक्षणलक्षितः ।
सकृत्स्मरणसन्तुष्टः सर्वज्ञो ज्ञानदायकः ॥ २३ ॥

॥ इति श्री-शङ्कराचार्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ शिवाष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रम् ॥

अष्टोत्तरशतं भूमौ स्थितं क्षेत्रं वदाम्यहम् ।
कैवल्यशैले श्रीकण्ठः केदारो हिमवत्यपि ॥ १ ॥

काशीपुर्यां विश्वनाथः श्रीशैले मल्लिकार्जुनः ।
प्रयागे नीलकण्ठेशो गयायां रुद्रनामकः ॥ २ ॥

नीलकण्ठेश्वरः साक्षात् कालञ्जरपुरे शिवः ।
द्राक्षारामे तु भीमेशो मायूरे चाम्बिकेश्वरः ॥ ३ ॥

ब्रह्मावर्ते देवलिङ्गः प्रभासे शशिभूषणः ।
वृषध्वजाभिधः श्रीमतिः श्वेतहस्तिपुरेश्वरः ॥ ४ ॥

गोकर्णेशस्तु गोकर्णे सोमेशः सोमनाथके ।
श्रीरूपाख्ये त्यागराजो वेदे वेदपुरीश्वरः ॥ ५ ॥

भीमारामे तु भीमेशो मन्थने कालिकेश्वरः ।
मधुरायां चोक्कनाथो मानसे माधवेश्वरः ॥ ६ ॥

श्रीवाञ्छके चम्पकेशः पञ्चवट्यां वटेश्वरः।
गजारण्ये तु वैद्येशस्तीर्थाद्रौ तीर्थकेश्वरः॥ ७॥

कुम्भकोणे तु कुम्भेशो लेपाक्ष्यां पापनाशनः।
कण्वपुर्यां तु कण्वेशो मध्ये मध्यार्जुनेश्वरः॥ ८॥

हरिहरपुरे श्रीशङ्करनारायणेश्वरः।
विरञ्चिपुर्यां मार्गेशः पञ्चनद्यां गिरीश्वरः॥ ९॥

पम्पापुर्यां विरूपाक्षः सोमाद्रौ मल्लिकार्जुनः।
त्रिमकूटे त्वगस्त्येशः सुब्रह्मण्येऽहिपेश्वरः॥ १०॥

महाबलेश्वरः साक्षान्महाबलशिलोच्चये।
रविणा पूजितो दक्षिणावर्तेऽर्केश्वरः स्वयम्॥ ११॥

वेदारण्ये महापुण्ये वेदारण्येश्वराभिधः।
मूर्तित्रयात्मकः सोमपुर्यां सोमेश्वराभिधः॥ १२॥

अवन्त्यां रामलिङ्गेशः काश्मीरे विजयेश्वरः।
महानन्दिपुरे साक्षान्महानन्दिपुरेश्वरः॥ १३॥

कोटितीर्थे तु कोटीशो वृद्धे वृद्धाचलेश्वरः।
महापुण्ये तत्र ककुद्गिरौ गङ्गाधरेश्वरः॥ १४॥

चामराज्याख्यनगरे चामराजेश्वरः स्वयम्।
नन्दीश्वरो नन्दिगिरौ चण्डेशो बधिराचले॥ १५॥

नञ्जुण्डेशो गरपुरे शतशृङ्गे।
घनानन्दाचले सोमो नल्लूरे विमलेश्वरः॥ १६॥

नीडानाथपुरे साक्षान्नीडानाथेश्वरः स्वयम्।
एकान्ते रामलिङ्गेशः श्रीनागे कुण्डलीश्वरः॥ १७॥

श्रीकन्यायां त्रिभङ्गीश उत्सङ्गे राघवेश्वरः।
मत्स्यतीर्थे तु तीर्थेशस्त्रिकूटे ताण्डवेश्वरः॥ १८॥

प्रसन्नाख्यपुरे मार्गसहायेशो वरप्रदः।
गण्डक्यां शिवनाभस्तु श्रीपतौ श्रीपतीश्वरः॥ १९॥

धर्मपुर्यां धर्मलिङ्गः कन्याकुब्जे कलाधरः।
वाणिग्रामे विरिञ्चेशो नेपाले नकुलेश्वरः॥ २०॥

मार्कण्डेयो जगन्नाथे स्वयम्भूर्नर्मदातटे।
धर्मस्थले मञ्जुनाथो व्यासेशस्तु त्रिरूपके॥ २१॥

स्वर्णावत्यां कलिङ्गेशो निर्मले पन्नगेश्वरः।
पुण्डरीके जैमिनीशोऽयोध्यायां मधुरेश्वरः॥ २२॥

सिद्धवट्यां तु सिद्धेशः श्रीकूर्मे त्रिपुरान्तकः।
मणिकुण्डलतीर्थे तु मणिमुक्तानदीश्वरः॥ २३॥

वटाटव्यां कृत्तिवासास्त्रिवेण्यां सङ्गमेश्वरः।
स्तनिताख्ये तु मल्लेश इन्द्रकीलेऽर्जुनेश्वरः॥ २४॥

शेषाद्रौ कपिलेशस्तु पुष्पे पुष्पगिरीश्वरः।
भुवनेशश्चित्रकूटे तूज्जिन्यां कालिकेश्वरः॥ २५॥

ज्वालामुख्यां शूलटङ्को मङ्गल्यां सङ्गमेश्वरः।
बृहतीशस्तञ्जापुर्यां रामेशो वह्निपुष्करे॥ २६॥

लङ्काद्वीपे तु मत्स्येशः कूर्मेशो गन्धमादने।
विन्ध्याचले वराहेशो नृसिंहः स्यादहोबिले॥२७॥

कुरुक्षेत्रे वामनेशस्ततः कपिलतीर्थके।
तथा परशुरामेशः सेतौ रामेश्वराभिधः॥२८॥

साकेते बलरामेशो बौद्धेशो वारणावते।
तत्त्वक्षेत्रे च कल्कीशः कृष्णेशः स्यान्महेन्द्रके॥२९॥

॥इति ललितागमे ज्ञानपादे शिवलिङ्गप्रादुर्भावपटलान्तर्गते श्रीशिवाष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥अर्धनारीश्वराष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्॥

चामुण्डिकाम्बा श्रीकण्ठः पार्वती परमेश्वरः।
महाराज्ञी महादेवः सदाराध्या सदाशिवः॥१॥

शिवार्धाङ्गी शिवार्धाङ्गो भैरवी कालभैरवः।
शक्तित्रितयरूपाढ्या मूर्तित्रितयरूपवान्॥२॥

कामकोटि-सुपीठस्था काशीक्षेत्रसमाश्रयः।
दाक्षायणी दक्षवैरिः शूलिनी शूलधारकः॥३॥

ह्रीङ्कारपञ्जरशुकी हरिशङ्कररूपवान्।
श्रीमद्गणेशजननी षडानन-सुजन्मभूः॥४॥

पञ्चप्रेतासनारूढा पञ्चब्रह्मस्वरूपभृत्।
चण्डमुण्डशिरश्छेत्री जलन्धरशिरोहरः॥५॥

सिंहवाहा वृषारूढः श्यामाभा स्फटिकप्रभः।
महिषासुरसंहर्त्री गजासुरविमर्दनः॥ ६॥

महाबलाचलावासा महाकैलासवासभूः।
भद्रकाली वीरभद्रो मीनाक्षी सुन्दरेश्वरः॥ ७॥

भण्डासुरादिसंहर्त्री दुष्टान्धकविमर्दनः।
मधुकैटभसंहर्त्री मधुरापुरनायकः॥ ८॥

कालत्रयस्वरूपाढ्या कार्यत्रयविधायकः।
गिरिजाता गिरीशश्च वैष्णवी विष्णुवल्लभः॥ ९॥

विशालाक्षी विश्वनाथः पुष्पास्त्रा विष्णुमार्गणः।
कौसुम्भवसनोपेता व्याघ्रचर्माम्बरावृतः॥ १०॥

मूलप्रकृतिरूपाढ्या परब्रह्मस्वरूपवान्।
रुण्डमालाविभूषाढ्या लसद्रुद्राक्षमालिकः॥ ११॥

मनोरूपेक्षुकोदण्डा महामेरुधनुर्धरः।
चन्द्रचूडा चन्द्रमौलिर्महामाया महेश्वरः॥ १२॥

महाकाली महाकालो दिव्यरूपा दिगम्बरः।
बिन्दुपीठसुखासीना श्रीमदोङ्कारपीठगः॥ १३॥

हरिद्राकुङ्कुमालिप्ता भस्मोद्धूलितविग्रहः।
महापद्माटवीलोला महाबिल्वाटवीप्रियः॥ १४॥

सुधामयी विषधरो मातङ्गी मकुटेश्वरः।
वेदवेद्या वेदवाजी चक्रेशी विष्णुचक्रदः॥ १५॥

जगन्मयी जगद्रूपो मृडानी मृत्युनाशनः।
रामार्चितपदाम्भोजा कृष्णपुत्रवरप्रदः ॥ १६ ॥

रमावाणीसुसंसेव्या विष्णुब्रह्मसुसेवितः।
सूर्यचन्द्राग्निनयना तेजस्त्रयविलोचनः ॥ १७ ॥

चिदग्निकुण्डसम्भूता महालिङ्गसमुद्भवः।
कम्बुकण्ठी कालकण्ठो वज्रेशी वज्रिपूजितः ॥ १८ ॥

त्रिकण्टकी त्रिभङ्गीशो भस्मरक्षा स्मरान्तकः।
हयग्रीववरोद्धात्री मार्कण्डेयवरप्रदः ॥ १९ ॥

चिन्तामणिगृहावासा मन्दराचलमन्दिरः।
विन्ध्याचलकृतावासा विन्ध्यशैलार्यपूजितः ॥ २० ॥

मनोन्मनी लिङ्गरूपो जगदम्बा जगत्पिता।
योगनिद्रा योगगम्यो भवानी भवमूर्तिमान्॥ २१ ॥

श्रीचक्रात्मरथारूढा धरणीधरसंस्थितः।
श्रीविद्यावेद्यमहिमा निगमागमसंश्रयः ॥ २२ ॥

दशशीर्षसमायुक्ता पञ्चविंशतिशीर्षवान्।
अष्टादशभुजायुक्ता पञ्चाशत्करमण्डितः ॥ २३ ॥

ब्राह्म्यादिमातृकारूपा शताष्टेकादशात्मवान्।
स्थिरा स्थाणुस्तथा बाला सद्योजात उमा मृडः ॥ २४ ॥

शिवा शिवश्च रुद्राणी रुद्रश्चैवेश्वरीश्वरः।
कदम्बकाननावासा दारुकारण्यलोलुपः ॥ २५ ॥

नवाक्षरीमनुस्तुत्या पञ्चाक्षरमनुप्रियः।
नवावरणसम्पूज्या पञ्चायतनपूजितः॥ २६॥

देवस्थषट्चक्रदेवी दहराकाशमध्यगः।
योगिनीगणसंसेव्या भृग्वादिप्रमथावृतः॥ २७॥

उग्रताराघोररूपः शर्वाणी शर्वमूर्तिमान्।
नागवेणी नागभूषो मन्त्रिणी मन्त्रदैवतः॥ २८॥

ज्वलज्जिह्वा ज्वलन्नेत्रो दण्डनाथा दृगायुधः।
पार्थाञ्जनास्त्रसन्दात्री पार्थपाशुपतास्त्रदः॥ २९॥

पुष्पवच्चक्रताटङ्का फणिराजसुकुण्डलः।
बाणपुत्रीवरोद्धात्री बाणासुरवरप्रदः॥ ३०॥

व्यालकञ्चुकसंवीता व्यालयज्ञोपवीतवान्।
नवलावण्यरूपाढ्या नवयौवनविग्रहः॥ ३१॥

नाट्यप्रिया नाट्यमूर्तिस्त्रिसन्ध्या त्रिपुरान्तकः।
तन्त्रोपचारसुप्रीता तन्त्रादिमविधायकः॥ ३२॥

नववल्लीष्टवरदा नववीरसुजन्मभूः।
भ्रमरज्या वासुकिज्यो भेरुण्डा भीमपूजितः॥ ३३॥

निशुम्भशुम्भदमनी नीचापस्मारमर्दनः।
सहस्राराम्बुजारूढा सहस्रकमलार्चितः॥ ३४॥

गङ्गासहोदरी गङ्गाधरो गौरी त्रियम्बकः।
श्रीशैलभ्रमराम्बाख्या मल्लिकार्जुनपूजितः॥ ३५॥

भवतापप्रशमनी भवरोगनिवारकः।
चन्द्रमण्डलमध्यस्था मुनिमानसहंसकः॥ ३६ ॥

प्रत्यङ्गिरा प्रसन्नात्मा कामेशी कामरूपवान्।
स्वयम्प्रभा स्वप्रकाशः कालरात्री कृतान्तहृत्॥ ३७॥

सदान्नपूर्णा भिक्षाटो वनदुर्गा वसुप्रदः।
सर्वचैतन्यरूपाढ्या सच्चिदानन्दविग्रहः॥ ३८॥

सर्वमङ्गलरूपाढ्या सर्वकल्याणदायकः।
राजराजेश्वरी श्रीमद्राजराजप्रियङ्करः॥ ३९॥

अर्धनारीश्वरस्येदं नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।
पठन्नर्चन् सदा भक्त्या सर्वसाम्राज्यमाप्नुयात्॥ ४०॥

॥ इति श्रीस्कान्दपुराणे श्री-अर्धनारीश्वराष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्॥

॥ न्यासः॥

अस्य श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनामास्तोत्रमालामन्त्रस्य
महाविष्णुमहेश्वराः ऋषयः। अनुष्टुप् छन्दः।
श्रीदुर्गापरमेश्वरी देवता।
ह्रां बीजम्। ह्रीं शक्तिः। ह्रूं कीलकम्।
सर्वाभीष्टसिध्यर्थे जपहोमार्चने विनियोगः।

॥ स्तोत्रम्॥

सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी।
आर्या दुर्गा जया चाऽऽद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी॥ १॥

पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः।
मनो बुद्धिरहङ्कारा चिद्रूपा च चिदाकृतिः॥ २॥

अनन्ता भाविनी भव्या ह्यभव्या च सदागतिः।
शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया तथा॥ ३॥

सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी।
अपर्णाऽनेकवर्णा च पाटला पाटलावती॥ ४॥

पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीररञ्जिनी।
ईशानी च महाराज्ञी ह्यप्रमेयपराक्रमा॥ ५॥

रुद्राणी क्रूररूपा च सुन्दरी सुरसुन्दरी।
वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिकन्यका॥ ६॥

ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा।
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः॥ ७॥

विमला ज्ञानरूपा च क्रिया नित्या च बुद्धिदा।
बहुला बहुलप्रेमा महिषासुरमर्दिनी॥ ८॥

मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी।
सर्वशास्त्रमयी चैव सर्वदानवघातिनी॥ ९॥

अनेकशस्त्रहस्ता च सर्वशस्त्रास्त्रधारिणी।
भद्रकाली सदाकन्या कैशोरी युवतिर्यतिः॥ १०॥

प्रौढाऽप्रौढा वृद्धमाता घोररूपा महोदरी।
बलप्रदा घोररूपा महोत्साहा महाबला॥ ११॥

अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्री तपस्विनी।
नारायणी महादेवी विष्णुमाया शिवात्मिका॥ १२॥

शिवदूती कराली च ह्यनन्ता परमेश्वरी।
कात्यायनी महाविद्या महामेधास्वरूपिणी॥ १३॥

गौरी सरस्वती चैव सावित्री ब्रह्मवादिनी।
सर्वतत्त्वैकनिलया वेदमन्त्रस्वरूपिणी॥ १४॥

॥ फलश्रुतिः ॥

इदं स्तोत्रं महादेव्या नाम्नाम् अष्टोत्तरं शतम्।
यः पठेत् प्रयतो नित्यं भक्तिभावेन चेतसा॥ १५॥

शत्रुभ्यो न भयं तस्य तस्य शत्रुक्षयं भवेत्।
सर्वदुःखदरिद्राच्च सुसुखं मुच्यते ध्रुवम्॥ १६॥

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
कन्यार्थी लभते कन्यां कन्या च लभते वरम्॥ १७॥

ऋणी ऋणाद्विमुच्येत ह्यपुत्रो लभते सुतम्।
रोगाद्विमुच्यते रोगी सुखमत्यन्तमश्नुते॥ १८॥

भूमिलाभो भवेत् तस्य सर्वत्र विजयी भवेत्।
सर्वान् कामानवाप्नोति महादेवीप्रसादतः॥ १९॥

कुङ्कुमैर्बिल्वपत्रैश्च सुगन्धै रक्तपुष्पकैः।
रक्तपत्रैर्विशेषेण पूजयन् भद्रमश्नुते॥ २०॥

॥ इति श्री-दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ अन्नपूर्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

सिन्दूराभां त्रिनेत्राममृतशशिकलां खेचरीं रक्तवस्त्राम्
पीनोत्तुङ्गस्तनाढ्यामभिनवविलसद्यौवनारम्भरम्याम्।
नानालङ्कारयुक्तां सरसिजनयनामिन्दुसङ्क्रान्तमूर्तिम्
देवीं पाशाङ्कुशाढ्यामभयवरकरामन्नपूर्णां नमामि॥

॥ स्तोत्रम् ॥

अन्नपूर्णा शिवा देवी भीमा पुष्टिः सरस्वती।
सर्वज्ञा पार्वती दुर्गा शर्वाणी शिववल्लभा॥ १ ॥

वेदविद्या महाविद्या विद्यादात्री विशारदा।
कुमारी त्रिपुरा बाला लक्ष्मीः श्रीर्भयहारिणी॥ २ ॥

भवानी विष्णुजननी ब्रह्मादिजननी तथा।
गणेशजननी शक्तिः कुमारजननी शुभा॥ ३ ॥

भोगप्रदा भगवती भक्ताभीष्टप्रदायिनी।
भवरोगहरा भव्या शुभ्रा परममङ्गला॥ ४ ॥

भवानी चञ्चला गौरी चारुचन्द्रकलाधरा।
विशालाक्षी विश्वमाता विश्ववन्द्या विलासिनी॥ ५ ॥

आर्या कल्याणनिलया रुद्राणी कमलासना।
शुभप्रदा शुभावर्ता वृत्तपीनपयोधरा॥ ६ ॥

अम्बा संहारमथनी मृडानी सर्वमङ्गला।
विष्णुसंसेविता सिद्धा ब्रह्माणी सुरसेविता॥ ७॥

परमानन्ददा शान्तिः परमानन्दरूपिणी।
परमानन्दजननी परानन्दप्रदायिनी॥ ८॥

परोपकारनिरता परमा भक्तवत्सला।
पूर्णचन्द्राभवदना पूर्णचन्द्रनिभांशुका॥ ९॥

शुभलक्षणसम्पन्ना शुभानन्दगुणार्णवा।
शुभसौभाग्यनिलया शुभदा च रतिप्रिया॥ १०॥

चण्डिका चण्डमथनी चण्डदर्पनिवारिणी।
मार्तण्डनयना साध्वी चन्द्राग्निनयना सती॥ ११॥

पुण्डरीकहरा पूर्णा पुण्यदा पुण्यरूपिणी।
मायातीता श्रेष्ठमाया श्रेष्ठधर्मात्मवन्दिता॥ १२॥

असृष्टिः सङ्गरहिता सृष्टिहेतुः कपर्दिनी।
वृषारूढा शूलहस्ता स्थितिसंहारकारिणी॥ १३॥

मन्दस्मिता स्कन्दमाता शुद्धचित्ता मुनिस्तुता।
महाभगवती दक्षा दक्षाध्वरविनाशिनी॥ १४॥

सर्वार्थदात्री सावित्री सदाशिवकुटुम्बिनी।
नित्यसुन्दरसर्वाङ्गी सच्चिदानन्दलक्षणा॥ १५॥

नाम्नामष्टोत्तरशतमम्बायाः पुण्यकारणम्।
सर्वसौभाग्यसिद्ध्यर्थं जपनीयं प्रयत्नतः॥ १६॥

एतानि दिव्यनामानि श्रुत्वा ध्यात्वा निरन्तरम्।
स्तुत्वा देवीं च सततं सर्वान् कामानवाप्नुयात्॥ १७॥

॥ इति श्रीशिवरहस्ये श्री-अन्नपूर्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ गौर्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्॥

गौरी गणेशजननी गिरिराजतनूद्भवा।
गुहाम्बिका जगन्माता गङ्गाधरकुटुम्बिनी॥ १॥

वीरभद्रप्रसूर्विश्वव्यापिनी विश्वरूपिणी।
अष्टमूर्त्यात्मिका कष्टदारिद्र्यशमनी शिवा॥ २॥

शाम्भवी शङ्करी बाला भवानी भद्रदायिनी।
माङ्गल्यदायिनी सर्वमङ्गला मञ्जुभाषिणी॥ ३॥

महेश्वरी महामाया मन्त्राराध्या महाबला।
हेमाद्रिजा हैमवती पार्वती पापनाशिनी॥ ४॥

नारायणांशजा नित्या निरीशा निर्मलाऽम्बिका।
मृडानी मुनिसंसेव्या मानिनी मेनकात्मजा॥ ५॥

कुमारी कन्यका दुर्गा कलिदोषनिषूदिनी।
कात्यायनी कृपापूर्णा कल्याणी कमलार्चिता॥ ६॥

सती सर्वमयी चैव सौभाग्यदा सरस्वती।
अमलाऽमरसंसेव्या अन्नपूर्णाऽमृतेश्वरी॥ ७॥

अखिलागमसंसेव्या सुखसच्चित्सुधारसा।
बाल्याराधितभूतेशा भानुकोटिसमद्युतिः॥ ८॥

हिरण्मयी परा सूक्ष्मा शीतांशुकृतशेखरा।
हरिद्राकुङ्कुमाराध्या सर्वकालसुमङ्गली॥ ९॥

सर्वबोधप्रदा सामशिखा वेदान्तलक्षणा।
कर्मब्रह्ममयी कामकलना काङ्क्षितार्थदा॥ १०॥

चन्द्रार्कायुतताटङ्का चिदम्बरशरीरिणी।
श्रीचक्रवासिनी देवी कला कामेश्वरप्रिया॥ ११॥

माराराातिप्रियार्धाङ्गी मार्कण्डेयवरप्रदा।
पुत्रपौत्रप्रदा पुण्या पुरुषार्थप्रदायिनी॥ १२॥

सत्यधर्मरता सर्वसाक्षिणी सर्वरूपिणी।
श्यामला बगला चण्डी मातृका भगमालिनी॥ १३॥

शूलिनी विरजा स्वाहा स्वधा प्रत्यङ्गिराम्बिका।
आर्या दाक्षायणी दीक्षा सर्ववस्तूत्तमोत्तमा॥ १४॥

शिवाभिधाना श्रीविद्या प्रणवार्थस्वरूपिणी।
ह्रीङ्कारी नादरूपा च त्रिपुरा त्रिगुणेश्वरी।
सुन्दरी स्वर्णगौरी च षोडशाक्षरदेवता॥ १५॥

॥ इति श्री-गौर्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ शक्त्यष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रम्॥

दक्ष उवाच

एवमुक्तोऽब्रवीद्दक्षः केषु केषु मयाऽनघे।
तीर्थेषु च त्वं द्रष्टव्या स्तोतव्या कैश्च नामभिः॥

देव्युवाच

सर्वगा सर्वभूतेषु द्रष्टव्या सर्वतो भुवि।
सप्तलोकेषु यत्किञ्चिद्रहितं न मया विना॥

तथाऽपि येषु स्थानेषु द्रष्टव्याः सिद्धिमीप्सुभिः।
स्मर्तव्या भूतिकामैर्वा तानि वक्ष्यामि तत्त्वतः॥

॥स्तोत्रम्॥

वाराणस्यां विशालाक्षी नैमिषे लिङ्गधारिणी।
प्रयागे ललिता देवी कामुका गन्धमादने॥१॥

मानसे कुमुदा नाम विश्वकाया तथेश्वरे।
गोमन्ते गोमती नाम मन्दरे कामचारिणी॥२॥

मदोत्कटा चैत्ररथे जयन्ती हस्तिनापुरे।
कान्यकुब्जे तथा गौरी रम्भा मलयपर्वते॥३॥

एकाम्रके कीर्तिमती विश्वां विश्वेश्वरे विदुः।
पुष्करे पुरुहूतेति केदारे मार्गदायिनी॥४॥

नन्दा हिमवतः पृष्ठे गोकर्णे भद्रकर्णिका।
स्थानेश्वरे भवानी तु बिल्वके बिल्वपत्रिका॥५॥

श्रीशैले माधवी नाम भद्रा भद्रेश्वरे तथा।
जया वराहशैले तु कमला कमलालये॥६॥

रुद्रकोट्यां च रुद्राणी काली कालञ्जरे गिरौ।
महालिङ्गे तु कपिला मर्कोटे मुकुटेश्वरी॥७॥

शालग्रामे महादेवी शिवलिङ्गे जलप्रिया।
मायापुर्यां कुमारी तु सन्ताने ललिता तथा॥ ८॥

उत्पलाक्षी सहस्राक्षे हिरण्याक्षे महोत्पला।
गयायां मङ्गला नाम विमला पुरुषोत्तमे॥ ९॥

विपाशायामघोराक्षी पाटला पुण्ड्रवर्धने।
नारायणी सुपार्श्वे तु त्रिकूटे रुद्रसुन्दरी॥ १०॥

विपुले विपुला नाम कल्याणी मलयाचले।
कौटवी कोटितीर्थेषु सुगन्धा माधवे वने॥ ११॥

गोदाश्रमे त्रिसन्ध्या तु गङ्गाद्वारे रतिप्रिया।
शिवकुण्डे शिवानन्दा नन्दिनी देविकातटे॥ १२॥

रुक्मिणी द्वारवत्यां तु राधा वृन्दावने वने।
देवकी मथुरायां तु पाताले परमेश्वरी॥ १३॥

चित्रकूटे तथा सीता विन्ध्ये विन्ध्याधिवासिनी।
सह्यद्वारे करीरा तु हरिश्चन्द्रे तु चन्द्रिका॥ १४॥

रमणा रामतीर्थे तु यमुनायां मृगावती।
करवीरे महालक्ष्मीरुमादेवी विनायके॥ १५॥

अरोगा वैद्यनाथे तु महाकाले महेश्वरी।
अभयेत्युष्णतीर्थेषु चामृता विन्ध्यकन्दरे॥ १६॥

माण्डव्ये माण्डवी नाम स्वाहा माहेश्वरे पुरे।
छागलाण्डे प्रचण्डा तु चण्डिकामरकण्टके॥ १७॥

सोमेश्वरे वरारोहा प्रभासे पुष्करावती।
देवमाता सरस्वत्यां पारा पारातटे मता॥ १८॥

महालये महाभागा पयोष्ण्यां पिङ्गलेश्वरी।
सिंहिका कृतशौचे तु कार्त्तिकेये तु शङ्करी॥ १९॥

उत्पलावर्तके लोला सुभद्रा शोणसङ्गमे।
महासिद्धवने लक्ष्मीरनङ्गा भरताश्रमे॥ २०॥

जालन्धरे विश्वमुखी तारा किष्किन्धपर्वते।
देवदारुवने पुष्टिर्मेधा काश्मीरमण्डले॥ २१॥

भीमादेवी हिमाद्रौ तु पुष्टिर्विश्वेश्वरे तथा।
कपालमोचने शुद्धिर्माता कायावरोहणे॥ २२॥

शङ्खोद्धारे ध्वनिर्नाम धृतिः पिण्डारके तथा।
काला तु चन्द्रभागायामच्चोदे शिवकारिणी॥ २३॥

वेणायाममृता नाम बदर्यां उर्वशी तथा।
औषधी चोत्तरकुरौ कुशद्वीपे कुशोदका॥ २४॥

मन्मथा हेमकूटे तु मुकुटे सत्यवादिनी।
अश्वत्थे वन्दनीया तु निधिर्वैश्रवणालये॥ २५॥

गायत्री वेदवदने पार्वती शिवसन्निधौ।
देवलोके तथेन्द्राणी ब्रह्मास्येषु सरस्वती॥ २६॥

सूर्यबिम्बे प्रभा नाम मातृणां वैष्णवी तथा।
अरुन्धती सतीनां तु रामासु च तिलोत्तमा॥ २७॥

चित्ते ब्रह्मकला नाम शक्तिः सर्वशरीरिणाम्।
एतदुद्देशतः प्रोक्तं नामाष्टशतमुत्तमम्॥ २८॥

अष्टोत्तरं च तीर्थानां शतमेतदुदाहृतम्।
यः पठेच्छृणुयाद्वाऽपि सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ २९॥

एषु तीर्थेषु यः कृत्वा स्नानं पश्यन्ति मां नरः।
सर्वपापविनिर्मुक्तः कल्पं शिवपुरे वसेत्॥ ३०॥

यस्तु मत्परमः कालं करोत्येतेषु मानवः।
स भित्त्वा ब्रह्मसदनं पदमभ्येति शाङ्करम्॥ ३१॥

नामाष्टशतकं यस्तु श्रावयेच्छिवसन्निधौ।
तृतीयायामथाष्टम्यां बहुपुत्रो भवेन्नरः॥ ३२॥

गोदाने श्राद्धकाले वा अहन्यहनि वा पुनः।
देवार्चनविधौ विद्वान् पठन् ब्रह्माधिगच्छति॥ ३३॥

एवं वदन्ती सा तत्र ददाहात्मानमात्मना।
स्वायम्भुवेऽपि काले च दक्षप्राचेतसोऽभवत्॥ ३४॥

पार्वती चाभवद्देवी शिवदेहार्धधारिणी।
मेनागर्भसमुत्पन्ना भुक्तिमुक्तिफलप्रदा॥ ३५॥

अरुन्धती जपन्त्येतत्तदाप्ता योगमुत्तमम्।
पुरूरवाश्च राजर्षिर्लोकेषु जयतामगात्॥ ३६॥

ययातिः पुत्रलाभं तु धनलाभं तु भार्गवः।
तथाऽन्ये देवदैत्याश्च ब्राह्मणाः क्षत्रियास्तथा।
वैश्याः शूद्राश्च बहवः सिद्धिमीयुर्यथेप्सिताम्॥ ३७॥

यत्रेतल्लिखितं तिष्ठेत् पूज्यते देवसन्निधौ।
न तत्र शोकदौर्गत्यं कदाचिदपि जायते॥ ३८॥

॥ इति श्रीमत्स्यमहापुराणे त्रयोदशोऽध्याये
श्री-शक्त्यष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

❁❁❁

॥ सीताष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

वामाङ्गे रघुनायकस्य रुचिरे या संस्थिता शोभना
या विप्राधिपयानरम्यनयना या विप्रपालानना।
विद्युत्पुञ्जविराजमानवसना भक्तार्तिसङ्खण्डना
श्रीमद्राघवपादपद्मयुगलन्यस्तेक्षणा साऽवतु॥

॥ स्तोत्रम् ॥

श्रीसीता जानकी देवी वैदेही राघवप्रिया।
रमाऽवनिसुता रामा राक्षसान्तप्रकारिणी॥ १ ॥

रत्नगुप्ता मातुलुङ्गी मैथिली भक्ततोषदा।
पद्माक्षजा कञ्जनेत्रा स्मितास्या नूपुरस्वना॥ २ ॥

वैकुण्ठनिलया मा श्रीर्मुक्तिदा कामपूरणी।
नृपात्मजा हेमवर्णा मृदुलाङ्गी सुभाषिणी॥ ३ ॥

कुशाम्बिका दिव्यदा च लवमाता मनोहरा।
हनुमद्वन्दितपदा मुग्धा केयूरधारिणी॥ ४ ॥

अशोकवनमध्यस्था रावणादिकमोहिनी।
विमानसंस्थिता सुभ्रूः सुकेशी रशनान्विता॥ ५ ॥

रजोरूपा सत्त्वरूपा तामसी वह्निवासिनी।
हेममृगासक्तचित्ता वाल्मीक्याश्रमवासिनी॥ ६ ॥

पतिव्रता महामाया पीतकौशेयवासिनी।
मृगनेत्रा च बिम्बोष्ठी धनुर्विद्याविशारदा॥ ७॥

सौम्यरूपा दशरथस्नुषा चामरवीजिता।
सुमेधादुहिता दिव्यरूपा त्रैलोक्यपालिनी॥ ८॥

अन्नपूर्णा महालक्ष्मीर्धीर्लज्जा च सरस्वती।
शान्तिः पुष्टिः क्षमा गौरी प्रभाऽयोध्यानिवासिनी॥ ९॥

वसन्तशीतला गौरी स्नानसन्तुष्टमानसा।
रमानामभद्रसंस्था हेमकुम्भपयोधरा॥ १०॥

सुरार्चिता धृतिः कान्तिः स्मृतिर्मेधा विभावरी।
लघूदरा वरारोहा हेमकङ्कणमण्डिता॥ ११॥

द्विजपत्न्यर्पितनिजभूषा राघवतोषिणी।
श्रीरामसेवानिरता रत्नताटङ्कधारिणी॥ १२॥

रामवामाङ्गसंस्था च रामचन्द्रैकरञ्जनी।
सरयूजलसङ्क्रीडाकारिणी राममोहिनी॥ १३॥

सुवर्णतुलिता पुण्या पुण्यकीर्तिः कलावती।
कलकण्ठा कम्बुकण्ठा रम्भोरुर्गजगामिनी॥ १४॥

रामार्पितमना रामवन्दिता रामवल्लभा।
श्रीरामपदचिह्नाङ्का रामरामेतिभाषिणी॥ १५॥

रामपर्यङ्कशयना रामाङ्घ्रिक्षालिनी वरा।
कामधेन्वन्नसन्तुष्टा मातुलुङ्गकरे धृता॥ १६॥

दिव्यचन्दनसंस्था श्रीर्मूलकासुरमर्दिनी।
एवमष्टोत्तरशतं सीतानाम्नां सुपुण्यदम्॥ १७॥

॥ फलश्रुतिः ॥

ये पठन्ति नरा भूम्यां ते धन्याः स्वर्गगामिनः।
अष्टोत्तरशतं नाम्नां सीतायाः स्तोत्रमुत्तमम्॥ १८॥

जपनीयं प्रयत्नेन सर्वदा भक्तिपूर्वकम्।
सन्ति स्तोत्राण्यनेकानि पुण्यदानि महान्ति च॥ १९॥

नानेन सदृशानीह तानि सर्वाणि भूसुर।
स्तोत्राणामुत्तमं चेदं भुक्तिमुक्तिप्रदं नृणाम्॥ २०॥

एवं सुतीक्ष्ण ते प्रोक्तमष्टोत्तरशतं शुभम्।
सीतानाम्नां पुण्यदं च श्रवणान्मङ्गलप्रदम्॥ २१॥

नरैः प्रातः समुत्थाय पठितव्यं प्रयत्नतः।
सीतापूजनकालेऽपि सर्ववाञ्छितदायकम्॥ २२॥

॥ इति श्री-आनन्दरामायणे श्रीसीताष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्॥

॥ ध्यानम्॥

वन्दे पद्मकरां प्रसन्नवदनां सौभाग्यदां भाग्यदाम्
हस्ताभ्यामभयप्रदां मणिगणैर्नानाविधैर्भूषिताम्।
भक्ताभीष्टफलप्रदां हरिहरब्रह्मादिभिः सेविताम्
पार्श्वे पङ्कजशङ्खपद्मनिधिभिर्युक्तां सदा शक्तिभिः॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्॥

॥ स्तोत्रम्॥

प्रकृतिं विकृतिं विद्यां सर्वभूतहितप्रदाम्।
श्रद्धां विभूतिं सुरभिं नमामि परमात्मिकाम्॥ १॥

वाचं पद्मालयां पद्मां शुचिं स्वाहां स्वधां सुधाम्।
धन्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं नित्यपुष्टां विभावरीम्॥ २॥

अदितिं च दितिं दीप्तां वसुधां वसुधारिणीम्।
नमामि कमलां कान्तां क्षमां क्षीरोदसम्भवाम्॥ ३॥

अनुग्रहप्रदां बुद्धिमनघां हरिवल्लभाम्।
अशोकाममृतां दीप्तां लोकशोकविनाशिनीम्॥ ४॥

नमामि धर्मनिलयां करुणां लोकमातरम्।
पद्मप्रियां पद्महस्तां पद्माक्षीं पद्मसुन्दरीम्॥ ५॥

पद्मोद्भवां पद्ममुखीं पद्मनाभप्रियां रमाम्।
पद्ममालाधरां देवीं पद्मिनीं पद्मगन्धिनीम्॥ ६॥

पुण्यगन्धां सुप्रसन्नां प्रसादाभिमुखीं प्रभाम्।
नमामि चन्द्रवदनां चन्द्रां चन्द्रसहोदरीम्॥ ७॥

चतुर्भुजां चन्द्ररूपामिन्दिरामिन्दुशीतलाम्।
आह्लादजननीं पुष्टिं शिवां शिवकरीं सतीम्॥ ८॥

विमलां विश्वजननीं तुष्टिं दारिद्र्यनाशिनीम्।
प्रीतिपुष्करिणीं शान्तां शुक्लमाल्याम्बरां श्रियम्॥ ९॥

भास्करीं बिल्वनिलयां वरारोहां यशस्विनीम्।
वसुन्धरामुदाराङ्गां हरिणीं हेममालिनीम्॥ १०॥

धनधान्यकरीं सिद्धिं स्त्रैणसौम्यां शुभप्रदाम्।
नृपवेश्मगतानन्दां वरलक्ष्मीं वसुप्रदाम्॥ ११॥

शुभां हिरण्यप्राकारां समुद्रतनयां जयाम्।
नमामि मङ्गलां देवीं विष्णुवक्षःस्थलस्थिताम्॥ १२॥

विष्णुपत्नीं प्रसन्नाक्षीं नारायणसमाश्रिताम्।
दारिद्र्यध्वंसिनीं देवीं सर्वोपद्रवहारिणीम्॥ १३॥

नवदुर्गां महाकालीं ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकाम्।
त्रिकालज्ञानसम्पन्नां नमामि भुवनेश्वरीम्॥ १४॥

लक्ष्मीं क्षीरसमुद्रराजतनयां श्रीरङ्गधामेश्वरीम्
दासीभूतसमस्तदेववनितां लोकैकदीपाङ्कुराम्।
श्रीमन्मन्दकटाक्षलब्धविभवब्रह्मेन्द्रगङ्गाधराम्
त्वां त्रैलोक्यकुटुम्बिनीं सरसिजां वन्दे मुकुन्दप्रियाम्॥ १५॥

मातर्नमामि कमले कमलायताक्षि
श्रीविष्णुहृत्कमलवासिनि विश्वमातः।
क्षीरोदजे कमलकोमलगर्भगौरि
लक्ष्मि प्रसीद सततं नमतां शरण्ये॥ १६॥

॥ फलश्रुतिः ॥

त्रिकालं यो जपेद्विद्वान् षण्मासं विजितेन्द्रियः।
दारिद्र्यध्वंसनं कृत्वा सर्वमाप्नोत्ययत्नतः॥ १७॥

देवीनामसहस्रेषु पुण्यमष्टोत्तरं शतम्।
येन श्रियमवाप्नोति कोटिजन्मदरिद्रितः॥ १८॥

भृगुवारे शतं धीमान् पठेद्वत्सरमात्रकम्।
अष्टैश्वर्यमवाप्नोति कुबेर इव भूतले॥ १९॥

दारिद्र्यमोचनं नाम स्तोत्रमम्बापरं शतम्।
येन श्रियमवाप्नोति कोटिजन्मदरिद्रितः॥ २०॥

भुक्त्वा तु विपुलान् भोगानस्याः सायुज्यमाप्नुयात्।
प्रातःकाले पठेन्नित्यं सर्वदुःखोपशान्तये।
पठंस्तु चिन्तयेद्देवीं सर्वाभरणभूषिताम्॥ २१॥

॥ इति श्री-लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ गोदाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्॥

॥ ध्यानम्॥

शतमखमणि नीला चारुकह्लारहस्ता
स्तनभरनमिताङ्गी सान्द्रवात्सल्यसिन्धुः।
अलकविनिहिताभिः स्रग्भिराकृष्टनाथा
विलसतु हृदि गोदा विष्णुचित्तात्मजा नः॥

॥ स्तोत्रम्॥

श्रीरङ्गनायकी गोदा विष्णुचित्तात्मजा सती।
गोपीवेषधरा देवी भूसुता भोगशालिनी॥ १॥

तुलसीकाननोद्भूता श्रीधन्विपुरवासिनी।
भट्टनाथप्रियकरी श्रीकृष्णहितभोगिनी॥ २॥

आमुक्तमाल्यदा बाला रङ्गनाथप्रिया परा।
विश्वम्भरा कलालापा यतिराजसहोदरी॥ ३॥

कृष्णानुरक्ता सुभगा सुलभश्रीः सलक्षणा।
लक्ष्मीप्रियसखी श्यामा दयाञ्चितदृगञ्चला॥ ४॥

फल्गुन्याविर्भवा रम्या धनुर्मासकृतव्रता।
चम्पकाशोक-पुन्नाग-मालती-विलसत्-कचा॥ ५॥

आकारत्रयसम्पन्ना नारायणपदाश्रिता।
श्रीमदष्टाक्षरीमन्त्र-राजस्थित-मनोरथा॥ ६॥

मोक्षप्रदाननिपुणा मनुरत्नाधिदेवता।
ब्रह्मण्या लोकजननी लीलामानुषरूपिणी॥ ७॥

ब्रह्मज्ञानप्रदा माया सच्चिदानन्दविग्रहा।
महापतिव्रता विष्णुगुणकीर्तनलोलुपा॥ ८॥

प्रपन्नार्तिहरा नित्या वेदसौधविहारिणी।
श्रीरङ्गनाथमाणिक्यमञ्जरी मञ्जुभाषिणी॥ ९॥

पद्मप्रिया पद्महस्ता वेदान्तद्वयबोधिनी।
सुप्रसन्ना भगवती श्रीजनार्दनदीपिका॥ १०॥

सुगन्धवयवा चारुरङ्गमङ्गलदीपिका।
ध्वजवज्राङ्कुशाब्जाङ्क-मृदुपाद-लताञ्चिता॥ ११॥

तारकाकारनखरा प्रवालमृदुलाङ्गुली।
कूर्मोपमेय-पादोर्ध्वभागा शोभनपार्ष्णिका॥ १२॥

वेदार्थभावतत्त्वज्ञा लोकाराध्याङ्घ्रिपङ्कजा।
आनन्दबुद्बुदाकार-सुगुल्फा परमाऽणुका॥ १३॥

तेजःश्रियोज्ज्वलधृतपादाङ्गुलि-सुभूषिता।
मीनकेतन-तूणीर-चारुजङ्घा-विराजिता॥ १४॥

ककुद्वज्जानुयुग्माढ्या स्वर्णरम्भाभसक्थिका।
विशालजघना पीनसुश्रोणी मणिमेखला॥ १५॥

आनन्दसागरावर्त-गम्भीराम्भोज-नाभिका।
भास्वद्वलित्रिका चारुजगत्पूर्ण-महोदरी॥ १६॥

नववल्लीरोमराजी सुधाकुम्भायितस्तनी।
कल्पमालानिभभुजा चन्द्रखण्ड-नखाञ्चिता॥ १७॥

सुप्रवाशाङ्गुलीन्यस्तमहारत्नाङ्गुलीयका।
नवारुणप्रवालाभ-पाणिदेश-समञ्चिता॥ १८॥

कम्बुकण्ठी सुचुबुका बिम्बोष्ठी कुन्ददन्तयुक्।
कारुण्यरस-निष्यन्द-नेत्रद्वय-सुशोभिता॥ १९॥

मुक्ताशुचिस्मिता चारुचाम्पेयनिभनासिका।
दर्पणाकार-विपुल-कपोल-द्वितयाञ्चिता॥ २०॥

अनन्तार्क-प्रकाशोद्यन्मणि-ताटङ्क-शोभिता।
कोटिसूर्याग्निसङ्काश-नानाभूषण-भूषिता॥ २१॥

सुगन्धवदना सुभ्रू अर्धचन्द्रललाटिका।
पूर्णचन्द्रानना नीलकुटिलालकशोभिता॥ २२॥

सौन्दर्यसीमा विलसत्-कस्तूरी-तिलकोज्ज्वला।
धगद्ध-गायमानोद्यन्मणि-सीमन्त-भूषणा ॥ २३॥

जाज्वल्यमान-सद्रत्न-दिव्यचूडावतंसका ।
सूर्यार्धचन्द्र-विलसत्-भूषणाञ्चित-वेणिका॥ २४॥

अत्यर्कानल-तेजोधिमणि-कञ्चुकधारिणी ।
सद्रत्नाञ्चितविद्योत-विद्युत्कुञ्जाभ-शाटिका॥ २५॥

नानामणिगणाकीर्ण-हेमाङ्गदसुभूषिता ।
कुङ्कुमागरु-कस्तूरी-दिव्यचन्दन-चर्चिता॥ २६॥

स्वोचितौज्ज्वल्य-विविध-विचित्र-मणि-हारिणी।
असङ्ख्येय-सुखस्पर्श-सर्वातिशय-भूषणा ॥ २७॥

मल्लिका-पारिजातादि दिव्यपुष्प-स्रगञ्चिता।
श्रीरङ्गनिलया पूज्या दिव्यदेशसुशोभिता॥ २८॥

॥ इति श्री-गोदाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ तुलस्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्॥

॥ स्तोत्रम्॥

तुलसी पावनी पूज्या वृन्दावननिवासिनी ज्ञानदात्री ज्ञानमयी निर्मला सर्वपूजिता

सती पतिव्रता वृन्दा क्षीराब्धिमथनोद्भवा।
कृष्णवर्णा रोगहन्त्री त्रिवर्णा सर्वकामदा॥ १॥

लक्ष्मीसखी नित्यशुद्धा सुदती भूमिपावनी।
हरिद्रान्नैकनिरता हरिपादकृतालया॥ २॥

पवित्ररूपिणी धन्या सुगन्धिन्यमृतोद्भवा।
सुरूपाऽऽरोग्यदा तुष्टा शक्तित्रितयरूपिणी॥ ३॥

देवी देवर्षिसंस्तुत्या कान्ता विष्णुमनःप्रिया।
भूतवेतालभीतिघ्नी महापातकनाशिनी॥ ४॥

मनोरथप्रदा मेधा कान्तिर्विजयदायिनी।
शङ्खचक्रगदापद्मधारिणी कामरूपिणी॥ ५॥

अपवर्गप्रदा श्यामा कृशमध्या सुकेशिनी।
वैकुण्ठवासिनी नन्दा बिम्बोष्ठी कोकिलस्वरा॥ ६॥

कपिला निम्नगाजन्मभूमिरायुष्यदायिनी।
वनरूपा दुःखनाशिन्यविकारा चतुर्भुजा॥ ७॥

गरुत्मद्वाहना शान्ता दान्ता विघ्ननिवारिणी।
श्रीविष्णुमूलिका पुष्टिस्त्रिवर्गफलदायिनी॥ ८॥

महाशक्तिर्महामाया लक्ष्मीवाणीसुपूजिता।
सुमङ्गल्यर्चनप्रीता सौमङ्गल्यविवर्धिनी॥ ९॥

चातुर्मास्योत्सवाराध्या विष्णुसान्निध्यदायिनी।
उत्थानद्वादशीपूज्या सर्वदेवप्रपूजिता॥ १०॥

गोपीरतिप्रदा नित्या निर्गुणा पार्वतीप्रिया।
अपमृत्युहरा राधाप्रिया मृगविलोचना॥ ११ ॥

अम्लाना हंसगमना कमलासनवन्दिता।
भूलोकवासिनी शुद्धा रामकृष्णादिपूजिता॥ १२ ॥

सीतापूज्या राममनःप्रिया नन्दनसंस्थिता।
सर्वतीर्थमयी मुक्ता लोकसृष्टिविधायिनी॥ १३ ॥

प्रातर्दृश्या ग्लानिहन्त्री वैष्णवी सर्वसिद्धिदा।
नारायणी सन्ततिदा मूलमृद्धारिपावनी॥ १४ ॥

अशोकवनिकासंस्था सीताध्याता निराश्रया।
गोमतीसरयूतीररोपिता कुटिलालका॥ १५ ॥

अपात्रभक्ष्यपापघ्नी दानतोयविशुद्धि।
श्रुतिधारणसुप्रीता शुभा सर्वेष्टदायिनी॥ १६ ॥

नाम्नां शतं साष्टकं तत्तुलस्याः सर्वमङ्गलम्।
सौमङ्गल्यप्रदं प्रातः पठेद्भक्त्या सुभाग्यदम्।
। ॥ १७ ॥

लक्ष्मीपतिप्रसादेन सर्वविद्याप्रदं नृणाम्

॥ इति श्री-तुलस्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ सरस्वत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा पूजिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥

॥ स्तोत्रम् ॥

सरस्वती महाभद्रा महामाया वरप्रदा।
श्रीप्रदा पद्मनिलया पद्माक्षी पद्मवक्त्रका॥ १ ॥

शिवानुजा पुस्तकभृज्ज्ञानमुद्रा रमा परा।
कामरूपा महाविद्या महापातकनाशिनी॥ २ ॥

महाश्रया मालिनी च महाभोगा महाभुजा।
महाभागा महोत्साहा दिव्याङ्गा सुरवन्दिता॥ ३ ॥

महाकाली महापाशा महाकारा महाङ्कुशा।
पीता च विमला विश्वा विद्युन्माला च वैष्णवी॥ ४ ॥

चन्द्रिका चन्द्रवदना चन्द्रलेखविभूषिता।
सावित्री सुरसा देवी दिव्यालङ्कारभूषिता॥ ५ ॥

वाग्देवी वसुदा तीव्रा महाभद्रा महाबला।
भोगदा भारती भामा गोविन्दा गोमती शिवा॥ ६ ॥

जटिला विन्ध्यवासा च विन्ध्याचलविराजिता।
चण्डिका वैष्णवी ब्राह्मी ब्रह्मज्ञानैकसाधना॥ ७ ॥

सौदामिनी सुधामूर्तिः सुभद्रा सुरपूजिता।
सुवासिनी सुनासा च विनिद्रा पद्मलोचना॥ ८॥

विद्यारूपा विशालाक्षी ब्रह्मजाया महाफला।
त्रयीमूर्ती त्रिकालज्ञा त्रिगुणा शास्त्ररूपिणी॥ ९॥

शुम्भासुरप्रमथिनी शुभदा च स्वरात्मिका।
रक्तबीजनिहन्त्री च चामुण्डा चाम्बिका तथा॥ १०॥

मुण्डकायप्रहरणा धूम्रलोचनमर्दना।
सर्वदेवस्तुता सौम्या सुरासुरनमस्कृता॥ ११॥

कालरात्रिः कलाधारा रूपसौभाग्यदायिनी।
वाग्देवी च वरारोहा वाराही वारिजासना॥ १२॥

चित्राम्बरा चित्रगन्धा चित्रमाल्यविभूषिता।
कान्ता कामप्रदा वन्द्या विद्याधरसुपूजिता॥ १३॥

श्वेतानना नीलभुजा चतुर्वर्गफलप्रदा।
चतुराननसाम्राज्या रक्तमध्या निरञ्जना॥ १४॥

हंसासना नीलजङ्घा ब्रह्मविष्णुशिवात्मिका।
एवं सरस्वतीदेव्या नाम्नामष्टोत्तरं शतम्॥ १५॥

॥ इति श्री-सरस्वत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ सुब्रह्मण्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

शक्तिहस्तं विरूपाक्षं शिखिवाहं षडाननम्।
दारुणं रिपुरोगघ्नं भावये कुक्कुटध्वजम्॥

॥ स्तोत्रम् ॥

स्कन्दो गुहः षण्मुखश्च फालनेत्रसुतः प्रभुः।
पिङ्गलः कृत्तिकासूनुः शिखिवाहो द्विषड्भुजः॥ १ ॥

द्विषण्णेत्रः शक्तिधरः पिशिताशप्रभञ्जनः।
तारकासुरसंहारी रक्षोबलविमर्दनः॥ २ ॥

मत्तः प्रमत्तोन्मत्तश्च सुरसैन्यसुरक्षकः।
देवसेनापतिः प्राज्ञः कृपालुर्भक्तवत्सलः॥ ३ ॥

उमासुतः शक्तिधरः कुमारः क्रौञ्चदारणः।
सेनानीरग्निजन्मा च विशाखः शङ्करात्मजः॥ ४ ॥

शिवस्वामी गणस्वामी सर्वस्वामी सनातनः।
अनन्तमूर्तिरक्षोभ्यः पार्वतीप्रियनन्दनः॥ ५ ॥

गङ्गासुतः शरोद्भूत आहूतः पावकात्मजः।
जृम्भः प्रजृम्भ उज्जृम्भः कमलासनसंस्तुतः॥ ६ ॥

एकवर्णो द्विवर्णश्च त्रिवर्णः सुमनोहरः।
चतुर्वर्णः पञ्चवर्णः प्रजापतिरहःपतिः॥ ७ ॥

अग्निगर्भः शमीगर्भो विश्वरेता सुरारिहा।
हरिद्वर्णः शुभकरो वटुश्च पटुवेषभृत्॥८॥

पूषा गभस्तिर्गहनश्चन्द्रवर्णः कलाधरः।
मायाधरो महामायी कैवल्यः शङ्करात्मजः॥९॥

विश्वयोनिरमेयात्मा तेजोयोनिरनामयः।
परमेष्ठी परब्रह्म वेदगर्भो विराड्वुतः॥१०॥

पुलिन्दकन्याभर्ता च महासारस्वतावृतः।
आश्रिताखिलदाता च चोरघ्नो रोगनाशनः॥११॥

अनन्तमूर्तिरानन्दः शिखण्डी-कृतकेतनः।
डम्भः परमडम्भश्च महाडम्भो वृषाकपिः॥१२॥

कारणोत्पत्ति-देहश्च कारणातीत-विग्रहः।
अनीश्वरोऽमृतः प्राणः प्राणायामपरायणः॥१३॥

विरुद्धहन्तो वीरघ्नो रक्तश्यामगलोऽपि च।
सुब्रह्मण्यो गुहः प्रीतो ब्रह्मण्यो ब्राह्मणप्रियः।
वंशवृद्धिकरो वेदवेद्योऽक्षयफलप्रदः॥१४॥

॥इति श्री-सुब्रह्मण्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ कार्त्तिकेयाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

सिन्दूरारुणकान्तिमिन्दुवदनं केयूरहारादिभिः
दिव्यैराभरणैर्विभूषिततनुं स्वर्गस्य सौख्यप्रदम्।
अम्भोजाभयशक्तिकुक्कुटधरं रक्ताङ्गरागांशुकम्
सुब्रह्मण्यमुपास्महे प्रणमतां भीतिप्रणाशोद्यतम् ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

विश्वामित्रस्तु भगवान् कुमारं शरणं गतः।
स्तवं दिव्यं सम्प्रचक्रे महासेनस्य चापि सः ॥ १ ॥

अष्टोत्तरशतनाम्नां श्रृणु त्वं तानि फाल्गुन।
जपेन येषां पापानि यान्ति ज्ञानमवाप्नुयात् ॥ २ ॥

त्वं ब्रह्मवादी त्वं ब्रह्मा ब्रह्मब्राह्मणवत्सलः।
ब्रह्मण्यो ब्रह्मदेवश्च ब्रह्मदो ब्रह्मसङ्ग्रहः ॥ ३ ॥

त्वं परं परमं तेजो मङ्गलानां च मङ्गलम्।
अप्रमेयगुणश्चैव मन्त्राणां मन्त्रगो भवान् ॥ ४ ॥

त्वं सावित्रीमयो देवः सर्वत्रैवापराजितः।
मन्त्रः सर्वात्मको देवः षडक्षरवतां वरः ॥ ५ ॥

गवां पुत्रः सुरारिघ्नः सम्भवो भवभावनः।
पिनाकी शत्रुहा चैव कूटः स्कन्दः सुराग्रणीः ॥ ६ ॥

द्वादशो भूर्भुवो भावी भुवःपुत्रो नमस्कृतः।
नागराजः सुधर्मात्मा नाकपृष्ठः सनातनः॥७॥

हेमगर्भो महागर्भो जयश्च विजयेश्वरः।
त्वं कर्ता त्वं विधाता च नित्योऽनित्योऽरिमर्दनः॥८॥

महासेनो महातेजा वीरसेनश्चमूपतिः।
सुरसेनः सुराध्यक्षो भीमसेनो निरामयः॥९॥

शौरिर्यदुर्महातेजा वीर्यवान् सत्यविक्रमः।
तेजोगर्भोऽसुररिपुः सुरमूर्तिः सुरोर्जितः॥१०॥

कृतज्ञो वरदः सत्यः शरण्यः साधुवत्सलः।
सुव्रतः सूर्यसङ्काशो वह्निगर्भो रणोत्सुकः॥११॥

पिप्पली शीघ्रगो रौद्रिर्गाङ्गेयो रिपुदारणः।
कार्त्तिकेयः प्रभुः क्षान्तो नीलदंष्ट्रो महामनाः॥१२॥

निग्रहो निग्रहाणां च नेता त्वं दैत्यसूदनः।
प्रग्रहः परमानन्दः क्रोधघ्नस्तारकोऽच्छिदः॥१३॥

कुक्कुटी बहुलो वादी कामदो भूरिवर्धनः।
अमोघोऽमृतदो ह्यग्निः शत्रुघ्नः सर्वबोधनः॥१४॥

अनघो ह्यमरः श्रीमानुन्नतो ह्यग्निसम्भवः।
पिशाचराजः सूर्याभः शिवात्मा त्वं सनातनः॥१५॥

एवं स सर्वभूतानां संस्तुतः परमेश्वरः।
नाम्नामष्टशतेनायं विश्वामित्रमहर्षिणा॥१६॥

प्रसन्नमूर्तिराहेदं मुनीन्द्र व्रियतामिति।
मम त्वया द्विजश्रेष्ठ स्तुतिरेषा विनिर्मिता॥ १७॥

भविष्यति मनोभीष्टप्राप्तये प्राणिनां भुवि।
विवर्धते कुले लक्ष्मीस्तस्य यः प्रपठेदिमम्॥ १८॥

न राक्षसाः पिशाचा वा न भूतानि न चाऽऽपदः।
विघ्नकारीणि तद्देहे यत्रैवं संस्तुवन्ति माम्॥ १९॥

दुःस्वप्नं न च पश्येत्स बद्धो मुच्येत बन्धनात्।
स्तवस्यास्य प्रभावेण दिव्यभावः पुमान्भवेत्॥ २०॥

॥ इति श्रीस्कन्दमहापुराणे माहेश्वरखण्डान्तर्गते कुमारिकाखण्डे श्रीकार्त्तिकेयाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ हरिहरपुत्राष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्॥

महाशास्ता महादेवो महादेवसुतोऽव्ययः।
लोककर्ता लोकभर्ता लोकहन्ता परात्परः॥ १॥

त्रिलोकरक्षको धन्वी तपस्वी भूतसैन्यकः।
मन्त्रवेत्ता महावेत्ता मारुतो जगदीश्वरः॥ २॥

लोकाध्यक्षोऽग्रणीः श्रीमान् अप्रमेयपराक्रमः।
सिंहारूढो गजारूढो हयारूढो महेश्वरः॥ ३॥

नानाशास्त्रधरोऽनर्घो नानाविद्याविशारदः।
नानारूपधरो वीरो नानाप्राणिनिषेवितः॥ ४॥

भूतेशः पूजितो भृत्यो भुजङ्गाभरणोत्तमः।
इक्षुधन्वी पुष्पबाणो महारूपो महाप्रभुः॥५॥

मायादेवीसुतो मान्यो महानीतो महागुणः।
महाशैवो महारुद्रो वैष्णवो विष्णुपूजकः॥६॥

विघ्नेशो वीरभद्रेशो भैरवो षण्मुखध्रुवः।
मेरुशृङ्गसमासीनो मुनिसङ्घनिषेवितः॥७॥

देवो भद्रो जगन्नाथो गणनाथो गणेश्वरः।
महायोगी महामायी महाज्ञानी महाधिपः॥८॥

देवशास्ता भूतशास्ता भीमहासपराक्रमः।
नागहारश्च नागेशो व्योमकेशः सनातनः॥९॥

कालज्ञो निर्गुणो नित्यो नित्यतृप्तो निराश्रयः।
लोकाश्रयो गुणाधीशश्चतुःषष्टिकलामयः॥१०॥

ऋग्यजुःसामरूपी च मल्लकासुरभञ्जनः।
त्रिमूर्तिर्दैत्यमथनो प्रकृतिः पुरुषोत्तमः॥११॥

सुगुणश्च महाज्ञानी कामदः कमलेक्षणः।
कल्पवृक्षो महावृक्षो विद्यावृक्षो विभूतिदः॥१२॥

संसारतापविच्छेत्ता पशुलोकभयङ्करः।
रोगहन्ता प्राणदाता परगर्वविभञ्जनः॥१३॥

सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो नीतिमान् पापभञ्जनः।
पुष्कलापूर्णसंयुक्तो परमात्मा सतां गतिः॥१४॥

अनन्तादित्यसङ्काशः सुब्रह्मण्यानुजो बली।
भक्तानुकम्पी देवेशो भगवान् भक्तवत्सलः॥१५॥

॥इति श्री-हरिहरपुत्राष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥आदित्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्॥

नवग्रहाणां सर्वेषां सूर्यादीनां पृथक् पृथक्।
पीडा च दुःसहा राजन् जायते सततं नृणाम्॥१॥

पीडानाशाय राजेन्द्र नामानि शृणु भास्वतः।
सूर्यादीनां च सर्वेषां पीडा नश्यति शृण्वतः॥२॥

आदित्यः सविता सूर्यः पूषाऽर्कः शीघ्रगो रविः।
भगस्त्वष्टाऽर्यमा हंसो हेलिस्तेजोनिधिर्हरिः॥३॥

दिननाथो दिनकरः सप्तसप्तिः प्रभाकरः।
विभावसुर्वेदकर्ता वेदाङ्गो वेदवाहनः॥४॥

हरिदश्वः कालवक्त्रः कर्मसाक्षी जगत्पतिः।
पद्मिनीबोधको भानुर्भास्करः करुणाकरः॥५॥

द्वादशात्मा विश्वकर्मा लोहिताङ्गस्तमोनुदः।
जगन्नाथोऽरविन्दाक्षः कालात्मा कश्यपात्मजः॥६॥

भूताश्रयो ग्रहपतिः सर्वलोकनमस्कृतः।
जपाकुसुमसङ्काशो भास्वानदितिनन्दनः॥७॥

ध्वान्तेभसिंहः सर्वात्मा लोकनेत्रो विकर्तनः।
मार्तण्डो मिहिरः सूरस्तपनो लोकतापनः॥८॥

जगत्कर्ता जगत्साक्षी शनैश्चरपिता जयः।
सहस्ररश्मिस्तरणिर्भगवान् भक्तवत्सलः॥९॥

विवस्वानादिदेवश्च देवदेवो दिवाकरः।
धन्वन्तरिर्व्याधिहर्ता दद्रुकुष्ठविनाशनः॥१०॥

चराचरात्मा मैत्रेयोऽमितो विष्णुर्विकर्तनः।
लोकशोकापहर्ता च कमलाकर आत्मभूः॥११॥

नारायणो महादेवो रुद्रः पुरुष ईश्वरः।
जीवात्मा परमात्मा च सूक्ष्मात्मा सर्वतोमुखः॥१२॥

इन्द्रोऽनलो यमश्चैव नैर्ऋतो वरुणोऽनिलः।
श्रीद ईशान इन्दुश्च भौमः सौम्यो गुरुः कविः॥१३॥

सौरिर्विधुन्तुदः केतुः कालः कालात्मको विभुः।
सर्वदेवमयो देवः कृष्णः कामप्रदायकः॥१४॥

य एतैर्नामभिर्मर्त्यो भक्त्या स्तौति दिवाकरम्।
सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वरोगविवर्जितः॥१५॥

पुत्रवान् धनवाञ्छ्रीमान् जायते स न संशयः।
रविवारे पठेद्यस्तु नामान्येतानि भास्वतः॥१६॥

पीडाशान्तिर्भवेत्तस्य ग्रहाणां च विशेषतः।
सद्यः सुखमवाप्नोति चाऽऽयुर्दीर्घं च नीरुजम्॥१७॥

॥इति श्री-भविष्यपुराणे आदित्य अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ सूर्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

धौम्य उवाच

सूर्योऽर्यमा भगस्त्वष्टा पूषाऽर्कः सविता रविः।
गभस्तिमानजः कालो मृत्युर्धाता प्रभाकरः॥ १ ॥

पृथिव्यापश्च तेजश्च खं वायुश्च परायणम्।
सोमो बृहस्पतिः शुक्रो बुधोऽङ्गारक एव च॥ २॥

इन्द्रो विवस्वान् दीप्तांशुः शुचिः शौरिः शनैश्चरः।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणो यमः॥ ३॥

वैद्युतो जाठरश्चाग्निरैन्धनस्तेजसां पतिः।
धर्मध्वजो वेदकर्ता वेदाङ्गो वेदवाहनः॥ ४॥

कृतं त्रेता द्वापरश्च कलिः सर्वमलाश्रयः।
कलाकाष्ठामुहूर्तश्च क्षपा यामस्तथा क्षणः॥ ५॥

संवत्सरकरोऽश्वत्थः कालचक्रो विभावसुः।
पुरुषः शाश्वतो योगी व्यक्ताव्यक्तः सनातनः॥ ६ ॥

कालाध्यक्षः प्रजाध्यक्षो विश्वकर्मा तमोनुदः।
वरुणः सागरोंऽशुश्च जीमूतो जीवनोऽरिहा॥ ७॥

भूताश्रयो भूतपतिः सर्वलोकनमस्कृतः।
स्रष्टा संवर्तको वह्निः सर्वस्यादिरलोलुपः॥ ८॥

अनन्तः कपिलो भानुः कामदः सर्वतोमुखः।
जयो विशालो वरदः सर्वभूतनिषेवितः॥ ९॥

मनः सुपर्णो भूतादिः शीघ्रगः प्राणधारकः।
धन्वतरिर्धूमकेतुरादिदेवोऽदितेः सुतः॥ १०॥

द्वादशात्माऽरविन्दाक्षः पिता माता पितामहः।
स्वर्गद्वारं प्रजाद्वारं मोक्षद्वारं त्रिविष्टपम्॥ ११॥

देहकर्ता प्रशान्तात्मा विश्वात्मा विश्वतोमुखः।
चराचरात्मा सूक्ष्मात्मा मैत्रेयः करुणान्वितः॥ १२॥

एतद्वै कीर्तनीयस्य सूर्यस्यामिततेजसः।
नामाष्टशतकं चेदं प्रोक्तमेतत् स्वयम्भुवा॥ १३॥

सुरगणपितृयक्षसेवितं ह्यसुरनिशाचरसिद्धवन्दितम्।
वरकनकहुताशनप्रभं प्रणिपतितोऽस्मि हिताय भास्करम्॥ १४॥

सूर्योदये यः सुसमाहितः पठेत्
स पुत्रदारान् धनरत्नसञ्चयान्।
लभेत जातिस्मरतां नरः सदा
धृतिं च मेधां च स विन्दते पुमान्॥ १५॥

इमं स्तवं देववरस्य यो नरः
प्रकीर्तयेच्छुद्धमनाः समाहितः।
विमुच्यते शोकदवाग्निसागरात्
लभेत कामान् मनसा यथेप्सितान्॥ १६॥

॥ इति श्रीमन्महाभारते वनपर्वणि धौम्ययुधिष्ठिरसंवादे
श्री-सूर्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ गङ्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्राम्
करधृतकलशोद्यत्सोत्पलामत्यभीष्टाम्।
विधिहरिहररूपां सेन्दुकोटीरचूडाम्
कलितसितदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि॥

॥ स्तोत्रम् ॥

श्री-नारद उवाच

गङ्गा नाम परं पुण्यं कथितं परमेश्वर।
नामानि कति शस्तानि गङ्गायाः प्रणिशंस मे॥ १ ॥

श्री-महादेव उवाच

नाम्नां सहस्रमध्ये तु नामाष्टशतमुत्तमम्।
जाह्नव्या मुनिशार्दूल तानि मे शृणु तत्त्वतः॥ २॥

गङ्गा त्रिपथगा देवी शम्भुमौलिविहारिणी।
जाह्नवी पापहन्त्री च महापातकनाशिनी॥ ३॥

पतितोद्धारिणी स्रोतस्वती परमवेगिनी।
विष्णुपादाब्जसम्भूता विष्णुदेहकृतालया॥ ४॥

स्वर्गाब्धिनिलया साध्वी स्वर्णदी सुरनिम्नगा।
मन्दाकिनी महावेगा स्वर्णशृङ्गप्रभेदिनी॥ ५॥

देवपूज्यतमा दिव्या दिव्यस्थान निवासिनी।
सुचारुनीररुचिरा महापर्वतभेदिनी॥ ६॥

भागीरथी भगवती महामोक्षप्रदायिनी।
सिन्धुसङ्गगता शुद्धा रसातलनिवासिनी॥ ७॥

महाभोगा भोगवती सुभगानन्ददायिनी।
महापापहरा पुण्या परमाह्लाददायिनी॥ ८॥

पार्वती शिवपत्नी च शिवशीर्षगतालया।
शम्भोर्जटामध्यगता निर्मला निर्मलानना॥ ९॥

महाकलुषहन्त्री च जह्नुपुत्री जगत्प्रिया।
त्रैलोक्यपावनी पूर्णा पूर्णब्रह्मस्वरूपिणी॥ १०॥

जगत्पूज्यतमा चारुरूपिणी जगदम्बिका।
लोकानुग्रहकर्त्री च सर्वलोकदयापरा॥ ११॥

याम्यभीतिहरा तारा पारा संसारतारिणी।
ब्रह्माण्डभेदिनी ब्रह्मकमण्डलुकृतालया॥ १२॥

सौभाग्यदायिनी पुंसां निर्वाणपददायिनी।
अचिन्त्यचरिता चारुरुचिरातिमनोहरा॥ १३॥

मर्त्यस्था मृत्युभयहा स्वर्गमोक्षप्रदायिनी।
पापापहारिणी दूरचारिणी वीचिधारिणी॥ १४॥

कारुण्यपूर्णा करुणामयी दुरितनाशिनी।
गिरिराजसुता गौरीभगिनी गिरिशप्रिया॥ १५॥

मेनकागर्भसम्भूता मैनाकभगिनीप्रिया।
आद्या त्रिलोकजननी त्रैलोक्यपरिपालिनी॥ १६॥

तीर्थश्रेष्ठतमा श्रेष्ठा सर्वतीर्थमयी शुभा।
चतुर्वेदमयी सर्वा पितृसन्तृप्तिदायिनी॥ १७॥

शिवदा शिवसायुज्यदायिनी शिववल्लभा।
तेजस्विनी त्रिनयना त्रिलोचनमनोरमा॥ १८॥

सप्तधारा शतमुखी सगरान्वयतारिणी।
मुनिसेव्या मुनिसुता जह्नुजानुप्रभेदिनी॥ १९॥

मकरस्था सर्वगता सर्वाशुभनिवारिणी।
सुदृश्या चाक्षुषीतृप्तिदायिनी मकरालया॥ २०॥

सदानन्दमयी नित्यानन्ददा नगपूजिता।
सर्वदेवाधिदेवैश्च परिपूज्यपदाम्बुजा॥ २१॥

एतानि मुनिशार्दूल नामानि कथितानि ते।
शस्तानि जाह्नवीदेव्याः सर्वपापहराणि च॥ २२॥

य इदं पठते भक्त्या प्रातरुत्थाय नारद।
गङ्गायाः परमं पुण्यं नामाष्टशतमेव हि॥ २३॥

तस्य पापानि नश्यन्ति ब्रह्महत्यादिकान्यपि।
आरोग्यमतुलं सौख्यं लभते नात्र संशयः॥ २४॥

यत्र कुत्रापि संस्नायात्पठेत्स्तोत्रमनुत्तमम्।
तत्रैव गङ्गास्नानस्य फलं प्राप्नोति निश्चितम्॥ २५॥

प्रत्यहं प्रपठेदेतद् गङ्गानामशताष्टकम्।
सोऽन्ते गङ्गामनुप्राप्य प्रयाति परमं पदम्॥२६॥

गङ्गायां स्नानसमये यः पठेद्भक्तिसंयुतः।
सोऽश्वमेधसहस्राणां फलमाप्नोति मानवः॥२७॥

गवामयुतदानस्य यत्फलं समुदीरितम्।
तत्फलं समवाप्नोति पञ्चम्यां प्रपठन्नरः॥२८॥

कार्त्तिक्यां पौर्णमास्यां तु स्नात्वा सगरसङ्गमे।
यः पठेत्स महेशत्वं याति सत्यं न संशयः॥२९॥

॥इति श्रीमद्भागवते महापुराणे श्रीगङ्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

❀❀❀

विभागः ३

दीर्घ एवं सहस्त्रनामस्तोत्राणि

॥ विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥ १ ॥

यस्य द्विरदवक्त्राद्याः पारिषद्याः परः शतम्।
विघ्नं निघ्नन्ति सततं विष्वक्सेनं तमाश्रये॥ २ ॥

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥ ३ ॥

व्यासं वसिष्ठनप्तारं शक्तेः पौत्रमकल्मषम्।
पराशरात्मजं वन्दे शुकतातं तपोनिधिम्॥ ४ ॥

व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे।
नमो वै ब्रह्मनिधये वासिष्ठाय नमो नमः॥ ५ ॥

अविकाराय शुद्धाय नित्याय परमात्मने।
सदैकरूपरूपाय विष्णवे सर्वजिष्णवे॥ ६ ॥

यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात्।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे॥ ७ ॥

ॐ नमो विष्णवे प्रभविष्णवे

श्री-वैशम्पायन उवाच

श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः।
युधिष्ठिरः शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत॥ ८ ॥

श्री-युधिष्ठिर उवाच

किमेकं दैवतं लोके किं वाऽप्येकं परायणम्।
स्तुवन्तः कं कमर्चन्तः प्राप्नुयुर्मानवाः शुभम्॥ ९॥

को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः।
किं जपन् मुच्यते जन्तुर्जन्मसंसारबन्धनात्॥ १०॥

श्री-भीष्म उवाच

जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम्।
स्तुवन् नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः॥ ११॥

तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम्।
ध्यायन् स्तुवन् नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च॥ १२॥

अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकमहेश्वरम्।
लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदुःखातिगो भवेत्॥ १३॥

ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिवर्धनम्।
लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम्॥ १४॥

एष मे सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मतः।
यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरः सदा॥ १५॥

परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः।
परमं यो महद्ब्रह्म परमं यः परायणम्॥ १६॥

पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम्।
दैवतं दैवतानां च भूतानां योऽव्ययः पिता॥ १७॥

यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे।
यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये॥ १८॥

तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते।
विष्णोर्नामसहस्रं मे शृणु पापभयापहम्॥ १९॥

यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः।
ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये॥ २०॥

ऋषिर्नाम्नां सहस्रस्य वेदव्यासो महामुनिः।
छन्दोऽनुष्टुप् तथा देवो भगवान् देवकीसुतः॥ २१॥

अमृतांशूद्भवो बीजं शक्तिर्देवकिनन्दनः।
त्रिसामा हृदयं तस्य शान्त्यर्थे विनियुज्यते॥ २२॥

विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्।
अनेकरूपदैत्यान्तं नमामि पुरुषोत्तमम्॥ २३॥

॥ पूर्वन्यासः ॥

अस्य श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रमहामन्त्रस्य।
श्री-वेदव्यासो भगवान् ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः।
श्रीमहाविष्णुः परमात्मा श्रीमन्नारायणो देवता।
अमृतांशूद्भवो भानुरिति बीजम्। देवकीनन्दनः स्रष्टेति शक्तिः।
उद्भवः क्षोभणो देव इति परमो मन्त्रः।
शङ्खभृन्नन्दकी चक्रीति कीलकम्।
शार्ङ्गधन्वा गदाधर इत्यस्त्रम्।
रथाङ्गपाणिरक्षोभ्य इति नेत्रम्।

त्रिसामा सामगः सामेति कवचम्।
आनन्दं परब्रह्मेति योनिः।
ऋतुः सुदर्शनः काल इति दिग्बन्धः।
श्रीविश्वरूप इति ध्यानम्।
श्रीमहाविष्णुप्रीत्यर्थे सहस्रनामजपे विनियोगः॥

॥ध्यानम्॥

क्षीरोदन्वत्प्रदेशे शुचिमणिविलसत्सैकतेमौक्तिकानाम्
मालाक्लृप्तासनस्थः स्फटिकमणिनिभैर्मौक्तिकैर्मण्डिताङ्गः।
शुभ्रैरभ्रैरदभ्रैरुपरिविरचितैर्मुक्तपीयूषवर्षैः
आनन्दी नः पुनीयादरिनलिनगदाशङ्खपाणिर्मुकुन्दः॥१॥

भूः पादौ यस्य नाभिर्वियदसुरनिलश्चन्द्रसूर्यौ च नेत्रे
कर्णावाशाः शिरो द्यौर्मुखमपि दहनो यस्य वास्तेयमब्धिः।
अन्तःस्थं यस्य विश्वं सुरनरखगगोभोगिगन्धर्वदैत्यैः
चित्रं रंरम्यते तं त्रिभुवनवपुषं विष्णुमीशं नमामि॥२॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिहृद्ध्यानगम्यम्
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥३॥

मेघश्यामं पीतकौशेयवासम्
श्रीवत्साङ्कं कौस्तुभोद्भासिताङ्गम्।
पुण्योपेतं पुण्डरीकायताक्षम्
विष्णुं वन्दे सर्वलोकैकनाथम्॥४॥

नमः समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते।
अनेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे॥५॥

सशङ्खचक्रं सकिरीटकुण्डलम्
सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्।
सहारवक्षःस्थलशोभिकौस्तुभम्
नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्॥ ६॥

छायायां पारिजातस्य हेमसिंहासनोपरि
आसीनमम्बुदश्याममायताक्षमलङ्कृतम् ।
चन्द्राननं चतुर्बाहुं श्रीवत्साङ्कितवक्षसम्
रुक्मिणीसत्यभामाभ्यां सहितं कृष्णमाश्रये॥ ७॥

॥ हरिः ॐ॥

॥ विश्वस्मै नमः॥

विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः।
भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः॥ १॥

पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा गतिः।
अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च॥ २॥

योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः।
नारसिंहवपुः श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः॥ ३॥

सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः।
सम्भवो भावनो भर्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः॥ ४॥

स्वयम्भूः शम्भुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः।
अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः॥५॥

अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः।
विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः॥६॥

अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः।
प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मङ्गलं परम्॥७॥

ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः।
हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः॥८॥

ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः।
अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान्॥९॥

सुरेशः शरणं शर्म विश्वरेता प्रजाभवः।
अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः॥१०॥

अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः।
वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिःसृतः॥११॥

वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्माऽसम्मितः समः।
अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः॥१२॥

रुद्रो बहुशिरा बभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः।
अमृतः शाश्वतः स्थाणुर्वरारोहो महातपाः॥१३॥

सर्वगः सर्वविद्भानुर्विष्वक्सेनो जनार्दनः।
वेदो वेदविदव्यङ्गो वेदाङ्गो वेदवित् कविः॥१४॥

लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः।
चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः॥ १५॥

भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः।
अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः॥ १६॥

उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूर्जितः।
अतीन्द्रः सङ्ग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो यमः॥ १७॥

वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः।
अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः॥ १८॥

महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः।
अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक्॥ १९॥

महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतां गतिः।
अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदां पतिः॥ २०॥

मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः।
हिरण्यनाभः सुतपा पद्मनाभः प्रजापतिः॥ २१॥

अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः सन्धाता सन्धिमान् स्थिरः।
अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा॥ २२॥

गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः।
निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः॥ २३॥

अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान् न्यायो नेता समीरणः।
सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात्॥ २४॥

आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः सम्प्रमर्दनः।
अहः संवर्तको वह्निरनिलो धरणीधरः॥२५॥

सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः।
सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः॥२६॥

असङ्ख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः।
सिद्धार्थः सिद्धसङ्कल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः॥२७॥

वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः।
वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः॥२८॥

सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः।
नैकरूपो बृहद्रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः॥२९॥

ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः।
ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः॥३०॥

अमृतांशूद्भवो भानुः शशबिन्दुः सुरेश्वरः।
औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः॥३१॥

भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः।
कामहा कामकृत्कान्तः कामः कामप्रदः प्रभुः॥३२॥

युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो महाशनः।
अदृश्यो व्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित्॥३३॥

इष्टोऽविशिष्टः शिष्टेष्टः शिखण्डी नहुषो वृषः।
क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः॥३४॥

अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः।
अपान्निधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः॥ ३५॥

स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः।
वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरन्दरः॥ ३६॥

अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः।
अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः॥ ३७॥

पद्मनाभोऽरविन्दाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत्।
महर्द्धिर्ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः॥ ३८॥

अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः।
सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान् समितिञ्जयः॥ ३९॥

विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः।
महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः॥ ४०॥

उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः।
करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः॥ ४१॥

व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः।
परर्द्धिः परमस्पष्टस्तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः॥ ४२॥

रामो विरामो विरतो मार्गो नेयो नयोऽनयः।
वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमः॥ ४३॥

वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः।
हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः॥ ४४॥

ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः।
उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः॥४५॥

विस्तारः स्थावरः स्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम्।
अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः॥४६॥

अनिर्विण्णः स्थविष्ठोऽभूर्धर्मयूपो महामखः।
नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः॥४७॥

यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः।
सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम्॥४८॥

सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत्।
मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः॥४९॥

स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत्।
वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः॥५०॥

धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मी सदसत्क्षरमक्षरम्।
अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः॥५१॥

गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः।
आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गुरुः॥५२॥

उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः।
शरीरभूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः॥५३॥

सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित् पुरुसत्तमः।
विनयो जयः सत्यसन्धो दाशार्हः सात्त्वतां पतिः॥५४॥

जीवो विनयितासाक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रमः।
अम्भोनिधिरनन्तात्मा महोदधिशयोऽन्तकः॥५५॥

अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः।
आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः॥५६॥

महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः।
त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृङ्गः कृतान्तकृत्॥५७॥

महावराहो गोविन्दः सुषेणः कनकाङ्गदी।
गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः॥५८॥

वेधाः स्वाङ्गोऽजितः कृष्णो दृढः सङ्कर्षणोऽच्युतः।
वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः॥५९॥

भगवान् भगहाऽऽनन्दी वनमाली हलायुधः।
आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः॥६०॥

सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः।
दिवःस्पृक् सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः॥६१॥

त्रिसामा सामगः साम निर्वाणं भेषजं भिषक्।
सन्न्यासकृच्छमः शान्तो निष्ठा शान्तिः परायणम्॥६२॥

शुभाङ्गः शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः।
गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः॥६३॥

अनिवर्ती निवृत्तात्मा सङ्क्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः।
श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतां वरः॥६४॥

श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः।
श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः॥ ६५॥

स्वक्षः स्वङ्गः शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः।
विजितात्माऽविधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः॥ ६६॥

उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतः स्थिरः।
भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः॥ ६७॥

अर्चिष्मानर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः।
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः॥ ६८॥

कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः।
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः॥ ६९॥

कामदेवः कामपालः कामी कान्तः कृतागमः।
अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनञ्जयः॥ ७०॥

ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्-ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः।
ब्रह्मविद्-ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः॥ ७१॥

महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः।
महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः॥ ७२॥

स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः।
पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः॥ ७३॥

मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः।
वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः॥ ७४॥

सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः॥ ७५॥

भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः।
दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोऽथापराजितः॥ ७६॥

विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान् ।
अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः॥ ७७॥

एको नैकः सवः कः किं यत् तत्पदमनुत्तमम्।
लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः॥ ७८॥

सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी।
वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः॥ ७९॥

अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक्।
सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः॥ ८०॥

तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां वरः।
प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकशृङ्गो गदाग्रजः॥ ८१॥

चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः ।
चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात्॥ ८२॥

समावर्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः।
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा॥ ८३॥

शुभाङ्गो लोकसारङ्गः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः।
इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः॥ ८४॥

उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः।
अर्को वाजसनः शृङ्गी जयन्तः सर्वविज्जयी॥ ८५॥

सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः।
महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः॥ ८६॥

कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः।
अमृताशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः॥ ८७॥

सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः।
न्यग्रोधोऽदुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः॥ ८८॥

सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः।
अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः॥ ८९॥

अणुर्बृहत् कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान्।
अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्धनः॥ ९०॥

भारभृत् कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः।
आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः॥ ९१॥

धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डो दमयिता दमः।
अपराजितः सर्वसहो नियन्ताऽनियमोऽयमः॥ ९२॥

सत्त्ववान् सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः।
अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः प्रियकृत् प्रीतिवर्धनः॥ ९३॥

विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः।
रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः॥ ९४॥

अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः।
अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः॥९५॥

सनात् सनातनतमः कपिलः कपिरव्ययः।
स्वस्तिदः स्वस्तिकृत् स्वस्ति स्वस्तिभुक् स्वस्तिदक्षिणः॥९६॥

अरौद्रः कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः।
शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः॥९७॥

अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणां वरः।
विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः॥९८॥

उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः।
वीरहा रक्षणः सन्तो जीवनः पर्यवस्थितः॥९९॥

अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः।
चतुरश्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः॥१००॥

अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः।
जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः॥१०१॥

आधारनिलयोऽधाता पुष्पहासः प्रजागरः।
ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः॥१०२॥

प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत् प्राणजीवनः।
तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः॥१०३॥

भूर्भुवःस्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः।
यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञाङ्गो यज्ञवाहनः॥१०४॥

यज्ञभृद्-यज्ञकृद्-यज्ञी यज्ञभुग्-यज्ञसाधनः।
यज्ञान्तकृद्-यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च॥ १०५॥

आत्मयोनिः स्वयञ्जातो वैखानः सामगायनः।
देवकीनन्दनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः॥ १०६॥

शङ्खभृन्नन्दकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः।
रथाङ्गपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः॥ १०७॥

सर्वप्रहरणायुध ॐ नम इति।

वनमाली गदी शार्ङ्गी शङ्खी चक्री च नन्दकी।
श्रीमान् नारायणो विष्णुर्वासुदेवोऽभिरक्षतु॥ १०८॥

श्री-वासुदेवोऽभिरक्षतु ॐ नम इति।

॥ फलश्रुति श्लोकाः ॥

इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मनः।
नाम्नां सहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तितम्॥ १॥

य इदं शृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत्।
नाशुभं प्राप्नुयात् किञ्चित् सोऽमुत्रेह च मानवः॥ २॥

वेदान्तगो ब्राह्मणः स्यात् क्षत्रियो विजयी भवेत्।
वैश्यो धनसमृद्धः स्याच्छूद्रः सुखमवाप्नुयात्॥ ३॥

धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थी चार्थमाप्नुयात्।
कामानवाप्नुयात् कामी प्रजार्थी चाऽऽप्नुयात्प्रजाम्॥ ४॥

भक्तिमान् यः सदोत्थाय शुचिस्तद्गतमानसः।
सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतत् प्रकीर्तयेत्॥५॥

यशः प्राप्नोति विपुलं याति प्राधान्यमेव च।
अचलां श्रियमाप्नोति श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तमम्॥ ६ ॥

न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विन्दति।
भवत्यरोगो द्युतिमान् बलरूपगुणान्वितः॥७॥

रोगार्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात्।
भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येताऽऽपन्न आपदः॥८॥

दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमम्।
स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः॥९॥

वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः।
सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम्॥ १० ॥

न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित्।
जन्ममृत्युजराव्याधिभयं नैवोपजायते॥ ११ ॥

इमं स्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः।
युज्येताऽऽत्मसुखक्षान्तिश्रीधृतिस्मृतिकीर्तिभिः॥ १२ ॥

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे॥ १३ ॥

द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्रा खं दिशो भूर्महोदधिः।
वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानि महात्मनः॥ १४॥

ससुरासुरगन्धर्वं सयक्षोरगराक्षसम्।
जगद्वशे वर्ततेदं कृष्णस्य सचराचरम्॥ १५॥

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः सत्त्वं तेजो बलं धृतिः।
वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ एव च॥ १६॥

सर्वागमानामाचारः प्रथमं परिकल्पते।
आचारप्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः॥ १७॥

ऋषयः पितरो देवा महाभूतानि धातवः।
जङ्गमाजङ्गमं चेदं जगन्नारायणोद्भवम्॥ १८॥

योगो ज्ञानं तथा साङ्ख्यं विद्याः शिल्पादि कर्म च।
वेदाः शास्त्राणि विज्ञानमेतत्सर्वं जनार्दनात्॥ १९॥

एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः।
त्रीँल्लोकान् व्याप्य भूतात्मा भुङ्क्ते विश्वभुगव्ययः॥ २०॥

इमं स्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम्।
पठेद्य इच्छेत् पुरुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखानि च॥ २१॥

विश्वेश्वरमजं देवं जगतः प्रभुमव्ययम्।
भजन्ति ये पुष्कराक्षं न ते यान्ति पराभवम्॥ २२॥

न ते यान्ति पराभवम् ॐ नम इति।

अर्जुन उवाच

पद्मपत्रविशालाक्ष पद्मनाभ सुरोत्तम।
भक्तानामनुरक्तानां त्राता भव जनार्दन॥ २३॥

श्रीभगवानुवाच

योमां नामसहस्रेण स्तोतुमिच्छति पाण्डव।
सोऽहमेकेन श्लोकेन स्तुत एव न संशयः॥ २४॥

स्तुत एव न संशय ॐ नम इति।

व्यास उवाच

वासनाद्वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम्।
सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तु ते॥ २५॥

श्री-वासुदेव नमोऽस्तुत ॐ नम इति।

पार्वत्युवाच

केनोपायेन लघुना विष्णोर्नामसहस्रकम्।
पठ्यते पण्डितैर्नित्यं श्रोतुमिच्छाम्यहं प्रभो॥ २६॥

श्री-ईश्वर उवाच

श्रीराम राम रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने॥ २७॥

श्रीरामनाम वरानन ॐ नम इति।

ब्रह्मोवाच

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नमः॥ २८॥

सहस्रकोटियुगधारिणे नम ॐ नम इति।

सञ्जय उवाच

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥ २९॥

श्रीभगवानुवाच

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥ ३०॥

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥ ३१॥

आर्ता विषण्णाः शिथिलाश्च भीताः
घोरेषु च व्याधिषु वर्तमानाः।
सङ्कीर्त्य नारायणशब्दमात्रम्
विमुक्तदुःखाः सुखिनो भवन्ति॥ ३२॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

॥ ॐ तत्सदिति श्रीमन्महाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्याम् आनुशासनिकपर्वणि श्री-भीष्मयुधिष्ठिरसंवादे श्री-विष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ सङ्क्षेपरामायणम् ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमे।
यं नत्वा कृतकृत्याः स्युस्तं नमामि गजाननम्॥

॥ श्री-गुरु-प्रार्थना ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

सदाशिवसमारम्भां शङ्कराचार्यमध्यमाम्।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्॥

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

॥ श्री-सरस्वती-प्रार्थना ॥

दोर्भिर्युक्ता चतुर्भिः स्फटिकमणिनिभैरक्षमालां दधाना
हस्तेनैकेन पद्मं सितमपि च शुकं पुस्तकं चापरेण।
भासा कुन्देन्दुशङ्खस्फटिकमणिनिभा भासमानाऽसमाना
सा मे वाग्देवतेयं निवसतु वदने सर्वदा सुप्रसन्ना॥

॥ श्री-वाल्मीकि-नमस्क्रिया ॥

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्॥ १ ॥

वाल्मीकेर्मुनिसिंहस्य कवितावनचारिणः।
श्रृण्वन् रामकथानादं को न याति परां गतिम्॥ २॥

यः पिबन् सततं रामचरितामृतसागरम्।
अतृप्तस्तं मुनिं वन्दे प्राचेतसमकल्मषम्॥ ३॥

॥ श्री-हनुमन्नमस्क्रिया ॥

गोष्पदीकृत-वाराशिं मशकीकृत-राक्षसम्।
रामायण-महामाला-रत्नं वन्देऽनिलात्मजम्॥ १॥

अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम्।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम्॥ २॥

उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम्॥ ३॥

आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रि-कमनीय-विग्रहम्।
पारिजात-तरुमूल-वासिनं भावयामि पवमान-नन्दनम्॥ ४॥

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम्।
बाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम्॥ ५॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि॥ ६॥

॥ श्री-रामायण-प्रार्थना ॥

यः कर्णाञ्जलिसम्पुटैरहरहः सम्यक् पिबत्यादरात्
वाल्मीकेर्वदनारविन्दगलितं रामायणाख्यं मधु।
जन्म-व्याधि-जरा-विपत्ति-मरणैरत्यन्त-सोपद्रवम्
संसारं स विहाय गच्छति पुमान् विष्णोः पदं शाश्वतम्॥ १ ॥

तदुपगत-समास-सन्धियोगं सममधुरोपनतार्थ-वाक्यबद्धम्।
रघुवरचरितं मुनिप्रणीतं दशशिरसश्च वधं निशामयध्वम्॥ २ ॥

वाल्मीकि-गिरिसम्भूता रामसागरगामिनी।
पुनातु भुवनं पुण्या रामायणमहानदी॥ ३ ॥

श्लोकसारजलाकीर्णं सर्गकल्लोलसङ्कुलम्।
काण्डग्राहमहामीनं वन्दे रामायणार्णवम्॥ ४ ॥

वेदवेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे।
वेदः प्राचेतसादासीत् साक्षाद्रामायणात्मना॥ ५ ॥

॥ श्री-राम-ध्यानम् ॥

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे
मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम्।
अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परम्
व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम्॥ १ ॥

वामे भूमिसुता पुरश्च हनुमान् पश्चात् सुमित्रासुतः
शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्वदलयोर्वाय्वादिकोणेषु च।
सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारासुतो जाम्बवान्
मध्ये नीलसरोजकोमलरुचिं रामं भजे श्यामलम्॥ २ ॥

रामं रामानुजं सीतां भरतं भरतानुजम्।
सुग्रीवं वायुसूनुं च प्रणमामि पुनः पुनः॥ ३ ॥

नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै।
नमोऽस्तु रुद्रेन्द्रयमानिलेभ्यो नमोऽस्तु चन्द्रार्कमरुद्गणेभ्यः॥ ४ ॥

ॐ श्री-गुरुभ्यो नमः।

॥ श्रीमद्रामायणम् ॥

॥ बालकाण्डः ॥

॥ अथ प्रथमोऽध्यायः ॥

तपः स्वाध्यायनिरतं तपस्वी वाग्विदां वरम्।
नारदं परिपप्रच्छ वाल्मीकिर्मुनिपुङ्गवम्॥ १ ॥

को न्वस्मिन् साम्प्रतं लोके गुणवान् कश्च वीर्यवान्।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः॥ २ ॥

चारित्रेण च को युक्तः सर्वभूतेषु को हितः।
विद्वान् कः कः समर्थश्च कश्चैकप्रियदर्शनः॥ ३ ॥

आत्मवान् को जितक्रोधो मतिमान् कोऽनसूयकः।
कस्य बिभ्यति देवाश्च जातरोषस्य संयुगे॥ ४ ॥

एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं परं कौतूहलं हि मे।
महर्षे त्वं समर्थोऽसि ज्ञातुमेवंविधं नरम्॥ ५ ॥

श्रुत्वा चैतत्त्रिलोकज्ञो वाल्मीकेर्नारदो वचः।
श्रूयतामिति चाऽऽमन्त्र्य प्रहृष्टो वाक्यमब्रवीत्॥ ६ ॥

बहवो दुर्लभाश्चैव ये त्वया कीर्तिता गुणाः।
मुने वक्ष्याम्यहं बुद्ध्वा तैर्युक्तः श्रूयतां नरः॥ ७ ॥

इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः।
नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान् धृतिमान् वशी॥ ८ ॥

बुद्धिमान् नीतिमान् वाग्मी श्रीमाञ्छत्रुनिबर्हणः।
विपुलांसो महाबाहुः कम्बुग्रीवो महाहनुः॥ ९॥

महोरस्को महेष्वासो गूढजत्रुररिन्दमः।
आजानुबाहुः सुशिराः सुललाटः सुविक्रमः॥ १०॥

समः समविभक्ताङ्गः स्निग्धवर्णः प्रतापवान्।
पीनवक्षा विशालाक्षो लक्ष्मीवाञ्छुभलक्षणः॥ ११॥

धर्मज्ञः सत्यसन्धश्च प्रजानां च हिते रतः।
यशस्वी ज्ञानसम्पन्नः शुचिर्वश्यः समाधिमान्॥ १२॥

प्रजापतिसमः श्रीमान् धाता रिपुनिषूदनः।
रक्षिता जीवलोकस्य धर्मस्य परिरक्षिता॥ १३॥

रक्षिता स्वस्य धर्मस्य स्वजनस्य च रक्षिता।
वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञो धनुर्वेदे च निष्ठितः॥ १४॥

सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो स्मृतिमान् प्रतिभानवान्।
सर्वलोकप्रियः साधुरदीनात्मा विचक्षणः॥ १५॥

सर्वदाऽभिगतः सद्भिः समुद्र इव सिन्धुभिः।
आर्यः सर्वसमश्चैव सदैव प्रियदर्शनः॥ १६॥

स च सर्वगुणोपेतः कौसल्यानन्दवर्धनः।
समुद्र इव गाम्भीर्ये धैर्येण हिमवानिव॥ १७॥

विष्णुना सदृशो वीर्ये सोमवत् प्रियदर्शनः।
कालाग्निसदृशः क्रोधे क्षमया पृथिवीसमः॥ १८॥

धनदेन समस्त्यागे सत्ये धर्म इवापरः।
तमेवङ्गुणसम्पन्नं रामं सत्यपराक्रमम्॥१९॥

ज्येष्ठं श्रेष्ठगुणैर्युक्तं प्रियं दशरथः सुतम्।
प्रकृतीनां हितैर्युक्तं प्रकृतिप्रियकाम्यया॥२०॥

यौवराज्येन संयोक्तुम् ऐच्छत् प्रीत्या महीपतिः।
तस्याभिषेकसम्भारान् दृष्ट्वा भार्याऽथ कैकयी॥२१॥

पूर्वं दत्तवरा देवी वरमेनमयाचत।
विवासनं च रामस्य भरतस्याभिषेचनम्॥२२॥

स सत्यवचनाद्राजा धर्मपाशेन संयतः।
विवासयामास सुतं रामं दशरथः प्रियम्॥२३॥

स जगाम वनं वीरः प्रतिज्ञामनुपालयन्।
पितुर्वचननिर्देशात् कैकेय्याः प्रियकारणात्॥२४॥

तं व्रजन्तं प्रियो भ्राता लक्ष्मणोऽनुजगाम ह।
स्नेहाद्विनयसम्पन्नः सुमित्रानन्दवर्धनः॥२५॥

भ्रातरं दयितो भ्रातुः सौभ्रात्रमनुदर्शयन्।
रामस्य दयिता भार्या नित्यं प्राणसमा हिता॥२६॥

जनकस्य कुले जाता देवमायेव निर्मिता।
सर्वलक्षणसम्पन्ना नारीणामुत्तमा वधूः॥२७॥

सीताऽप्यनुगता रामं शशिनं रोहिणी यथा।
पौरैरनुगतो दूरं पित्रा दशरथेन च॥२८॥

शृङ्गवेरपुरे सूतं गङ्गाकूले व्यसर्जयत्।
गुहमासाद्य धर्मात्मा निषादाधिपतिं प्रियम्॥ २९॥

गुहेन सहितो रामो लक्ष्मणेन च सीतया।
ते वनेन वनं गत्वा नदीस्तीर्त्वा बहूदकाः॥ ३०॥

चित्रकूटमनुप्राप्य भरद्वाजस्य शासनात्।
रम्यमावसथं कृत्वा रममाणा वने त्रयः॥ ३१॥

देवगन्धर्वसङ्काशास्तत्र ते न्यवसन् सुखम्।
चित्रकूटं गते रामे पुत्रशोकातुरस्तथा॥ ३२॥

राजा दशरथः स्वर्गं जगाम विलपन् सुतम्।
मृते तु तस्मिन् भरतो वसिष्ठप्रमुखैर्द्विजैः॥ ३३॥

नियुज्यमानो राज्याय नैच्छद्राज्यं महाबलः।
स जगाम वनं वीरो रामपादप्रसादकः॥ ३४॥

गत्वा तु स महात्मानं रामं सत्यपराक्रमम्।
अयाचद्भ्रातरं रामम् आर्यभावपुरस्कृतः॥ ३५॥

त्वमेव राजा धर्मज्ञ इति रामं वचोऽब्रवीत्।
रामोऽपि परमोदारः सुमुखः सुमहायशाः॥ ३६॥

न चेच्छत् पितुरादेशाद्राज्यं रामो महाबलः।
पादुके चास्य राज्याय न्यासं दत्त्वा पुनः पुनः॥ ३७॥

निवर्तयामास ततो भरतं भरताग्रजः।
स काममनवाप्यैव रामपादावुपस्पृशन्॥ ३८॥

नन्दिग्रामेऽकरोद्राज्यं रामागमनकाङ्क्षया।
गते तु भरते श्रीमान् सत्यसन्धो जितेन्द्रियः॥ ३९॥

रामस्तु पुनरालक्ष्य नागरस्य जनस्य च।
तत्राऽऽगमनमेकाग्रो दण्डकान् प्रविवेश ह॥ ४०॥

प्रविश्य तु महारण्यं रामो राजीवलोचनः।
विराधं राक्षसं हत्वा शरभङ्गं ददर्श ह॥ ४१॥

सुतीक्ष्णं चाप्यगस्त्यं च अगस्त्यभ्रातरं तथा।
अगस्त्यवचनाच्चैव जग्राहैन्द्रं शरासनम्॥ ४२॥

खड्गं च परमप्रीतस्तूणी चाक्षयसायकौ।
वसतस्तस्य रामस्य वने वनचरैः सह॥ ४३॥

ऋषयोऽभ्यागमन् सर्वे वधायासुररक्षसाम्।
स तेषां प्रति शुश्राव राक्षसानां तदा वने॥ ४४॥

प्रतिज्ञातश्च रामेण वधः संयति रक्षसाम्।
ऋषीणामग्निकल्पानां दण्डकारण्यवासिनाम्॥ ४५॥

तेन तत्रैव वसता जनस्थाननिवासिनी।
विरूपिता शूर्पणखा राक्षसी कामरूपिणी॥ ४६॥

ततः शूर्पणखावाक्यादुद्युक्तान् सर्वराक्षसान्।
खरं त्रिशिरसं चैव दूषणं चैव राक्षसम्॥ ४७॥

निजघान रणे रामस्तेषां चैव पदानुगान्।
वने तस्मिन् निवसता जनस्थाननिवासिनाम्॥ ४८॥

रक्षसां निहतान्यासन् सहस्राणि चतुर्दश।
ततो ज्ञातिवधं श्रुत्वा रावणः क्रोधमूर्च्छितः ॥ ४९ ॥

सहायं वरयामास मारीचं नाम राक्षसम्।
वार्यमाणः सुबहुशो मारीचेन स रावणः ॥ ५० ॥

न विरोधो बलवता क्षमो रावण तेन ते।
अनादृत्य तु तद्वाक्यं रावणः कालचोदितः ॥ ५१ ॥

जगाम सहमारीचस्तस्याऽऽश्रमपदं तदा।
तेन मायाविना दूरमपवाह्य नृपात्मजौ ॥ ५२ ॥

जहार भार्यां रामस्य गृध्रं हत्वा जटायुषम्।
गृध्रं च निहतं दृष्ट्वा हृतां श्रुत्वा च मैथिलीम् ॥ ५३ ॥

राघवः शोकसन्तप्तो विललापाऽऽकुलेन्द्रियः।
ततस्तेनैव शोकेन गृध्रं दग्ध्वा जटायुषम् ॥ ५४ ॥

मार्गमाणो वने सीतां राक्षसं सन्ददर्श ह।
कबन्धं नाम रूपेण विकृतं घोरदर्शनम् ॥ ५५ ॥

तं निहत्य महाबाहुर्ददाह स्वर्गतश्च सः।
स चास्य कथयामास शबरीं धर्मचारिणीम् ॥ ५६ ॥

श्रमणीं धर्मनिपुणाम् अभिगच्छेति राघव।
सोऽभ्यगच्छन् महातेजाः शबरीं शत्रुसूदनः ॥ ५७ ॥

शबर्या पूजितः सम्यग्रामो दशरथात्मजः।
पम्पातीरे हनुमता सङ्गतो वानरेण ह ॥ ५८ ॥

हनुमद्वचनाच्चैव सुग्रीवेण समागतः।
सुग्रीवाय च तत्सर्वं शंसद्रामो महाबलः॥५९॥

आदितस्तद्यथा वृत्तं सीतायाश्च विशेषतः।
सुग्रीवश्चापि तत्सर्वं श्रुत्वा रामस्य वानरः॥६०॥

चकार सख्यं रामेण प्रीतश्चैवाग्निसाक्षिकम्।
ततो वानरराजेन वैरानुकथनं प्रति॥६१॥

रामायाऽऽवेदितं सर्वं प्रणयाद्दुःखितेन च।
प्रतिज्ञातं च रामेण तदा वालिवधं प्रति॥६२॥

वालिनश्च बलं तत्र कथयामास वानरः।
सुग्रीवः शङ्कितश्चासीन्नित्यं वीर्येण राघवे॥६३॥

राघवः प्रत्ययार्थं तु दुन्दुभेः कायमुत्तमम्।
दर्शयामास सुग्रीवो महापर्वतसन्निभम्॥६४॥

उत्स्मयित्वा महाबाहुः प्रेक्ष्य चास्थि महाबलः।
पादाङ्गुष्ठेन चिक्षेप सम्पूर्णं दशयोजनम्॥६५॥

बिभेद च पुनः सालान् सप्तैकेन महेषुणा।
गिरिं रसातलं चैव जनयन् प्रत्ययं तदा॥६६॥

ततः प्रीतमनास्तेन विश्वस्तः स महाकपिः।
किष्किन्धां रामसहितो जगाम च गुहां तदा॥६७॥

ततोऽगर्जद्धरिवरः सुग्रीवो हेमपिङ्गलः।
तेन नादेन महता निर्जगाम हरीश्वरः॥६८॥

अनुमान्य तदा तारां सुग्रीवेण समागतः।
निजघान च तत्रैनं शरेणैकेन राघवः॥ ६९॥

ततः सुग्रीववचनाद्धत्वा वालिनमाहवे।
सुग्रीवमेव तद्राज्ये राघवः प्रत्यपादयत्॥ ७०॥

स च सर्वान् समानीय वानरान् वानरर्षभः।
दिशः प्रस्थापयामास दिदृक्षुर्जनकात्मजाम्॥ ७१॥

ततो गृध्रस्य वचनात्सम्पातेर्हनुमान् बली।
शतयोजनविस्तीर्णं पुप्लुवे लवणार्णवम्॥ ७२॥

तत्र लङ्कां समासाद्य पुरीं रावणपालिताम्।
ददर्श सीतां ध्यायन्तीमशोकवनिकां गताम्॥ ७३॥

निवेदयित्वाऽभिज्ञानं प्रवृत्तिं विनिवेद्य च।
समाश्वास्य च वैदेहीं मर्दयामास तोरणम्॥ ७४॥

पञ्च सेनाग्रगान् हत्वा सप्त मन्त्रिसुतानपि।
शूरमक्षं च निष्पिष्य ग्रहणं समुपागमत्॥ ७५॥

अस्त्रेणोन्मुक्तमात्मानं ज्ञात्वा पैतामहाद्वरात्।
मर्षयन् राक्षसान् वीरो यन्त्रिणस्तान् यदृच्छया॥ ७६॥

ततो दग्ध्वा पुरीं लङ्काम् ऋते सीतां च मैथिलीम्।
रामाय प्रियमाख्यातुं पुनरायान् महाकपिः॥ ७७॥

सोऽभिगम्य महात्मानं कृत्वा रामं प्रदक्षिणम्।
न्यवेदयदमेयात्मा दृष्टा सीतेति तत्त्वतः॥ ७८॥

ततः सुग्रीवसहितो गत्वा तीरं महोदधेः।
समुद्रं क्षोभयामास शरैरादित्यसन्निभैः॥७९॥

दर्शयामास चाऽऽत्मानं समुद्रः सरितां पतिः।
समुद्रवचनाच्चैव नलं सेतुमकारयत्॥८०॥

तेन गत्वा पुरीं लङ्कां हत्वा रावणमाहवे।
रामः सीतामनुप्राप्य परां व्रीडामुपागमत्॥८१॥

तामुवाच ततो रामः परुषं जनसंसदि।
अमृष्यमाणा सा सीता विवेश ज्वलनं सती॥८२॥

ततोऽग्निवचनात् सीतां ज्ञात्वा विगतकल्मषाम्।
कर्मणा तेन महता त्रैलोक्यं सचराचरम्॥८३॥

सदेवर्षिगणं तुष्टं राघवस्य महात्मनः।
बभौ रामः सम्प्रहृष्टः पूजितः सर्वदैवतैः॥८४॥

अभिषिच्य च लङ्कायां राक्षसेन्द्रं विभीषणम्।
कृतकृत्यस्तदा रामो विज्वरः प्रमुमोद ह॥८५॥

देवताभ्यो वरान् प्राप्य समुत्थाप्य च वानरान्।
अयोध्यां प्रस्थितो रामः पुष्पकेण सुहृद्-वृतः॥८६॥

भरद्वाजाश्रमं गत्वा रामः सत्यपराक्रमः।
भरतस्यान्तिके रामो हनूमन्तं व्यसर्जयत्॥८७॥

पुनराख्यायिकां जल्पन् सुग्रीवसहितस्तदा।
पुष्पकं तत् समारुह्य नन्दिग्रामं ययौ तदा॥८८॥

नन्दिग्रामे जटां हित्वा भ्रातृभिः सहितोऽनघः।
रामः सीतामनुप्राप्य राज्यं पुनरवाप्तवान्॥ ८९॥

प्रहृष्टमुदितो लोकस्तुष्टः पुष्टः सुधार्मिकः।
निरामयो ह्यरोगश्च दुर्भिक्षभयवर्जितः॥ ९०॥

न पुत्रमरणं केचिद्-द्रक्ष्यन्ति पुरुषाः क्वचित्।
नार्यश्चाविधवा नित्यं भविष्यन्ति पतिव्रताः॥ ९१॥

न चाग्निजं भयं किञ्चिन्नाप्सु मज्जन्ति जन्तवः।
न वातजं भयं किञ्चिन्नापि ज्वरकृतं तथा॥ ९२॥

न चापि क्षुद्भयं तत्र न तस्करभयं तथा।
नगराणि च राष्ट्राणि धनधान्ययुतानि च॥ ९३॥

नित्यं प्रमुदिताः सर्वे यथा कृतयुगे तथा।
अश्वमेधशतैरिष्ट्वा तथा बहुसुवर्णकैः॥ ९४॥

गवां कोट्ययुतं दत्त्वा विद्वद्भ्यो विधिपूर्वकम्।
असङ्ख्येयं धनं दत्त्वा ब्राह्मणेभ्यो महायशाः॥ ९५॥

राजवंशाञ्छतगुणान् स्थापयिष्यति राघवः।
चातुर्वर्ण्यं च लोकेऽस्मिन् स्वे स्वे धर्मे नियोक्ष्यति॥ ९६॥

दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च।
रामो राज्यमुपासित्वा ब्रह्मलोकं गमिष्यति॥ ९७॥

इदं पवित्रं पापघ्नं पुण्यं वेदैश्च सम्मितम्।
यः पठेद्रामचरितं सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ ९८॥

एतदाख्यानमायुष्यं पठन् रामायणं नरः।
सपुत्रपौत्रः सगणः प्रेत्य स्वर्गे महीयते॥९९॥

पठन् द्विजो वागृषभत्वमीयात्
स्यात् क्षत्रियो भूमिपतित्वमीयात्।
वणिग्जनः पण्यफलत्वमीयात्
जनश्च शूद्रोऽपि महत्त्वमीयात्॥१००॥

॥इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये बालकाण्डे प्रथमः सर्गः॥

॥मङ्गलश्लोकाः॥

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्ताम्
न्यायेन मार्गेण महीं महीशाः।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यम्
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु॥१॥

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी।
देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः॥२॥

अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
अधनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्॥३॥

चरितं रघुनाथस्य शतकोटि-प्रविस्तरम्।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम्॥४॥

श्रृण्वन् रामायणं भक्त्या यः पादं पदमेव वा।
स याति ब्रह्मणः स्थानं ब्रह्मणा पूज्यते सदा॥५॥

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥ ६ ॥

यन्मङ्गलं सहस्राक्षे सर्वदेवनमस्कृते।
वृत्रनाशे समभवत् तत्ते भवतु मङ्गलम् ॥ ७ ॥

यन्मङ्गलं सुपर्णस्य विनताऽकल्पयत् पुरा।
अमृतं प्रार्थयानस्य तत्ते भवतु मङ्गलम् ॥ ८ ॥

अमृतोत्पादने दैत्यान् घ्नतो वज्रधरस्य यत्।
अदितिर्मङ्गलं प्रादात् तत्ते भवतु मङ्गलम् ॥ ९ ॥

त्रीन् विक्रमान् प्रक्रमतो विष्णोरमिततेजसः।
यदासीन्मङ्गलं राम तत्ते भवतु मङ्गलम् ॥ १० ॥

ऋषयः सागरा द्वीपा वेदा लोका दिशश्च ते।
मङ्गलानि महाबाहो दिशन्तु तव सर्वदा ॥ ११ ॥

मङ्गलं कोसलेन्द्राय महनीयगुणाब्धये।
चक्रवर्तितनूजाय सार्वभौमाय मङ्गलम् ॥ १२ ॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि ॥

❀❀❀

॥ सन्तानगोपाल स्तोत्रम् ॥

श्रीशं कमलपत्राक्षं देवकीनन्दनं हरिम्।
सुतसम्प्राप्तये कृष्णं नमामि मधुसूदनम्॥ १ ॥

नमाम्यहं वासुदेवं सुतसम्प्राप्तये हरिम्।
यशोदाङ्कगतं बालं गोपालं नन्दनन्दनम्॥ २ ॥

अस्माकं पुत्रलाभाय गोविन्दं मुनिवन्दितम्।
नमाम्यहं वासुदेवं देवकीनन्दनं सदा॥ ३ ॥

गोपालं डिम्भकं वन्दे कमलापतिमच्युतम्।
पुत्रसम्प्राप्तये कृष्णं नमामि यदुपुङ्गवम्॥ ४ ॥

पुत्रकामेष्टिफलदं कञ्जाक्षं कमलापतिम्।
देवकीनन्दनं वन्दे सुतसम्प्राप्तये मम॥ ५ ॥

पद्मापते पद्मनेत्र पद्मनाभ जनार्दन।
देहि मे तनयं श्रीश वासुदेव जगत्पते॥ ६ ॥

यशोदाङ्कगतं बालं गोविन्दं मुनिवन्दितम्।
अस्माकं पुत्रलाभाय नमामि श्रीशमच्युतम्॥ ७ ॥

श्रीपते देवदेवेश दीनार्तिहरणाच्युत।
गोविन्द मे सुतं देहि नमामि त्वां जनार्दन॥ ८ ॥

भक्तकामद गोविन्द भक्तं रक्ष शुभप्रद।
देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभो॥ ९ ॥

रुक्मिणीनाथ सर्वेश देहि मे तनयं सदा।
भक्तमन्दार पद्माक्ष त्वामहं शरणं गतः॥ १०॥

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥ ११॥

वासुदेव जगद्वन्द्य श्रीपते पुरुषोत्तम।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥ १२॥

कञ्जाक्ष कमलानाथ परकारुणिकोत्तम।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥ १३॥

लक्ष्मीपते पद्मनाभ मुकुन्द मुनिवन्दित।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥ १४॥

कार्यकारणरूपाय वासुदेवाय ते सदा।
नमामि पुत्रलाभार्थं सुखदाय बुधाय ते॥ १५॥

राजीवनेत्र श्रीराम रावणारे हरे कवे।
तुभ्यं नमामि देवेश तनयं देहि मे हरे॥ १६॥

अस्माकं पुत्रलाभाय भजामि त्वां जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव रमापते॥ १७॥

श्रीमानिनीमानचोर गोपीवस्त्रापहारक।
देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव जगत्पते॥ १८॥

अस्माकं पुत्रसम्प्राप्तिं कुरुष्व यदुनन्दन।
रमापते वासुदेव मुकुन्द मुनिवन्दित॥ १९॥

वासुदेव सुतं देहि तनयं देहि माधव।
पुत्रं मे देहि श्रीकृष्ण वत्सं देहि महाप्रभो॥ २०॥

डिम्भकं देहि श्रीकृष्ण आत्मजं देहि राघव।
भक्तमन्दार मे देहि तनयं नन्दनन्दन॥ २१॥

नन्दनं देहि मे कृष्ण वासुदेव जगत्पते।
कमलानाथ गोविन्द मुकुन्द मुनिवन्दित॥ २२॥

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
सुतं देहि श्रियं देहि श्रियं पुत्रं प्रदेहि मे॥ २३॥

यशोदा-स्तन्यपानज्ञं पिबन्तं यदुनन्दनम्।
वन्देऽहं पुत्रलाभार्थं कपिलाक्षं हरिं सदा॥ २४॥

नन्दनन्दन देवेश नन्दनं देहि मे प्रभो।
रमापते वासुदेव श्रियं पुत्रं जगत्पते॥ २५॥

पुत्रं श्रियं श्रियं पुत्रं पुत्रं मे देहि माधव।
अस्माकं दीनवाक्यस्य अवधारय श्रीपते॥ २६॥

गोपालडिम्भ गोविन्द वासुदेव रमापते।
अस्माकं डिम्भकं देहि श्रियं देहि जगत्पते॥ २७॥

मद्वाञ्छितफलं देहि देवकीनन्दनाच्युत।
मम पुत्रार्थितं धन्यं कुरुष्व यदुनन्दन॥ २८॥

याचेऽहं त्वां श्रियं पुत्रं देहि मे पुत्रसम्पदम्।
भक्तचिन्तामणे राम कल्पवृक्ष महाप्रभो॥ २९॥

आत्मजं नन्दनं पुत्रं कुमारं डिम्भकं सुतम्।
अर्भकं तनयं देहि सदा मे रघुनन्दन॥ ३०॥

वन्दे सन्तानगोपालं माधवं भक्तकामदम्।
अस्माकं पुत्रसम्प्राप्त्यै सदा गोविन्दमच्युतम्॥ ३१॥

ओङ्कारयुक्तं गोपालं श्रीयुक्तं यदुनन्दनम्।
क्लींयुक्तं देवकीपुत्रं नमामि यदुनायकम्॥ ३२॥

वासुदेव मुकुन्देश गोविन्द माधवाच्युत।
देहि मे तनयं कृष्ण रमानाथ महाप्रभो॥ ३३॥

राजीवनेत्र गोविन्द कपिलाक्ष हरे प्रभो।
समस्तकाम्यवरद देहि मे तनयं सदा॥ ३४॥

अब्जपद्मनिभं पद्मवृन्दरूप जगत्पते।
देहि मे वरसत्पुत्रं रमानायक माधव॥ ३५॥

नन्दपाल धरापाल गोविन्द यदुनन्दन।
देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभो॥ ३६॥

दासमन्दार गोविन्द मुकुन्द माधवाच्युत।
गोपाल पुण्डरीकाक्ष देहि मे तनयं श्रियम्॥ ३७॥

यदुनायक पद्मेश नन्दगोपवधूसुत।
देहि मे तनयं कृष्ण श्रीधर प्राणनायक॥ ३८॥

अस्माकं वाञ्छितं देहि देहि पुत्रं रमापते।
भगवन् कृष्ण सर्वेश वासुदेव जगत्पते॥ ३९॥

रमाहृदयसम्भार सत्यभामामनःप्रिय।
देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभो॥ ४०॥

चन्द्रसूर्याक्ष गोविन्द पुण्डरीकाक्ष माधव।
अस्माकं भाग्यसत्पुत्रं देहि देव जगत्पते॥ ४१॥

कारुण्यरूप पद्माक्ष पद्मनाभसमर्चित।
देहि मे तनयं कृष्ण देवकी-नन्दनन्दन॥ ४२॥

देवकीसुत श्रीनाथ वासुदेव जगत्पते।
समस्तकामफलद देहि मे तनयं सदा॥ ४३॥

भक्तमन्दार गम्भीर शङ्कराच्युत माधव।
देहि मे तनयं गोपबालवत्सल श्रीपते॥ ४४॥

श्रीपते वासुदेवेश देवकीप्रियनन्दन।
भक्तमन्दार मे देहि तनयं जगतां प्रभो॥ ४५॥

जगन्नाथ रमानाथ भूमिनाथ दयानिधे।
वासुदेवेश सर्वेश देहि मे तनयं प्रभो॥ ४६॥

श्रीनाथ कमलपत्राक्ष वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥ ४७॥

दासमन्दार गोविन्द भक्तचिन्तामणे प्रभो।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥ ४८॥

गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रमानाथ महाप्रभो।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥ ४९॥

श्रीनाथ कमलपत्राक्ष गोविन्द मधुसूदन।
मत्पुत्रफलसिद्ध्यर्थं भजामि त्वां जनार्दन॥५०॥

स्तन्यं पिबन्तं जननीमुखाम्बुजं
विलोक्य मन्दस्मितमुज्ज्वलाङ्गम्।
स्पृशन्तमन्यस्तनमङ्गुलीभिः
वन्दे यशोदाङ्कगतं मुकुन्दम्॥५१॥

याचेऽहं पुत्रसन्तानं भवन्तं पद्मलोचन।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥५२॥

अस्माकं पुत्रसम्पत्तेश्चिन्तयामि जगत्पते।
शीघ्रं मे देहि दातव्यं भवता मुनिवन्दित॥५३॥

वासुदेव जगन्नाथ श्रीपते पुरुषोत्तम।
कुरु मां पुत्रदत्तं च कृष्ण देवेन्द्रपूजित॥५४॥

कुरु मां पुत्रदत्तं च यशोदा-प्रियनन्दन।
मह्यं च पुत्र-सन्तानं दातव्यं भवता हरे॥५५॥

वासुदेव जगन्नाथ गोविन्द देवकीसुत।
देहि मे तनयं राम कौसल्याप्रियनन्दन॥५६॥

पद्मपत्राक्ष गोविन्द विष्णो वामन माधव।
देहि मे तनयं सीताप्राणनायक राघव॥५७॥

कञ्जाक्ष कृष्ण देवेन्द्रमण्डित मुनिवन्दित।
लक्ष्मणाग्रज श्रीराम देहि मे तनयं सदा॥५८॥

देहि मे तनयं राम दशरथ-प्रियनन्दन।
सीतानायक कञ्जाक्ष मुचुकुन्दवरप्रद॥५९॥

विभीषणस्य या लङ्का प्रदत्ता भवता पुरा।
अस्माकं तत्प्रकारेण तनयं देहि माधव॥६०॥

भवदीयपदाम्भोजे चिन्तयामि निरन्तरम्।
देहि मे तनयं सीताप्राणवल्लभ राघव॥६१॥

राम मत्काम्यवरद पुत्रोत्पत्तिफलप्रद।
देहि मे तनयं श्रीश कमलासनवन्दित॥६२॥

राम राघव सीतेश लक्ष्मणाग्रज देहि मे।
भाग्यवत् पुत्रसन्तानं दशरथात्मज श्रीपते॥६३॥

देवकीगर्भसञ्जात यशोदाप्रियनन्दन।
देहि मे तनयं राम कृष्ण गोपाल माधव॥६४॥

कृष्ण माधव गोविन्द वामनाच्युत शङ्कर।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक॥६५॥

गोपबाल महाधन्य गोविन्दाच्युत माधव।
देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव जगत्पते॥६६॥

दिशतु दिशतु पुत्रं देवकीनन्दनोऽयं
दिशतु दिशतु शीघ्रं भाग्यवत्पुत्रलाभम्।
दिशतु दिशतु श्रीशो राघवो रामचन्द्रो
दिशतु दिशतु पुत्रं वंशविस्तारहेतोः॥६७॥

दीयतां वासुदेवेन तनयो मत्प्रियः सुतः।
कुमारो नन्दनः सीतानायकेन सदा मम॥ ६८॥

राम राघव गोविन्द देवकीसुत माधव।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक॥ ६९॥

वंशविस्तारकं पुत्रं देहि मे मधुसूदन।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः॥ ७०॥

ममाभीष्टसुतं देहि कंसारे माधवाच्युत।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः॥ ७१॥

चन्द्रार्ककल्पपर्यन्तं तनयं देहि माधव।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः॥ ७२॥

विद्यावन्तं बुद्धिमन्तं श्रीमन्तं तनयं सदा।
देहि मे तनयं कृष्ण देवकीनन्दन प्रभो॥ ७३॥

नमामि त्वां पद्मनेत्र सुतलाभाय कामदम्।
मुकुन्दं पुण्डरीकाक्षं गोविन्दं मधुसूदनम्॥ ७४॥

भगवन् कृष्ण गोविन्द सर्वकामफलप्रद।
देहि मे तनयं स्वामिंस्त्वामहं शरणं गतः॥ ७५॥

स्वामिंस्त्वं भगवन् राम कृष्ण माधव कामद।
देहि मे तनयं नित्यं त्वामहं शरणं गतः॥ ७६॥

तनयं देहि गोविन्द कञ्जाक्ष कमलापते।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः॥ ७७॥

पद्मापते पद्मनेत्र प्रद्युम्नजनक प्रभो।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः॥ ७८॥

शङ्खचक्रगदाखड्गशार्ङ्गपाणे रमापते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥ ७९॥

नारायण रमानाथ राजीवपत्रलोचन।
सुतं मे देहि देवेश पद्मपद्मानुवन्दित॥ ८०॥

राम राघव गोविन्द देवकीवरनन्दन।
रुक्मिणीनाथ सर्वेश नारदादिसुरार्चित॥ ८१॥

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक॥ ८२॥

मुनिवन्दित गोविन्द रुक्मिणीवल्लभ प्रभो।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥ ८३॥

गोपिकार्जितपङ्केजमरन्दासक्तमानस ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥ ८४॥

रमाहृदयपङ्केजलोल माधव कामद।
ममाभीष्टसुतं देहि त्वामहं शरणं गतः॥ ८५॥

वासुदेव रमानाथ दासानां मङ्गलप्रद।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥ ८६॥

कल्याणप्रद गोविन्द मुरारे मुनिवन्दित।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥ ८७॥

पुत्रप्रद मुकुन्देश रुक्मिणीवल्लभ प्रभो।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥८८॥

पुण्डरीकाक्ष गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥८९॥

दयानिधे वासुदेव मुकुन्द मुनिवन्दित।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥९०॥

पुत्रसम्पत्प्रदातारं गोविन्दं देवपूजितम्।
वन्दामहे सदा कृष्णं पुत्रलाभप्रदायिनम्॥९१॥

कारुण्यनिधये गोपीवल्लभाय मुरारये।
नमस्ते पुत्रलाभार्थं देहि मे तनयं विभो॥९२॥

नमस्तस्मै रमेशाय रुक्मिणीवल्लभाय ते।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक॥९३॥

नमस्ते वासुदेवाय नित्यश्रीकामुकाय च।
पुत्रदाय च सर्पेन्द्रशायिने रङ्गशायिने॥९४॥

रङ्गशायिन् रमानाथ मङ्गलप्रद माधव।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक॥९५॥

दासस्य मे सुतं देहि दीनमन्दार राघव।
सुतं देहि सुतं देहि पुत्रं देहि रमापते॥९६॥

यशोदातनयाभीष्टपुत्रदानरतः सदा।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥९७॥

मदिष्टदेव गोविन्द वासुदेव जनार्दन।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥९८॥

नीतिमान् धनवान् पुत्रो विद्यावांश्च प्रजायते।
भगवंस्त्वत्कृपायाश्च वासुदेवेन्द्रपूजित॥९९॥

यः पठेत् पुत्रशतकं सोऽपि सत्पुत्रवान् भवेत्।
श्रीवासुदेवकथितं स्तोत्ररत्नं सुखाय च॥१००॥

जपकाले पठेन्नित्यं पुत्रलाभं धनं श्रियम्।
ऐश्वर्यं राजसम्मानं सद्यो याति न संशयः॥१०१॥

॥इति श्री-सन्तानगोपालस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

❀❀❀

॥ गकारादि श्री-गणपति सहस्रनाम स्तोत्रम् ॥

अस्य श्रीगणपतिगकारादिसहस्रनाममालामन्त्रस्य।
दुर्वासा ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्री-गणपतिर्देवता।
गं बीजम्। स्वाहा शक्तिः। ग्लौं कीलकम् ।
सकलाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥

॥ करन्यासः ॥

ओं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। श्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः। क्रीं अनामिकाभ्यां नमः।
ग्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। गं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।
एवं हृदयादिन्यासः।
अथवा षड्दीर्घभाजागमितिबीजेन कराङ्गन्यासः ॥

॥ ध्यानम् ॥

ओङ्कार-सन्निभमिभाननमिन्दुभालम्
मुक्ताग्रबिन्दुममलद्युतिमेकदन्तम् ।
लम्बोदरं कलचतुर्भुजमादिदेवम्
ध्यायेन्महागणपतिं मतिसिद्धिकान्तम् ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

ओं गणेश्वरो गणाध्यक्षो गणाराध्यो गणप्रियः।
गणनाथो गणस्वामी गणेशो गणनायकः ॥ १ ॥

गणमूर्तिर्गणपतिर्गणत्राता गणञ्जयः।
गणपोऽथ गणक्रीडो गणदेवो गणाधिपः ॥ २ ॥

गणज्येष्ठो गणश्रेष्ठो गणप्रेष्ठो गणाधिराट्।
गणराड् गणगोप्ताथ गणाङ्गो गणदैवतम्॥ ३॥

गणबन्धुर्गणसुहृद्गणाधीशो गणप्रथः।
गणप्रियसखः शश्वद्गणप्रियसुहृत् तथा॥ ४॥

गणप्रियरतो नित्यं गणप्रीतिविवर्धनः।
गणमण्डलमध्यस्थो गणकेलिपरायणः॥ ५॥

गणाग्रणीर्गणेशानो गणगीतो गणोच्छ्रयः।
गण्यो गणहितो गर्जद्गणसेनो गणोद्धतः॥ ६॥

गणभीतिप्रमथनो गणभीत्यपहारकः।
गणनार्हो गणप्रौढो गणभर्ता गणप्रभुः॥ ७॥

गणसेनो गणचरो गणप्रज्ञो गणैकराट्।
गणाग्र्यो गणनामा च गणपालनतत्परः॥ ८॥

गणजिद्गणगर्भस्थो गणप्रवणमानसः।
गणगर्वपरीहर्ता गणो गणनमस्कृतः॥ ९॥

गणार्चिताङ्घ्रियुगलो गणरक्षणकृत् सदा।
गणध्यातो गणगुरुर्गणप्रणयतत्परः॥ १०॥

गणागणपरित्राता गणाधिहरणोद्धुरः।
गणसेतुर्गणनुतो गणकेतुर्गणाग्रगः॥ ११॥

गणहेतुर्गणग्राही गणानुग्रहकारकः।
गणागणानुग्रहभूर्गणागणवरप्रदः ॥ १२॥

गणस्तुतो गणप्राणो गणसर्वस्वदायकः।
गणवल्लभमूर्तिश्च गणभूतिर्गणेष्टदः॥ १३॥

गणसौख्यप्रदाता च गणदुःखप्रणाशनः।
गणप्रथितनामा च गणाभीष्टकरः सदा॥ १४॥

गणमान्यो गणख्यातो गणवीतो गणोत्कटः।
गणपालो गणवरो गणगौरवदायकः॥ १५॥

गणगर्जितसन्तुष्टो गणस्वच्छन्दगः सदा।
गणराजो गणश्रीदो गणाभयकरः क्षणात्॥ १६॥

गणमूर्धाभिषिक्तश्च गणसैन्यपुरस्सरः।
गुणातीतो गुणमयो गुणत्रयविभागकृत्॥ १७॥

गुणी गुणाकृतिधरो गुणशाली गुणप्रियः।
गुणपूर्णो गुणाम्भोधिर्गुणभाग् गुणदूरगः॥ १८॥

गुणागुणवपुर्गौणशरीरो गुणमण्डितः।
गुणस्रष्टा गुणेशानो गुणेशोऽथ गुणेश्वरः॥ १९॥

गुणसृष्टजगत्सङ्घो गुणसङ्घो गुणैकराट्।
गुणप्रवृष्टो गुणभूर्गुणीकृतचराचरः॥ २०॥

गुणप्रवणसन्तुष्टो गुणहीनपराङ्मुखः।
गुणैकभूर्गुणश्रेष्ठो गुणज्येष्ठो गुणप्रभुः॥ २१॥

गुणज्ञो गुणसम्पूज्यो गुणैकसदनं सदा।
गुणप्रणयवान् गौणप्रकृतिर्गुणभाजनम्॥ २२॥

गुणिप्रणतपादाब्जो गुणिगीतो गुणोज्ज्वलः।
गुणवान् गुणसम्पन्नो गुणानन्दितमानसः॥ २३॥

गुणसञ्चारचतुरो गुणसञ्चयसुन्दरः।
गुणगौरो गुणाधारो गुणसंवृतचेतनः॥ २४॥

गुणकृद्गुणभृन्नित्यं गुणाग्र्यो गुणपारदृक्।
गुणप्रचारी गुणयुग् गुणागुणविवेककृत्॥ २५॥

गुणाकरो गुणकरो गुणप्रवणवर्धनः।
गुणगूढचरो गौणसर्वसंसारचेष्टितः॥ २६॥

गुणदक्षिणसौहार्दो गुणलक्षणतत्त्ववित्।
गुणहारी गुणकलो गुणसङ्घसखः सदा॥ २७॥

गुणसंस्कृतसंसारो गुणतत्त्वविवेचकः।
गुणगर्वधरो गौणसुखदुःखोदयो गुणः॥ २८॥

गुणाधीशो गुणलयो गुणवीक्षणलालसः।
गुणगौरवदाता च गुणदाता गुणप्रदः॥ २९॥

गुणकृद्गुणसम्बन्धो गुणभृद्गुणबन्धनः।
गुणहृद्यो गुणस्थायी गुणदायी गुणोत्कटः॥ ३०॥

गुणचक्रधरो गौणावतारो गुणबान्धवः।
गुणबन्धुर्गुणप्रज्ञो गुणप्राज्ञो गुणालयः॥ ३१॥

गुणधाता गुणप्राणो गुणगोपो गुणाश्रयः।
गुणयायी गुणाधायी गुणपो गुणपालकः॥ ३२॥

गुणाहृततनुर्गौणो गीर्वाणो गुणगौरवः।
गुणवत्पूजितपदो गुणवत्प्रीतिदायकः॥ ३३॥

गुणवद्गीतकीर्तिश्च गुणवद्बद्धसौहृदः।
गुणवद्वरदो नित्यं गुणवत्प्रतिपालकः॥ ३४॥

गुणवद्गुणसन्तुष्टो गुणवद्रचितस्तवः।
गुणवद्रक्षणपरो गुणवत्प्रणयप्रियः॥ ३५॥

गुणवच्चक्रसञ्चारो गुणवत्कीर्तिवर्धनः।
गुणवद्गुणचित्तस्थो गुणवद्गुणरक्षकः॥ ३६॥

गुणवत्पोषणकरो गुणवच्छत्रुसूदनः।
गुणवत्सिद्धिदाता च गुणवद्गौरवप्रदः॥ ३७॥

गुणवत्प्रवणस्वान्तो गुणवद्गुणभूषणः।
गुणवत्कुलविद्वेषिविनाशकरणक्षमः ॥ ३८॥

गुणिस्तुतगुणो गर्जप्रलयाम्बुदनिःस्वनः।
गजो गजपतिर्गर्जद्गजयुद्धविशारदः॥ ३९॥

गजास्यो गजकर्णोऽथ गजराजो गजाननः।
गजरूपधरो गर्जद्गजयूथोद्धुरध्वनिः॥ ४०॥

गजाधीशो गजाधारो गजासुरजयोद्धुरः।
गजदन्तो गजवरो गजकुम्भो गजध्वनिः॥ ४१॥

गजमायो गजमयो गजश्रीर्गजगर्जितः।
गजामयहरो नित्यं गजपुष्टिप्रदायकः॥ ४२॥

गजोत्पत्तिर्गजत्राता गजहेतुर्गजाधिपः।
गजमुख्यो गजकुलप्रवरो गजदैत्यहा॥४३॥

गजकेतुर्गजाध्यक्षो गजसेतुर्गजाकृतिः।
गजवन्द्यो गजप्राणो गजसेव्यो गजप्रभुः॥४४॥

गजमत्तो गजेशानो गजेशो गजपुङ्गवः।
गजदन्तधरो गुञ्जन्मधुपो गजवेषभृत्॥४५॥

गजच्छन्नो गजाग्रस्थो गजयायी गजाजयः।
गजराङ्गजयूथस्थो गजगञ्जकभञ्जकः॥४६॥

गर्जितोज्झितदैत्यासुर्गर्जितत्रातविष्टपः।
गानज्ञो गानकुशलो गानतत्त्वविवेचकः॥४७॥

गानश्लाघी गानरसो गानज्ञानपरायणः।
गानागमज्ञो गानाङ्गो गानप्रवणचेतनः॥४८॥

गानकृद्गानचतुरो गानविद्याविशारदः।
गानध्येयो गानगम्यो गानध्यानपरायणः॥४९॥

गानभूर्गानशीलश्च गानशाली गतश्रमः।
गानविज्ञानसम्पन्नो गानश्रवणलालसः॥५०॥

गानयत्तो गानमयो गानप्रणयवान् सदा।
गानध्याता गानबुद्धिर्गानोत्सुकमनाः पुनः॥५१॥

गानोत्सुको गानभूमिर्गानसीमा गुणोज्ज्वलः।
गानङ्गज्ञानवान् गानमानवान् गानपेशलः॥५२॥

गानवत्प्रणयो गानसमुद्रो गानभूषणः।
गानसिन्धुर्गानपरो गानप्राणो गणाश्रयः॥५३॥

गानैकभूर्गानहृष्टो गानचक्षुर्गणैकदृक्।
गानमत्तो गानरुचिर्गानविद्गानवित्प्रियः॥५४॥

गानान्तरात्मा गानाढ्यो गानभ्राजत्सभः सदा।
गानमयो गानधरो गानविद्याविशोधकः॥५५॥

गानाहितघ्नो गानेन्द्रो गानलीनो गतिप्रियः।
गानाधीशो गानलयो गानाधारो गतीश्वरः॥५६॥

गानवन्मानदो गानभूतिर्गानैकभूतिमान्।
गानताननतो गानतानदानविमोहितः॥५७॥

गुरुर्गुरुदरश्रोणिर्गुरुतत्त्वार्थदर्शनः।
गुरुस्तुतो गुरुगुणो गुरुमायो गुरुप्रियः॥५८॥

गुरुकीर्तिर्गुरुभुजो गुरुवक्षा गुरुप्रभः।
गुरुलक्षणसम्पन्नो गुरुद्रोहपराङ्मुखः॥५९॥

गुरुविद्यो गुरुप्राणो गुरुबाहुबलोच्छ्रयः।
गुरुदैत्यप्राणहरो गुरुदैत्यापहारकः॥६०॥

गुरुगर्वहरो गुह्यप्रवरो गुरुदर्पहा।
गुरुगौरवदायी च गुरुभीत्यपहारकः॥६१॥

गुरुशुण्डो गुरुस्कन्धो गुरुजङ्घो गुरुप्रथः।
गुरुभालो गुरुगलो गुरुश्रीर्गुरुगर्वनुत्॥६२॥

गुरूरुर्गुरुपीनांसो गुरुप्रणयलालसः।
गुरुमुख्यो गुरुकुलस्थायी गुरुगुणः सदा॥ ६३॥

गुरुसंशयभेत्ता च गुरुमानप्रदायकः।
गुरुधर्मसदाराध्यो गुरुधर्मनिकेतनः॥ ६४॥

गुरुदैत्यकुलच्छेत्ता गुरुसैन्यो गुरुद्युतिः॥ ६५॥

गुरुधर्माग्रगण्योऽथ गुरुधर्मधुरन्धरः।
गरिष्ठो गुरुसन्तापशमनो गुरुपूजितः॥ ६६॥

गुरुधर्मधरो गौरधर्माधारो गदापहः।
गुरुशास्त्रविचारज्ञो गुरुशास्त्रकृतोद्यमः॥ ६७॥

गुरुशास्त्रार्थनिलयो गुरुशास्त्रालयः सदा।
गुरुमन्त्रो गुरुश्रेष्ठो गुरुमन्त्रफलप्रदः॥ ६८॥

गुरुस्त्रीगमनोद्दामप्रायश्चित्तनिवारकः।
गुरुसंसारसुखदो गुरुसंसारदुःखभित्॥ ६९॥

गुरुश्लाघापरो गौरभानुखण्डावतंसभृत्।
गुरुप्रसन्नमूर्तिश्च गुरुशापविमोचकः॥ ७०॥

गुरुकान्तिर्गुरुमयो गुरुशासनपालकः।
गुरुतन्त्रो गुरुप्रज्ञो गुरुभो गुरुदैवतम्॥ ७१॥

गुरुविक्रमसञ्चारो गुरुदृग्गुरुविक्रमः।
गुरुक्रमो गुरुप्रेष्ठो गुरुपाखण्डखण्डकः॥ ७२॥

गुरुगर्जितसम्पूर्णब्रह्माण्डो गुरुगर्जितः।
गुरुपुत्रप्रियसखो गुरुपुत्रभयापहः॥ ७३॥

गुरुपुत्रपरित्राता गुरुपुत्रवरप्रदः।
गुरुपुत्रार्तिशमनो गुरुपुत्राधिनाशनः॥ ७४॥

गुरुपुत्रप्राणदाता गुरुभक्तिपरायणः।
गुरुविज्ञानविभवो गौरभानुवरप्रदः॥ ७५॥

गौरभानुस्तुतो गौरभानुत्रासापहारकः।
गौरभानुप्रियो गौरभानुर्गौरववर्धनः॥ ७६॥

गौरभानुपरित्राता गौरभानुसखः सदा।
गौरभानुर्प्रभुर्गौरभानुभीतिप्रणाशनः ॥ ७७॥

गौरीतेजःसमुत्पन्नो गौरीहृदयनन्दनः।
गौरीस्तनन्धयो गौरीमनोवाञ्छितसिद्धिकृत्॥ ७८॥

गौरो गौरगुणो गौरप्रकाशो गौरभैरवः।
गौरीशनन्दनो गौरीप्रियपुत्रो गदाधरः॥ ७९॥

गौरीवरप्रदो गौरीप्रणयो गौरसच्छविः।
गौरीगणेश्वरो गौरीप्रवणो गौरभावनः॥ ८०॥

गौरात्मा गौरकीर्तिश्च गौरभावो गरिष्ठदृक्।
गौतमो गौतमीनाथो गौतमीप्राणवल्लभः॥ ८१॥

गौतमाभीष्टवरदो गौतमाभयदायकः।
गौतमप्रणयप्रह्वो गौतमाश्रमदुःखहा॥ ८२॥

गौतमीतीरसञ्चारी गौतमीतीर्थनायकः।
गौतमापत्परिहारो गौतमाधिविनाशनः ॥ ८३ ॥

गोपतिर्गोधनो गोपो गोपालप्रियदर्शनः।
गोपालो गोगणाधीशो गोकश्मलनिवर्तकः ॥ ८४ ॥

गोसहस्रो गोपवरो गोपगोपीसुखावहः।
गोवर्धनो गोपगोपो गोपो गोकुलवर्धनः ॥ ८५ ॥

गोचरो गोचराध्यक्षो गोचरप्रीतिवृद्धिकृत्।
गोमी गोकष्टसन्त्राता गोसन्तापनिवर्तकः ॥ ८६ ॥

गोष्ठो गोष्ठाश्रयो गोष्ठपतिर्गोधनवर्धनः।
गोष्ठप्रियो गोष्ठमयो गोष्ठामयनिवर्तकः ॥ ८७ ॥

गोलोको गोलको गोभृद्गोभर्ता गोसुखावहः।
गोधुग्गोधुग्गणप्रेष्ठो गोदोग्धा गोमयप्रियः ॥ ८८ ॥

गोत्रं गोत्रपतिर्गोत्रप्रभुर्गोत्रभयापहः।
गोत्रवृद्धिकरो गोत्रप्रियो गोत्रार्तिनाशनः ॥ ८९ ॥

गोत्रोद्धारपरो गोत्रप्रवरो गोत्रदैवतम्।
गोत्रविख्यातनामा च गोत्री गोत्रप्रपालकः ॥ ९० ॥

गोत्रसेतुर्गोत्रकेतुर्गोत्रहेतुर्गतक्लमः ।
गोत्रत्राणकरो गोत्रपतिर्गोत्रेशपूजितः ॥ ९१ ॥

गोत्रभिद्गोत्रभित्त्राता गोत्रभिद्वरदायकः।
गोत्रभित्पूजितपदो गोत्रभिच्छत्रुसूदनः ॥ ९२ ॥

गोत्रभित्प्रीतिदो नित्यं गोत्रभिद्गोत्रपालकः।
गोत्रभिद्गीतचरितो गोत्रभिद्राज्यरक्षकः॥९३॥

गोत्रभिज्जयदायी च गोत्रभित्प्रणयः सदा।
गोत्रभिद्भयसम्भेत्ता गोत्रभिन्मानदायकः॥९४॥

गोत्रभिद्गोपनपरो गोत्रभित्सैन्यनायकः।
गोत्राधिपप्रियो गोत्रपुत्रीपुत्रो गिरिप्रियः॥९५॥

ग्रन्थज्ञो ग्रन्थकृद्ग्रन्थग्रन्थिभिद्ग्रन्थविघ्नहा।
ग्रन्थादिर्ग्रन्थसञ्चारो ग्रन्थश्रवणलोलुपः॥९६॥

ग्रन्थादीनक्रियो ग्रन्थप्रियो ग्रन्थार्थतत्त्ववित्।
ग्रन्थसंशयसञ्छेदी ग्रन्थवक्ता ग्रहाग्रणीः॥९७॥

ग्रन्थगीतगुणो ग्रन्थगीतो ग्रन्थादिपूजितः।
ग्रन्थारम्भस्तुतो ग्रन्थग्राही ग्रन्थार्थपारदृक्॥९८॥

ग्रन्थदृग्ग्रन्थविज्ञानो ग्रन्थसन्दर्भशोधकः।
ग्रन्थकृत्पूजितो ग्रन्थकरो ग्रन्थपरायणः॥९९॥

ग्रन्थपारायणपरो ग्रन्थसन्देहभञ्जकः।
ग्रन्थकृद्वरदाता च ग्रन्थकृद्वन्दितः सदा॥१००॥

ग्रन्थानुरक्तो ग्रन्थज्ञो ग्रन्थानुग्रहदायकः।
ग्रन्थान्तरात्मा ग्रन्थार्थपण्डितो ग्रन्थसौहृदः॥१०१॥

ग्रन्थपारङ्गमो ग्रन्थगुणविद्ग्रन्थविग्रहः।
ग्रन्थसेतुर्ग्रन्थहेतुर्ग्रन्थकेतुर्ग्रहाग्रगः॥१०२॥

ग्रन्थपूज्यो ग्रन्थगेयो ग्रन्थग्रथनलालसः।
ग्रन्थभूमिर्ग्रहश्रेष्ठो ग्रहकेतुर्ग्रहाश्रयः॥ १०३॥

ग्रन्थकारो ग्रन्थकारमान्यो ग्रन्थप्रसारकः।
ग्रन्थश्रमज्ञो ग्रन्थाङ्गो ग्रन्थभ्रमनिवारकः॥ १०४॥

ग्रन्थप्रवणसर्वाङ्गो ग्रन्थप्रणयतत्परः।
गीतं गीतगुणो गीतकीर्तिर्गीतविशारदः॥ १०५॥

गीतस्फीतयशा गीतप्रणयो गीतचञ्चुरः।
गीतप्रसन्नो गीतात्मा गीतलोलो गतस्पृहः॥ १०६॥

गीताश्रयो गीतमयो गीततत्त्वार्थकोविदः।
गीतसंशयसञ्छेत्ता गीतसङ्गीतशासनः॥ १०७॥

गीतार्थज्ञो गीततत्त्वो गीतातत्त्वं गताश्रयः।
गीतासारोऽथ गीताकृद्गीताकृद्विघ्ननाशनः॥ १०८॥

गीताशक्तो गीतलीनो गीताविगतसञ्ज्वरः।
गीतैकदृग्गीतभूतिर्गीतप्रीतो गतालसः॥ १०९॥

गीतवाद्यपटुर्गीतप्रभुर्गीतार्थतत्त्ववित्।
गीतागीतविवेकज्ञो गीताप्रवणचेतनः॥ ११०॥

गतभीर्गतविद्वेषो गतसंसारबन्धनः।
गतमायो गतत्रासो गतदुःखो गतज्वरः॥ १११॥

गतासुहृद्गतज्ञानो गतदुष्टाशयो गतः।
गतार्तिर्गतसङ्कल्पो गतदुष्टविचेष्टितः॥ ११२॥

गताहङ्कारसञ्चारो गतदर्पो गताहितः।
गतविघ्नो गतभयो गतागतनिवारकः॥ ११३॥

गतव्यथो गतापायो गतदोषो गतेः परः।
गतसर्वविकारोऽथ गतगञ्जितकुञ्जरः॥ ११४॥

गतकम्पितभूपृष्ठो गतरुग्गतकल्मषः।
गतदैन्यो गतस्तैन्यो गतमानो गतश्रमः॥ ११५॥

गतक्रोधो गतग्लानिर्गतम्लानो गतभ्रमः।
गताभावो गतभवो गततत्त्वार्थसंशयः॥ ११६॥

गयासुरशिरश्छेत्ता गयासुरवरप्रदः।
गयावासो गयानाथो गयावासिनमस्कृतः॥ ११७॥

गयातीर्थफलाध्यक्षो गयायात्राफलप्रदः।
गयामयो गयाक्षेत्रं गयाक्षेत्रनिवासकृत्॥ ११८॥

गयावासिस्तुतो गयान्मधुव्रतलसत्कटः।
गायको गायकवरो गायकेष्टफलप्रदः॥ ११९॥

गायकप्रणयी गाता गायकाभयदायकः।
गायकप्रवणस्वान्तो गायकः प्रथमः सदा॥ १२०॥

गायकोद्गीतसम्प्रीतो गायकोत्कटविघ्नहा।
गानगेयो गानकेशो गायकान्तरसञ्चरः॥ १२१॥

गायकप्रियदः शश्वद्गायकाधीनविग्रहः।
गेयो गेयगुणो गेयचरितो गेयतत्त्ववित्॥ १२२॥

गायकत्रासहा ग्रन्थो ग्रन्थतत्त्वविवेचकः।
गाढानुरागो गाढाङ्गो गाढगङ्गाजलोऽन्वहम्॥ १२३॥

गाढावगाढजलधिर्गाढप्रज्ञो गतामयः।
गाढप्रत्यर्थिसैन्योऽथ गाढानुग्रहतत्परः॥ १२४॥

गाढश्लेषरसाभिज्ञो गाढनिर्वृतिसाधकः।
गङ्गाधरेष्टवरदो गङ्गाधरभयापहः॥ १२५॥

गङ्गाधरगुरुर्गङ्गाधरध्यातपदः सदा।
गङ्गाधरस्तुतो गङ्गाधराराध्यो गतस्मयः॥ १२६॥

गङ्गाधरप्रियो गङ्गाधरो गङ्गाम्बुसुन्दरः।
गङ्गाजलरसास्वादचतुरो गाङ्गतीरयः॥ १२७॥

गङ्गाजलप्रणयवान् गङ्गातीरविहारकृत्।
गङ्गाप्रियो गङ्गाजलावगाहनपरः सदा॥ १२८॥

गन्धमादनसंवासो गन्धमादनकेलिकृत्।
गन्धानुलिप्तसर्वाङ्गो गन्धलुब्धमधुव्रतः॥ १२९॥

गन्धो गन्धर्वराजोऽथ गन्धर्वप्रियकृत् सदा।
गन्धर्वविद्यातत्त्वज्ञो गन्धर्वप्रीतिवर्धनः॥ १३०॥

गकारबीजनिलयो गकारो गर्विगर्वनुत्।
गन्धर्वगणसंसेव्यो गन्धर्ववरदायकः॥ १३१॥

गन्धर्वो गन्धमातङ्गो गन्धर्वकुलदैवतम्।
गन्धर्वगर्वसञ्छेत्ता गन्धर्ववरदर्पहा॥ १३२॥

गन्धर्वप्रवणस्वान्तो गन्धर्वगणसंस्तुतः।
गन्धर्वार्चितपादाब्जो गन्धर्वभयहारकः॥ १३३॥

गन्धर्वाभयदः शश्वद्गन्धर्वप्रतिपालकः।
गन्धर्वगीतचरितो गन्धर्वप्रणयोत्सुकः॥ १३४॥

गन्धर्वगानश्रवणप्रणयी गर्वभञ्जनः।
गन्धर्वत्राणसन्नद्धो गन्धर्वसमरक्षमः॥ १३५॥

गन्धर्वस्त्रीभिराराध्यो गानं गानपटुः सदा।
गच्छो गच्छपतिर्गच्छनायको गच्छगर्वहा॥ १३६॥

गच्छराजोऽथ गच्छेशो गच्छराजनमस्कृतः।
गच्छप्रियो गच्छगुरुर्गच्छत्राणकृतोद्यमः॥ १३७॥

गच्छप्रभुर्गच्छचरो गच्छप्रियकृतोद्यमः।
गच्छगीतगुणो गच्छमर्यादाप्रतिपालकः॥ १३८॥

गच्छधाता गच्छभर्ता गच्छवन्द्यो गुरोर्गुरुः।
गृत्सो गृत्समदो गृत्समदाभीष्टवरप्रदः॥ १३९॥

गीर्वाणगीतचरितो गीर्वाणगणसेवितः।
गीर्वाणवरदाता च गीर्वाणभयनाशकृत्॥ १४०॥

गीर्वाणगुणसंवीतो गीर्वाणारातिसूदनः।
गीर्वाणधाम गीर्वाणगोप्ता गीर्वाणगर्वहृत्॥ १४१॥

गीर्वाणार्तिहरो नित्यं गीर्वाणवरदायकः।
गीर्वाणशरणं गीतनामा गीर्वाणसुन्दरः॥ १४२॥

गीर्वाणप्राणदो गन्ता गीर्वाणानीकरक्षकः।
गुहेहापूरको गन्धमत्तो गीर्वाणपुष्टिदः॥ १४३॥

गीर्वाणप्रयुतत्राता गीतगोत्रो गताहितः।
गीर्वाणसेवितपदो गीर्वाणप्रथितो गलत्॥ १४४॥

गीर्वाणगोत्रप्रवरो गीर्वाणफलदायकः।
गीर्वाणप्रियकर्ता च गीर्वाणागमसारवित्॥ १४५॥

गीर्वाणागमसम्पत्तिर्गीर्वाणव्यसनापहः।
गीर्वाणप्रणयो गीतग्रहणोत्सुकमानसः॥ १४६॥

गीर्वाणभ्रमसम्भेत्ता गीर्वाणगुरुपूजितः।
ग्रहो ग्रहपतिर्ग्राहो ग्रहपीडाप्रणाशनः॥ १४७॥

ग्रहस्तुतो ग्रहाध्यक्षो ग्रहेशो ग्रहदैवतम्।
ग्रहकृद्ग्रहभर्ता च ग्रहेशानो ग्रहेश्वरः॥ १४८॥

ग्रहाराध्यो ग्रहत्राता ग्रहगोप्ता ग्रहोत्कटः।
ग्रहगीतगुणो ग्रन्थप्रणेता ग्रहवन्दितः॥ १४९॥

गवी गवीश्वरो गर्वी गर्विष्ठो गर्विगर्वहा।
गवाम्प्रियो गवान्नाथो गवीशानो गवाम्पती॥ १५०॥

गव्यप्रियो गवाङ्गोप्ता गविसम्पत्तिसाधकः।
गविरक्षणसन्नद्धो गवाम्भयहरः क्षणात्॥ १५१॥

गविगर्वहरो गोदो गोप्रदो गोजयप्रदः।
गजायुतबलो गण्डगुञ्जन्मत्तमधुव्रतः॥ १५२॥

गण्डस्थललसद्दानमिलन्मत्तालिमण्डितः।
गुडो गुडप्रियो गुण्डगलद्दानो गुडाशनः॥ १५३॥

गुडाकेशो गुडाकेशसहायो गुडलड्डुभुक्।
गुडभुग्गुडभुग्गणयो गुडाकेशवरप्रदः॥ १५४॥

गुडाकेशार्चितपदो गुडाकेशसखः सदा।
गदाधरार्चितपदो गदाधरवरप्रदः॥ १५५॥

गदायुधो गदापाणिर्गदायुद्धविशारदः।
गदहा गदर्दपघ्नो गदगर्वप्रणाशनः॥ १५६॥

गदग्रस्तपरित्राता गदाडम्बरखण्डकः।
गुहो गुहाग्रजो गुप्तो गुहाशायी गुहाशयः॥ १५७॥

गुहप्रीतिकरो गूढो गूढगुल्फो गुणैकदृक्।
गीर्गीष्पतिर्गिरीशानो गीर्देवीगीतसद्गुणः॥ १५८॥

गीर्देवो गीष्प्रियो गीर्भूर्गीरात्मा गीष्प्रियङ्करः।
गीर्भूमिर्गीरसन्नोऽथ गीःप्रसन्नो गिरीश्वरः॥ १५९॥

गिरीशजो गिरौशायी गिरिराजसुखावहः।
गिरिराजार्चितपदो गिरिराजनमस्कृतः॥ १६०॥

गिरिराजगुहाविष्टो गिरिराजाभयप्रदः।
गिरिराजेष्टवरदो गिरिराजप्रपालकः॥ १६१॥

गिरिराजसुतासूनुर्गिरिराजजयप्रदः।
गिरिव्रजवनस्थायी गिरिव्रजचरः सदा॥ १६२॥

गर्गो गर्गप्रियो गर्गदेहो गर्गनमस्कृतः।
गर्गभीतिहरो गर्गवरदो गर्गसंस्तुतः॥ १६३॥

गर्गगीतप्रसन्नात्मा गर्गानन्दकरः सदा।
गर्गप्रियो गर्गमानप्रदो गर्गारिभञ्जकः॥ १६४॥

गर्गवर्गपरित्राता गर्गसिद्धिप्रदायकः।
गर्गग्लानिहरो गर्गभ्रमहृद्गर्गसङ्गतः॥ १६५॥

गर्गाचार्यो गर्गमुनिर्गर्गसम्मानभाजनः।
गम्भीरो गणितप्रज्ञो गणितागमसारवित्॥ १६६॥

गणको गणकश्लाघ्यो गणकप्रणयोत्सुकः।
गणकप्रवणस्वान्तो गणितो गणितागमः॥ १६७॥

गद्यं गद्यमयो गद्यपद्यविद्याविशारदः।
गललग्नमहानागो गलदर्चिर्गलन्मदः॥ १६८॥

गलत्कुष्ठिव्यथाहन्ता गलत्कुष्ठिसुखप्रदः।
गम्भीरनाभिर्गम्भीरस्वरो गम्भीरलोचनः॥ १६९॥

गम्भीरगुणसम्पन्नो गम्भीरगतिशोभनः।
गर्भप्रदो गर्भरूपो गर्भापद्विनिवारकः॥ १७०॥

गर्भागमनसन्नाशो गर्भदो गर्भशोकनुत्।
गर्भत्राता गर्भगोप्ता गर्भपुष्टिकरः सदा॥ १७१॥

गर्भाश्रयो गर्भमयो गर्भामयनिवारकः।
गर्भाधारो गर्भधरो गर्भसन्तोषसाधकः॥ १७२॥

गर्भगौरवसन्धानसन्धानं गर्भवर्गहृत्।
गरीयान् गर्वनुद्गर्वमर्दी गरदमर्दकः॥ १७३॥

गरसन्तापशमनो गुरुराज्यसुखप्रदः।

॥ फलश्रुतिः ॥

नाम्नां सहस्रमुदितं महद्गणपतेरिदम्॥ १७४॥

गकारादि जगद्वन्द्यं गोपनीयं प्रयत्नतः।
य इदं प्रयतः प्रातस्त्रिसन्ध्यं वा पठेन्नरः॥ १७५॥

वाञ्छितं समवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् धनार्थी लभते धनम्॥ १७६॥

विद्यार्थी लभते विद्यां सत्यं सत्यं न संशयः।
भूर्जत्वचि समालिख्य कुङ्कुमेन समाहितः॥ १७७॥

चतुर्थां भौमवारो च चन्द्रसूर्योपरागके।
पूजयित्वा गणधीशं यथोक्तविधिना पुरा॥ १७८॥

पूजयेद्यो यथाशक्त्या जुहुयाच्च शमीदलैः।
गुरुं सम्पूज्य वस्त्राद्यैः कृत्वा चापि प्रदक्षिणम्॥ १७९॥

धारयेद्यः प्रयत्नेन स साक्षाद्गणनायकः।
सुराश्चासुरवर्याश्च पिशाचाः किन्नरोरगः॥ १८०॥

प्रणमन्ति सदा तं वै दुष्ट्वा विस्मितमानसाः।
राजा सपदि वश्यः स्यात् कामिन्यस्तद्वशो स्थिराः॥ १८१॥

तस्य वंशो स्थिरा लक्ष्मीः कदाऽपि न विमुञ्चति।
निष्कामो यः पठेदेतद्गणेश्वरपरायणः॥ १८२॥

स प्रतिष्ठां परां प्राप्य निजलोकमवाप्नुयात्।
इदं ते कीर्तितं नाम्नां सहस्रं देवि पावनम्॥ १८३॥

न देयं कृपणायाथ शठाय गुरुविद्विषे।
दत्त्वा च भ्रंशमाप्नोति देवतायाः प्रकोपतः॥ १८४॥

इति श्रुत्वा महादेवी तदा विस्मितमानसा।
पूजयामास विधिवद्गणेश्वरपदद्वयम्॥ १८५॥

॥ इति श्री-रुद्रयामले महागुप्तसारे शिवपार्वतीसंवादे गकारादि श्री-गणपतिसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ वक्रतुण्डमहागणपतिसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

मुनिरुवाच

कथं नाम्नां सहस्रं तं गणेश उपदिष्टवान्।
शिवदं तन्ममाचक्ष्व लोकानुग्रहतत्पर॥ १ ॥

ब्रह्मोवाच

देवः पूर्वं पुरारातिः पुरत्रयजयोद्यमे।
अनर्चनाद्गणेशस्य जातो विघ्नाकुलः किल॥ २ ॥

मनसा स विनिर्धार्य ददृशे विघ्नकारणम्।
महागणपतिं भक्त्या समभ्यर्च्य यथाविधि॥ ३ ॥

विघ्नप्रशमनोपायमपृच्छदपरिश्रमम्।
सन्तुष्टः पूजया शम्भोर्महागणपतिः स्वयम्॥ ४ ॥

सर्वविघ्नप्रशमनं सर्वकामफलप्रदम्।
ततस्तस्मै स्वयं नाम्नां सहस्रमिदमब्रवीत्॥ ५ ॥

अस्य श्रीवक्रतुण्डमहागणपतिसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य
महागणपतिर्ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। महागणपतिर्देवता।
गं बीजम्। हुं शक्तिः। स्वाहा कीलकम्।
चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

॥ करन्यासः ॥

गणेश्वरो गणक्रीड इत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
कुमारगुरुरीशान इति तर्जनीभ्यां नमः।

ब्रह्माण्डकुम्भश्चिद्व्योमेति मध्यमाभ्यां नमः।
रक्तो रक्ताम्बरधर इत्यनामिकाभ्यां नमः।
सर्वसद्गुरुसंसेव्य इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
लुप्तविघ्नः स्वभक्तानामिति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

॥ हृदयादिन्यासः ॥

छन्दश्छन्दोद्भव इति हृदयाय नमः।
निष्कलो निर्मल इति शिरसे स्वाहा।
सृष्टिस्थितिलयक्रीड इति शिखायै वषट्।
ज्ञानं विज्ञानमानन्द इति कवचाय हुम्।
अष्टाङ्गयोगफलभृदिति नेत्रत्रयाय वौषट्।
अनन्तशक्तिसहित इत्यस्त्राय फट्।
भूर्भुवः स्वरोम् इति दिग्बन्धः।

॥ ध्यानम् ॥

गजवदनमचिन्त्यं तीक्ष्णदंष्ट्रं त्रिनेत्रम्
बृहदुदरमशेषं भूतिराजं पुराणम्।
अमरवरसुपूज्यं रक्तवर्णं सुरेशम्
पशुपतिसुतमीशं विघ्नराजं नमामि॥

खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरम्
प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम्।
दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरम्
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्॥

सकलविघ्नविनाशनद्वारा श्रीमहागणपतिप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

॥ स्तोत्रम् ॥

श्रीगणपतिरुवाच

ॐ गणेश्वरो गणक्रीडो गणनाथो गणाधिपः।
एकदन्तो वक्रतुण्डो गजवक्त्रो महोदरः॥ १ ॥

लम्बोदरो धूम्रवर्णो विकटो विघ्ननाशनः।
सुमुखो दुर्मुखो बुद्धो विघ्नराजो गजाननः॥ २ ॥

भीमः प्रमोद आमोदः सुरानन्दो मदोत्कटः।
हेरम्बः शम्बरः शम्भुर्लम्बकर्णो महाबलः॥ ३ ॥

नन्दनो लम्पटो भीमो मेघनादो गणञ्जयः।
विनायको विरूपाक्षो वीरः शूरवरप्रदः॥ ४ ॥

महागणपतिर्बुद्धिप्रियः क्षिप्रप्रसादनः।
रुद्रप्रियो गणाध्यक्ष उमापुत्रोऽघनाशनः॥ ५ ॥

कुमारगुरुरीशानपुत्रो मूषकवाहनः।
सिद्धिप्रियः सिद्धिपतिः सिद्धः सिद्धिविनायकः॥ ६ ॥

अविघ्नस्तुम्बुरुः सिंहवाहनो मोहिनीप्रियः।
कटङ्कटो राजपुत्रः शाकलः सम्मितोऽमितः॥ ७ ॥

कूष्माण्डसामसम्भूतिर्दुर्जयो धूर्जयो जयः।
भूपतिर्भुवनपतिर्भूतानां पतिरव्ययः॥ ८ ॥

विश्वकर्ता विश्वमुखो विश्वरूपो निधिर्गुणः।
कविः कवीनामृषभो ब्रह्मण्यो ब्रह्मवित्प्रियः॥ ९ ॥

ज्येष्ठराजो निधिपतिर्निधिप्रियपतिप्रियः।
हिरण्मयपुरान्तःस्थः सूर्यमण्डलमध्यगः॥ १०॥

कराहतिध्वस्तसिन्धुसलिलः पूषदन्तभित्।
उमाङ्ककेलिकुतुकी मुक्तिदः कुलपावनः॥ ११॥

किरीटी कुण्डली हारी वनमाली मनोमयः।
वैमुख्यहतदैत्यश्रीः पादाहतिजितक्षितिः॥ १२॥

सद्योजातः स्वर्णमुञ्जमेखली दुर्निमित्तहृत्।
दुःस्वप्नहृत्प्रसहनो गुणी नादप्रतिष्ठितः॥ १३॥

सुरूपः सर्वनेत्राधिवासो वीरासनाश्रयः।
पीताम्बरः खण्डरदः खण्डवैशाखसंस्थितः॥ १४॥

चित्राङ्गः श्यामदशनो भालचन्द्रो हविर्भुजः।
योगाधिपस्तारकस्थः पुरुषो गजकर्णकः॥ १५॥

गणाधिराजो विजयः स्थिरो गजपतिर्ध्वजी।
देवदेवः स्मरः प्राणदीपको वायुकीलकः॥ १६॥

विपश्चिद्वरदो नादो नादभिन्नमहाचलः।
वराहरदनो मृत्युञ्जयो व्याघ्राजिनाम्बरः॥ १७॥

इच्छाशक्तिभवो देवत्राता दैत्यविमर्दनः।
शम्भुवक्त्रोद्भवः शम्भुकोपहा शम्भुहास्यभूः॥ १८॥

शम्भुतेजाः शिवाशोकहारी गौरीसुखावहः।
उमाङ्गमलजो गौरीतेजोभूः स्वर्धुनीभवः॥ १९॥

यज्ञकायो महानादो गिरिवर्ष्मा शुभाननः।
सर्वात्मा सर्वदेवात्मा ब्रह्ममूर्धा ककुप्श्रुतिः॥२०॥

ब्रह्माण्डकुम्भश्चिद्व्योमभालःसत्यशिरोरुहः।
जगज्जन्मलयोन्मेषनिमेषोऽग्न्यर्कसोमदृक् ॥२१॥

गिरीन्द्रैकरदो धर्माधर्मौष्ठः सामबृंहितः।
ग्रहर्क्षदशनो वाणीजिह्वो वासवनासिकः॥२२॥

भ्रूमध्यसंस्थितकरो ब्रह्मविद्यामदोदकः।
कुलाचलांसः सोमार्कघण्टो रुद्रशिरोधरः॥२३॥

नदीनदभुजः सर्पाङ्गुलीकस्तारकानखः।
व्योमनाभिः श्रीहृदयो मेरुपृष्ठोऽर्णवोदरः॥२४॥

कुक्षिस्थयक्षगन्धर्वरक्षःकिन्नरमानुषः।
पृथ्वीकटिः सृष्टिलिङ्गः शैलोरुर्दस्रजानुकः॥२५॥

पातालजङ्घो मुनिपात्कालाङ्गुष्ठस्त्रयीतनुः।
ज्योतिर्मण्डललाङ्गूलो हृदयालाननिश्चलः॥२६॥

हृत्पद्मकर्णिकाशाली वियत्केलिसरोवरः।
सद्भक्तध्याननिगडः पूजावारिनिवारितः॥२७॥

प्रतापी काश्यपो मन्ता गणको विष्टपी बली।
यशस्वी धार्मिको जेता प्रथमः प्रमथेश्वरः॥२८॥

चिन्तामणिर्द्वीपपतिः कल्पद्रुमवनालयः।
रत्नमण्डपमध्यस्थो रत्नसिंहासनाश्रयः॥२९॥

तीव्राशिरोद्धृतपदो ज्वालिनीमौलिलालितः।
नन्दानन्दितपीठश्रीर्भोगदो भूषितासनः॥ ३०॥

सकामदायिनीपीठः स्फुरदुग्रासनाश्रयः।
तेजोवतीशिरोरत्नं सत्यानित्यावतंसितः॥ ३१॥

सविघ्ननाशिनीपीठः सर्वशक्त्यम्बुजालयः।
लिपिपद्मासनाधारो वह्निधामत्रयालयः॥ ३२॥

उन्नतप्रपदो गूढगुल्फः संवृतपार्ष्णिकः।
पीनजङ्घः श्लिष्टजानुः स्थूलोरुः प्रोन्नमत्कटिः॥ ३३॥

निम्ननाभिः स्थूलकुक्षिः पीनवक्षा बृहद्भुजः।
पीनस्कन्धः कम्बुकण्ठो लम्बोष्ठो लम्बनासिकः॥ ३४॥

भग्नवामरदस्तुङ्गसव्यदन्तो महाहनुः।
ह्रस्वनेत्रत्रयः शूर्पकर्णो निबिडमस्तकः॥ ३५॥

स्तबकाकारकुम्भाग्रो रत्नमौलिर्निरङ्कुशः।
सर्पहारकटीसूत्रः सर्पयज्ञोपवीतवान्॥ ३६॥

सर्पकोटीरकटकः सर्पग्रैवेयकाङ्गदः।
सर्पकक्षोदराबन्धः सर्पराजोत्तरच्छदः॥ ३७॥

रक्तो रक्ताम्बरधरो रक्तमालाविभूषणः।
रक्तेक्षणो रक्तकरो रक्तताल्वोष्ठपल्लवः॥ ३८॥

श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेतमालाविभूषणः।
श्वेतातपत्ररुचिरः श्वेतचामरवीजितः॥ ३९॥

सर्वावयवसम्पूर्णः सर्वलक्षणलक्षितः।
सर्वाभरणशोभाढ्यः सर्वशोभासमन्वितः॥४०॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यः सर्वकारणकारणम्।
सर्वदेववरः शार्ङ्गी बीजपूरी गदाधरः॥४१॥

इक्षुचापधरः शूली चक्रपाणिः सरोजभृत्।
पाशी धृतोत्पलः शालिमञ्जरीभृत्स्वदन्तभृत्॥४२॥

कल्पवल्लीधरो विश्वाभयदैककरो वशी।
अक्षमालाधरो ज्ञानमुद्रावान् मुद्गरायुधः॥४३॥

पूर्णपात्री कम्बुधरो विधृताङ्कुशमूलकः।
करस्थाम्रफलश्चूतकलिकाभृत्कुठारवान्॥४४॥

पुष्करस्थस्वर्णघटीपूर्णरत्नाभिवर्षकः ।
भारतीसुन्दरीनाथो विनायकरतिप्रियः॥४५॥

महालक्ष्मीप्रियतमः सिद्धलक्ष्मीमनोरमः।
रमारमेशपूर्वाङ्गो दक्षिणोमामहेश्वरः॥४६॥

महीवराहवामाङ्गो रतिकन्दर्पपश्चिमः।
आमोदमोदजननः सम्प्रमोदप्रमोदनः॥४७॥

संवर्धितमहावृद्धिर्ऋद्धिसिद्धिप्रवर्धनः ।
दन्तसौमुख्यसुमुखः कान्तिकन्दलिताश्रयः॥४८॥

मदनावत्याश्रिताङ्घ्रिः कृतवैमुख्यदुर्मुखः।
विघ्नसम्पल्लवः पद्मः सर्वोन्नतमदद्रवः॥४९॥

विघ्नकृन्निम्नचरणो द्राविणीशक्तिसत्कृतः।
तीव्राप्रसन्ननयनो ज्वालिनीपालितैकदृक् ॥५०॥

मोहिनीमोहनो भोगदायिनीकान्तिमण्डनः।
कामिनीकान्तवक्त्रश्रीरधिष्ठितवसुन्धरः ॥५१॥

वसुधारामदोन्नादो महाशङ्खनिधिप्रियः।
नमद्वसुमतीमाली महापद्मनिधिः प्रभुः ॥५२॥

सर्वसद्गुरुसंसेव्यः शोचिष्केशहृदाश्रयः।
ईशानमूर्धा देवेन्द्रशिखः पवननन्दनः ॥५३॥

प्रत्युग्रनयनो दिव्यो दिव्यास्त्रशतपर्वधृक्।
ऐरावतादिसर्वाशावारणो वारणप्रियः ॥५४॥

वज्राद्यस्त्रपरीवारो गणचण्डसमाश्रयः।
जयाजयपरिकरो विजयाविजयावहः ॥५५॥

अजयार्चितपादाब्जो नित्यानन्दवनस्थितः।
विलासिनीकृतोल्लासः शौण्डी सौन्दर्यमण्डितः ॥५६॥

अनन्तानन्तसुखदः सुमङ्गलसुमङ्गलः।
ज्ञानाश्रयः क्रियाधार इच्छाशक्तिनिषेवितः ॥५७॥

सुभगासंश्रितपदो ललिताललिताश्रयः।
कामिनीपालनः कामकामिनीकेलिलालितः ॥५८॥

सरस्वत्याश्रयो गौरीनन्दनः श्रीनिकेतनः।
गुरुगुप्तपदो वाचासिद्धो वागीश्वरीपतिः ॥५९॥

नलिनीकामुको वामारामो ज्येष्ठामनोरमः।
रौद्रीमुद्रितपादाब्जो हुम्बीजस्तुङ्गशक्तिकः॥ ६०॥

विश्वादिजननत्राणः स्वाहाशक्तिः सकीलकः।
अमृताब्धिकृतावासो मदघूर्णितलोचनः॥ ६१॥

उच्छिष्टोच्छिष्टगणको गणेशो गणनायकः।
सार्वकालिकसंसिद्धिर्नित्यसेव्यो दिगम्बरः॥ ६२॥

अनपायोऽनन्तदृष्टिरप्रमेयोऽजरामरः ।
अनाविलोऽप्रतिहतिरच्युतोऽमृतमक्षरः॥ ६३॥

अप्रतर्क्योऽक्षयोऽजय्योऽनाधारोऽनामयोऽमलः।
अमेयसिद्धिरद्वैतमघोरोऽग्निसमाननः ॥ ६४॥

अनाकारोऽब्धिभूम्यग्निबलघ्नोऽव्यक्तलक्षणः।
आधारपीठमाधार आधाराधेयवर्जितः॥ ६५॥

आखुकेतन आशापूरक आखुमहारथः।
इक्षुसागरमध्यस्थ इक्षुभक्षणलालसः॥ ६६॥

इक्षुचापातिरेकश्रीरिक्षुचापनिषेवितः ।
इन्द्रगोपसमानश्रीरिन्द्रनीलसमद्युतिः॥ ६७॥

इन्दीवरदलश्याम इन्दुमण्डलमण्डितः।
इध्मप्रिय इडाभाग इडावानिन्दिराप्रियः॥ ६८॥

इक्ष्वाकुविघ्नविध्वंसी इतिकर्तव्यतेप्सितः।
ईशानमौलिरीशान ईशानप्रिय ईतिहा॥ ६९॥

ईषणात्रयकल्पान्त ईहामात्रविवर्जितः।
उपेन्द्र उडुभृन्मौलिरुडुनाथकरप्रियः॥ ७०॥

उन्नतानन उत्तुङ्ग उदारस्त्रिदशाग्रणीः।
ऊर्जस्वानूष्मलमद ऊहापोहदुरासदः॥ ७१॥

ऋग्यजुःसामनयन ऋद्धिसिद्धिसमर्पकः।
ऋजुचित्तैकसुलभो ऋणत्रयविमोचनः॥ ७२॥

लुप्तविघ्नः स्वभक्तानां लुप्तशक्तिः सुरद्विषाम्।
लुप्तश्रीर्विमुखार्चानां लूताविस्फोटनाशनः॥ ७३॥

एकारपीठमध्यस्थ एकपादकृतासनः।
एजिताखिलदैत्यश्रीरेधिताखिलसंश्रयः॥ ७४॥

ऐश्वर्यनिधिरैश्वर्यमैहिकामुष्मिकप्रदः।
ऐरम्मदसमोन्मेष ऐरावतसमाननः॥ ७५॥

ओङ्कारवाच्य ओङ्कार ओजस्वानोषधीपतिः।
औदार्यनिधिरौद्धत्यधैर्य औन्नत्यनिःसमः॥ ७६॥

अङ्कुशः सुरनागानामङ्कुशाकारसंस्थितः।
अः समस्तविसर्गान्तपदेषु परिकीर्तितः॥ ७७॥

कमण्डलुधरः कल्पः कपर्दी कलभाननः।
कर्मसाक्षी कर्मकर्ता कर्माकर्मफलप्रदः॥ ७८॥

कदम्बगोलकाकारः कूष्माण्डगणनायकः।
कारुण्यदेहः कपिलः कथकः कटिसूत्रभृत्॥ ७९॥

खर्वः खड्गप्रियः खड्गः खान्तान्तःस्थः खनिर्मलः।
खल्वाटशृङ्गनिलयः खट्वाङ्गी खदुरासदः ॥८०॥

गुणाढ्यो गहनो गद्यो गद्यपद्यसुधार्णवः।
गद्यगानप्रियो गर्जो गीतगीर्वाणपूर्वजः ॥८१॥

गुह्याचाररतो गुह्यो गुह्यागमनिरूपितः।
गुहाशयो गुडाब्धिस्थो गुरुगम्यो गुरुर्गुरुः ॥८२॥

घण्टाघर्घरिकामाली घटकुम्भो घटोदरः।
ङकारवाच्यो ङाकारो ङकाराकारशुण्डभृत् ॥८३॥

चण्डश्चण्डेश्वरश्चण्डी चण्डेशश्चण्डविक्रमः।
चराचरपिता चिन्तामणिश्चर्वणलालसः ॥८४॥

छन्दश्छन्दोद्भवश्छन्दो दुर्लक्ष्यश्छन्दविग्रहः।
जगद्योनिर्जगत्साक्षी जगदीशो जगन्मयः ॥८५॥

जप्यो जपपरो जाप्यो जिह्वासिंहासनप्रभुः।
स्रवद्गण्डोल्लसद्धानझङ्कारिभ्रमराकुलः ॥८६॥

टङ्कारस्फारसंरावष्टङ्कारमणिनूपुरः ।
ठद्वयीपल्लवान्तस्थसर्वमन्त्रेषु सिद्धिदः ॥८७॥

डिण्डिमुण्डो डाकिनीशो डामरो डिण्डिमप्रियः।
ढक्कानिनादमुदितो ढौङ्को ढुण्ढिविनायकः ॥८८॥

तत्त्वानां प्रकृतिस्तत्त्वं तत्त्वम्पदनिरूपितः।
तारकान्तरसंस्थानस्तारकस्तारकान्तकः ॥८९॥

स्थाणुः स्थाणुप्रियः स्थाता स्थावरं जङ्गमं जगत्।
दक्षयज्ञप्रमथनो दाता दानं दमो दया॥९०॥

दयावान्दिव्यविभवो दण्डभृद्दण्डनायकः।
दन्तप्रभिन्नाभ्रमालो दैत्यवारणदारणः॥९१॥

दंष्ट्रालग्नद्वीपघटो देवार्थनृगजाकृतिः।
धनं धनपतेर्बन्धुर्धनदो धरणीधरः॥९२॥

ध्यानैकप्रकटो ध्येयो ध्यानं ध्यानपरायणः।
ध्वनिप्रकृतिचीत्कारो ब्रह्माण्डावलिमेखलः॥९३॥

नन्द्यो नन्दिप्रियो नादो नादमध्यप्रतिष्ठितः।
निष्कलो निर्मलो नित्यो नित्यानित्यो निरामयः॥९४॥

परं व्योम परं धाम परमात्मा परं पदम्।
परात्परः पशुपतिः पशुपाशविमोचनः।
पूर्णानन्दः परानन्दः पुराणपुरुषोत्तमः॥९५॥

पद्मप्रसन्नवदनः प्रणताज्ञाननाशनः।
प्रमाणप्रत्ययातीतः प्रणतार्तिनिवारणः॥९६॥

फणिहस्तः फणिपतिः फूत्कारः फणितप्रियः।
बाणार्चिताङ्घ्रियुगलो बालकेलिकुतूहली।
ब्रह्म ब्रह्मार्चितपदो ब्रह्मचारी बृहस्पतिः॥९७॥

बृहत्तमो ब्रह्मपरो ब्रह्मण्यो ब्रह्मवित्प्रियः।
बृहन्नादाग्र्यचीत्कारो ब्रह्माण्डावलिमेखलः॥९८॥

भ्रूक्षेपदत्तलक्ष्मीको भर्गो भद्रो भयापहः।
भगवान् भक्तिसुलभो भूतिदो भूतिभूषणः॥९९॥

भव्यो भूतालयो भोगदाता भ्रूमध्यगोचरः।
मन्त्रो मन्त्रपतिर्मन्त्री मदमत्तो मनोरमः॥१००॥

मेखलाहीश्वरो मन्दगतिर्मन्दनिभेक्षणः।
महाबलो महावीर्यो महाप्राणो महामनाः॥१०१॥

यज्ञो यज्ञपतिर्यज्ञगोप्ता यज्ञफलप्रदः।
यशस्करो योगगम्यो याज्ञिको याजकप्रियः॥१०२॥

रसो रसप्रियो रस्यो रञ्जको रावणार्चितः।
राज्यरक्षाकरो रत्नगर्भो राज्यसुखप्रदः॥१०३॥

लक्षो लक्षपतिर्लक्ष्यो लयस्थो लड्डुकप्रियः।
लासप्रियो लास्यपरो लाभकृल्लोकविश्रुतः॥१०४॥

वरेण्यो वह्निवदनो वन्द्यो वेदान्तगोचरः।
विकर्ता विश्वतश्चक्षुर्विधाता विश्वतोमुखः॥१०५॥

वामदेवो विश्वनेता वज्रिवज्रनिवारणः।
विवस्वद्बन्धनो विश्वाधारो विश्वेश्वरो विभुः॥१०६॥

शब्दब्रह्म शमप्राप्यः शम्भुशक्तिगणेश्वरः।
शास्ता शिखाग्रनिलयः शरण्यः शम्बरेश्वरः॥१०७॥

षडृतुकुसुमस्रग्वी षडाधारः षडक्षरः।
संसारवैद्यः सर्वज्ञः सर्वभेषजभेषजम्॥१०८॥

सृष्टिस्थितिलयक्रीडः सुरकुञ्जरभेदकः।
सिन्दूरितमहाकुम्भः सदसद्भक्तिदायकः॥१०९॥

साक्षी समुद्रमथनः स्वयंवेद्यः स्वदक्षिणः।
स्वतन्त्रः सत्यसङ्कल्पः सामगानरतः सुखी॥ ११०॥

हंसो हस्तिपिशाचीशो हवनं हव्यकव्यभुक्।
हव्यं हुतप्रियो हृष्टो हृल्लेखामन्त्रमध्यगः॥ १११॥

क्षेत्राधिपः क्षमाभर्ता क्षमाक्षमपरायणः।
क्षिप्रक्षेमकरः क्षेमानन्दः क्षोणीसुरद्रुमः॥ ११२॥

धर्मप्रदोऽर्थदः कामदाता सौभाग्यवर्धनः।
विद्याप्रदो विभवदो भुक्तिमुक्तिफलप्रदः॥ ११३॥

आभिरूप्यकरो वीरश्रीप्रदो विजयप्रदः।
सर्ववश्यकरो गर्भदोषहा पुत्रपौत्रदः॥ ११४॥

मेधादः कीर्तिदः शोकहारी दौर्भाग्यनाशनः।
प्रतिवादिमुखस्तम्भो रुष्टचित्तप्रसादनः॥ ११५॥

पराभिचारशमनो दुःखहा बन्धमोक्षदः।
लवस्त्रुटिः कला काष्ठा निमेषस्तत्परक्षणः॥ ११६॥

घटी मुहूर्तः प्रहरो दिवा नक्तमहर्निशम्।
पक्षो मासर्त्वयनाब्दयुगं कल्पो महालयः॥ ११७॥

राशिस्तारा तिथिर्योगो वारः करणमंशकम्।
लग्नं होरा कालचक्रं मेरुः सप्तर्षयो ध्रुवः॥ ११८॥

राहुर्मन्दः कविर्जीवो बुधो भौमः शशी रविः।
कालः सृष्टिः स्थितिर्विश्वं स्थावरं जङ्गमं जगत्॥ ११९॥

भूरापोऽग्निर्मरुद्व्योमाहङ्कृतिः प्रकृतिः पुमान्।
ब्रह्मा विष्णुः शिवो रुद्र ईशः शक्तिः सदाशिवः॥ १२०॥

त्रिदशाः पितरः सिद्धा यक्षा रक्षांसि किन्नराः।
सिद्धविद्याधरा भूता मनुष्याः पशवः खगाः॥ १२१॥

समुद्राः सरितः शैला भूतं भव्यं भवोद्भवः।
साङ्ख्यं पातञ्जलं योगं पुराणानि श्रुतिः स्मृतिः॥ १२२॥

वेदाङ्गानि सदाचारो मीमांसा न्यायविस्तरः।
आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वं काव्यनाटकम्॥ १२३॥

वैखानसं भागवतं मानुषं पाञ्चरात्रकम्।
शैवं पाशुपतं कालामुखं भैरवशासनम्॥ १२४॥

शाक्तं वैनायकं सौरं जैनमार्हतसंहिता।
सदसद्व्यक्तमव्यक्तं सचेतनमचेतनम्॥ १२५॥

बन्धो मोक्षः सुखं भोगो योगः सत्यमणुर्महान्।
स्वस्ति हुम्फट् स्वधा स्वाहा श्रौषट् वौषट् वषण्णमः॥ १२६॥

ज्ञानं विज्ञानमानन्दो बोधः संवित्समोऽसमः।
एक एकाक्षराधार एकाक्षरपरायणः॥ १२७॥

एकाग्रधीरेकवीर एकोऽनेकस्वरूपधृक्।
द्विरूपो द्विभुजो द्व्यक्षो द्विरदो द्वीपरक्षकः॥ १२८॥

द्वैमातुरो द्विवदनो द्वन्द्वहीनो द्वयातिगः।
त्रिधामा त्रिकरस्त्रेता त्रिवर्गफलदायकः॥ १२९॥

त्रिगुणात्मा त्रिलोकादिस्त्रिशक्तीशस्त्रिलोचनः।
चतुर्विधवचोवृत्तिपरिवृत्तिप्रवर्तकः ॥१३०॥

चतुर्बाहुश्चतुर्दन्तश्चतुरात्मा चतुर्भुजः।
चतुर्विधोपायमयश्चतुर्वर्णाश्रमाश्रयः ॥१३१॥

चतुर्थीपूजनप्रीतश्चतुर्थीतिथिसम्भवः ।
पञ्चाक्षरात्मा पञ्चात्मा पञ्चास्यः पञ्चकृत्तमः॥१३२॥

पञ्चाधारः पञ्चवर्णः पञ्चाक्षरपरायणः।
पञ्चतालः पञ्चकरः पञ्चप्रणवमातृकः॥१३३॥

पञ्चब्रह्ममयस्फूर्तिः पञ्चावरणवारितः।
पञ्चभक्षप्रियः पञ्चबाणः पञ्चशिवात्मकः॥१३४॥

षट्कोणपीठः षट्चक्रधामा षड्ग्रन्थिभेदकः।
षडङ्गध्वान्तविध्वंसी षडङ्गुलमहाह्रदः॥१३५॥

षण्मुखः षण्मुखभ्राता षट्शक्तिपरिवारितः।
षड्वैरिवर्गविध्वंसी षडूर्मिभयभञ्जनः॥१३६॥

षट्तर्कदूरः षट्कर्मा षड्गुणः षड्रसाश्रयः।
सप्तपातालचरणः सप्तद्वीपोरुमण्डलः॥१३७॥

सप्तस्वर्लोकमुकुटः सप्तसप्तिवरप्रदः।
सप्ताङ्गराज्यसुखदः सप्तर्षिगणवन्दितः॥१३८॥

सप्तच्छन्दोनिधिः सप्तहोत्रः सप्तस्वराश्रयः।
सप्ताब्धिकेलिकासारः सप्तमातृनिषेवितः॥१३९॥

सप्तच्छन्दो मोदमदः सप्तच्छन्दो मखप्रभुः ।
अष्टमूर्तिर्ध्येयमूर्तिरष्टप्रकृतिकारणम् ॥ १४० ॥

अष्टाङ्गयोगफलभृदष्टपत्राम्बुजासनः ।
अष्टशक्तिसमानश्रीरष्टैश्वर्यप्रवर्धनः ॥ १४१ ॥

अष्टपीठोपपीठश्रीरष्टमातृसमावृतः ।
अष्टभैरवसेव्योऽष्टवसुवन्द्योऽष्टमूर्तिभृत् ॥ १४२ ॥

अष्टचक्रस्फुरन्मूर्तिरष्टद्रव्यहविःप्रियः ।
अष्टश्रीरष्टसामश्रीरष्टैश्वर्यप्रदायकः ।
नवनागासनाध्यासी नवनिध्यनुशासितः ॥ १४३ ॥

नवद्वारपुरावृत्तो नवद्वारनिकेतनः ।
नवनाथमहानाथो नवनागविभूषितः ॥ १४४ ॥

नवनारायणस्तुल्यो नवदुर्गानिषेवितः ।
नवरत्नविचित्राङ्गो नवशक्तिशिरोद्धृतः ॥ १४५ ॥

दशात्मको दशभुजो दशदिक्पतिवन्दितः ।
दशाध्यायो दशप्राणो दशेन्द्रियनियामकः ॥ १४६ ॥

दशाक्षरमहामन्त्रो दशाशाव्यापिविग्रहः ।
एकादशमहारुद्रैःस्तुतश्चैकादशाक्षरः ॥ १४७ ॥

द्वादशद्विदशाष्टादिदोर्दण्डास्त्रनिकेतनः ।
त्रयोदशभिदाभिन्नो विश्वेदेवाधिदैवतम् ॥ १४८ ॥

चतुर्दशेन्द्रवरदश्चतुर्दशमनुप्रभुः ।
चतुर्दशाद्यविद्याढ्यश्चतुर्दशजगत्पतिः ॥ १४९ ॥

सामपञ्चदशः पञ्चदशीशीतांशुनिर्मलः।
तिथिपञ्चदशाकारस्तिथ्या पञ्चदशार्चितः॥ १५०॥

षोडशाधारनिलयः षोडशस्वरमातृकः।
षोडशान्तपदावासः षोडशेन्दुकलात्मकः॥ १५१॥

कलासप्तदशी सप्तदशसप्तदशाक्षरः।
अष्टादशद्वीपपतिरष्टादशपुराणकृत्॥ १५२॥

अष्टादशौषधीसृष्टिरष्टादशविधिः स्मृतः।
अष्टादशलिपिव्यष्टिसमष्टिज्ञानकोविदः॥ १५३॥

अष्टादशान्नसम्पत्तिरष्टादशविजातिकृत्।
एकविंशः पुमानेकविंशत्यङ्गुलिपल्लवः॥ १५४॥

चतुर्विंशतितत्त्वात्मा पञ्चविंशाख्यपूरुषः।
सप्तविंशतितारेशः सप्तविंशतियोगकृत्॥ १५५॥

द्वात्रिंशद्भैरवाधीशश्चतुस्त्रिंशन्महाह्रदः।
षट्त्रिंशत्तत्त्वसम्भूतिरष्टत्रिंशत्कलात्मकः॥ १५६॥

पञ्चाशद्विष्णुशक्तीशः पञ्चाशन्मातृकालयः।
द्विपञ्चाशद्वपुःश्रेणी त्रिषष्ट्यक्षरसंश्रयः।
पञ्चाशदक्षरश्रेणीपञ्चाशद्रुद्रविग्रहः॥ १५७॥

चतुःषष्टिमहासिद्धियोगिनीवृन्दवन्दितः।
नमदेकोनपञ्चाशन्मरुद्वर्गनिरर्गलः॥ १५८॥

चतुःषष्ट्यर्थनिर्णेता चतुःषष्टिकलानिधिः।
अष्टषष्टिमहातीर्थक्षेत्रभैरववन्दितः॥ १५९॥

चतुर्नवतिमन्त्रात्मा षण्णवत्यधिकप्रभुः।
शतानन्दः शतधृतिः शतपत्रायतेक्षणः॥१६०॥

शतानीकः शतमखः शतधारावरायुधः।
सहस्रपत्रनिलयः सहस्रफणिभूषणः॥१६१॥

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
सहस्रनामसंस्तुत्यः सहस्राक्षबलापहः॥१६२॥

दशसाहस्रफणिभृत्फणिराजकृतासनः।
अष्टाशीतिसहस्राद्यमहर्षिस्तोत्रपाठितः॥१६३॥

लक्षाधारः प्रियाधारो लक्षाधारमनोमयः।
चतुर्लक्षजपप्रीतश्चतुर्लक्षप्रकाशकः॥१६४॥

चतुरशीतिलक्षाणां जीवानां देहसंस्थितः।
कोटिसूर्यप्रतीकाशः कोटिचन्द्रांशुनिर्मलः॥१६५॥

शिवोद्भवाद्यष्टकोटिवैनायकधुरन्धरः।
सप्तकोटिमहामन्त्रमन्त्रितावयवद्युतिः॥१६६॥

त्रयस्त्रिंशत्कोटिसुरश्रेणीप्रणतपादुकः।
अनन्तदेवतासेव्यो ह्यनन्तशुभदायकः॥१६७॥

अनन्तनामानन्तश्रीरनन्तोऽनन्तसौख्यदः।
अनन्तशक्तिसहितो ह्यनन्तमुनिसंस्तुतः॥१६८॥

॥फलश्रुतिः॥

इति वैनायकं नाम्नां सहस्रमिदमीरितम्।
इदं ब्राह्मे मुहूर्ते यः पठति प्रत्यहं नरः॥१६९॥

करस्थं तस्य सकलमैहिकामुष्मिकं सुखम्।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं धैर्यं शौर्यं बलं यशः॥ १७०॥

मेधा प्रज्ञा धृतिः कान्तिः सौभाग्यमभिरूपता।
सत्यं दया क्षमा शान्तिर्दाक्षिण्यं धर्मशीलता॥ १७१॥

जगत्संवननं विश्वसंवादो वेदपाटवम्।
सभापाण्डित्यमौदार्यं गाम्भीर्यं ब्रह्मवर्चसम्॥ १७२॥

ओजस्तेजः कुलं शीलं प्रतापो वीर्यमार्यता।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं स्थैर्यं विश्वासता तथा॥ १७३॥

धनधान्यादिवृद्धिश्च सकृदस्य जपाद्भवेत्।
वश्यं चतुर्विधं विश्वं जपादस्य प्रजायते॥ १७४॥

राज्ञो राजकलत्रस्य राजपुत्रस्य मन्त्रिणः।
जप्यते यस्य वश्यार्थे स दासस्तस्य जायते॥ १७५॥

धर्मार्थकाममोक्षाणामनायासेन साधनम्।
शाकिनीडाकिनीरक्षोयक्षग्रहभयापहम् ॥ १७६॥

साम्राज्यसुखदं सर्वसपत्नमदमर्दनम्।
समस्तकलहध्वंसि दग्धबीजप्ररोहणम्॥ १७७॥

दुःस्वप्नशमनं क्रुद्धस्वामिचित्तप्रसादनम्।
षड्वर्गाष्टमहासिद्धित्रिकालज्ञानकारणम् ॥ १७८॥

परकृत्यप्रशमनं परचक्रप्रमर्दनम्।
सङ्ग्राममार्गे सर्वेषामिदमेकं जयावहम्॥ १७९॥

सर्ववन्ध्यत्वदोषघ्नं गर्भरक्षैककारणम्।
पठ्यते प्रत्यहं यत्र स्तोत्रं गणपतेरिदम्॥ १८० ॥

देशे तत्र न दुर्भिक्षमीतयो दुरितानि च।
न तद्गेहं जहाति श्रीर्यत्रायं जप्यते स्तवः॥ १८१ ॥

क्षयकुष्ठप्रमेहार्शभगन्दरविषूचिकाः ।
गुल्मं प्लीहानमाध्मानमतिसारं महोदरम्॥ १८२ ॥

कासं श्वासमुदावर्तं शूलं शोफामयोदरम्।
शिरोरोगं वमिं हिक्कां गण्डमालामरोचकम्॥ १८३ ॥

वातपित्तकफद्वन्द्वत्रिदोषजनितज्वरम् ।
आगन्तुविषमं शीतमुष्णं चैकाहिकादिकम्॥ १८४ ॥

इत्याद्युक्तमनुक्तं वा रोगदोषादिसम्भवम्।
सर्वं प्रशमयत्याशु स्तोत्रस्यास्य सकृज्जपः॥ १८५ ॥

प्राप्यतेऽस्य जपात्सिद्धिः स्त्रीशूद्रैः पतितैरपि।
सहस्रनाममन्त्रोऽयं जपितव्यः शुभाप्तये॥ १८६ ॥

महागणपतेः स्तोत्रं सकामः प्रजपन्निदम्।
इच्छया सकलान् भोगानुपभुज्येह पार्थिवान्॥ १८७ ॥

मनोरथफलैर्दिव्यैर्व्योमयानैर्मनोरमैः ।
चन्द्रेन्द्रभास्करोपेन्द्रब्रह्मशर्वादिसद्मसु॥ १८८ ॥

कामरूपः कामगतिः कामदः कामदेश्वरः।
भुक्त्वा यथेप्सितान्भोगानभीष्टैः सह बन्धुभिः॥ १८९ ॥

गणेशानुचरो भूत्वा गणो गणपतिप्रियः।
नन्दीश्वरादिसानन्दैर्नन्दितः सकलैर्गणैः॥ १९०॥

शिवाभ्यां कृपया पुत्रनिर्विशेषं च लालितः।
शिवभक्तः पूर्णकामो गणेश्वरवरात्पुनः॥ १९१॥

जातिस्मरो धर्मपरः सार्वभौमोऽभिजायते।
निष्कामस्तु जपन्नित्यं भक्त्या विघ्नेशतत्परः॥ १९२॥

योगसिद्धिं परां प्राप्य ज्ञानवैराग्यसंयुतः।
निरन्तरे निराबाधे परमानन्दसंज्ञिते॥ १९३॥

विश्वोत्तीर्णे परे पूर्णे पुनरावृत्तिवर्जिते।
लीनो वैनायके धाम्नि रमते नित्यनिर्वृते॥ १९४॥

यो नामभिर्हुतैर्दत्तैः पूजयेदर्चयेन्नरः।
राजानो वश्यतां यान्ति रिपवो यान्ति दासताम्॥ १९५॥

तस्य सिध्यन्ति मन्त्राणां दुर्लभाश्चेष्टसिद्धयः।
मूलमन्त्रादपि स्तोत्रमिदं प्रियतमं मम॥ १९६॥

नभस्ये मासि शुक्लायां चतुर्थ्यां मम जन्मनि।
दूर्वाभिर्नामभिः पूजां तर्पणं विधिवच्चरेत्॥ १९७॥

अष्टद्रव्यैर्विशेषेण कुर्याद्भक्तिसुसंयुतः।
तस्येप्सितं धनं धान्यमैश्वर्यं विजयो यशः॥ १९८॥

भविष्यति न सन्देहः पुत्रपौत्रादिकं सुखम्।
इदं प्रजपितं स्तोत्रं पठितं श्रावितं श्रुतम्॥ १९९॥

व्याकृतं चर्चितं ध्यातं विमृष्टमभिवन्दितम्।
इहामुत्र च विश्वेषां विश्वैश्वर्यप्रदायकम्॥ २०० ॥

स्वच्छन्दचारिणाप्येष येन सन्धार्यते स्तवः।
स रक्ष्यते शिवोद्भूतैर्गणैरध्यष्टकोटिभिः॥ २०१ ॥

लिखितं पुस्तकस्तोत्रं मन्त्रभूतं प्रपूजयेत्।
तत्र सर्वोत्तमा लक्ष्मीः सन्निधत्ते निरन्तरम्॥ २०२ ॥

दानैरशेषैरखिलैर्व्रतैश्च
तीर्थैरशेषैरखिलैर्मखैश्च ।
न तत्फलं विन्दति यद्गणेश-
सहस्रनामस्मरणेन सद्यः॥ २०३ ॥

एतन्नाम्नां सहस्रं पठति दिनमणौ प्रत्यहं प्रोज्जिहाने
सायं मध्यन्दिने वा त्रिषवणमथवा सन्ततं वा जनो यः।
स स्यादैश्वर्यधुर्यः प्रभवति वचसां कीर्तिमुच्चैस्तनोति
दारिद्र्यं हन्ति विश्वं वशयति सुचिरं वर्धते पुत्रपौत्रैः॥ २०४॥

अकिञ्चनोऽप्येकचित्तो नियतो नियतासनः।
प्रजपंश्चतुरो मासान् गणेशार्चनतत्परः॥ २०५॥

दरिद्रतां समुन्मूल्य सप्तजन्मानुगामपि।
लभते महतीं लक्ष्मीमित्याज्ञा पारमेश्वरी॥ २०६ ॥

आयुष्यं वीतरोगं कुलमतिविमलं सम्पदश्चार्तिनाशः
कीर्तिर्नित्यावदाता भवति खलु नवा कान्तिरव्याजभव्या।
पुत्राः सन्तः कलत्रं गुणवदभिमतं यद्यदन्यच्च तत्तत्
नित्यं यः स्तोत्रमेतत् पठति गणपतेस्तस्य हस्ते समस्तम्॥ २०७॥

गणञ्जयो गणपतिर्हेरम्बो धरणीधरः।
महागणपतिर्बुद्धिप्रियः क्षिप्रप्रसादनः॥२०८॥

अमोघसिद्धिरमृतमन्त्रश्चिन्तामणिर्निधिः।
सुमङ्गलो बीजमाशापूरको वरदः कलः॥२०९॥

काश्यपो नन्दनो वाचासिद्धो ढुण्ढिर्विनायकः।
मोदकैरेभिरत्रैकविंशत्या नामभिः पुमान्॥२१०॥

उपायनं ददेद्भक्त्या मत्प्रसादं चिकीर्षति।
वत्सरं विघ्नराजोऽस्य तथ्यमिष्टार्थसिद्धये॥२११॥

यः स्तौति मद्गतमना ममाराधनतत्परः।
स्तुतो नाम्ना सहस्रेण तेनाहं नात्र संशयः॥२१२॥

नमो नमः सुरवरपूजिताङ्घ्रये
नमो नमो निरुपममङ्गलात्मने।
नमो नमो विपुलदयैकसिद्धये
नमो नमः करिकलभाननाय ते॥२१३॥

किङ्किणीगणरचितचरणः
प्रकटितगुरुमितचारुकरणः।
मदजललहरीकलितकपोलः
शमयतु दुरितं गणपतिनाम्ना॥२१४॥

॥इति श्रीगणेशपुराणे उपासनाखण्डे ईश्वरगणेशसंवादे गणेशसहस्रनामस्तोत्रं नाम षट्चत्वारिंशोऽध्यायः॥

॥ शिवसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

नमोऽस्तु ते व्यास विशालबुद्धे फुल्लारविन्दायतपत्रनेत्र।
येन त्वया भारततैलपूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः॥

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥

वन्दे शम्भुमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणम्
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियम्
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्॥

॥ पूर्वभागः ॥

युधिष्ठिर उवाच

त्वयाऽऽपगेय नामानि श्रुतानीह जगत्पतेः।
पितामहेशाय विभोर्नामान्याचक्ष्व शम्भवे॥ १॥

बभ्रवे विश्वरूपाय महाभाग्यं च तत्त्वतः।
सुरासुरगुरौ देवे शङ्करेऽव्यक्तयोनये॥ २॥

भीष्म उवाच

अशक्तोऽहं गुणान् वक्तुं महादेवस्य धीमतः।
यो हि सर्वगतो देवो न च सर्वत्र दृश्यते॥ ३॥

ब्रह्मविष्णुसुरेशानां स्रष्टा च प्रभुरेव च।
ब्रह्मादयः पिशाचान्ता यं हि देवा उपासते॥४॥

प्रकृतीनां परत्वेन पुरुषस्य च यः परः।
चिन्त्यते यो योगविद्भिर्ऋषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः॥५॥

प्रकृतिं पुरुषं चैव क्षोभयित्वा स्वतेजसा।
ब्रह्माणमसृजत् तस्माद्देवदेवः प्रजापतिः॥६॥

को हि शक्तो गुणान् वक्तुं देवदेवस्य धीमतः।
गर्भजन्मजरायुक्तो मर्त्यो मृत्युसमन्वितः॥७॥

को हि शक्तो भवं ज्ञातुं मद्विधः परमेश्वरम्।
ऋते नारायणात् पुत्र शङ्खचक्रगदाधरात्॥८॥

एष विद्वान् गुणश्रेष्ठो विष्णुः परमदुर्जयः।
दिव्यचक्षुर्महातेजा वीक्ष्यते योगचक्षुषा॥९॥

रुद्रभक्त्या तु कृष्णेन जगद्व्याप्तं महात्मना।
तं प्रसाद्य तदा देवं बदर्यां किल भारत॥१०॥

अर्थात् प्रियतरत्वं च सर्वलोकेषु वै तदा।
प्राप्तवानेव राजेन्द्र सुवर्णाक्षान्महेश्वरात्॥११॥

पूर्णं वर्षसहस्रं तु तप्तवानेष माधवः।
प्रसाद्य वरदं देवं चराचरगुरुं शिवम्॥१२॥

युगे युगे तु कृष्णेन तोषितो वै महेश्वरः।
भक्त्या परमया चैव प्रीतश्चैव महात्मनः॥१३॥

ऐश्वर्यं यादृशं तस्य जगद्योनेर्महात्मनः।
तदयं दृष्टवान् साक्षात् पुत्रार्थे हरिरच्युतः॥१४॥

यस्मात् परतरं चैव नान्यं पश्यामि भारत।
व्याख्यातुं देवदेवस्य शक्तो नामान्यशेषतः॥१५॥

एष शक्तो महाबाहुर्वक्तुं भगवतो गुणान्।
विभूतिं चैव कार्त्स्न्येन सत्यां माहेश्वरीं नृप॥१६॥

सुरासुरगुरो देव विष्णो त्वं वक्तुम् अर्हसि।
शिवाय शिवरूपाय यन्माऽपृच्छद्युधिष्ठिरः॥१७॥

नाम्नां सहस्रं देवस्य तण्डिना ब्रह्मवादिना।
निवेदितं ब्रह्मलोके ब्रह्मणो यत् पुराऽभवत्॥१८॥

द्वैपायनप्रभृतयस्तथा चेमे तपोधनाः।
ऋषयः सुव्रता दान्ताः शृण्वन्तु गदतस्तव॥१९॥

वासुदेव उवाच

न गतिः कर्मणां शक्या वेत्तुमीशस्य तत्त्वतः।
हिरण्यगर्भप्रमुखा देवाः सेन्द्रा महर्षयः॥२०॥

न विदुर्यस्य निधनम् आदिं वा सूक्ष्मदर्शिनः।
स कथं नाममात्रेण शक्यो ज्ञातुं सतां गतिः॥२१॥

तस्याहम् असुरघ्नस्य कांश्चिद्भगवतो गुणान्।
भवतां कीर्तयिष्यामि व्रतेशाय यथातथम्॥२२॥

वैशम्पायन उवाच

एवमुक्त्वा तु भगवान् गुणांस्तस्य महात्मनः।
उपस्पृश्य शुचिर्भूत्वा कथयामास धीमतः॥२३॥

वासुदेव उवाच

ततः स प्रयतो भूत्वा मम तात युधिष्ठिर।
प्राञ्जलिः प्राह विप्रर्षिर्नामसङ्ग्रहामादितः॥२४॥

उपमन्युरुवाच

ब्रह्मप्रोक्तैर्ऋषिप्रोक्तैर्वेदवेदाङ्गसम्भवैः।
सर्वलोकेषु विख्यातं स्तुत्यं स्तोष्यामि नामभिः॥२५॥

महद्भिर्विहितैः सत्यैः सिद्धैः सर्वार्थसाधकैः।
ऋषिणा तण्डिना भक्त्या कृतैर्वेदकृतात्मना॥२६॥

यथोक्तैः साधुभिः ख्यातैर्मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः।
प्रवरं प्रथमं स्वर्ग्यं सर्वभूतहितं शुभम्॥२७॥

श्रुतैः सर्वत्र जगति ब्रह्मलोकावतारितैः।
सत्यैस्तत् परमं ब्रह्म ब्रह्मप्रोक्तं सनातनम्।
वक्ष्ये यदुकुलश्रेष्ठ श्रृणुष्वावहितो मम॥२८॥

वरयैनं भवं देवं भक्तस्त्वं परमेश्वरम्।
तेन ते श्रावयिष्यामि यत् तद्ब्रह्म सनातनम्॥२९॥

न शक्यं विस्तरात् कृत्स्नं वक्तुं शर्वस्य केनचित्।
युक्तेनापि विभूतीनामपि वर्षशतैरपि॥३०॥

यस्यादिर्मध्यमन्तं च सुरैरपि न गम्यते।
कस्तस्य शक्नुयाद्वक्तुं गुणान् कात्स्न्र्येन माधव॥ ३१॥

किं तु देवस्य महतः सङ्क्षिप्तार्थपदाक्षरम्।
शक्तितश्चरितं वक्ष्ये प्रसादात् तस्य धीमतः॥ ३२॥

अप्राप्य तु ततोऽनुज्ञां न शक्यः स्तोतुमीश्वरः।
यदा तेनाभ्यनुज्ञातः स्तुतो वै स तदा मया॥ ३३॥

अनादिनिधनस्याहं जगद्योनेर्महात्मनः।
नाम्नां कञ्चित् समुद्देश्यं वक्ष्याम्यव्यक्तयोनिनः॥ ३४॥

वरदस्य वरेण्यस्य विश्वरूपस्य धीमतः।
श्रृणु नाम्नां चयं कृष्ण यदुक्तं पद्मयोनिना॥ ३५॥

दशनामसहस्राणि यान्याह प्रपितामहः।
तानि निर्मथ्य मनसा दध्नो घृतमिवोद्धृतम्॥ ३६॥

गिरेः सारं यथा हेम पुष्पसारं यथा मधु।
घृतात् सारं यथा मण्डस्तथैतत् सारमुद्धृतम्॥ ३७॥

सर्वपापापहमिदं चतुर्वेदसमन्वितम्।
प्रयत्नेनाधिगन्तव्यं धार्यं च प्रयतात्मना॥ ३८॥

सर्वभूतात्मभूतस्य हरस्यामिततेजसः।
अष्टोत्तरसहस्रं तु नाम्नां शर्वस्य मे श्रृणु।
यच्छ्रुत्वा मनुजव्याघ्र सर्वान् कामानवाप्स्यसि॥ ३९॥

॥ ध्यानम् ॥

शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षभागे वहन्तम्।
नागं पाशं घण्टां प्रलयहुतवहं साङ्कुशं वामभागे
नानालङ्कारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि॥

॥ स्तोत्रम् ॥

ॐ स्थिरः स्थाणुः प्रभुर्भीमः प्रवरो वरदो वरः।
सर्वात्मा सर्वविख्यातः सर्वः सर्वकरो भवः॥ १॥

जटी चर्मी शिखण्डी च सर्वाङ्गः सर्वभावनः।
हरश्च हरिणाक्षश्च सर्वभूतहरः प्रभुः॥ २॥

प्रवृत्तिश्च निवृत्तिश्च नियतः शाश्वतो ध्रुवः।
श्मशानवासी भगवान् खचरो गोचरोऽर्दनः॥ ३॥

अभिवाद्यो महाकर्मा तपस्वी भूतभावनः।
उन्मत्तवेषप्रच्छन्नः सर्वलोकप्रजापतिः॥ ४॥

महारूपो महाकायो वृषरूपो महायशाः।
महात्मा सर्वभूतात्मा विश्वरूपो महाहनुः॥ ५॥

लोकपालोऽन्तर्हितात्मा प्रसादो हयगर्दभिः।
पवित्रं च महांश्चैव नियमो नियमाश्रितः॥ ६॥

सर्वकर्मा स्वयम्भूत आदिरादिकरो निधिः।
सहस्राक्षो विशालाक्षः सोमो नक्षत्रसाधकः॥ ७॥

चन्द्रः सूर्यः शनिः केतुर्ग्रहो ग्रहपतिर्वरः।
अत्रिरत्र्यानमस्कर्ता मृगबाणार्पणोऽनघः॥८॥

महातपा घोरतपा अदीनो दीनसाधकः।
संवत्सरकरो मन्त्रः प्रमाणं परमं तपः॥९॥

योगी योज्यो महाबीजो महारेता महाबलः।
सुवर्णरेताः सर्वज्ञः सुबीजो बीजवाहनः॥१०॥

दशबाहुस्त्वनिमिषो नीलकण्ठ उमापतिः।
विश्वरूपः स्वयंश्रेष्ठो बलवीरोऽबलो गणः॥११॥

गणकर्ता गणपतिर्दिग्वासाः काम एव च।
मन्त्रवित् परमो मन्त्रः सर्वभावकरो हरः॥१२॥

कमण्डलुधरो धन्वी बाणहस्तः कपालवान्।
अशनी शतघ्नी खड्गी पट्टिशी चाऽऽयुधी महान्॥१३॥

स्रुवहस्तः सुरूपश्च तेजस्तेजस्करो निधिः।
उष्णिषी च सुवक्त्रश्च उदग्रो विनतस्तथा॥१४॥

दीर्घश्च हरिकेशश्च सुतीर्थः कृष्ण एव च।
सृगालरूपः सिद्धार्थो मुण्डः सर्वशुभङ्करः॥१५॥

अजश्च बहुरूपश्च गन्धधारी कपर्द्यपि।
ऊर्ध्वरेता ऊर्ध्वलिङ्ग ऊर्ध्वशायी नभःस्थलः॥१६॥

त्रिजटी चीरवासाश्च रुद्रः सेनापतिर्विभुः।
अहश्चरो नक्तञ्चरस्तिग्ममन्युः सुवर्चसः॥१७॥

गजहा दैत्यहा कालो लोकधाता गुणाकरः।
सिंहशार्दूलरूपश्च आर्द्रचर्माम्बरावृतः॥१८॥

कालयोगी महानादः सर्वकामश्चतुष्पथः।
निशाचरः प्रेतचारी भूतचारी महेश्वरः॥१९॥

बहुभूतो बहुधरः स्वर्भानुरमितो गतिः।
नृत्यप्रियो नित्यनर्तो नर्तकः सर्वलालसः॥२०॥

घोरो महातपाः पाशो नित्यो गिरिरुहो नभः।
सहस्रहस्तो विजयो व्यवसायो ह्यतन्द्रितः॥२१॥

अधर्षणो धर्षणात्मा यज्ञहा कामनाशकः।
दक्षयागापहारी च सुसहो मध्यमस्तथा॥२२॥

तेजोपहारी बलहा मुदितोऽर्थोऽजितो वरः।
गम्भीरघोषो गम्भीरो गम्भीरबलवाहनः॥२३॥

न्यग्रोधरूपो न्यग्रोधो वृक्षकर्णस्थितिर्विभुः।
सुतीक्ष्णदशनश्चैव महाकायो महाननः॥२४॥

विष्वक्सेनो हरिर्यज्ञः संयुगापीडवाहनः।
तीक्ष्णतापश्च हर्यश्वः सहायः कर्मकालवित्॥२५॥

विष्णुप्रसादितो यज्ञः समुद्रो बडवामुखः।
हुताशनसहायश्च प्रशान्तात्मा हुताशनः॥२६॥

उग्रतेजा महातेजा जन्यो विजयकालवित्।
ज्योतिषामयनं सिद्धिः सर्वविग्रह एव च॥२७॥

शिखी मुण्डी जटी ज्वाली मूर्तिजो मूर्धजो बली।
वैणवी पणवी ताली खली कालकटङ्कटः॥ २८॥

नक्षत्रविग्रहमतिर्गुणबुद्धिर्लयोऽगमः ।
प्रजापतिर्विश्वबाहुर्विभागः सर्वगोऽमुखः॥ २९॥

विमोचनः सुसरणो हिरण्यकवचोद्भवः।
मेढ्रजो बलचारी च महीचारी स्रुतस्तथा॥ ३०॥

सर्वतूर्यविनोदी च सर्वातोद्यपरिग्रहः।
व्यालरूपो गुहावासी गुहो माली तरङ्गवित्॥ ३१॥

त्रिदशस्त्रिकालधृक् कर्मसर्वबन्धविमोचनः।
बन्धनस्त्वसुरेन्द्राणां युधि शत्रुविनाशनः॥ ३२॥

साङ्ख्यप्रसादो दुर्वासाः सर्वसाधुनिषेवितः।
प्रस्कन्दनो विभागज्ञोऽतुल्यो यज्ञविभागवित्॥ ३३॥

सर्ववासः सर्वचारी दुर्वासा वासवोऽमरः।
हैमो हेमकरो यज्ञः सर्वधारी धरोत्तमः॥ ३४॥

लोहिताक्षो महाक्षश्च विजयाक्षो विशारदः।
सङ्ग्रहो निग्रहः कर्ता सर्पचीरनिवासनः॥ ३५॥

मुख्योऽमुख्यश्च देहश्च काहलिः सर्वकामदः।
सर्वकालप्रसादश्च सुबलो बलरूपधृक्॥ ३६॥

सर्वकामवरश्चैव सर्वदः सर्वतोमुखः।
आकाशनिर्विरूपश्च निपाती ह्यवशः खगः॥ ३७॥

रौद्ररूपोंऽशुरादित्यो बहुरश्मिः सुवर्चसी।
वसुवेगो महावेगो मनोवेगो निशाचरः॥३८॥

सर्ववासी श्रियावासी उपदेशकरोऽकरः।
मुनिरात्मनिरालोकः सम्भग्नश्च सहस्रदः॥३९॥

पक्षी च पक्षरूपश्च अतिदीप्तो विशाम्पतिः।
उन्मादो मदनः कामो ह्यश्वत्थोऽर्थकरो यशः॥४०॥

वामदेवश्च वामश्च प्राग्दक्षिणश्च वामनः।
सिद्धयोगी महर्षिश्च सिद्धार्थः सिद्धसाधकः॥४१॥

भिक्षुश्च भिक्षुरूपश्च विपणो मृदुरव्ययः।
महासेनो विशाखश्च षष्ठिभागो गवां पतिः॥४२॥

वज्रहस्तश्च विष्कम्भी चमूस्तम्भन एव च।
वृत्तावृत्तकरस्तालो मधुर्मधुकलोचनः॥४३॥

वाचस्पत्यो वाजसनो नित्यमाश्रितपूजितः।
ब्रह्मचारी लोकचारी सर्वचारी विचारवित्॥४४॥

ईशान ईश्वरः कालो निशाचारी पिनाकवान्।
निमित्तस्थो निमित्तं च नन्दिर्नन्दिकरो हरिः॥४५॥

नन्दीश्वरश्च नन्दी च नन्दनो नन्दिवर्धनः।
भगहारी निहन्ता च कालो ब्रह्मा पितामहः॥४६॥

चतुर्मुखो महालिङ्गश्चारुलिङ्गस्तथैव च।
लिङ्गाध्यक्षः सुराध्यक्षो योगाध्यक्षो युगावहः॥४७॥

बीजाध्यक्षो बीजकर्ता अध्यात्माऽनुगतो बलः।
इतिहासः सकल्पश्च गौतमोऽथ निशाकरः॥४८॥

दम्भो ह्यदम्भो वैदम्भो वश्यो वशकरः कलिः।
लोककर्ता पशुपतिर्महाकर्ता ह्यनौषधः॥४९॥

अक्षरं परमं ब्रह्म बलवच्चक्र एव च।
नीतिर्ह्यनीतिः शुद्धात्मा शुद्धो मान्यो गतागतः॥५०॥

बहुप्रसादः सुस्वप्नो दर्पणोऽथ त्वमित्रजित्।
वेदकारो मन्त्रकारो विद्वान् समरमर्दनः॥५१॥

महामेघनिवासी च महाघोरो वशीकरः।
अग्निज्वालो महाज्वालो अतिधूम्रो हुतो हविः॥५२॥

वृषणः शङ्करो नित्यं वर्चस्वी धूमकेतनः।
नीलस्तथाऽङ्गलुब्धश्च शोभनो निरवग्रहः॥५३॥

स्वस्तिदः स्वस्तिभावश्च भागी भागकरो लघुः।
उत्सङ्गश्च महाङ्गश्च महागर्भपरायणः॥५४॥

कृष्णवर्णः सुवर्णश्च इन्द्रियं सर्वदेहिनाम्।
महापादो महाहस्तो महाकायो महायशाः॥५५॥

महामूर्धा महामात्रो महानेत्रो निशालयः।
महान्तको महाकर्णो महोष्ठश्च महाहनुः॥५६॥

महानासो महाकम्बुर्महाग्रीवः श्मशानभाक्।
महावक्षा महोरस्को ह्यन्तरात्मा मृगालयः॥५७॥

लम्बनो लम्बितोष्ठश्च महामायः पयोनिधिः।
महादन्तो महादंष्ट्रो महाजिह्वो महामुखः॥५८॥

महानखो महारोमो महाकोशो महाजटः।
प्रसन्नश्च प्रसादश्च प्रत्ययो गिरिसाधनः॥५९॥

स्नेहनोऽस्नेहनश्चैव अजितश्च महामुनिः।
वृक्षाकारो वृक्षकेतुरनलो वायुवाहनः॥६०॥

गण्डली मेरुधामा च देवाधिपतिरेव च।
अथर्वशीर्षः सामास्य ऋक्सहस्रामितेक्षणः॥६१॥

यजुः पादभुजो गुह्यः प्रकाशो जङ्गमस्तथा।
अमोघार्थः प्रसादश्च अभिगम्यः सुदर्शनः॥६२॥

उपकारः प्रियः सर्वः कनकः काञ्चनच्छविः।
नाभिर्नन्दिकरो भावः पुष्करः स्थपतिः स्थिरः॥६३॥

द्वादशस्त्रासनश्चाद्यो यज्ञो यज्ञसमाहितः।
नक्तं कलिश्च कालश्च मकरः कालपूजितः॥६४॥

सगणो गणकारश्च भूतवाहनसारथिः।
भस्मशयो भस्मगोप्ता भस्मभूतस्तरुर्गणः॥६५॥

लोकपालस्तथाऽलोको महात्मा सर्वपूजितः।
शुक्लस्त्रिशुक्लः सम्पन्नः शुचिर्भूतनिषेवितः॥६६॥

आश्रमस्थः क्रियावस्थो विश्वकर्ममतिर्वरः।
विशालशाखस्ताम्रोष्ठो ह्यम्बुजालः सुनिश्चलः॥६७॥

कपिलः कपिशः शुक्ल आयुश्चैव परोऽपरः।
गन्धर्वो ह्यदितिस्तार्क्ष्यः सुविज्ञेयः सुशारदः॥ ६८॥

परश्वधायुधो देव अनुकारी सुबान्धवः।
तुम्बवीणो महाक्रोध ऊर्ध्वरेता जलेशयः॥ ६९॥

उग्रो वंशकरो वंशो वंशनादो ह्यनिन्दितः।
सर्वाङ्गरूपो मायावी सुहृदो ह्यनिलोऽनलः॥ ७०॥

बन्धनो बन्धकर्ता च सुबन्धनविमोचनः।
सयज्ञारिः सकामारिर्महादंष्ट्रो महायुधः॥ ७१॥

बहुधा निन्दितः शर्वः शङ्करः शङ्करोऽधनः।
अमरेशो महादेवो विश्वदेवः सुरारिहा॥ ७२॥

अहिर्बुध्न्योऽनिलाभश्च चेकितानो हविस्तथा।
अजैकपाच्च कापाली त्रिशङ्कुरजितः शिवः॥ ७३॥

धन्वन्तरिर्धूमकेतुः स्कन्दो वैश्रवणस्तथा।
धाता शक्रश्च विष्णुश्च मित्रस्त्वष्टा ध्रुवो धरः॥ ७४॥

प्रभावः सर्वगो वायुरर्यमा सविता रविः।
उषङ्गुश्च विधाता च मान्धाता भूतभावनः॥ ७५॥

विभुर्वर्णविभावी च सर्वकामगुणावहः।
पद्मनाभो महागर्भश्चन्द्रवक्त्रोऽनिलोऽनलः॥ ७६॥

बलवांश्चोपशान्तश्च पुराणः पुण्यचञ्चुरी।
कुरुकर्ता कुरुवासी कुरुभूतो गुणौषधः॥ ७७॥

सर्वाशयो दर्भचारी सर्वेषां प्राणिनां पतिः।
देवदेवः सुखासक्तः सदसत् सर्वरत्नवित्॥ ७८॥

कैलासगिरिवासी च हिमवद्गिरिसंश्रयः।
कूलहारी कूलकर्ता बहुविद्यो बहुप्रदः॥ ७९॥

वणिजो वर्धकी वृक्षो वकुलश्चन्दनश्छदः।
सारग्रीवो महाजत्रुरलोलश्च महौषधः॥ ८०॥

सिद्धार्थकारी सिद्धार्थश्छन्दोव्याकरणोत्तरः।
सिंहनादः सिंहदंष्ट्रः सिंहगः सिंहवाहनः॥ ८१॥

प्रभावात्मा जगत्कालस्थालो लोकहितस्तरुः।
सारङ्गो नवचक्राङ्गः केतुमाली सभावनः॥ ८२॥

भूतालयो भूतपतिरहोरात्रमनिन्दितः॥ ८३॥

वाहिता सर्वभूतानां निलयश्च विभुर्भवः।
अमोघः संयतो ह्यश्वो भोजनः प्राणधारणः॥ ८४॥

धृतिमान् मतिमान् दक्षः सत्कृतश्च युगाधिपः।
गोपालिर्गोपतिर्ग्रामो गोचर्मवसनो हरिः॥ ८५॥

हिरण्यबाहुश्च तथा गुहापालः प्रवेशिनाम्।
प्रकृष्टारिर्महाहर्षो जितकामो जितेन्द्रियः॥ ८६॥

गान्धारश्च सुवासश्च तपःसक्तो रतिर्नरः।
महागीतो महानृत्यो ह्यप्सरोगणसेवितः॥ ८७॥

महाकेतुर्महाधातुर्नैकसानुचरश्चलः ।
आवेदनीय आदेशः सर्वगन्धसुखावहः॥ ८८॥

तोरणस्तारणो वातः परिधीः पतिखेचरः।
संयोगो वर्धनो वृद्धो अतिवृद्धो गुणाधिकः॥८९॥

नित्यमात्मसहायश्च देवासुरपतिः पतिः।
युक्तश्च युक्तबाहुश्च देवो दिवि सुपर्वणः॥९०॥

आषाढश्च सुषाढश्च ध्रुवोऽथ हरिणो हरः।
वपुरावर्तमानेभ्यो वसुश्रेष्ठो महापथः॥९१॥

शिरोहारी विमर्शश्च सर्वलक्षणलक्षितः।
अक्षश्च रथयोगी च सर्वयोगी महाबलः॥९२॥

समाम्नायोऽसमाम्नायस्तीर्थदेवो महारथः।
निर्जीवो जीवनो मन्त्रः शुभाक्षो बहुकर्कशः॥९३॥

रत्नप्रभूतो रक्ताङ्गो महार्णवनिपानवित्।
मूलं विशालो ह्यमृतो व्यक्ताव्यक्तस्तपोनिधिः॥९४॥

आरोहणोऽधिरोहश्च शीलधारी महायशाः।
सेनाकल्पो महाकल्पो योगो युगकरो हरिः॥९५॥

युगरूपो महारूपो महानागहनो वधः।
न्यायनिर्वपणः पादः पण्डितो ह्यचलोपमः॥९६॥

बहुमालो महामालः शशी हरसुलोचनः।
विस्तारो लवणः कूपस्त्रियुगः सफलोदयः॥९७॥

त्रिलोचनो विषण्णाङ्गो मणिविद्धो जटाधरः।
बिन्दुर्विसर्गः सुमुखः शरः सर्वायुधः सहः॥९८॥

निवेदनः सुखाजातः सुगन्धारो महाधनुः।
गन्धपाली च भगवानुत्थानः सर्वकर्मणाम्॥९९॥

मन्थानो बहुलो वायुः सकलः सर्वलोचनः।
तलस्तालः करस्थाली ऊर्ध्वसंहननो महान्॥१००॥

छत्त्रं सुच्छत्त्रो विख्यातो लोकः सर्वाश्रयः क्रमः।
मुण्डो विरूपो विकृतो दण्डी कुण्डी विकुर्वणः॥१०१॥

हर्यक्षः ककुभो वज्री शतजिह्वः सहस्रपात्।
सहस्रमूर्धा देवेन्द्रः सर्वदेवमयो गुरुः॥१०२॥

सहस्रबाहुः सर्वाङ्गः शरण्यः सर्वलोककृत्।
पवित्रं त्रिककुन्मन्त्रः कनिष्ठः कृष्णपिङ्गलः॥१०३॥

ब्रह्मदण्डविनिर्माता शतघ्नीपाशशक्तिमान्।
पद्मगर्भो महागर्भो ब्रह्मगर्भो जलोद्भवः॥१०४॥

गभस्तिर्ब्रह्मकृद्-ब्रह्मी ब्रह्मविद्-ब्राह्मणो गतिः।
अनन्तरूपो नैकात्मा तिग्मतेजाः स्वयम्भुवः॥१०५॥

ऊर्ध्वगात्मा पशुपतिर्वातरंहा मनोजवः।
चन्दनी पद्मनालाग्रः सुरभ्युत्तरणो नरः॥१०६॥

कर्णिकारमहास्रग्वी नीलमौलिः पिनाकधृक्।
उमापतिरुमाकान्तो जाह्नवीधृगुमाधवः॥१०७॥

वरो वराहो वरदो वरेण्यः सुमहास्वनः।
महाप्रसादो दमनः शत्रुहा श्वेतपिङ्गलः॥१०८॥

पीतात्मा परमात्मा च प्रयतात्मा प्रधानधृक्।
सर्वपार्श्वमुखस्त्र्यक्षो धर्मसाधारणो वरः॥ १०९॥

चराचरात्मा सूक्ष्मात्मा अमृतो गोवृषेश्वरः।
साध्यर्षिर्वसुरादित्यो विवस्वान् सविताऽमृतः॥ ११०॥

व्यासः सर्गः सुसङ्क्षेपो विस्तरः पर्ययो नरः।
ऋतुः संवत्सरो मासः पक्षः सङ्ख्यासमापनः॥ १११॥

कलाः काष्ठा लवा मात्रा मुहूर्ताहः क्षपाः क्षणाः।
विश्वक्षेत्रं प्रजाबीजं लिङ्गमाद्यस्तु निर्गमः॥ ११२॥

सदसद्व्यक्तमव्यक्तं पिता माता पितामहः।
स्वर्गद्वारं प्रजाद्वारं मोक्षद्वारं त्रिविष्टपम्॥ ११३॥

निर्वाणं ह्लादनश्चैव ब्रह्मलोकः परा गतिः।
देवासुरविनिर्माता देवासुरपरायणः॥ ११४॥

देवासुरगुरुर्देवो देवासुरनमस्कृतः।
देवासुरमहामात्रो देवासुरगणाश्रयः॥ ११५॥

देवासुरगणाध्यक्षो देवासुरगणाग्रणीः।
देवातिदेवो देवर्षिर्देवासुरवरप्रदः॥ ११६॥

देवासुरेश्वरो विश्वो देवासुरमहेश्वरः।
सर्वदेवमयोऽचिन्त्यो देवतात्माऽऽत्मसम्भवः॥ ११७॥

उद्भिच्त्रिविक्रमो वैद्यो विरजो नीरजोऽमरः।
ईड्यो हस्तीश्वरो व्याघ्रो देवसिंहो नरर्षभः॥ ११८॥

विबुधोऽग्रवरः सूक्ष्मः सर्वदेवस्तपोमयः।
सुयुक्तः शोभनो वज्री प्रासानां प्रभवोऽव्ययः॥ ११९॥

गुहः कान्तो निजः सर्गः पवित्रं सर्वपावनः।
शृङ्गी शृङ्गप्रियो बभ्रू राजराजो निरामयः॥ १२०॥

अभिरामः सुरगणो विरामः सर्वसाधनः।
ललाटाक्षो विश्वदेवो हरिणो ब्रह्मवर्चसः॥ १२१॥

स्थावराणां पतिश्चैव नियमेन्द्रियवर्धनः।
सिद्धार्थः सिद्धभूतार्थोऽचिन्त्यः सत्यव्रतः शुचिः॥ १२२॥

व्रताधिपः परं ब्रह्म भक्तानां परमा गतिः।
विमुक्तो मुक्ततेजाश्च श्रीमान् श्रीवर्धनो जगत्॥ १२३॥

श्रीमान् श्रीवर्धनो जगत् ॐ नम इति।

॥ उत्तरभागः ॥

यथा प्रधानं भगवान् इति भक्त्या स्तुतो मया।
यं न ब्रह्मादयो देवा विदुस्तत्त्वेन नर्षयः॥ १॥

स्तोतव्यमर्च्यं वन्द्यं च कः स्तोष्यति जगत्पतिम्।
भक्तिं त्वेवं पुरस्कृत्य मया यज्ञपतिर्विभुः॥ २॥

ततोऽभ्यनुज्ञां सम्प्राप्य स्तुतो मतिमतां वरः।
शिवमेभिः स्तुवन् देवं नामभिः पुष्टिवर्धनैः॥ ३॥

नित्ययुक्तः शुचिर्भक्तः प्राप्नोत्यात्मानमात्मना।
ऋषयश्चैव देवाश्च स्तुवन्त्येतेन तत्परम्॥ ४॥

स्तूयमानो महादेवस्तुष्यते नियमात्मभिः।
भक्तानुकम्पी भगवान् आत्मसंस्थाकरो विभुः॥५॥

तथैव च मनुष्येषु ये मनुष्याः प्रधानतः।
आस्तिकाः श्रद्दधानाश्च बहुभिर्जन्मभिः स्तवैः॥६॥

भक्त्या ह्यनन्यमीशानं परं देवं सनातनम्।
कर्मणा मनसा वाचा भावेनामिततेजसः॥७॥

शयाना जाग्रमाणाश्च व्रजन्नुपविशंस्तथा।
उन्मिषन्निमिषंश्चैव चिन्तयन्तः पुनः पुनः॥८॥

शृण्वन्तः श्रावयन्तश्च कथयन्तश्च ते भवम्।
स्तुवन्तः स्तूयमानाश्च तुष्यन्ति च रमन्ति च॥९॥

जन्मकोटिसहस्रेषु नानासंसारयोनिषु।
जन्तोर्विगतपापस्य भवे भक्तिः प्रजायते॥१०॥

उत्पन्ना च भवे भक्तिरनन्या सर्वभावतः।
भाविनः कारणे चास्य सर्वयुक्तस्य सर्वथा॥११॥

एतद्देवेषु दुष्प्रापं मनुष्येषु न लभ्यते।
निर्विघ्ना निश्चला रुद्रे भक्तिरव्यभिचारिणी॥१२॥

तस्यैव च प्रसादेन भक्तिरुत्पद्यते नृणाम्।
येन यान्ति परां सिद्धिं तद्भावगतचेतसः॥१३॥

ये सर्वभावानुगताः प्रपद्यन्ते महेश्वरम्।
प्रपन्नवत्सलो देवः संसारात् तान् समुद्धरेत्॥१४॥

एवम् अन्ये विकुर्वन्ति देवाः संसारमोचनम्।
मनुष्याणामृते देवं नान्या शक्तिस्तपोबलम्॥ १५॥

इति तेनेन्द्रकल्पेन भगवान् सदसत्पतिः।
कृत्तिवासाः स्तुतः कृष्ण तण्डिना शुद्धबुद्धिना॥ १६॥

स्तवमेतं भगवतो ब्रह्मा स्वयमधारयत्।
गीयते च स बुद्ध्येत ब्रह्मा शङ्करसन्निधौ॥ १७॥

इदं पुण्यं पवित्रं च सर्वदा पापनाशनम्।
योगदं मोक्षदं चैव स्वर्गदं तोषदं तथा॥ १८॥

एवमेतत् पठन्ते य एकभक्त्या तु शङ्करम्।
या गतिः साङ्ख्ययोगानां व्रजन्त्येतां गतिं तदा॥ १९॥

स्तवमेतं प्रयत्नेन सदा रुद्रस्य सन्निधौ।
अब्दमेकं चरेद्भक्तः प्राप्नुयादीप्सितं फलम्॥ २०॥

एतद्रहस्यं परमं ब्रह्मणो हृदि संस्थितम्।
ब्रह्मा प्रोवाच शक्राय शक्रः प्रोवाच मृत्यवे॥ २१॥

मृत्युः प्रोवाच रुद्रेभ्यो रुद्रेभ्यस्तण्डिमागमत्।
महता तपसा प्राप्तस्तण्डिना ब्रह्मसद्मनि॥ २२॥

तण्डिः प्रोवाच शुक्राय गौतमाय च भार्गवः।
वैवस्वताय मनवे गौतमः प्राह माधव॥ २३॥

नारायणाय साध्याय समाधिष्ठाय धीमते।
यमाय प्राह भगवान् साध्यो नारायणोऽच्युतः॥ २४॥

नाचिकेताय भगवान् आह वैवस्वतो यमः।
मार्कण्डेयाय वार्ष्णेय नाचिकेतोऽभ्यभाषत॥२५॥

मार्कण्डेयान्मया प्राप्तं नियमेन जनार्दन।
तवाप्यहम् अमित्रघ्न स्तवं दद्यां ह्यविश्रुतम्॥२६॥

स्वर्ग्यमारोग्यमायुष्यं धन्यं वेदेन सम्मितम्।
नास्य विघ्नं विकुर्वन्ति दानवा यक्षराक्षसाः।
पिशाचा यातुधानाश्च गुह्यका भुजगा अपि॥२७॥

यः पठेत शुचिर्भूत्वा ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः।
अभग्नयोगो वर्षं तु सोऽश्वमेधफलं लभेत्॥२८॥

जैगीषव्य उवाच

ममाष्टगुणमैश्वर्यं दत्तं भगवता पुरा।
यत्नेनान्येन बलिना वाराणस्यां युधिष्ठिर॥२९॥

वाराणस्यां युधिष्ठिर ॐ नम इति।

गर्ग उवाच

चतुःषष्ट्यङ्गमददत् कलाज्ञानं ममाद्भुतम्।
सरस्वत्यास्तटे तुष्टो मनोयज्ञेन पाण्डव॥३०॥

मनोयज्ञेन पाण्डव ॐ नम इति।

वैशम्पायन उवाच

ततः कृष्णोऽब्रवीद्वाक्यं पुनर्मतिमतां वरः।
युधिष्ठिरं धर्मनिधिं पुरुहूतमिवेश्वरः।
उपमन्युर्मयि प्राह तपन्निव दिवाकरः॥३१॥

अशुभैः पापकर्माणो ये नराः कलुषीकृताः।
ईशानं न प्रपद्यन्ते तमोराजसवृत्तयः।
ईश्वरं सम्प्रपद्यन्ते द्विजा भावितभावनाः॥३२॥

एवमेव महादेव भक्ता ये मानवा भुवि।
न ते संसारवशगा इति मे निश्चिता मतिः॥३३॥

इति मे निश्चिता मतिः ॐ नम इति।

॥इति श्रीमन्महाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्याम्
आनुशासनिकपर्वणि अष्टादशोऽध्यायः॥

दुःस्वप्न-दुःशकुन-दुर्गति-दौर्मनस्य
दुर्भिक्ष-दुर्व्यसन-दुःसह-दुर्यशांसि ।
उत्पात-ताप-विषभीतिम् असद्-ग्रहार्तिम्
व्याधींश्च नाशयतु मे जगतामधीशः॥

॥इति श्री-शिवसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥शिवमहिम्नः स्तोत्रम्॥

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथाऽवाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः॥१॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयोः
अतद्-व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः॥२॥

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवतः
तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता॥३॥

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीम्
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः॥४॥

किमीहः किं कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनम्
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसर दुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः॥५॥

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगताम्
अधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद्भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे॥६॥

त्रयी साङ्ख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिल नानापथजुषाम्
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव॥ ७॥

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्मफणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भ्रूप्रणिहिताम्
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति॥ ८॥

ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्त्वद्ध्रुवमिम्
परो ध्रौव्याऽध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवन् जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता॥ ९॥

तवैश्वर्यं यत्नाद्-यदुपरि विरिञ्चिर्हरिरधः
परिच्छेतुं यातावनिलमनलस्कन्धवपुषः।
ततो भक्तिश्रद्धा-भरगुरु-गृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति॥ १०॥

अयत्नादासाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरम्
दशास्यो यद्बाहूनभृत-रणकण्डू-परवशान्।
शिरःपद्मश्रेणी-रचितचरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम्॥ ११॥

अमुष्य त्वत्सेवा-समधिगतसारं भुजवनम्
बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्यापातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्-ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः॥ १२॥

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सतीम्
अधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयोः
न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः॥ १३॥

अकाण्ड-ब्रह्माण्ड-क्षयचकित-देवासुरकृपा
विधेयस्याऽऽसीद्-यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवन-भयभङ्ग-व्यसनिनः॥ १४॥

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः॥ १५॥

मही पादाघाताद्-व्रजति सहसा संशयपदम्
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुज-परिघ-रुग्ण-ग्रहगणम्।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृत-जटा-ताडित-तटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता॥ १६॥

वियद्व्यापी तारागण-गुणित-फेनोद्गम-रुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमिति
अनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः॥१७॥

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथ-चरण-पाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बर-विधिः
विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः॥१८॥

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयोः
यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्रकमलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्॥१९॥

क्रतौ सुप्ते जाग्रत् त्वमसि फलयोगे क्रतुमताम्
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदान-प्रतिभुवम्
श्रुतौ श्रद्धां बध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः॥२०॥

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृताम्
ऋषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफल-विधान-व्यसनिनः
ध्रुवं कर्तुं श्रद्धा विधुरमभिचाराय हि मखाः॥२१॥

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरम्
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुम्
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः॥२२॥

स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत-देहार्ध-घटनात्
अवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः॥२३॥

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचराः
चिता-भस्मालेपः स्रगपि नृकरोटी-परिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलम्
तथाऽपि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि॥२४॥

मनः प्रत्यक् चित्ते सविधमविधायात्त-मरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमद-सलिलोत्सङ्गति-दृशः।
यदालोक्याऽऽह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किल भवान्॥२५॥

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवहः
त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रति गिरम्
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत् त्वं न भवसि॥२६॥

त्रयीं तिस्रो वृत्तिस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरान्
अकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत् तीर्णविकृति।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तव्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम्॥ २७॥

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहान्
तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहित-नमस्योऽस्मि भवते॥ २८॥

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमः
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमः
नमः सर्वस्मै ते तदिदमतिसर्वाय च नमः॥ २९॥

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत् संहारे हराय नमो नमः।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः॥ ३०॥

कृश-परिणति-चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदम्
क्व च तव गुण-सीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्-
वरद चरणयोस्ते वाक्य-पुष्पोपहारम्॥ ३१॥

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवर-शाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालम्
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति॥ ३२॥

असुर-सुर-मुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौलेः
ग्रथित-गुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य।
सकल-गण-वरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानः
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार॥ ३३॥

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतर-धनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च॥ ३४॥

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्॥ ३५॥

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः।
महिम्नस्तव पाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥ ३६॥

कुसुमदशन-नामा सर्वगन्धर्वराजः
शशिधरवर-मौलेर्देवदेवस्य दासः।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद्-दिव्य-दिव्यं महिम्नः॥ ३७॥

सुरगुरुमभिपूज्य स्वर्गमोक्षैकहेतुम्
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम्॥ ३८॥

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम्।
अनौपम्यं मनोहारि सर्वमीश्वरवर्णनम्॥ ३९॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः॥ ४०॥

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः॥ ४१॥

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते॥ ४२॥

श्री-पुष्पदन्त-मुखपङ्कज-निर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिष-हरेण हरप्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः॥ ४३॥

॥ इति श्री-पुष्पदन्तविरचितं श्री-शिवमहिम्नः स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

❀❀❀

॥ सूर्यसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

शतानीक उवाच

नाम्नां सहस्रं सवितुः श्रोतुमिच्छामि हे द्विज।
येन ते दर्शनं यातः साक्षाद्देवो दिवाकरः ॥ १ ॥

सर्वमङ्गलमङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम्।
स्तोत्रमेतन्महापुण्यं सर्वोपद्रवनाशनम् ॥ २ ॥

न तदस्ति भयं किञ्चिद्यदनेन न नश्यति।
ज्वराद्यैर्मुच्यते राजन् स्तोत्रेऽस्मिन् पठिते नरः ॥ ३ ॥

अन्ये च रोगाः शाम्यन्ति पठतः शृण्वतस्तथा।
सम्पद्यन्ते यथा कामाः सर्व एव यथेप्सिताः ॥ ४ ॥

य एतदादितः श्रुत्वा सङ्ग्रामं प्रविशेन्नरः।
स जित्वा समरे शत्रूनभ्येति गृहमक्षतः ॥ ५ ॥

वन्ध्यानां पुत्रजननं भीतानां भयनाशनम्।
भूतिकारि दरिद्राणां कुष्ठिनां परमौषधम् ॥ ६ ॥

बालानां चैव सर्वेषां ग्रहरक्षोनिवारणम्।
पठते संयतो राजन् स श्रेयः परमाप्नुयात् ॥ ७ ॥

स सिद्धः सर्वसङ्कल्पः सुखमत्यन्तमश्नुते।
धर्मार्थिभिर्धर्मलुब्धैः सुखाय च सुखार्थिभिः ॥ ८ ॥

राज्याय राज्यकामैश्च पठितव्यमिदं नरैः।
विद्यावहं तु विप्राणां क्षत्रियाणां जयावहम् ॥ ९ ॥

पश्चावहं तु वैश्यानां शूद्राणां धर्मवर्धनम्।
पठतां श्रृण्वतामेतद्भवतीति न संशयः॥१०॥

तच्छृणुष्व नृपश्रेष्ठ प्रयतात्मा ब्रवीमि ते।
नाम्नां सहस्रं विख्यातं देवदेवस्य धीमतः॥११॥

॥ध्यानम्॥

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती
नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी
हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः॥

॥स्तोत्रम्॥

ॐ विश्वविद्विश्वजित्कर्ता विश्वात्मा विश्वतोमुखः।
विश्वेश्वरो विश्वयोनिर्नियतात्मा जितेन्द्रियः॥१॥

कालाश्रयः कालकर्ता कालहा कालनाशनः।
महायोगी महासिद्धिर्महात्मा सुमहाबलः॥२॥

प्रभुर्विभुर्भूतनाथो भूतात्मा भुवनेश्वरः।
भूतभव्यो भावितात्मा भूतान्तःकरणं शिवः॥३॥

शरण्यः कमलानन्दो नन्दनो नन्दवर्धनः।
वरेण्यो वरदो योगी सुसंयुक्तः प्रकाशकः॥४॥

प्राप्तयानः परप्राणः पूतात्मा प्रयतः प्रियः।
नयः सहस्रपात् साधुर्दिव्यकुण्डलमण्डितः॥५॥

अव्यङ्गधारी धीरात्मा सविता वायुवाहनः।
समाहितमतिर्दाता विधाता कृतमङ्गलः॥६॥

कपर्दी कल्पपाद्रुद्रः सुमना धर्मवत्सलः।
समायुक्तो विमुक्तात्मा कृतात्मा कृतिनां वरः॥७॥

अविचिन्त्यवपुः श्रेष्ठो महायोगी महेश्वरः।
कान्तः कामारिरादित्यो नियतात्मा निराकुलः॥८॥

कामः कारुणिकः कर्ता कमलाकरबोधनः।
सप्तसप्तिरचिन्त्यात्मा महाकारुणिकोत्तमः॥९॥

सञ्जीवनो जीवनाथो जयो जीवो जगत्पतिः।
अयुक्तो विश्वनिलयः संविभागी वृषध्वजः॥१०॥

वृषाकपिः कल्पकर्ता कल्पान्तकरणो रविः।
एकचक्ररथो मौनी सुरथो रथिनां वरः॥११॥

सक्रोधनो रश्मिमाली तेजोराशिर्विभावसुः।
दिव्यकृद्दिनकृद्देवो देवदेवो दिवस्पतिः॥१२॥

दीननाथो हरो होता दिव्यबाहुर्दिवाकरः।
यज्ञो यज्ञपतिः पूषा स्वर्णरेताः परावरः॥१३॥

परापरज्ञस्तरणिरंशुमाली मनोहरः।
प्राज्ञः प्राज्ञपतिः सूर्यः सविता विष्णुरंशुमान्॥१४॥

सदागतिर्गन्धवहो विहितो विधिराशुगः।
पतङ्गः पतगः स्थाणुर्विहङ्गो विहगो वरः॥१५॥

हर्यश्वो हरिताश्वश्च हरिदश्वो जगत्प्रियः।
त्र्यम्बकः सर्वदमनो भावितात्मा भिषग्वरः॥ १६॥

आलोककृल्लोकनाथो लोकालोकनमस्कृतः।
कालः कल्पान्तको वह्निस्तपनः सम्प्रतापनः॥ १७॥

विरोचनो विरूपाक्षः सहस्राक्षः पुरन्दरः।
सहस्ररश्मिर्मिहिरो विविधाम्बरभूषणः॥ १८॥

खगः प्रतर्दनो धन्यो हयगो वाग्विशारदः।
श्रीमानशिशिरो वाग्मी श्रीपतिः श्रीनिकेतनः॥ १९॥

श्रीकण्ठः श्रीधरः श्रीमान् श्रीनिवासो वसुप्रदः।
कामचारी महामायो महोग्रोऽविदितामयः॥ २०॥

तीर्थक्रियावान् सुनयो विभक्तो भक्तवत्सलः।
कीर्तिः कीर्तिकरो नित्यः कुण्डली कवची रथी॥ २१॥

हिरण्यरेताः सप्ताश्वः प्रयतात्मा परन्तपः।
बुद्धिमानमरश्रेष्ठो रोचिष्णुः पाकशासनः॥ २२॥

समुद्रो धनदो धाता मान्धाता कश्मलापहः।
तमोघ्नो ध्वान्तहा वह्निर्होताऽन्तःकरणो गुहः॥ २३॥

पशुमान् प्रयतानन्दो भूतेशः श्रीमतां वरः।
नित्योऽदितो नित्यरथः सुरेशः सुरपूजितः॥ २४॥

अजितो विजितो जेता जङ्गमस्थावरात्मकः।
जीवानन्दो नित्यगामी विजेता विजयप्रदः॥ २५॥

पर्जन्योऽग्निः स्थितिः स्थेयः स्थविरोऽथ निरञ्जनः।
प्रद्योतनो रथारूढः सर्वलोकप्रकाशकः॥ २६॥

ध्रुवो मेषी महावीर्यो हंसः संसारतारकः।
सृष्टिकर्ता क्रियाहेतुर्मार्तण्डो मरुतां पतिः॥ २७॥

मरुत्वान् दहनस्त्वष्टा भगो भर्गोऽर्यमा कपिः।
वरुणेशो जगन्नाथः कृतकृत्यः सुलोचनः॥ २८॥

विवस्वान् भानुमान् कार्यः कारणस्तेजसां निधिः।
असङ्गगामी तिग्मांशुर्घर्मांशुर्दीप्तदीधितिः॥ २९॥

सहस्रदीधितिर्ब्रध्नः सहस्रांशुर्दिवाकरः।
गभस्तिमान् दीधितिमान् स्रग्वी मणिकुलद्युतिः॥ ३०॥

भास्करः सुरकार्यज्ञः सर्वज्ञस्तीक्ष्णदीधितिः।
सुरज्येष्ठः सुरपतिर्बहुज्ञो वचसां पतिः॥ ३१॥

तेजोनिधिर्बृहत्तेजा बृहत्कीर्तिर्बृहस्पतिः।
अहिमानूर्जितो धीमानामुक्तः कीर्तिवर्धनः॥ ३२॥

महावैद्यो गणपतिर्धनेशो गणनायकः।
तीव्रप्रतापनस्तापी तापनो विश्वतापनः॥ ३३॥

कार्तस्वरो हृषीकेशः पद्मानन्दोऽतिनन्दितः।
पद्मनाभोऽमृताहारः स्थितिमान् केतुमान् नभः॥ ३४॥

अनाद्यन्तोऽच्युतो विश्वो विश्वामित्रो घृणिर्विराट्।
आमुक्तकवचो वाग्मी कञ्चुकी विश्वभावनः॥ ३५॥

अनिमित्तगतिः श्रेष्ठः शरण्यः सर्वतोमुखः।
विगाही वेणुरसहः समायुक्तः समाक्रतुः॥३६॥

धर्मकेतुर्धर्मरतिः संहर्ता संयमो यमः।
प्रणतार्तिहरो वायुः सिद्धकार्यो जनेश्वरः॥३७॥

नभो विगाहनः सत्यः सवितात्मा मनोहरः।
हारी हरिर्हरो वायुर्ऋतुः कालानलद्युतिः॥३८॥

सुखसेव्यो महातेजा जगतामेककारणम्।
महेन्द्रो विष्टुतः स्तोत्रं स्तुतिहेतुः प्रभाकरः॥३९॥

सहस्रकर आयुष्मान् अरोषः सुखदः सुखी।
व्याधिहा सुखदः सौख्यं कल्याणः कलतां वरः॥४०॥

आरोग्यकारणं सिद्धिर्ऋद्धिर्वृद्धिर्बृहस्पतिः।
हिरण्यरेता आरोग्यं विद्वान् ब्रध्नो बुधो महान्॥४१॥

प्राणवान् धृतिमान् घर्मो घर्मकर्ता रुचिप्रदः।
सर्वप्रियः सर्वसहः सर्वशत्रुविनाशनः॥४२॥

प्रांशुर्विद्योतनो द्योतः सहस्रकिरणः कृती।
केयूरी भूषणोद्भासी भासितो भासनोऽनलः॥४३॥

शरण्यार्तिहरो होता खद्योतः खगसत्तमः।
सर्वद्योतो भवद्योतः सर्वद्युतिकरो मतः॥४४॥

कल्याणः कल्याणकरः कल्यः कल्यकरः कविः।
कल्याणकृत् कल्यवपुः सर्वकल्याणभाजनम्॥४५॥

शान्तिप्रियः प्रसन्नात्मा प्रशान्तः प्रशमप्रियः।
उदारकर्मा सुनयः सुवर्चा वर्चसोज्ज्वलः॥४६॥

वर्चस्वी वर्चसामीशस्त्रैलोक्येशो वशानुगः।
तेजस्वी सुयशा वर्ष्मी वर्णाध्यक्षो बलिप्रियः॥४७॥

यशस्वी तेजोनिलयस्तेजस्वी प्रकृतिस्थितः।
आकाशगः शीघ्रगतिराशुगो गतिमान् खगः॥४८॥

गोपतिर्ग्रहदेवेशो गोमानेकः प्रभञ्जनः।
जनिता प्रजनो जीवो दीपः सर्वप्रकाशकः॥४९॥

सर्वसाक्षी योगनित्यो नभस्वानसुरान्तकः।
रक्षोघ्नो विघ्नशमनः किरीटी सुमनःप्रियः॥५०॥

मरीचिमाली सुमतिः कृताभिख्यविशेषकः।
शिष्टाचारः शुभाचारः स्वचाराचारतत्परः॥५१॥

मन्दारो माठरो वेणुः क्षुधापः क्ष्मापतिर्गुरुः।
सुविशिष्टो विशिष्टात्मा विधेयो ज्ञानशोभनः॥५२॥

महाश्वेतः प्रियो ज्ञेयः सामगो मोक्षदायकः।
सर्ववेदप्रगीतात्मा सर्ववेदलयो महान्॥५३॥

वेदमूर्तिश्चतुर्वेदो वेदभृद्वेदपारगः।
क्रियावानसितो जिष्णुर्वरीयांशुर्वरप्रदः॥५४॥

व्रतचारी व्रतधरो लोकबन्धुरलङ्कृतः।
अलङ्काराक्षरो वेद्यो विद्यावान् विदिताशयः॥५५॥

आकारो भूषणो भूष्यो भूष्णुर्भुवनपूजितः।
चक्रपाणिर्ध्वजधरः सुरेशो लोकवत्सलः॥५६॥

वाग्मिपतिर्महाबाहुः प्रकृतिर्विकृतिर्गुणः।
अन्धकारापहः श्रेष्ठो युगावर्तो युगादिकृत्॥५७॥

अप्रमेयः सदायोगी निरहङ्कार ईश्वरः।
शुभप्रदः शुभः शास्ता शुभकर्मा शुभप्रदः॥५८॥

सत्यवान् श्रुतिमानुच्चैर्नकारो वृद्धिदोऽनलः।
बलभृद्बलदो बन्धुर्मतिमान् बलिनां वरः॥५९॥

अनङ्गो नागराजेन्द्रः पद्मयोनिर्गणेश्वरः।
संवत्सर ऋतुर्नेता कालचक्रप्रवर्तकः॥६०॥

पद्मेक्षणः पद्मयोनिः प्रभावानमरः प्रभुः।
सुमूर्तिः सुमतिः सोमो गोविन्दो जगदादिजः॥६१॥

पीतवासाः कृष्णवासा दिग्वासास्त्विन्द्रियातिगः।
अतीन्द्रियोऽनेकरूपः स्कन्दः परपुरञ्जयः॥६२॥

शक्तिमाञ्जलधृग्भास्वान् मोक्षहेतुरयोनिजः।
सर्वदर्शी जितादर्शो दुःस्वप्नाशुभनाशनः॥६३॥

माङ्गल्यकर्ता तरणिर्वेगवान् कश्मलापहः।
स्पष्टाक्षरो महामन्त्रो विशाखो यजनप्रियः॥६४॥

विश्वकर्मा महाशक्तिर्द्युतिरीशो विहङ्गमः।
विचक्षणो दक्ष इन्द्रः प्रत्यूषः प्रियदर्शनः॥६५॥

अखिन्नो वेदनिलयो वेदविद्विदिताशयः।
प्रभाकरो जितरिपुः सुजनोऽरुणसारथिः॥ ६६ ॥

कुनाशी सुरतः स्कन्दो महितोऽभिमतो गुरुः।
ग्रहराजो ग्रहपतिर्ग्रहनक्षत्रमण्डलः॥ ६७ ॥

भास्करः सततानन्दो नन्दनो नरवाहनः।
मङ्गलोऽथ मङ्गलवान् माङ्गल्यो मङ्गलावहः॥ ६८ ॥

मङ्गल्यचारुचरितः शीर्णः सर्वव्रतो व्रती।
चतुर्मुखः पद्ममाली पूतात्मा प्रणतार्तिहा॥ ६९ ॥

अकिञ्चनः सतामीशो निर्गुणो गुणवाञ्छुचिः।
सम्पूर्णः पुण्डरीकाक्षो विधेयो योगतत्परः॥ ७० ॥

सहस्रांशुः क्रतुमतिः सर्वज्ञः सुमतिः सुवाक्।
सुवाहनो माल्यदामा कृताहारो हरिप्रियः॥ ७१ ॥

ब्रह्मा प्रचेताः प्रथितः प्रयतात्मा स्थिरात्मकः।
शतविन्दुः शतमुखो गरीयाननलप्रभः॥ ७२ ॥

धीरो महत्तरो विप्रः पुराणपुरुषोत्तमः।
विद्याराजाधिराजो हि विद्यावान् भूतिदः स्थितः॥ ७३ ॥

अनिर्देश्यवपुः श्रीमान् विपाप्मा बहुमङ्गलः।
स्वःस्थितः सुरथः स्वर्णो मोक्षदो बलिकेतनः॥ ७४ ॥

निर्द्वन्द्वो द्वन्द्वहा सर्गः सर्वगः सम्प्रकाशकः।
दयालुः सूक्ष्मधीः क्षान्तिः क्षेमाक्षेमस्थितिप्रियः॥ ७५ ॥

भूधरो भूपतिर्वक्ता पवित्रात्मा त्रिलोचनः।
महावराहः प्रियकृद्दाता भोक्ताऽभयप्रदः॥ ७६ ॥

चक्रवर्ती धृतिकरः सम्पूर्णोऽथ महेश्वरः।
चतुर्वेदधरोऽचिन्त्यो विनिन्द्यो विविधाशनः॥ ७७ ॥

विचित्ररथ एकाकी सप्तसप्तिः परात्परः।
सर्वोदधिस्थितिकरः स्थितिस्थेयः स्थितिप्रियः॥ ७८ ॥

निष्कलः पुष्कलो विभुर्वसुमान् वासवप्रियः।
पशुमान् वासवस्वामी वसुधामा वसुप्रदः॥ ७९ ॥

बलवान् ज्ञानवांस्तत्त्वमोङ्कारस्त्रिषु संस्थितः।
सङ्कल्पयोनिर्दिनकृद्भगवान् कारणापहः॥ ८० ॥

नीलकण्ठो धनाध्यक्षश्चतुर्वेदप्रियंवदः।
वषट्कारोद्गाता होता स्वाहाकारो हुताहुतिः॥ ८१ ॥

जनार्दनो जनानन्दो नरो नारायणोऽम्बुदः।
सन्देहनाशनो वायुर्धन्वी सुरनमस्कृतः॥ ८२ ॥

विग्रही विमलो विन्दुर्विशोको विमलद्युतिः।
द्युतिमान् द्योतनो विद्युद्विद्यावान् विदितो बली॥ ८३ ॥

घर्मदो हिमदो हासः कृष्णवर्त्मा सुताजितः।
सावित्रीभावितो राजा विश्वामित्रो घृणिर्विराट्॥ ८४ ॥

सप्तार्चिः सप्ततुरगः सप्तलोकनमस्कृतः।
सम्पूर्णोऽथ जगन्नाथः सुमनाः शोभनप्रियः॥ ८५ ॥

सर्वात्मा सर्वकृत् सृष्टिः सप्तिमान् सप्तमीप्रियः।
सुमेधा मेधिको मेध्यो मेधावी मधुसूदनः॥८६॥

अङ्गिरःपतिः कालज्ञो धूमकेतुः सुकेतनः।
सुखी सुखप्रदः सौख्यं कामी कान्तिप्रियो मुनिः॥८७॥

सन्तापनः सन्तपन आतपस्तपसां पतिः।
उमापतिः सहस्रांशुः प्रियकारी प्रियङ्करः॥८८॥

प्रीतिर्विमन्युरम्भोत्थः खञ्जनो जगतां पतिः।
जगत्पिता प्रीतमनाः सर्वः खर्वो गुहोऽचलः॥८९॥

सर्वगो जगदानन्दो जगन्नेता सुरारिहा।
श्रेयः श्रेयस्करो ज्यायान् महानुत्तम उद्भवः॥९०॥

उत्तमो मेरुमेयोऽथ धरणो धरणीधरः।
धराध्यक्षो धर्मराजो धर्माधर्मप्रवर्तकः॥९१॥

रथाध्यक्षो रथगतिस्तरुणस्तनितोऽनलः।
उत्तरोऽनुत्तरस्तापी अवाक्पतिरपां पतिः॥९२॥

पुण्यसङ्कीर्तनः पुण्यो हेतुर्लोकत्रयाश्रयः।
स्वर्भानुर्विगतानन्दो विशिष्टोत्कृष्टकर्मकृत्॥९३॥

व्याधिप्रणाशनः क्षेमः शूरः सर्वजितां वरः।
एकरथो रथाधीशः पिता शनैश्चरस्य हि॥९४॥

वैवस्वतगुरुर्मृत्युर्धर्मनित्यो महाव्रतः।
प्रलम्बहारसञ्चारी प्रद्योतो द्योतितानलः॥९५॥

सन्तापहृत् परो मन्त्रो मन्त्रमूर्तिर्महाबलः।
श्रेष्ठात्मा सुप्रियः शम्भुर्मरुतामीश्वरेश्वरः॥ ९६॥

संसारगतिविच्छेत्ता संसारार्णवतारकः।
सप्तजिह्वः सहस्रार्चीं रत्नगर्भोऽपराजितः॥ ९७॥

धर्मकेतुरमेयात्मा धर्माधर्मवरप्रदः।
लोकसाक्षी लोकगुरुर्लोकेशश्चण्डवाहनः॥ ९८॥

धर्मयूपो यूपवृक्षो धनुष्पाणिर्धनुर्धरः।
पिनाकधृङ्महोत्साहो महामायो महाशनः॥ ९९॥

वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठः सर्वशस्त्रभृतां वरः।
ज्ञानगम्यो दुराराध्यो लोहिताङ्गो विवर्धनः॥ १००॥

खगोऽन्धो धर्मदो नित्यो धर्मकृच्चित्रविक्रमः।
भगवानात्मवान् मन्त्रस्त्र्यक्षरो नीललोहितः॥ १०१॥

एकोऽनेकस्त्रयी कालः सविता समितिञ्जयः।
शार्ङ्गधन्वाऽनलो भीमः सर्वप्रहरणायुधः॥ १०२॥

सुकर्मा परमेष्ठी च नाकपाली दिविस्थितः।
वदान्यो वासुकिर्वैद्य आत्रेयोऽथ पराक्रमः॥ १०३॥

द्वापरः परमोदारः परमो ब्रह्मचर्यवान्।
उदीच्यवेषो मुकुटी पद्महस्तो हिमांशुभृत्॥ १०४॥

सितः प्रसन्नवदनः पद्मोदरनिभाननः।
सायं दिवा दिव्यवपुरनिर्देश्यो महालयः॥ १०५॥

महारथो महानीशः शेषः सत्त्वरजस्तमः।
धृतातपत्रप्रतिमो विमर्षी निर्णयः स्थितः॥ १०६॥

अहिंसकः शुद्धमतिरद्वितीयो विवर्धनः।
सर्वदो धनदो मोक्षो विहारी बहुदायकः॥ १०७॥

चारुरात्रिहरो नाथो भगवान् सर्वगोऽव्ययः।
मनोहरवपुः शुभ्रः शोभनः सुप्रभावनः॥ १०८॥

सुप्रभावः सुप्रतापः सुनेत्रो दिग्विदिक्पतिः।
राज्ञीप्रियः शब्दकरो ग्रहेशस्तिमिरापहः॥ १०९॥

सैंहिकेयरिपुर्देवो वरदो वरनायकः।
चतुर्भुजो महायोगी योगीश्वरपतिस्तथा॥ ११०॥

अनादिरूपोऽदितिजो रत्नकान्तिः प्रभामयः।
जगत्प्रदीपो विस्तीर्णो महाविस्तीर्णमण्डलः॥ १११॥

एकचक्ररथः स्वर्णरथः स्वर्णशरीरधृक्।
निरालम्बो गगनगो धर्मकर्मप्रभावकृत्॥ ११२॥

धर्मात्मा कर्मणां साक्षी प्रत्यक्षः परमेश्वरः।
मेरुसेवी सुमेधावी मेरुरक्षाकरो महान्॥ ११३॥

आधारभूतो रतिमांस्तथा च धनधान्यकृत्।
पापसन्तापहर्ता च मनोवाञ्छितदायकः॥ ११४॥

रोगहर्ता राज्यदायी रमणीयगुणोऽनृणी।
कालत्रयानन्तरूपो मुनिवृन्दनमस्कृतः॥ ११५॥

सन्ध्यारागकरः सिद्धः सन्ध्यावन्दनवन्दितः।
साम्राज्यदाननिरतः समाराधनतोषवान्॥ ११६॥

भक्तदुःखक्षयकरो भवसागरतारकः।
भयापहर्ता भगवानप्रमेयपराक्रमः।
मनुस्वामी मनुपतिर्मान्यो मन्वन्तराधिपः॥ ११७॥

॥ फलश्रुतिः ॥

एतत्ते सर्वमाख्यातं यन्मां त्वं परिपृच्छसि।
नाम्नां सहस्रं सवितुः पाराशर्यो यदाह मे॥ १॥

धन्यं यशस्यमायुष्यं दुःखदुःस्वप्ननाशनम्।
बन्धमोक्षकरं चैव भानोर्नामानुकीर्तनात्॥ २॥

यस्त्विदं शृणुयान्नित्यं पठेद्वा प्रयतो नरः।
अक्षयं सुखमन्नाद्यं भवेत्तस्योपसाधितम्॥ ३॥

नृपाग्नितस्करभयं व्याधितो न भयं भवेत्।
विजयी च भवेन्नित्यमाश्रयं परमाप्नुयात्॥ ४॥

कीर्तिमान् सुभगो विद्वान् स सुखी प्रियदर्शनः।
जीवेद्वर्षशतायुश्च सर्वव्याधिविवर्जितः॥ ५॥

नाम्नां सहस्रमिदमंशुमतः पठेद्यः
प्रातः शुचिर्नियमवान् सुसमृद्धियुक्तः।
दूरेण तं परिहरन्ति सदैव रोगाः
भूताः सुपर्णमिव सर्वमहोरगेन्द्राः॥ ६॥

॥ इति श्री-भविष्यपुराणे सप्तमकल्पे श्रीभगवत्सूर्यस्य सहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

❀❀❀

॥ सरस्वती-सहस्रनाम-स्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

श्रीमच्चन्दनचर्चितोज्ज्वलवपुः शुक्लाम्बरा मल्लिका-
मालालालित-कुन्तला प्रविलसन्मुक्तावलीशोभना।
सर्वज्ञाननिधानपुस्तकधरा रुद्राक्षमालाङ्किता
वाग्देवी वदनाम्बुजे वसतु मे त्रैलोक्यमाता शुभा॥

श्री-नारद उवाच

भगवन् परमेशान सर्वलोकैकनायक।
कथं सरस्वती साक्षात्प्रसन्ना परमेष्ठिनः॥ १ ॥

कथं देव्या महावाण्याः सतत्प्राप सुदुर्लभम्।
एतन्मे वद तत्त्वेन महायोगीश्वरप्रभो॥ २ ॥

श्री-सनत्कुमार उवाच

साधु पृष्टं त्वया ब्रह्मन् गुह्याद्गुह्यमनुत्तमम्।
भयानुगोपितं यत्नादिदानीं सत्प्रकाश्यते॥ ३ ॥

पुरा पितामहं दृष्ट्वा जगत्स्थावरजङ्गमम्।
निर्विकारं निराभासं स्तम्भीभूतमचेतसम्॥ ४ ॥

सृष्ट्वा त्रैलोक्यमखिलं वागभावात्तथाविधम्।
आधिक्याभावतः स्वस्य परमेष्ठी जगद्गुरुः॥ ५ ॥

दिव्यवर्षायुतं तेन तपो दुष्करमुत्तमम्।
ततः कदाचित्सञ्जाता वाणी सर्वार्थशोभिता॥ ६ ॥

अहमस्मि महाविद्या सर्ववाचामधीश्वरी।
मम नाम्नां सहस्रं तु उपदेक्ष्याम्यनुत्तमम्॥ ७॥

अनेन संस्तुता नित्यं पत्नी तव भवाम्यहम्।
त्वया सृष्टं जगत्सर्वं वाणीयुक्तं भविष्यति॥ ८॥

इदं रहस्यं परमं मम नामसहस्रकम्।
सर्वपापौघशमनं महासारस्वतप्रदम्॥ ९॥

महाकवित्वदं लोके वागीशत्वप्रदायकम्।
त्वं वा परः पुमान्यस्तु स्तवेनानेन तोषयेत्॥ १०॥

तस्याहं किङ्करी साक्षाद्भविष्यामि न संशयः।
इत्युक्त्वाऽन्तर्दधे वाणी तदारभ्य पितामहः॥ ११॥

स्तुत्वा स्तोत्रेण दिव्येन तत्पतित्वमवाप्तवान्।
वाणीयुक्तं जगत्सर्वं तदारभ्याभवन्मुने॥ १२॥

तत्तेहं सम्प्रवक्ष्यामि शृणु यत्नेन नारद।
सावधानमना भूत्वा क्षणं शुद्धो मुनीश्वरः॥ १३॥

॥ स्तोत्रम्॥

वाग्वाणी वरदा वन्द्या वरारोहा वरप्रदा।
वृत्तिर्वागीश्वरी वार्ता वरा वागीशवल्लभा॥ १॥

विश्वेश्वरी विश्ववन्द्या विश्वेशप्रियकारिणी।
वाग्वादिनी च वाग्देवी वृद्धिदा वृद्धिकारिणी॥ २॥

वृद्धिर्वृद्धा विषघ्नी च वृष्टिर्वृष्टिप्रदायिनी।
विश्वाराध्या विश्वमाता विश्वधात्री विनायका॥ ३॥

विश्वशक्तिर्विश्वसारा विश्वा विश्वविभावरी।
वेदान्तवेदिनी वेद्या वित्ता वेदत्रयात्मिका॥ ४॥

वेदज्ञा वेदजननी विश्वा विश्वविभावरी।
वरेण्या वाङ्मयी वृद्धा विशिष्टप्रियकारिणी॥ ५॥

विश्वतोवदना व्याप्ता व्यापिनी व्यापकात्मिका।
व्यालघ्नी व्यालभूषाङ्गी विरजा वेदनायिका॥ ६॥

वेदवेदान्तसंवेद्या वेदान्तज्ञानरूपिणी।
विभावरी च विक्रान्ता विश्वामित्रा विधिप्रिया॥ ७॥

वरिष्ठा विप्रकृष्टा च विप्रवर्यप्रपूजिता।
वेदरूपा वेदमयी वेदमूर्तिश्च वल्लभा॥ ८॥

गौरी गुणवती गोप्या गन्धर्वनगरप्रिया।
गुणमाता गुहान्तस्था गुरुरूपा गुरुप्रिया॥ ९॥

गिरिविद्या गानतुष्टा गायकप्रियकारिणी।
गायत्री गिरिशाराध्या गीर्गिरीशप्रियङ्करी॥ १०॥

गिरिज्ञा ज्ञानविद्या च गिरिरूपा गिरीश्वरी।
गीर्माता गणसंस्तुत्या गणनीयगुणान्विता॥ ११॥

गूढरूपा गुहा गोप्या गोरूपा गौर्गुणात्मिका।
गुर्वी गुर्वम्बिका गुह्या गेयजा ग्रहनाशिनी॥ १२॥

गृहिणी गृहदोषघ्नी गवघ्नी गुरुवत्सला।
गृहात्मिका गृहाराध्या गृहबाधाविनाशिनी॥ १३॥

गङ्गा गिरिसुता गम्या गजयाना गुहस्तुता।
गरुडासनसंसेव्या गोमती गुणशालिनी॥ १४॥

शारदा शाश्वती शैवी शाङ्करी शङ्करात्मिका।
श्रीः शर्वाणी शतघ्नी च शरच्चन्द्रनिभानना॥ १५॥

शर्मिष्ठा शमनघ्नी च शतसाहस्ररूपिणी।
शिवा शम्भुप्रिया श्रद्धा श्रुतिरूपा श्रुतिप्रिया॥ १६॥

शुचिष्मती शर्मकरी शुद्धिदा शुद्धिरूपिणी।
शिवा शिवङ्करी शुद्धा शिवाराध्या शिवात्मिका॥ १७॥

श्रीमती श्रीमयी श्राव्या श्रुतिः श्रवणगोचरा।
शान्तिः शान्तिकरी शान्ता शान्ताचारप्रियङ्करी॥ १८॥

शीललभ्या शीलवती श्रीमाता शुभकारिणी।
शुभवाणी शुद्धविद्या शुद्धचित्तप्रपूजिता॥ १९॥

श्रीकरी श्रुतपापघ्नी शुभाक्षी शुचिवल्लभा।
शिवेतरघ्नी शबरी श्रवणीयगुणान्विता॥ २०॥

शारी शिरीषपुष्पाभा शमनिष्ठा शमात्मिका।
शमान्विता शमाराध्या शितिकण्ठप्रपूजिता॥ २१॥

शुद्धिः शुद्धिकरी श्रेष्ठा श्रुतानन्ता शुभावहा।
सरस्वती च सर्वज्ञा सर्वसिद्धिप्रदायिनी॥ २२॥

सरस्वती च सावित्री सन्ध्या सर्वेप्सितप्रदा।
सर्वार्तिघ्नी सर्वमयी सर्वविद्याप्रदायिनी॥ २३॥

सर्वेश्वरी सर्वपुण्या सर्गस्थित्यन्तकारिणी।
सर्वाराध्या सर्वमाता सर्वदेवनिषेविता॥ २४॥

सर्वैश्वर्यप्रदा सत्या सती सत्वगुणाश्रया।
स्वरक्रमपदाकारा सर्वदोषनिषूदिनी॥ २५॥

सहस्राक्षी सहस्रास्या सहस्रपदसंयुता।
सहस्रहस्ता साहस्रगुणालङ्कृतविग्रहा॥ २६॥

सहस्रशीर्षा सद्रूपा स्वधा स्वाहा सुधामयी।
षड्ग्रन्थिभेदिनी सेव्या सर्वलोकैकपूजिता॥ २७॥

स्तुत्या स्तुतिमयी साध्या सवितृप्रियकारिणी।
संशयच्छेदिनी साङ्ख्यवेद्या सङ्ख्या सदीश्वरी॥ २८॥

सिद्धिदा सिद्धसम्पूज्या सर्वसिद्धिप्रदायिनी।
सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च सर्वसम्पत्प्रदायिनी॥ २९॥

सर्वाशुभघ्नी सुखदा सुखा संवित्स्वरूपिणी।
सर्वसम्भीषणी सर्वजगत्सम्मोहिनी तथा॥ ३०॥

सर्वप्रियङ्करी सर्वशुभदा सर्वमङ्गला।
सर्वमन्त्रमयी सर्वतीर्थपुण्यफलप्रदा॥ ३१॥

सर्वपुण्यमयी सर्वव्याधिघ्नी सर्वकामदा।
सर्वविघ्नहरी सर्ववन्दिता सर्वमङ्गला॥ ३२॥

सर्वमन्त्रकरी सर्वलक्ष्मीः सर्वगुणान्विता।
सर्वानन्दमयी सर्वज्ञानदा सत्यनायिका॥ ३३॥

सर्वज्ञानमयी सर्वराज्यदा सर्वमुक्तिदा।
सुप्रभा सर्वदा सर्वा सर्वलोकवशङ्करी॥ ३४॥

सुभगा सुन्दरी सिद्धा सिद्धाम्बा सिद्धमातृका।
सिद्धमाता सिद्धविद्या सिद्धेशी सिद्धरूपिणी॥ ३५॥

सुरूपिणी सुखमयी सेवकप्रियकारिणी।
स्वामिनी सर्वदा सेव्या स्थूलसूक्ष्मापराम्बिका॥ ३६ ॥

साररूपा सरोरूपा सत्यभूता समाश्रया।
सितासिता सरोजाक्षी सरोजासनवल्लभा॥ ३७॥

सरोरुहाभा सर्वाङ्गी सुरेन्द्रादिप्रपूजिता।
महादेवी महेशानी महासारस्वतप्रदा॥ ३८॥

महासरस्वती मुक्ता मुक्तिदा मलनाशिनी।
महेश्वरी महानन्दा महामन्त्रमयी मही॥ ३९॥

महालक्ष्मीर्महाविद्या माता मन्दरवासिनी।
मन्त्रगम्या मन्त्रमाता महामन्त्रफलप्रदा॥ ४०॥

महामुक्तिर्महानित्या महासिद्धिप्रदायिनी।
महासिद्धा महामाता महदाकारसंयुता॥ ४१ ॥

महा महेश्वरी मूर्तिर्मोक्षदा मणिभूषणा।
मेनका मानिनी मान्या मृत्युघ्नी मेरुरूपिणी॥ ४२॥

मदिराक्षी मदावासा मखरूपा मखेश्वरी।
महामोहा महामाया मातॄणां मूर्ध्निसंस्थिता॥ ४३॥

महापुण्या मुदावासा महासम्पत्प्रदायिनी।
मणिपूरैकनिलया मधुरूपा महोत्कटा॥ ४४॥

महासूक्ष्मा महाशान्ता महाशान्तिप्रदायिनी।
मुनिस्तुता मोहहन्त्री माधवी माधवप्रिया॥ ४५॥

मा महादेवसंस्तुत्या महिषीगणपूजिता।
मृष्टान्नदा च माहेन्द्री महेन्द्रपददायिनी॥ ४६॥

मतिर्मतिप्रदा मेधा मर्त्यलोकनिवासिनी।
मुख्या महानिवासा च महाभाग्यजनाश्रिता॥ ४७॥

महिला महिमा मृत्युहारी मेधाप्रदायिनी।
मेध्या महावेगवती महामोक्षफलप्रदा॥ ४८॥

महाप्रभाभा महती महादेवप्रियङ्करी।
महापोषा महर्द्धिश्च मुक्ताहारविभूषणा॥ ४९॥

माणिक्यभूषणा मन्त्रा मुख्यचन्द्रार्धशेखरा।
मनोरूपा मनःशुद्धिर्मनःशुद्धिप्रदायिनी॥ ५०॥

महाकारुण्यसम्पूर्णा मनोनमनवन्दिता।
महापातकजालघ्नी मुक्तिदा मुक्तभूषणा॥ ५१॥

मनोन्मनी महास्थूला महाक्रतुफलप्रदा।
महापुण्यफलप्राप्या मायात्रिपुरनाशिनी॥ ५२॥

महानसा महामेधा महामोदा महेश्वरी।
मालाधरी महोपाया महातीर्थफलप्रदा॥ ५३॥

महामङ्गलसम्पूर्णा महादारिद्र्यनाशिनी।
महामखा महामेघा महाकाली महाप्रिया॥ ५४॥

महाभूषा महादेहा महाराज्ञी मुदालया।
भूरिदा भाग्यदा भोग्या भोग्यदा भोगदायिनी॥ ५५॥

भवानी भूतिदा भूतिर्भूमिर्भूमिसुनायिका।
भूतधात्री भयहरी भक्तसारस्वतप्रदा॥ ५६॥

भुक्तिर्भुक्तिप्रदा भेकी भक्तिर्भक्तिप्रदायिनी।
भक्तसायुज्यदा भक्तस्वर्गदा भक्तराज्यदा॥ ५७॥

भागीरथी भवाराध्या भाग्यासज्जनपूजिता।
भवस्तुत्या भानुमती भवसागरतारणी॥ ५८॥

भूतिर्भूषा च भूतेशी भाललोचनपूजिता।
भूता भव्या भविष्या च भवविद्या भवात्मिका॥ ५९॥

बाधापहारिणी बन्धुरूपा भुवनपूजिता।
भवघ्नी भक्तिलभ्या च भक्तरक्षणतत्परा॥ ६०॥

भक्तार्तिशमनी भाग्या भोगदानकृतोद्यमा।
भुजङ्गभूषणा भीमा भीमाक्षी भीमरूपिणी॥ ६१॥

भाविनी भ्रातृरूपा च भारती भवनायिका।
भाषा भाषावती भीष्मा भैरवी भैरवप्रिया॥ ६२॥

भूतिर्भासितसर्वाङ्गी भूतिदा भूतिनायिका।
भास्वती भगमाला च भिक्षादानकृतोद्यमा॥ ६३॥

भिक्षुरूपा भक्तिकरी भक्तलक्ष्मीप्रदायिनी।
भ्रान्तिघ्ना भ्रान्तिरूपा च भूतिदा भूतिकारिणी॥ ६४॥

भिक्षणीया भिक्षुमाता भाग्यवद्दृष्टिगोचरा।
भोगवती भोगरूपा भोगमोक्षफलप्रदा॥ ६५॥

भोगश्रान्ता भाग्यवती भक्ताघौघविनाशिनी।
ब्राह्मी ब्रह्मस्वरूपा च बृहती ब्रह्मवल्लभा॥ ६६॥

ब्रह्मदा ब्रह्ममाता च ब्रह्माणी ब्रह्मदायिनी।
ब्रह्मेशी ब्रह्मसंस्तुत्या ब्रह्मवेद्या बुधप्रिया॥ ६७॥

बालेन्दुशेखरा बाला बलिपूजाकरप्रिया।
बलदा बिन्दुरूपा च बालसूर्यसमप्रभा॥ ६८॥

ब्रह्मरूपा ब्रह्ममयी ब्रध्नमण्डलमध्यगा।
ब्रह्माणी बुद्धिदा बुद्धिर्बुद्धिरूपा बुधेश्वरी॥ ६९॥

बन्धक्षयकरी बाधनाशनी बन्धुरूपिणी।
बिन्द्वालया बिन्दुभूषा बिन्दुनादसमन्विता॥ ७०॥

बीजरूपा बीजमाता ब्रह्मण्या ब्रह्मकारिणी।
बहुरूपा बलवती ब्रह्मजा ब्रह्मचारिणी॥ ७१॥

ब्रह्मस्तुत्या ब्रह्मविद्या ब्रह्माण्डाधिपवल्लभा।
ब्रह्मेशविष्णुरूपा च ब्रह्मविष्ण्वीशसंस्थिता॥ ७२॥

बुद्धिरूपा बुधेशानी बन्धी बन्धविमोचनी।
अक्षमालाऽक्षराकाराऽक्षराऽक्षरफलप्रदा॥ ७३॥

अनन्ताऽऽनन्दसुखदाऽनन्तचन्द्रनिभानना।
अनन्तमहिमाऽघोराऽनन्तगम्भीरसम्मिता ॥७४॥

अदृष्टाऽदृष्टदाऽनन्ताऽदृष्टभाग्यफलप्रदा।
अरुन्धत्यव्ययीनाथाऽनेकसद्गुणसंयुता ॥७५॥

अनेकभूषणाऽदृश्याऽनेकलेखनिषेविता ।
अनन्ताऽनन्तसुखदाऽघोराऽघोरस्वरूपिणी॥७६॥

अशेषदेवतारूपाऽमृतरूपाऽमृतेश्वरी ।
अनवद्याऽनेकहस्ताऽनेकमाणिक्यभूषणा॥७७॥

अनेकविघ्नसंहर्त्री ह्यनेकाभरणान्विता।
अविद्याऽज्ञानसंहर्त्री ह्यविद्याजालनाशिनी॥७८॥

अभिरूपाऽनवद्याङ्गी ह्यप्रतर्क्यगतिप्रदा।
अकलङ्कारूपिणी च ह्यनुग्रहपरायणा॥७९॥

अम्बरस्थाऽम्बरमयाऽम्बरमालाऽम्बुजेक्षणा ।
अम्बिकाऽब्जकराऽब्जस्थांऽशुमत्यंशुशतान्विता॥८०॥

अम्बुजाऽनवराऽखण्डाऽम्बुजासनमहाप्रिया।
अजरामरसंसेव्याऽजरसेवितपद्युगा ॥८१॥

अतुलार्थप्रदाऽर्थैक्याऽत्युदारा त्वभयान्विता।
अनाथवत्सलाऽनन्तप्रियाऽनन्तेप्सितप्रदा ॥८२॥

अम्बुजाक्ष्यम्बुरूपाऽम्बुजातोद्भवमहाप्रिया।
अखण्डा त्वमरस्तुत्याऽमरनायकपूजिता॥८३॥

अजेया त्वजसङ्काशाऽज्ञाननाशिन्यभीष्टदा।
अक्ताऽघनेना चास्त्रेशी ह्यलक्ष्मीनाशिनी तथा॥८४॥

अनन्तसाराऽनन्तश्रीरनन्तविधिपूजिता ।
अभीष्टाऽमर्त्यसम्पूज्या ह्यस्तोदयविवर्जिता॥८५॥

आस्तिकस्वान्तनिलयाऽस्त्ररूपाऽस्त्रवती तथा।
अस्खलत्यस्खलद्रूपाऽस्खलद्विद्याप्रदायिनी ॥८६॥

अस्खलत्सिद्धिदाऽऽनन्दाऽम्बुजाताऽमरनायिका।
अमेयाऽशेषपापघ्न्यक्षयसारस्वतप्रदा ॥८७॥

जया जयन्ती जयदा जन्मकर्मविवर्जिता।
जगत्प्रिया जगन्माता जगदीश्वरवल्लभा॥८८॥

जातिर्जया जितामित्रा जप्या जपनकारिणी।
जीवनी जीवनिलया जीवाख्या जीवधारिणी॥८९॥

जाह्नवी ज्या जपवती जातिरूपा जयप्रदा।
जनार्दनप्रियकरी जोषनीया जगत्स्थिता॥९०॥

जगज्ज्येष्ठा जगन्माया जीवनत्राणकारिणी।
जीवातुलतिका जीवजन्मी जन्मनिबर्हणी॥९१॥

जाड्यविध्वंसनकरी जगद्योनिर्जयात्मिका।
जगदानन्दजननी जम्बूश्च जलजेक्षणा॥९२॥

जयन्ती जङ्गपूगघ्नी जनितज्ञानविग्रहा।
जटा जटावती जप्या जपकर्तृप्रियङ्करी॥९३॥

जपकृत्पापसंहर्त्री जपकृत्फलदायिनी।
जपापुष्पसमप्रख्या जपाकुसुमधारिणी॥ ९४॥

जननी जन्मरहिता ज्योतिर्वृत्यभिदायिनी।
जटाजूटनचन्द्रार्धा जगत्सृष्टिकरी तथा॥ ९५॥

जगत्त्राणकरी जाड्यध्वंसकर्त्री जयेश्वरी।
जगद्बीजा जयावासा जन्मभूर्जन्मनाशिनी॥ ९६॥

जन्मान्त्यरहिता जैत्री जगद्योनिर्जपात्मिका।
जयलक्षणसम्पूर्णा जयदानकृतोद्यमा॥ ९७॥

जम्भराद्यादिसंस्तुत्या जम्भारिफलदायिनी।
जगत्त्रयहिता ज्येष्ठा जगत्त्रयवशङ्करी॥ ९८॥

जगत्त्रयाम्बा जगती ज्वाला ज्वालितलोचना।
ज्वालिनी ज्वलनाभासा ज्वलन्ती ज्वलनात्मिका॥ ९९॥

जितारातिसुरस्तुत्या जितक्रोधा जितेन्द्रिया।
जरामरणशून्या च जनित्री जन्मनाशिनी॥ १००॥

जलजाभा जलमयी जलजासनवल्लभा।
जलजस्था जपाराध्या जनमङ्गलकारिणी॥ १०१॥

कामिनी कामरूपा च काम्या कामप्रदायिनी।
कमाली कामदा कर्त्री क्रतुकर्मफलप्रदा॥ १०२॥

कृतघ्नघ्नी क्रियारूपा कार्यकारणरूपिणी।
कञ्जाक्षी करुणारूपा केवलामरसेविता॥ १०३॥

कल्याणकारिणी कान्ता कान्तिदा कान्तिरूपिणी।
कमला कमलावासा कमलोत्पलमालिनी॥ १०४॥

कुमुद्वती च कल्याणी कान्तिः कामेशवल्लभा।
कामेश्वरी कमलिनी कामदा कामबन्धिनी॥ १०५॥

कामधेनुः काञ्चनाक्षी काञ्चनाभा कलानिधिः।
क्रिया कीर्तिकरी कीर्तिः क्रतुश्रेष्ठा कृतेश्वरी॥ १०६॥

क्रतुसर्वक्रियास्तुत्या क्रतुकृत्प्रियकारिणी।
क्लेशनाशकरी कर्त्री कर्मदा कर्मबन्धिनी॥ १०७॥

कर्मबन्धहरी कृष्टा क्लमघ्नी कञ्जलोचना।
कन्दर्पजननी कान्ता करुणा करुणावती॥ १०८॥

क्लीङ्कारिणी कृपाकारा कृपासिन्धुः कृपावती।
करुणार्द्रा कीर्तिकरी कल्मषघ्नी क्रियाकरी॥ १०९॥

क्रियाशक्तिः कामरूपा कमलोत्पलगन्धिनी।
कला कलावती कूर्मी कूटस्था कञ्जसंस्थिता॥ ११०॥

कालिका कल्मषघ्नी च कमनीयजटान्विता।
करपद्मा कराभीष्टप्रदा क्रतुफलप्रदा॥ १११॥

कौशिकी कोशदा काव्या कर्त्री कोशेश्वरी कृशा।
कूर्मयाना कल्पलता कालकूटविनाशिनी॥ ११२॥

कल्पोद्यानवती कल्पवनस्था कल्पकारिणी।
कदम्बकुसुमाभासा कदम्बकुसुमप्रिया॥ ११३॥

कदम्बोद्यानमध्यस्था कीर्तिदा कीर्तिभूषणा।
कुलमाता कुलावासा कुलाचारप्रियङ्करी॥ ११४॥

कुलानाथा कामकला कलानाथा कलेश्वरी।
कुन्दमन्दारपुष्पाभा कपर्दस्थितचन्द्रिका॥ ११५॥

कवित्वदा काव्यमाता कविमाता कलाप्रदा।
तरुणी तरुणीताता ताराधिपसमानना॥ ११६॥

तृप्तिस्तृप्तिप्रदा तर्क्या तपनी तापिनी तथा।
तर्पणी तीर्थरूपा च त्रिदशा त्रिदशेश्वरी॥ ११७॥

त्रिदिवेशी त्रिजननी त्रिमाता त्र्यम्बकेश्वरी।
त्रिपुरा त्रिपुरेशानी त्र्यम्बका त्रिपुराम्बिका॥ ११८॥

त्रिपुरश्रीस्त्रयीरूपा त्रयीवेद्या त्रयीश्वरी।
त्रय्यन्तवेदिनी ताम्रा तापत्रितयहारिणी॥ ११९॥

तमालसदृशी त्राता तरुणादित्यसन्निभा।
त्रैलोक्यव्यापिनी तृप्ता तृप्तिकृत्तत्त्वरूपिणी॥ १२०॥

तुर्या त्रैलोक्यसंस्तुत्या त्रिगुणा त्रिगुणेश्वरी।
त्रिपुरघ्नी त्रिमाता च त्र्यम्बका त्रिगुणान्विता॥ १२१॥

तृष्णाच्छेदकरी तृप्ता तीक्ष्णा तीक्ष्णस्वरूपिणी।
तुला तुलादिरहिता तत्तद्ब्रह्मस्वरूपिणी॥ १२२॥

त्राणकर्त्री त्रिपापघ्नी त्रिपदा त्रिदशान्विता।
तथ्या त्रिशक्तिस्त्रिपदा तुर्या त्रैलोक्यसुन्दरी॥ १२३॥

तेजस्करी त्रिमूर्त्याद्या तेजोरूपा त्रिधामता।
त्रिचक्रकर्त्री त्रिभगा तुर्यातीतफलप्रदा॥ १२४॥

तेजस्विनी तापहारी तापोपप्लवनाशिनी।
तेजोगर्भा तपःसारा त्रिपुरारिप्रियङ्करी॥ १२५॥

तन्वी तापससन्तुष्टा तपताङ्गजभीतिनुत्।
त्रिलोचना त्रिमार्गा च तृतीया त्रिदशस्तुता॥ १२६॥

त्रिसुन्दरी त्रिपथगा तुरीयपददायिनी।
शुभा शुभावती शान्ता शान्तिदा शुभदायिनी॥ १२७॥

शीतला शूलिनी शीता श्रीमती च शुभान्विता।
योगसिद्धिप्रदा योग्या यज्ञेनपरिपूरिता॥ १२८॥

यज्या यज्ञमयी यक्षी यक्षिणी यक्षिवल्लभा।
यज्ञप्रिया यज्ञपूज्या यज्ञतुष्टा यमस्तुता॥ १२९॥

यामिनीयप्रभा याम्या यजनीया यशस्करी।
यज्ञकर्त्री यज्ञरूपा यशोदा यज्ञसंस्तुता॥ १३०॥

यज्ञेशी यज्ञफलदा योगयोनिर्यजुस्तुता।
यमिसेव्या यमाराध्या यमिपूज्या यमीश्वरी॥ १३१॥

योगिनी योगरूपा च योगकर्तृप्रियङ्करी।
योगयुक्ता योगमयी योगयोगीश्वराम्बिका॥ १३२॥

योगज्ञानमयी योनिर्यमाद्यष्टाङ्गयोगता।
यन्त्रिताघौघसंहारा यमलोकनिवारिणी॥ १३३॥

यष्टिव्यष्टीशसंस्तुत्या यमाद्यष्टाङ्गयोगयुक्।
योगीश्वरी योगमाता योगसिद्धा च योगदा॥ १३४॥

योगारूढा योगमयी योगरूपा यवीयसी।
यन्त्ररूपा च यन्त्रस्था यन्त्रपूज्या च यन्त्रिता॥ १३५॥

युगकर्त्री युगमयी युगधर्मविवर्जिता।
यमुना यमिनी याम्या यमुनाजलमध्यगा॥ १३६॥

यातायातप्रशमनी यातनानान्निकृन्तनी।
योगावासा योगिवन्द्या यत्तच्छब्दस्वरूपिणी॥ १३७॥

योगक्षेममयी यन्त्रा यावदक्षरमातृका।
यावत्पदमयी यावच्छब्दरूपा यथेश्वरी॥ १३८॥

यत्तदीया यक्षवन्द्या यद्विद्या यतिसंस्तुता।
यावद्विद्यामयी यावद्विद्याबृन्दसुवन्दिता॥ १३९॥

योगिहृत्पद्मनिलया योगिवर्यप्रियङ्करी।
योगिवन्द्या योगिमाता योगीशफलदायिनी॥ १४०॥

यक्षवन्द्या यक्षपूज्या यक्षराजसुपूजिता।
यज्ञरूपा यज्ञतुष्टा यायजूकस्वरूपिणी॥ १४१॥

यन्त्राराध्या यन्त्रमध्या यन्त्रकर्तृप्रियङ्करी।
यन्त्रारूढा यन्त्रपूज्या योगिध्यानपरायणा॥ १४२॥

यजनीया यमस्तुत्या योगयुक्ता यशस्करी।
योगबद्धा यतिस्तुत्या योगज्ञा योगनायकी॥ १४३॥

योगिज्ञानप्रदा यक्षी यमबाधाविनाशिनी।
योगिकाम्यप्रदात्री च योगिमोक्षप्रदायिनी॥ १४४॥

॥ फलश्रुतिः ॥

इति नाम्नां सरस्वत्याः सहस्रं समुदीरितम्।
मन्त्रात्मकं महागोप्यं महासारस्वतप्रदम्॥ १॥

यः पठेच्छृणुयाद्भक्त्या त्रिकालं साधकः पुमान्।
सर्वविद्यानिधिः साक्षात् स एव भवति ध्रुवम्॥ २॥

लभते सम्पदः सर्वाः पुत्रपौत्रादिसंयुताः।
मूकोऽपि सर्वविद्यासु चतुर्मुख इवापरः॥ ३॥

भूत्वा प्राप्नोति सान्निध्यम् अन्ते धातुर्मुनीश्वर।
सर्वमन्त्रमयं सर्वविद्यामानफलप्रदम्॥ ४॥

महाकवित्वदं पुंसां महासिद्धिप्रदायकम्।
कस्मैचिन्न प्रदातव्यं प्राणैः कण्ठगतैरपि॥ ५॥

महारहस्यं सततं वाणीनामसहस्रकम्।
सुसिद्धमस्मदादीनां स्तोत्रं ते समुदीरितम्॥ ६॥

॥ इति श्रीस्कान्दपुराणान्तर्गत-सनत्कुमार-संहितायां नारद-सनत्कुमार-संवादे सरस्वती-सहस्रनाम-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ ललितात्रिशतीस्तोत्रम् ॥

॥ न्यासः ॥

अस्य श्रीललितात्रिशतीस्तोत्रमहामत्रस्य। भगवान् हयग्रीव ऋषिः।
अनुष्टुप् छन्दः। श्रीललितात्रिपुरसुन्दरी देवता।
ऐं बीजम्। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकम्।
सकल-चिन्तितफलावाप्त्यर्थे जपे विनियोगः ॥

॥ ध्यानम् ॥

अतिमधुरचापहस्ताम् अपरिमितामोदबाण-सौभाग्याम्।
अरुणाम् अतिशयकरुणाम् अभिनवकुलसुन्दरीं वन्दे ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

हयग्रीव उवाच

ककाररूपा कल्याणी कल्याणगुणशालिनी।
कल्याणशैलनिलया कमनीया कलावती ॥ १ ॥

कमलाक्षी कल्मषघ्नी करुणामृतसागरा।
कदम्बकाननावासा कदम्बकुसुमप्रिया ॥ २ ॥

कन्दर्पविद्या कन्दर्प-जनकापाङ्ग-वीक्षणा।
कर्पूरवीटि-सौरभ्य-कल्लोलित-ककुप्तटा ॥ ३ ॥

कलिदोषहरा कञ्जलोचना कम्रविग्रहा।
कर्मादिसाक्षिणी कारयित्री कर्मफलप्रदा ॥ ४ ॥

एकाररूपा चैकाक्षर्यैकानेकाक्षराकृतिः।
एतत्तदित्यनिर्देश्या चैकानन्द-चिदाकृतिः॥५॥

एवमित्यागमाबोध्या चैकभक्ति-मदर्चिता।
एकाग्रचित्त-निर्ध्याता चैषणा-रहितादृता॥६॥

एलासुगन्धिचिकुरा चैनःकूटविनाशिनी।
एकभोगा चैकरसा चैकैश्वर्य-प्रदायिनी॥७॥

एकातपत्र-साम्राज्य-प्रदा चैकान्तपूजिता।
एधमानप्रभा चैजदनेकजगदीश्वरी॥८॥

एकवीरादि-संसेव्या चैकप्राभव-शालिनी।
ईकाररूपा चेशित्री चेप्सितार्थ-प्रदायिनी॥९॥

ईदृगित्य-विनिर्देश्या चेश्वरत्व-विधायिनी।
ईशानादि-ब्रह्ममयी चेशित्वाद्यष्टसिद्धिदा॥१०॥

ईक्षित्रीक्षण-सृष्टाण्ड-कोटिरीश्वर-वल्लभा।
ईडिता चेश्वरार्धाङ्ग-शरीरेशाधि-देवता॥११॥

ईश्वर-प्रेरणकरी चेशताण्डव-साक्षिणी।
ईश्वरोत्सङ्ग-निलया चेतिबाधा-विनाशिनी॥१२॥

ईहाविरहिता चेशशक्ति-रीषत्-स्मितानना।
लकाररूपा ललिता लक्ष्मी-वाणी-निषेविता॥१३॥

लाकिनी ललनारूपा लसद्दाडिम-पाटला।
ललन्तिकालसत्फाला ललाट-नयनार्चिता॥१४॥

लक्षणोज्ज्वल-दिव्याङ्गी लक्षकोट्यण्ड-नायिका।
लक्ष्यार्था लक्षणागम्या लब्धकामा लतातनुः॥ १५॥

ललामराजदलिका लम्बिमुक्तालताञ्चिता।
लम्बोदर-प्रसूर्लभ्या लज्जाढ्या लयवर्जिता॥ १६ ॥

ह्रीङ्काररूपा ह्रीङ्कारनिलया ह्रीम्पदप्रिया।
ह्रीङ्कारबीजा ह्रीङ्कारमन्त्रा ह्रीङ्कारलक्षणा॥ १७॥

ह्रीङ्कारजपसुप्रीता ह्रीम्मती ह्रींविभूषणा।
ह्रींशीला ह्रीम्पदाराध्या ह्रीङ्गर्भा ह्रीम्पदाभिधा॥ १८॥

ह्रीङ्कारवाच्या ह्रीङ्कारपूज्या ह्रीङ्कारपीठिका।
ह्रीङ्कारवेद्या ह्रीङ्कारचिन्त्या ह्रीं ह्रीं-शरीरिणी॥ १९॥

हकाररूपा हलधृक्पूजिता हरिणेक्षणा।
हरप्रिया हराराध्या हरिब्रह्मेन्द्रवन्दिता॥ २०॥

हयारूढा-सेविताङ्घ्रिर्हयमेध-समर्चिता।
हर्यक्षवाहना हंसवाहना हतदानवा॥ २१॥

हत्यादिपापशमनी हरिदश्वादि-सेविता।
हस्तिकुम्भोत्तुङ्गकुचा हस्तिकृत्ति-प्रियाङ्गना॥ २२॥

हरिद्राकुङ्कुमादिग्धा हर्यश्वाद्यमरार्चिता।
हरिकेशसखी हादिविद्या हालामदालसा॥ २३॥

सकाररूपा सर्वज्ञा सर्वेशी सर्वमङ्गला।
सर्वकर्त्री सर्वभर्त्री सर्वहन्त्री सनातना॥ २४॥

सर्वानवद्या सर्वाङ्गसुन्दरी सर्वसाक्षिणी।
सर्वात्मिका सर्वसौख्यदात्री सर्वविमोहिनी॥ २५॥

सर्वाधारा सर्वगता सर्वावगुणवर्जिता।
सर्वारुणा सर्वमाता सर्वभूषण-भूषिता॥ २६॥

ककारार्था कालहन्त्री कामेशी कामितार्थदा।
कामसञ्जीवनी कल्या कठिनस्तन-मण्डला॥ २७॥

करभोरूः कलानाथ-मुखी कचजिताम्बुदा।
कटाक्षस्यन्दि-करुणा कपालि-प्राणनायिका॥ २८॥

कारुण्य-विग्रहा कान्ता कान्तिधूत-जपावलिः।
कलालापा कम्बुकण्ठी करनिर्जित-पल्लवा॥ २९॥

कल्पवल्ली-समभुजा कस्तूरी-तिलकाञ्चिता।
हकारार्था हंसगतिर्हाटकाभरणोज्ज्वला॥ ३०॥

हारहारि-कुचाभोगा हाकिनी हल्यवर्जिता।
हरित्पति-समाराध्या हठात्कार-हतासुरा॥ ३१॥

हर्षप्रदा हविर्भोक्त्री हार्दसन्तमसापहा।
हल्लीसलास्य-सन्तुष्टा हंसमन्त्रार्थ-रूपिणी॥ ३२॥

हानोपादान-निर्मुक्ता हर्षिणी हरिसोदरी।
हाहाहूहू-मुख-स्तुत्या हानि-वृद्धि-विवर्जिता॥ ३३॥

हय्यङ्गवीन-हृदया हरिगोपारुणांशुका।
लकाराख्या लतापूज्या लयस्थित्युद्भवेश्वरी॥ ३४॥

लास्य-दर्शन-सन्तुष्टा लाभालाभ-विवर्जिता।
लङ्घ्येतराज्ञा लावण्य-शालिनी लघु-सिद्धिदा॥ ३५॥

लाक्षारस-सवर्णाभा लक्ष्मणाग्रज-पूजिता।
लभ्येतरा लब्धभक्ति-सुलभा लाङ्गलायुधा॥ ३६॥

लग्न-चामर-हस्त-श्री-शारदा-परिवीजिता।
लज्जापद-समाराध्या लम्पटा लकुलेश्वरी॥ ३७॥

लब्धमाना लब्धरसा लब्धसम्पत्समुन्नतिः।
ह्रीङ्कारिणी ह्रीङ्काराद्या ह्रीम्मध्या ह्रींशिखामणिः॥ ३८॥

ह्रीङ्कार-कुण्डाग्नि-शिखा ह्रीङ्कार-शशिचन्द्रिका।
ह्रीङ्कार-भास्कररुचिर्ह्रीङ्काराम्भोद-चञ्चला॥ ३९॥

ह्रीङ्कार-कन्दाङ्कुरिका ह्रीङ्कारैक-परायणा।
ह्रीङ्कार-दीर्घिकाहंसी ह्रीङ्कारोद्यान-केकिनी॥ ४०॥

ह्रीङ्कारारण्य-हरिणी ह्रीङ्कारावाल-वल्लरी।
ह्रीङ्कार-पञ्जरशुकी ह्रीङ्काराङ्गण-दीपिका॥ ४१॥

ह्रीङ्कार-कन्दरा-सिंही ह्रीङ्काराम्भोज-भृङ्गिका।
ह्रीङ्कार-सुमनो-माध्वी ह्रीङ्कार-तरुमञ्जरी॥ ४२॥

सकाराख्या समरसा सकलागम-संस्तुता।
सर्ववेदान्त-तात्पर्यभूमिः सदसदाश्रया॥ ४३॥

सकला सच्चिदानन्दा साध्या सद्गतिदायिनी।
सनकादिमुनिध्येया सदाशिव-कुटुम्बिनी॥ ४४॥

सकलाधिष्ठान-रूपा सत्यरूपा समाकृतिः।
सर्वप्रपञ्च-निर्मात्री समानाधिक-वर्जिता॥४५॥

सर्वोत्तुङ्गा सङ्गहीना सगुणा सकलेष्टदा।
ककारिणी काव्यलोला कामेश्वरमनोहरा॥४६॥

कामेश्वर-प्राणनाडी कामेशोत्सङ्गवासिनी।
कामेश्वरालिङ्गिताङ्गी कामेश्वर-सुखप्रदा॥४७॥

कामेश्वर-प्रणयिनी कामेश्वर-विलासिनी।
कामेश्वर-तपःसिद्धिः कामेश्वर-मनःप्रिया॥४८॥

कामेश्वर-प्राणनाथा कामेश्वर-विमोहिनी।
कामेश्वर-ब्रह्मविद्या कामेश्वर-गृहेश्वरी॥४९॥

कामेश्वराह्लादकरी कामेश्वर-महेश्वरी।
कामेश्वरी कामकोटिनिलया काङ्क्षितार्थदा॥५०॥

लकारिणी लब्धरूपा लब्धधीर्लब्ध-वाञ्छिता।
लब्धपाप-मनोदूरा लब्धाहङ्कार-दुर्गमा॥५१॥

लब्धशक्तिर्लब्धदेहा लब्धैश्वर्यसमुन्नतिः।
लब्धवृद्धिर्लब्धलीला लब्धयौवनशालिनी॥५२॥

लब्धातिशय-सर्वाङ्ग-सौन्दर्या लब्धविभ्रमा।
लब्धरागा लब्धपतिर्लब्ध-नानागमस्थितिः॥५३॥

लब्धभोगा लब्धसुखा लब्धहर्षाभिपूरिता।
ह्रीङ्कार-मूर्तिर्ह्रीङ्कार-सौधशृङ्गकपोतिका ॥५४॥

ह्रीङ्कार-दुग्धाब्धि-सुधा ह्रीङ्कार-कमलेन्दिरा।
ह्रीङ्कार-मणिदीपार्चिर्ह्रीङ्कार-तरुशारिका ॥५५॥

ह्रीङ्कार-पेटक-मणिर्ह्रीङ्कारादर्श-बिम्बिता ।
ह्रीङ्कार-कोशासिलता ह्रीङ्कारास्थान-नर्तकी॥५६॥

ह्रीङ्कार-शुक्तिका-मुक्तामणिर्ह्रीङ्कार-बोधिता।
ह्रीङ्कारमय-सौवर्णस्तम्भ-विद्रुम-पुत्रिका ॥५७॥

ह्रीङ्कार-वेदोपनिषध्रीङ्काराध्वर-दक्षिणा।
ह्रीङ्कार-नन्दनाराम-नवकल्पक-वल्लरी॥५८॥

ह्रीङ्कार-हिमवद्गङ्गा ह्रीङ्कारार्णव-कौस्तुभा।
ह्रीङ्कार-मन्त्र-सर्वस्वा ह्रीङ्कार-परसौख्यदा॥५९॥

॥इति श्री-ब्रह्माण्डपुराणे उत्तराखण्डे श्री-हयग्रीवागस्त्यसंवादे
श्री-ललितात्रिशती स्तोत्रकथनं सम्पूर्णम्॥

❀❀❀

॥ सौन्दर्यलहरी ॥

॥ आनन्दलहरी ॥

शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुम्
न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि।
अतस्त्वामाराध्यां हरिहरविरिञ्चादिभिरपि
प्रणन्तुं स्तोतुं वा कथमकृतपुण्यः प्रभवति॥ १ ॥

तनीयांसं पांसुं तव चरणपङ्केरुहभवम्
विरिञ्चिः सञ्चिन्वन् विरचयति लोकानविकलम्।
वहत्येनं शौरिः कथमपि सहस्रेण शिरसाम्
हरः सङ्क्षुद्यैनं भजति भसितोद्धूलनविधिम्॥ २ ॥

अविद्यानामन्तस्तिमिर-मिहिरद्वीपनगरी
जडानां चैतन्य-स्तबक-मकरन्द-स्रुतिझरी।
दरिद्राणां चिन्तामणिगुणनिका जन्मजलधौ
निमग्नानां दंष्ट्रा मुररिपु-वराहस्य भवती॥ ३ ॥

त्वदन्यः पाणिभ्यामभयवरदो दैवतगणः
त्वमेका नैवासि प्रकटितवराभीत्यभिनया।
भयात् त्रातुं दातुं फलमपि च वाञ्छासमधिकम्
शरण्ये लोकानां तव हि चरणावेव निपुणौ॥ ४ ॥

हरिस्त्वामाराध्य प्रणतजनसौभाग्यजननीम्
पुरा नारी भूत्वा पुररिपुमपि क्षोभमनयत्।
स्मरोऽपि त्वां नत्वा रतिनयनलेह्येन वपुषा
मुनीनामप्यन्तः प्रभवति हि मोहाय महताम्॥ ५ ॥

धनुः पौष्पं मौर्वी मधुकरमयी पञ्च विशिखाः
वसन्तः सामन्तो मलयमरुदायोधनरथः।
तथाऽप्येकः सर्वं हिमगिरिसुते कामपि कृपाम्
अपाङ्गात्ते लब्ध्वा जगदिदमनङ्गो विजयते॥ ६॥

क्वणत्काञ्चीदामा करिकलभकुम्भस्तननता
परिक्षीणा मध्ये परिणतशरच्चन्द्रवदना।
धनुर्बाणान् पाशं सृणिमपि दधाना करतलैः
पुरस्तादास्तां नः पुरमथितुराहोपुरुषिका॥ ७॥

सुधासिन्धोर्मध्ये सुरविटपिवाटीपरिवृते
मणिद्वीपे नीपोपवनवति चिन्तामणिगृहे।
शिवाकारे मञ्चे परमशिवपर्यङ्कनिलयाम्
भजन्ति त्वां धन्याः कतिचन चिदानन्दलहरीम्॥ ८॥

महीं मूलाधारे कमपि मणिपूरे हुतवहम्
स्थितं स्वाधिष्ठाने हृदि मरुतमाकाशमुपरि।
मनोऽपि भ्रूमध्ये सकलमपि भित्वा कुलपथम्
सहस्रारे पद्मे सह रहसि पत्या विहरसे॥ ९॥

सुधाधारासारैश्चरणयुगलान्तर्विगलितैः
प्रपञ्चं सिञ्चन्ती पुनरपि रसाम्नायमहसः।
अवाप्य स्वां भूमिं भुजगनिभमध्युष्टवलयम्
स्वमात्मानं कृत्वा स्वपिषि कुलकुण्डे कुहरिणि॥ १०॥

चतुर्भिः श्रीकण्ठैः शिवयुवतिभिः पञ्चभिरपि
प्रभिन्नाभिः शम्भोर्नवभिरपि मूलप्रकृतिभिः।
चतुश्चत्वारिंशद्वसुदलकलाश्रत्रिवलय
त्रिरेखाभिः सार्धं तव शरणकोणाः परिणताः॥ ११॥

त्वदीयं सौन्दर्यं तुहिनगिरिकन्ये तुलयितुम्
कवीन्द्राः कल्पन्ते कथमपि विरिञ्चिप्रभृतयः।
यदालोकौत्सुक्यादमरललना यान्ति मनसा
तपोभिर्दुष्प्रापामपि गिरिशसायुज्यपदवीम्॥ १२॥

नरं वर्षीयांसं नयनविरसं नर्मसु जडम्
तवापाङ्गालोके पतितमनुधावन्ति शतशः।
गलद्वेणीबन्धाः कुचकलशविस्त्रस्तसिचया
हठात् त्रुट्यत्काञ्च्यो विगलितदुकूला युवतयः॥ १३॥

क्षितौ षट्पञ्चाशद्-द्विसमधिकपञ्चाशदुदके
हुताशे द्वाषष्टिश्चतुरधिकपञ्चाशदनिले।
दिवि द्विष्षट्त्रिंशन्मनसि च चतुष्षष्टिरिति ये
मयूखास्तेषामप्युपरि तव पादाम्बुजयुगम्॥ १४॥

शरज्ज्योत्स्नाशुद्धां शशियुतजटाजूटमुकुटाम्
वरत्रासत्राणस्फटिकघुटिकापुस्तककराम्।
सकृन्न त्वा नत्वा कथमिव सतां सन्निदधते
मधुक्षीरद्राक्षामधुरिमधुरीणाः कणितयः॥ १५॥

कवीन्द्राणां चेतःकमलवनबालातपरुचिम्
भजन्ते ये सन्तः कतिचिदरुणामेव भवतीम्।
विरिञ्चिप्रेयस्यास्तरुणतरशृङ्गारलहरी
गभीराभिर्वाग्भिर्विदधति सतां रञ्जनममी॥ १६॥

सवित्रीभिर्वाचां शशिमणिशिलाभङ्गरुचिभिः
वशिन्याद्याभिस्त्वां सह जननि सञ्चिन्तयति यः।
स कर्ता काव्यानां भवति महतां भङ्गिरुचिभिः
वचोभिर्वाग्देवीवदनकमलामोदमधुरैः ॥ १७॥

तनुच्छायाभिस्ते तरुणतरणिश्रीसरणिभिः
दिवं सर्वामुर्वीमरुणिमनिमग्नां स्मरति यः।
भवन्त्यस्य त्रस्यद्वनहरिणशालीननयनाः
सहोर्वश्या वश्याः कति कति न गीर्वाणगणिकाः॥ १८॥

मुखं बिन्दुं कृत्वा कुचयुगमधस्तस्य तदधो
हरार्धं ध्यायेद्योहरमहिषि ते मन्मथकलाम्।
स सद्यः सङ्क्षोभं नयति वनिता इत्यतिलघु
त्रिलोकीमप्याशु भ्रमयति रवीन्दुस्तनयुगाम्॥ १९॥

किरन्तीमङ्गेभ्यः किरणनिकुरुम्बामृतरसम्
हृदि त्वामाधत्ते हिमकरशिलामूर्तिमिव यः।
स सर्पाणां दर्पं शमयति शकुन्ताधिप इव
ज्वरप्लुष्टान् दृष्ट्या सुखयति सुधाऽऽधारसिरया॥ २०॥

तटिल्लेखातन्वीं तपनशशिवैश्वानरमयीम्
निषण्णां षण्णामप्युपरि कमलानां तव कलाम्।
महापद्माटव्यां मृदितमलमायेन मनसा
महान्तः पश्यन्तो दधति परमाह्लादलहरीम्॥२१॥

भवानि त्वं दासे मयि वितर दृष्टिं सकरुणाम्
इति स्तोतुं वाञ्छन् कथयति भवानि त्वमिति यः।
तदैव त्वं तस्मै दिशसि निजसायुज्यपदवीम्
मुकुन्दब्रह्मेन्द्रस्फुटमुकुटनीराजितपदाम् ॥२२॥

त्वया हृत्वा वामं वपुरपरितृप्तेन मनसा
शरीरार्धं शम्भोरपरमपि शङ्के हृतमभूत्।
यदेतत्त्वद्रूपं सकलमरुणाभं त्रिनयनम्
कुचाभ्यामानम्रं कुटिलशशिचूडालमुकुटम्॥२३॥

जगत्सूते धाता हरिरवति रुद्रः क्षपयते
तिरस्कुर्वन्नेतत्स्वमपि वपुरीशस्तिरयति।
सदापूर्वः सर्वं तदिदमनुगृह्णाति च शिवः
तवाऽऽज्ञामालम्ब्य क्षणचलितयोर्भ्रूलतिकयोः॥२४॥

त्रयाणां देवानां त्रिगुणजनितानां तव शिवे
भवेत् पूजा पूजा तव चरणयोर्या विरचिता।
तथा हि त्वत्पादोद्वहनमणिपीठस्य निकटे
स्थिता ह्येते शश्वन् मुकुलितकरोत्तंसमकुटाः॥२५॥

विरिञ्चिः पञ्चत्वं व्रजति हरिराप्नोति विरतिम्
विनाशं कीनाशो भजति धनदो याति निधनम्।
वितन्द्री माहेन्द्री विततिरपि सम्मीलित-दृशाम्
महासंहारेऽस्मिन् विहरति सति त्वत्पतिरसौ॥ २६॥

जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचना
गतिः प्रादक्षिण्यक्रमणमशनाद्याहुतिविधिः।
प्रणामः संवेशः सुखमखिलमात्मार्पणदृशा
सपर्यापर्यायस्तव भवतु यन्मे विलसितम्॥ २७॥

सुधामप्यास्वाद्य प्रतिभयजरामृत्युहरिणीम्
विपद्यन्ते विश्वे विधिशतमखाद्या दिविषदः।
करालं यत्क्ष्वेलं कबलितवतः कालकलना
न शम्भोस्तन्मूलं तव जननि ताटङ्कमहिमा॥ २८॥

किरीटं वैरिञ्चं परिहर पुरः कैटभभिदः
कठोरे कोटीरे स्खलसि जहि जम्भारिमकुटम्।
प्रणम्रेष्वेतेषु प्रसभमुपयातस्य भवनम्
भवस्याभ्युत्थाने तव परिजनोक्तिर्विजयते॥ २९॥

स्वदेहोद्भूताभिर्घृणिभिरणिमाऽऽद्याभिरभितो
निषेव्ये नित्ये त्वामहमिति सदा भावयति यः।
किमाश्चर्यं तस्य त्रिनयनसमृद्धिं तृणयतो
महासंवर्ताग्निर्विरचयति नीराजनविधिम्॥ ३०॥

चतुष्षष्ट्या तन्त्रैः सकलमतिसन्धाय भुवनम्
स्थितस्तत् तत् सिद्धिप्रसवपरतन्त्रैः पशुपतिः।
पुनस्त्वन्निर्बन्धादखिलपुरुषार्थैकघटना
स्वतन्त्रं ते तन्त्रं क्षितितलमवातीतरदिदम्॥ ३१॥

शिवः शक्तिः कामः क्षितिरथ रविः शीतकिरणः
स्मरो हंसः शक्रस्तदनु च परामारहरयः।
अमी हृल्लेखाभिस्तिसृभिरवसानेषु घटिता
भजन्ते वर्णास्ते तव जननि नामावयवताम्॥ ३२॥

स्मरं योनिं लक्ष्मीं त्रितयमिदमादौ तव मनोः
निधायैके नित्ये निरवधिमहाभोगरसिकाः।
भजन्ति त्वां चिन्तामणिगुणनिबद्धाक्षवलयाः
शिवाऽग्नौ जुह्वन्तः सुरभिघृतधाराऽऽहुतिशतैः॥ ३३॥

शरीरं त्वं शम्भोः शशिमिहिरवक्षोरुहयुगम्
तवाऽऽत्मानं मन्ये भगवति नवात्मानमनघम्।
अतः शेषः शेषीत्ययमुभयसाधारणतया
स्थितः सम्बन्धो वां समरसपरानन्दपरयोः॥ ३४॥

मनस्त्वं व्योम त्वं मरुदसि मरुत्सारथिरसि
त्वमापस्त्वं भूमिस्त्वयि परिणतायां न हि परम्।
त्वमेव स्वात्मानं परिणमयितुं विश्ववपुषा
चिदानन्दाकारं शिवयुवति भावेन बिभृषे॥ ३५॥

तवाऽऽज्ञाचक्रस्थं तपनशशिकोटिद्युतिधरम्
परं शम्भुं वन्दे परिमिलितपार्श्वं परचिता।
यमाराध्यन् भक्त्या रविशशिशुचीनामविषये
निरालोकेऽलोके निवसति हि भालोकभवने॥ ३६॥

विशुद्धौ ते शुद्धस्फटिकविशदं व्योमजनकम्
शिवं सेवे देवीमपि शिवसमानव्यवसिताम्।
ययोः कान्त्या यान्त्या शशिकिरणसारूप्यसरणिम्
विधूतान्तर्ध्वान्ता विलसति चकोरीव जगती॥ ३७॥

समुन्मीलत् संवित् कमलमकरन्दैकरसिकम्
भजे हंसद्वन्द्वं किमपि महतां मानसचरम्।
यदालापादष्टादशगुणितविद्यापरिणतिः
यदादत्ते दोषाद्-गुणमखिलमद्भ्यः पय इव॥ ३८॥

तव स्वाधिष्ठाने हुतवहमधिष्ठाय निरतम्
तमीडे संवर्तं जननि महतीं तां च समयाम्।
यदालोके लोकान् दहति महति क्रोधकलिते
दयार्द्रा यद्दृष्टिः शिशिरमुपचारं रचयति॥ ३९॥

तटित्त्वन्तं शक्त्या तिमिरपरिपन्थिस्फुरणया
स्फुरन्नानारत्नाभरणपरिणद्धेन्द्रधनुषम्।
तव श्यामं मेघं कमपि मणिपूरैकशरणम्
निषेवे वर्षन्तं हरमिहिरतप्तं त्रिभुवनम्॥ ४०॥

तवाऽऽधारे मूले सह समयया लास्यपरया
नवात्मानं मन्ये नवरसमहाताण्डवनटम्।
उभाभ्यामेताभ्यामुदयविधिमुद्दिश्य दयया
सनाथाभ्यां जज्ञे जनकजननीमज्जगदिदम्॥४१॥

॥सौन्दर्यलहरी॥

गतैर्माणिक्यत्वं गगनमणिभिः सान्द्रघटितम्
किरीटं ते हैमं हिमगिरिसुते कीर्तयति यः।
स नीडेयच्छायाच्छुरणशबलं चन्द्रशकलम्
धनुः शौनासीरं किमिति न निबध्नाति धिषणाम्॥४२॥

धुनोतु ध्वान्तं नस्तुलितदलितेन्दीवरवनम्
घनस्निग्धश्लक्ष्णं चिकुरनिकुरम्बं तव शिवे।
यदीयं सौरभ्यं सहजमुपलब्धुं सुमनसो
वसन्त्यस्मिन् मन्ये वलमथनवाटीविटपिनाम्॥४३॥

तनोतु क्षेमं नस्तव वदनसौन्दर्यलहरी
परीवाहस्रोतःसरणिरिव सीमन्तसरणिः।
वहन्ती सिन्दूरं प्रबलकबरीभारतिमिर
द्विषां बृन्दैर्बन्दीकृतमिव नवीनार्ककिरणम्॥४४॥

अरालैः स्वाभाव्यादलिकलभसश्रीभिरलकैः
परीतं ते वक्त्रं परिहसति पङ्केरुहरुचिम्।
दरस्मेरे यस्मिन् दशनरुचिकिञ्जल्करुचिरे
सुगन्धौ माद्यन्ति स्मरदहनचक्षुर्मधुलिहः॥४५॥

ललाटं लावण्यद्युतिविमलमाभाति तव यत्
द्वितीयं तन्मन्ये मकुटघटितं चन्द्रशकलम्।
विपर्यासन्यासादुभयमपि सम्भूय च मिथः
सुधालेपस्यूतिः परिणमति राकाहिमकरः॥४६॥

भ्रुवौ भुग्ने किञ्चिद्भुवनभयभङ्गव्यसनिनि
त्वदीये नेत्राभ्यां मधुकररुचिभ्यां धृतगुणम्।
धनुर्मन्ये सव्येतरकरगृहीतं रतिपतेः
प्रकोष्ठे मुष्टौ च स्थगयति निगूढान्तरमुमे॥४७॥

अहः सूते सव्यं तव नयनमर्कात्मकतया
त्रियामां वामं ते सृजति रजनीनायकतया।
तृतीया ते दृष्टिर्दरदलितहेमाम्बुजरुचिः
समाधत्ते सन्ध्यां दिवसनिशयोरन्तरचरीम्॥४८॥

विशाला कल्याणी स्फुटरुचिरयोध्या कुवलयैः
कृपाधाराधारा किमपि मधुरा भोगवतिका।
अवन्ती दृष्टिस्ते बहुनगरविस्तारविजया
ध्रुवं तत्तन्नामव्यवहरणयोग्या विजयते॥४९॥

कवीनां सन्दर्भस्तबकमकरन्दैकरसिकम्
कटाक्षव्याक्षेपभ्रमरकलभौ कर्णयुगलम्।
अमुञ्चन्तौ दृष्ट्वा तव नवरसास्वादतरलौ
असूयासंसर्गादलिककनयनं किञ्चिदरुणम्॥५०॥

शिवे शृङ्गारार्द्रा तदितरजने कुत्सनपरा
सरोषा गङ्गायां गिरिशचरिते विस्मयवती।
हराहिभ्यो भीता सरसिरुहसौभाग्यजननी
सखीषु स्मेरा ते मयि जननि दृष्टिः सकरुणा॥५१॥

गते कर्णाभ्यर्णं गरुत इव पक्ष्माणि दधती
पुरां भेत्तुश्चित्तप्रशमरसविद्रावणफले।
इमे नेत्रे गोत्राधरपतिकुलोत्तंसकलिके
तवाकर्णाकृष्टस्मरशरविलासं कलयतः॥५२॥

विभक्तत्रैवर्ण्यं व्यतिकरितलीलाञ्जनतया
विभाति त्वन्नेत्रत्रितयमिदमीशानदयिते।
पुनः स्रष्टुं देवान् द्रुहिणहरिरुद्रानुपरतान्
रजः सत्त्वं बिभ्रत् तम इति गुणानां त्रयमिव॥५३॥

पवित्रीकर्तुं नः पशुपतिपराधीनहृदये
दयामित्रैर्नेत्रैररुणधवलश्यामरुचिभिः ।
नदः शोणो गङ्गा तपनतनयेति ध्रुवममुम्
त्रयाणां तीर्थानामुपनयसि सम्भेदमनघम्॥५४॥

निमेषोन्मेषाभ्यां प्रलयमुदयं याति जगती
तवेत्याहुः सन्तो धरणिधरराजन्यतनये।
त्वदुन्मेषाज्जातं जगदिदमशेषं प्रलयतः
परित्रातुं शङ्के परिहृतनिमेषास्तव दृशः॥५५॥

तवापर्णे कर्णेजपनयनपैशुन्यचकिता
निलीयन्ते तोये नियतमनिमेषाः शफरिकाः।
इयं च श्रीर्बद्धच्छदपुटकवाटं कुवलयम्
जहाति प्रत्यूषे निशि च विघटय्य प्रविशति॥५६॥

दृशा द्राघीयस्या दरदलितनीलोत्पलरुचा
दवीयांसं दीनं स्नपय कृपया मामपि शिवे।
अनेनायं धन्यो भवति न च ते हानिरियता
वने वा हर्म्ये वा समकरनिपातो हिमकरः॥५७॥

अरालं ते पालीयुगलमगराजन्यतनये
न केषामाधत्ते कुसुमशरकोदण्डकुतुकम्।
तिरश्चीनो यत्र श्रवणपथमुल्लङ्घ्य विलसन्
अपाङ्गव्यासङ्गो दिशति शरसन्धानधिषणाम्॥५८॥

स्फुरद्गण्डाभोगप्रतिफलितताटङ्कयुगलम्
चतुश्चक्रं मन्ये तव मुखमिदं मन्मथरथम्।
यमारुह्य द्रुह्यत्यवनिरथम् अर्केन्दुचरणम्
महावीरो मारः प्रमथपतये सज्जितवते॥५९॥

सरस्वत्याः सूक्तीरमृतलहरीकौशलहरीः
पिबन्त्याः शर्वाणि श्रवणचुलुकाभ्यामविरलम्।
चमत्कारश्लाघाचलितशिरसः कुण्डलगणो
झणत्कारैस्तारैः प्रतिवचनमाचष्ट इव ते॥६०॥

असौ नासावंशस्तुहिनगिरिवंशध्वजपटि
त्वदीयो नेदीयः फलतु फलमस्माकमुचितम्।
वहत्यन्तर्मुक्ताः शिशिरकरनिश्वासगलितम्
समृद्ध्या यस्तासां बहिरपि च मुक्तामणिधरः॥ ६१॥

प्रकृत्याऽऽरक्तायास्तव सुदति दन्तच्छदरुचेः
प्रवक्ष्ये सादृश्यं जनयतु फलं विद्रुमलता।
न बिम्बं त्वद्बिम्बप्रतिफलनरागादरुणितम्
तुलामध्यारोढुं कथमिव विलज्जेत कलया॥ ६२॥

स्मितज्योत्स्नाजालं तव वदनचन्द्रस्य पिबताम्
चकोराणामासीदतिरसतया चञ्चुजडिमा।
अतस्ते शीतांशोरमृतलहरीमाम्लरुचयः
पिबन्ति स्वच्छन्दं निशि निशि भृशं काञ्जिकधिया॥ ६३॥

अविश्रान्तं पत्युर्गुणगणकथाऽऽम्रेडनजपा
जपापुष्पच्छाया तव जननि जिह्वा जयति सा।
यदग्रासीनायाः स्फटिकदृषदच्छच्छविमयी
सरस्वत्या मूर्तिः परिणमति माणिक्यवपुषा॥ ६४॥

रणे जित्वा दैत्यानपहृतशिरस्त्रैः कवचिभिः
निवृत्तैश्चण्डांशत्रिपुरहरनिर्माल्यविमुखैः ।
विशाखेन्द्रोपेन्द्रैः शशिविशदकर्पूरशकला
विलीयन्ते मातस्तव वदनताम्बूलकबलाः॥ ६५॥

विपञ्च्या गायन्ती विविधमपदानं पशुपतेः
त्वयाऽऽरब्धे वक्तुं चलितशिरसा साधुवचने।
तदीयैर्माधुर्यैरपलपिततन्त्रीकलरवाम्
निजां वीणां वाणी निचुलयति चोलेन निभृतम्॥ ६६ ॥

कराग्रेण स्पृष्टं तुहिनगिरिणा वत्सलतया
गिरीशेनोदस्तं मुहुरधरपानाकुलतया।
करग्राह्यं शम्भोर्मुखमुकुरवृन्तं गिरिसुते
कथङ्कारं ब्रूमस्तव चुबुकमौपम्यरहितम्॥ ६७॥

भुजाश्लेषान् नित्यं पुरदमयितुः कण्टकवती
तव ग्रीवा धत्ते मुखकमलनालश्रियमियम्।
स्वतः श्वेता कालागरुबहुलजम्बालमलिना
मृणालीलालित्यम् वहति यदधो हारलतिका॥ ६८॥

गले रेखास्तिस्रो गतिगमकगीतैकनिपुणे
विवाहव्यानद्धप्रगुणगुणसङ्ख्याप्रतिभुवः ।
विराजन्ते नानाविधमधुररागाकरभुवाम्
त्रयाणां ग्रामाणां स्थितिनियमसीमान इव ते॥ ६९॥

मृणालीमृद्वीनां तव भुजलतानां चतसृणाम्
चतुर्भिः सौन्दर्यं सरसिजभवः स्तौति वदनैः।
नखेभ्यः सन्त्रस्यन् प्रथममथनादन्धकरिपोः
चतुर्णां शीर्षाणां सममभयहस्तार्पणधिया॥ ७०॥

नखानामुद्योतैर्नवनलिनरागं विहसताम्
करणां ते कान्तिं कथय कथयामः कथमुमे।
कयाचिद्वा साम्यं भजतु कलया हन्त कमलम्
यदि क्रीडल्लक्ष्मीचरणतललाक्षारसचणम्॥ ७१॥

समं देवि स्कन्दद्विपवदनपीतं स्तनयुगम्
तवेदं नः खेदं हरतु सततं प्रस्नुतमुखम्।
यदालोक्याशङ्काऽऽकुलितहृदयो हासजनकः
स्वकुम्भौ हेरम्बः परिमृशति हस्तेन झटिति॥ ७२॥

अमू ते वक्षोजावमृतरसमाणिक्यकुतुपौ
न सन्देहस्पन्दो नगपतिपताके मनसि नः।
पिबन्तौ तौ यस्मादविदितवधूसङ्गरसिकौ
कुमारावद्यापि द्विरदवदनक्रौञ्चदलनौ॥ ७३॥

वहत्यम्ब स्तम्बेरमदनुजकुम्भप्रकृतिभिः
समारब्धां मुक्तामणिभिरमलां हारलतिकाम्।
कुचाभोगो बिम्बाधररुचिभिरन्तः शबलिताम्
प्रतापव्यामिश्रां पुरदमयितुः कीर्तिमिव ते॥ ७४॥

तव स्तन्यं मन्ये धरणिधरकन्ये हृदयतः
पयःपारावारः परिवहति सारस्वतमिव।
दयावत्या दत्तं द्रविडशिशुरास्वाद्य तव यत्
कवीनां प्रौढानामजनि कमनीयः कवयिता॥ ७५॥

हरक्रोधज्वालाऽऽवलिभिरवलीढेन वपुषा
गभीरे ते नाभीसरसि कृतसङ्गो मनसिजः।
समुत्तस्थौ तस्मादचलतनये धूमलतिका
जनस्तां जानीते तव जननि रोमावलिरिति॥ ७६॥

यदेतत् कालिन्दीतनुतरतरङ्गाकृति शिवे
कृशे मध्ये किञ्चिज्जननि तव तद्भाति सुधियाम्।
विमर्दादन्योऽन्यं कुचकलशयोरन्तरगतम्
तनूभूतं व्योम प्रविशदिव नाभिं कुहरिणीम्॥ ७७॥

स्थिरो गङ्गावर्तः स्तनमुकुलरोमावलिलता
निजावालं कुण्डं कुसुमशरतेजोहुतभुजः।
रतेर्लीलागारं किमपि तव नाभिर्गिरिसुते
बिलद्वारं सिद्धेर्गिरिशनयनानां विजयते॥ ७८॥

निसर्गक्षीणस्य स्तनतटभरेण क्लमजुषो
नमन्मूर्तेर्नारीतिलक शनकैस्त्रुट्यत इव।
चिरं ते मध्यस्य त्रुटिततटिनीतीरतरुणा
समावस्थास्थेम्नो भवतु कुशलं शैलतनये॥ ७९॥

कुचौ सद्यःस्विद्यत्तटघटितकूर्पासभिदुरौ
कषन्तौ दोर्मूले कनककलशाभौ कलयता।
तव त्रातुं भङ्गादलमिति वलग्नं तनुभुवा
त्रिधा नद्धं देवि त्रिवलि लवलीवल्लिभिरिव॥ ८०॥

गुरुत्वं विस्तारं क्षितिधरपतिः पार्वति निजात्
नितम्बादाच्छिद्य त्वयि हरणरूपेण निदधे।
अतस्ते विस्तीर्णो गुरुरयमशेषां वसुमतीम्
नितम्बप्राग्भारः स्थगयति लघुत्वं नयति च॥८१॥

करीन्द्राणां शुण्डान् कनककदलीकाण्डपटलीम्
उभाभ्यामूरुभ्यामुभयमपि निर्जित्य भवति।
सुवृत्ताभ्यां पत्युः प्रणतिकठिनाभ्यां गिरिसुते
विधिज्ञे जानुभ्यां विबुधकरिकुम्भद्वयमसि॥८२॥

पराजेतुं रुद्रं द्विगुणशरगर्भौ गिरिसुते
निषङ्गौ जङ्घे ते विषमविशिखो बाढमकृत।
यदग्रे दृश्यन्ते दश शरफलाः पादयुगली
नखाग्रच्छद्मानः सुरमकुटशाणैकनिशिताः॥८३॥

श्रुतीनां मूर्धानो दधति तव यौ शेखरतया
ममाप्येतौ मातः शिरसि दयया धेहि चरणौ।
ययोः पाद्यं पाथः पशुपतिजटाजूटतटिनी
ययोर्लाक्षालक्ष्मीररुणहरिचूडामणिरुचिः ॥८४॥

नमोवाकं ब्रूमो नयनरमणीयाय पदयोः
तवास्मै द्वन्द्वाय स्फुटरुचिरसालक्तकवते।
असूयत्यत्यन्तं यदभिहननाय स्पृहयते
पशूनामीशानः प्रमदवनकङ्केलितरवे॥८५॥

मृषा कृत्वा गोत्रस्खलनमथ वैलक्ष्यनमितम्
ललाटे भर्तारं चरणकमले ताडयति ते।
चिरादन्तःशल्यं दहनकृतमुन्मूलितवता
तुलाकोटिक्वाणैः किलिकिलितमीशानरिपुणा॥८६॥

हिमानीहन्तव्यं हिमगिरिनिवासैकचतुरौ
निशायां निद्राणां निशि चरमभागे च विशदौ।
वरं लक्ष्मीपात्रं श्रियमतिसृजन्तौ समयिनाम्
सरोजं त्वत्पादौ जननि जयतश्चित्रमिह किम्॥८७॥

पदं ते कीर्तीनां प्रपदमपदं देवि विपदाम्
कथं नीतं सद्भिः कठिनकमठीकर्परतुलाम्।
कथं वा बाहुभ्यामुपयमनकाले पुरभिदा
यदादाय न्यस्तं दृषदि दयमानेन मनसा॥८८॥

नखैर्नाकस्त्रीणां करकमलसङ्कोचशशिभिः
तरूणां दिव्यानां हसत इव ते चण्डि चरणौ।
फलानि स्वःस्थेभ्यः किसलयकराग्रेण ददताम्
दरिद्रेभ्यो भद्रां श्रियमनिशमह्नाय ददतौ॥८९॥

ददाने दीनेभ्यः श्रियमनिशमाशानुसदृशीम्
अमन्दं सौन्दर्यप्रकरमकरन्दं विकिरति।
तवास्मिन् मन्दारस्तबकसुभगे यातु चरणे
निमज्जन् मज्जीवः करणचरणः षट्चरणताम्॥९०॥

पदन्यासक्रीडापरिचयमिवारब्धुमनसः
स्खलन्तस्ते खेलं भवनकलहंसा न जहति।
अतस्तेषां शिक्षां सुभगमणिमञ्जीररणित-
च्छलादाचक्षाणं चरणकमलं चारुचरिते॥९१॥

गतास्ते मञ्चत्वं द्रुहिणहरिरुद्रेश्वरभृतः
शिवः स्वच्छच्छायाघटितकपटप्रच्छदपटः।
त्वदीयानां भासां प्रतिफलनरागारुणतया
शरीरी शृङ्गारो रस इव दृशां दोग्धि कुतुकम्॥९२॥

अराला केशेषु प्रकृतिसरला मन्दहसिते
शिरीषाभा चित्ते दृषदुपलशोभा कुचतटे।
भृशं तन्वी मध्ये पृथुरुरसिजारोहविषये
जगत्त्रातुं शम्भोर्जयति करुणा काचिदरुणा॥९३॥

कलङ्कः कस्तूरी रजनिकरबिम्बं जलमयम्
कलाभिः कर्पूरैर्मरकतकरण्डं निबिडितम्।
अतस्त्वद्भोगेन प्रतिदिनमिदं रिक्तकुहरम्
विधिर्भूयो भूयो निबिडयति नूनं तव कृते॥९४॥

पुरारातेरन्तःपुरमसि ततस्त्वच्चरणयोः
सपर्यामर्यादा तरलकरणानामसुलभा।
तथा ह्येते नीताः शतमखमुखाः सिद्धिमतुलाम्
तव द्वारोपान्तस्थितिभिरणिमाद्याभिरमराः॥९५॥

कलत्रं वैधात्रं कति कति भजन्ते न कवयः
श्रियो देव्याः को वा न भवति पतिः कैरपि धनैः।
महादेवं हित्वा तव सति सतीनामचरमे
कुचाभ्यामासङ्गः कुरवकतरोरप्यसुलभः ॥ ९६ ॥

गिरामाहुर्देवीं द्रुहिणगृहिणीमागमविदो
हरेः पत्नीं पद्मां हरसहचरीमद्रितनयाम्।
तुरीया काऽपि त्वं दुरधिगमनिःसीममहिमा
महामाया विश्वं भ्रमयसि परब्रह्ममहिषि॥ ९७॥

कदा काले मातः कथय कलितालक्तकरसम्
पिबेयं विद्यार्थी तव चरणनिर्णेजनजलम्।
प्रकृत्या मूकानामपि च कविताकारणतया
कदा धत्ते वाणीमुखकमलताम्बूलरसताम्॥ ९८॥

सरस्वत्या लक्ष्म्या विधिहरिसपत्नो विहरते
रतेः पातिव्रत्यं शिथिलयति रम्येण वपुषा।
चिरं जीवन्नेव क्षपितपशुपाशव्यतिकरः
परानन्दाभिख्यं रसयति रसं त्वद्भजनवान्॥ ९९॥

प्रदीपज्वालाभिर्दिवसकरनीराजनविधिः
सुधासूतेश्चन्द्रोपलजललवैरर्घ्यरचना ।
स्वकीयैरम्भोभिः सलिलनिधिसौहित्यकरणम्
त्वदीयाभिर्वाग्भिस्तव जननि वाचां स्तुतिरियम्॥ १००॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
सौन्दर्यलहरी सम्पूर्णा॥

❀❀❀

समानीतः पद्भ्यां मणिमुकुरतामम्बरमणिः
भयादास्यादन्तःस्तिमितकिरणश्रेणिमसृणः।
दधाति त्वद्वक्त्रप्रतिफलनमश्रान्तविकचम्
निरातङ्कं चन्द्रान्निजहृदयपङ्केरुहमिव॥

समुद्भूतस्थूलस्तनभरमुरश्चारु हसितम्
कटाक्षे कन्दर्पः कतिचन कदम्बद्युति वपुः।
हरस्य त्वद्भ्रान्तिं मनसि जनयन्तः समयिनो
भवत्या ये भक्ताः परिणतिरमीषामियमुमे॥

निधे नित्यस्मेरे निरवधिगुणे नीतिनिपुणे
निराघाटज्ञाने नियमपरचित्तैकनिलये।
नियत्या निर्मुक्ते निखिलनिगमान्तस्तुतपदे
निरातङ्के नित्ये निगमय ममापि स्तुतिमिमाम्॥

❀❀❀